ओ३म्

८८वाँ

वार्षिक विवरण

१९८७-८८

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

जुलाई, १९८८ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :
जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

ओ३म्

८८ वाँ वार्षिक विवरण

१९८७-८८

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

परिद्रष्टा	—श्री सोमनाथ मरवाह
कुलाधिपति	—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार
कुलपति	—श्री रामचन्द्र शर्मा, आई०ए०एस० (अ०प्रा०)
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
आचार्य एवं उपकुलपति	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—श्री सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री बी०डी० भारद्वाज (२-१-८८ तक)
	डा० बी०सी० सिन्हा (३-१-८८ से २०-५-८८ तक)
	श्री आर०पी० सहगल (२१-५-८८ से)
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० जे०एस० सेंगर
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापनाकाल के ८८ वर्ष पूरे कर रहा है। वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, पुराविद्या तथा राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय का अप्रतिम योगदान रहा है। विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। वही एक ऐसे दीपाधार थे जिन्होंने हिन्दू और मुसलमान राष्ट्रभक्तों को समान रूप से प्रभावित किया तथा भारतीय जीवन-मूल्यों पर आधारित शिक्षा की परिकल्पना कर, पराधीन भारत में क्रान्ति का बिगुल बजाया। हिन्दी माध्यम से प्राचीन साहित्य और आधुनिक ज्ञानविज्ञान का अध्ययन-अध्यापन कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षासंस्था है जिसकी प्रशंसा महात्मा गांधी, महाकवि रवीन्द्रनाथ तथा महामना मदनमोहन जी मालवीय मुक्तकंठ से करते रहे हैं। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद उच्चतम अध्ययन और अनुसंधान के अलावा गुरुकुल ने ग्रामोद्धार, प्रसार कार्य, सामाजिक पुनरुत्थान तथा शिक्षा को प्रासंगिक बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति का श्रेय परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह, कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा को है। कुलपति श्री शर्मा जी ने इस वर्ष शैक्षिक वातावरण को समुन्नत करने के लिए लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों को आमंत्रित किया। कई शोधसंगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से २७ जून से ११ जुलाई ८७ तक 'व्यक्तित्व के विकास तथा व्यवहार के रूपान्तरण' पर ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण संस्थान का आयोजन किया गया। १५ मई से १८ मई तक 'शिक्षा-पद्धति में मूल्य तथा भर्तृहरि और विटगेस्टाइन के भाषादर्शन' पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। ११ से १४ अक्टूबर तक 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डा० धर्मेन्द्र गोयल, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो० सिद्धेश्वर भट्ट तथा डा० संतोषकुमार, मगध विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० उपेन्द्र ठाकुर, सागर विश्वविद्यालय के पूर्व इतिहास विभागाध्यक्ष डा० कृष्णदत्त वाजपेयी, लखनऊ के डा० बैजनाथ पुरी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत आचार्य डा०

वी०के० वर्मा, पुरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० सत्यव्रत शास्त्री, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित, मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा० टी०आर० शर्मा तथा गढ़वाल विश्वविद्यालय की ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डा० आशा सकलानी विश्वविद्यालय पधारे। सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डा० राममूर्त्ति शर्मा विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में विश्वविद्यालय पधारे। इन विद्वानों के मार्गदर्शन से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को लाभ पहुँचा।

इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दार्शनिक पद्मभूषण डा० के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति गुरुकुल पधारे। २५ जून को उनका 'वेदों में अद्वैत' विषय पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुआ। कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा ने अभिनन्दन-पत्र तथा उत्तरीय प्रदान कर डा० मूर्त्ति का सम्मान किया। डा० मूर्त्ति ने पुस्तकालय तथा संग्रहालय का अवलोकन भी किया। 'श्रद्धानन्द स्मृति प्रसार व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत दिए गए डा० मूर्त्ति के व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के पूर्व परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने की। दर्शन विभाग के रीडर-अध्यक्ष डा० जयदेव वेदालंकार ने सभा का संचालन किया। जुलाई ८७ में सिडनी में होने वाले विश्वविद्यालय-प्रशासकों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इन पंक्तियों के लेखक (कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा) ने भाग लिया तथा सिडनी, मैलबार्न और कैनबरा (आस्ट्रेलिया) एवं सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक क्रियाकलाप तथा प्रणाली का अवलोकन किया।

अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दीअध्येता छात्र-छात्राओं का एक अध्ययन-दल केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार के शोधसहायक श्री अश्विनीकुमार के साथ गुरुकुल पधारा। आसाम, उड़ीसा, इम्फाल, अरुणाचल, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक से पधारे इस दल के विद्यार्थियों ने हिन्दी विभाग के आचार्यों के साथ हिन्दीअध्ययन सम्बन्धी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। फिजी के प्रवासी छात्र नेतराम शर्मा गुरुकुल में विद्यालंकार के विद्यार्थी हैं। उन्होंने फिजी के हिन्दी सीखने वाले छात्रों के लिए पुस्तक लिखी जिसका विमोचन गत मास फिजी में हुआ।

गुरुकुल में संस्कृत तथा अंग्रेजी में दक्षता के लिए विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट कोर्स भी कराया जाता है। वेद विभाग के तत्वावधान में वैदिक कर्मकाण्ड सिखाने के लिए एक वर्ष के डिप्लोमा का प्रावधान किया गया है। इसके अन्तर्गत आर्यसमाज के मन्तव्यों, पंच महायज्ञ, श्रौतयाग तथा षोडश संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता है। हिन्दी पत्रकारिता का स्नातकोत्तर डिप्लोमा

इस वर्ष शुरु किया जा रहा है तथा बी०एस-सी० में एक प्रश्नपत्र के रूप में कम्प्यूटर विषय का प्रावधान कर दिया गया है।

गुरुकुल के प्राचीन प्रकाशन, शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। गत वर्षों में प्रकाशन केन्द्र समाप्तप्राय हो गया था। कुलपति श्री शर्मा ने 'श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र' के नाम से इसे पुनः प्रारंभ किया है। केन्द्र की ओर से 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन' तथा 'शोध सारावली' नामक दो ग्रन्थों का प्रकाशन अप्रैल में हुआ। गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के जीवंत रूप, प्रख्यातविचारक तथा शिक्षाशास्त्री डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का देश के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा किया गया आकलन 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन' के रूप में प्रस्तुत है। इस ग्रंथ का विमोचन और समर्पण दिल्ली उच्चन्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे ने किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय में पी-एच०डी० के लिए स्वीकृत शोधप्रबंधों का सारांश 'शोध सारावली' के रूप में प्रकाशित हुआ। इसका विमोचन श्री सोमनाथ जी मरवाह, परिद्रष्टा गुरुकुल विश्वविद्यालय ने किया।

पुस्तकालय के लिए उत्तर प्रदेश सरकार तथा अनुदान आयोग ने विशेष अनुदान स्वीकार किया तथा संग्रहालय के लिए भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग से विशेष सहायताराशि प्राप्त हुई। इसके लिए हम इनके विशेष आभारी हैं।

गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट तथा वैदिक पथ प्रकाशित हुए। विद्यार्थियों ने संस्कृत दिवस, युवा दिवस, खेल-कूद, श्रद्धानन्द सप्ताह, वादविवाद-मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता, वृक्षारोपण तथा एन०एस०एस० के कार्यक्रमों में सोत्साह भाग लिया। योग प्रशिक्षण का कार्य भी सुचारुरूप से सम्पन्न हुआ तथा कांगड़ी ग्राम के पुनरुत्थान के चले आ रहे कार्यक्रमों को विशेष रूप से पूरा किया गया। जनसाक्षरता अभियान तथा प्रौढ़ शिक्षा विभाग का कार्य भी उल्लेखनीय रहा। यह विभाग समय-समय पर कार्यशालाएँ तथा संगोष्ठियाँ आयोजित करता रहा है। हिमालय पर्यावरण योजना तथा गंगा एक्शन प्लान के कार्य भी संतोषजनक रूप से सम्पादित हो रहे हैं। गणित विभाग के तत्वावधान में 'प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोधपत्रिका' का प्रकाशन इस वर्ष की विशेष घटना है। इसका विमोचन कुलाधिपति डा० सत्यकेतु जी ने किया।

इस वर्ष दीक्षान्त-भाषण के लिए सुप्रसिद्ध न्यायविद् तथा दिल्ली

उच्चन्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे गुरुकुल पधारे। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने शिक्षा-प्रतीक के रूप में पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का अभिनन्दन किया। परिद्रष्टा श्री मरवाह जी ने पण्डित जी को उत्तरीय तथा मुख्य-अतिथि श्री देशपाण्डे ने अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित किया। कुलपति श्री शर्मा की प्रेरणा से निर्मित यह महनीय ग्रन्थ एक उपलब्धि है। इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार सुप्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता, कुलाधिपति गुरुकुल विश्वविद्यालय डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी रीडर डा० लक्ष्मीनारायण दुबे को दिया गया।

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने लेखन-प्रकाशन तथा शोध-संगोष्ठियों में भाग लेकर अपने पद की गरिमा बढ़ाई है। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति-विवरण में इन विद्वानों के कार्यों का विस्तृत विवरण उपलब्ध हो जाएगा।

प्रधानमंत्री माननीय श्री राजीव गाँधी के देशव्यापी आह्वान पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने प्रधानमन्त्री सूखा-राहत कोष में रु० १,०६,४४७-०० चन्दा देकर अपना राष्ट्रीय दायित्व पूर्ण किया।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरयाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षापटल, कार्यपरिषद् तथा शिक्षापरिषद् के सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते रहे हैं।

—वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

प्रोफ़ेसर के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति, उपाध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को शाल भेंट करते हुए कुलपति प्रोफेसर आर०सी० शर्मा।
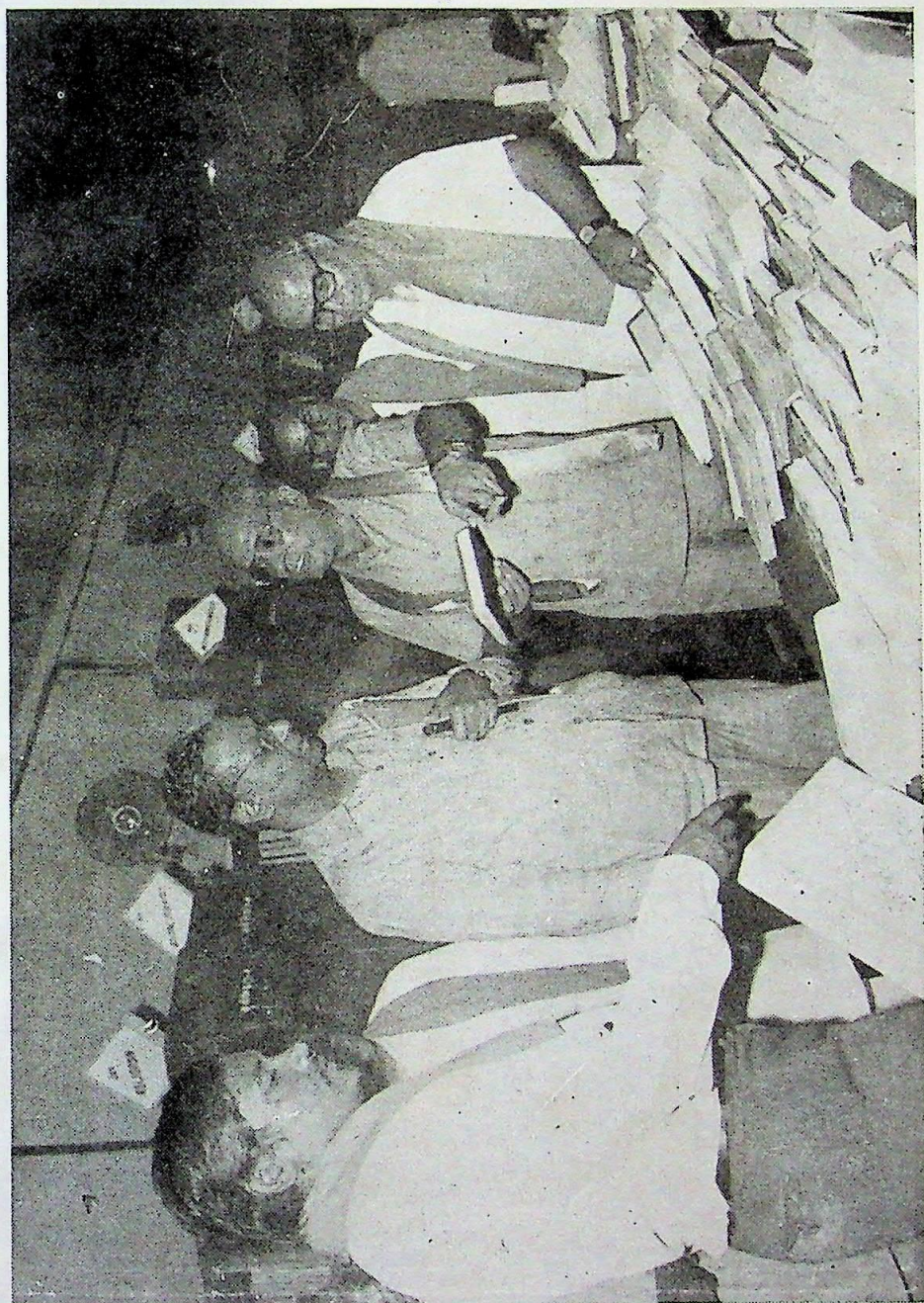
पुस्तकालय निरीक्षण के अवसर पर प्रोफेसर के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, को विश्वविद्यालय के प्रकाशन दिखाते हुए कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा। साथ में खड़े हैं कुलपति प्रोफेसर आर०सी० शर्मा तथा पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार।

गुरूकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८७ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इगलैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आयी इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने

सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो॰ महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो॰ रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो॰ साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो॰ सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो॰ प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो॰ सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो॰ रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी॰एफ॰ए॰एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गर्वनर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष, और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किए।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो

गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय

२. साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अत: निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डॉ० मुँजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के

पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के २० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम०ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६३ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर. सी. शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक-शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८७ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम काँगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा जी ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है :

विद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम०ए० और पी-एच०डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान

की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलॉजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलॉजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू०जी०सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसका निकट भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानत: मूल्य ड़ेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गोशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानत: मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

(४) सम्प्रति श्री सोमनाथ मरवाहा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं और डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं। श्री आर० सी० शर्मा, आई०ए०एस० (अवकाशप्राप्त) इसके कुलपति हैं।

कुलपति श्री आर० सी० शर्मा के नेतृत्व में विश्वविद्यालय अपनी नानाविध योजनाओं से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत तीन वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी

पुस्तकालय के माध्यम से गत तीन वर्षों से चल रहा है। विगत वर्ष से अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा' का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हैं। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है। इनमें से गंगा समन्वित योजना का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा हिमालय पर्यावरण योजना का कार्य अभी चल रहा है। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह पर कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, आदरणीय वी०एस० देशपाण्डे जी, माताओं, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्यभूमि में आपका स्वागत करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं० मोतीलाल नेहरू तथा महामना पं० मदनमोहन मालवीय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जूझने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता थे, भारतीय जीवन-मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक थे, ह्रासोन्मुख हिन्दू समाज के कायाकल्पक थे और राष्ट्र-भक्त युवकों तथा युवतियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन तथा नवीन ज्ञान-विज्ञान के सूत्रधार थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल एक आन्दोलन था। ऐसा आन्दोलन जिसकी प्रेरणा से महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्तिनिकेतन की स्थापना की। काशी विद्यापीठ की स्थापना में भी स्वामी जी का राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन ही प्रेरणा का कार्य कर रहा था। आज उसी महापुरुष की तपस्या-स्थली में नवदीक्षित स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवस्नातक इस पुण्यभूमि की सदैव रक्षा करेंगे तथा स्वामी जी के बताए सिद्धान्तों पर चलकर संपूर्ण मानवजाति के कल्याण और सुख-शान्ति के सपनों को साकार करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओं,

इस वर्ष दीक्षान्त भाषण के लिए हमारे मध्य देहली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे जी उपस्थित हैं। यह हमारे अन्तेवासियों का सौभाग्य है कि देश-विदेश के शैक्षिक, साँस्कृतिक तथा विधि-सम्बन्धी अनुभवों से सम्पन्न, सुलझे हुए विचारक और विधिवेत्ता-मनीषी के द्वारा उन्हें आशीर्वाद प्राप्त करने का सुखद अवसर मिल रहा है। मैं महामहिम श्री देशपाण्डे जी का संस्था की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि वह अत्यन्त व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच पधारे। मुझे विश्वास है कि इस

दीक्षान्त-समारोह के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के अवसर पर खड़े हैं (बाएँ से) कुलाधिपति डा० सत्यकेतु, परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति श्री आर०सी० शर्मा, मुख्य अतिथि श्री देशपाण्डे, प्रो० रामप्रसाद, आचार्य तथा कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा।
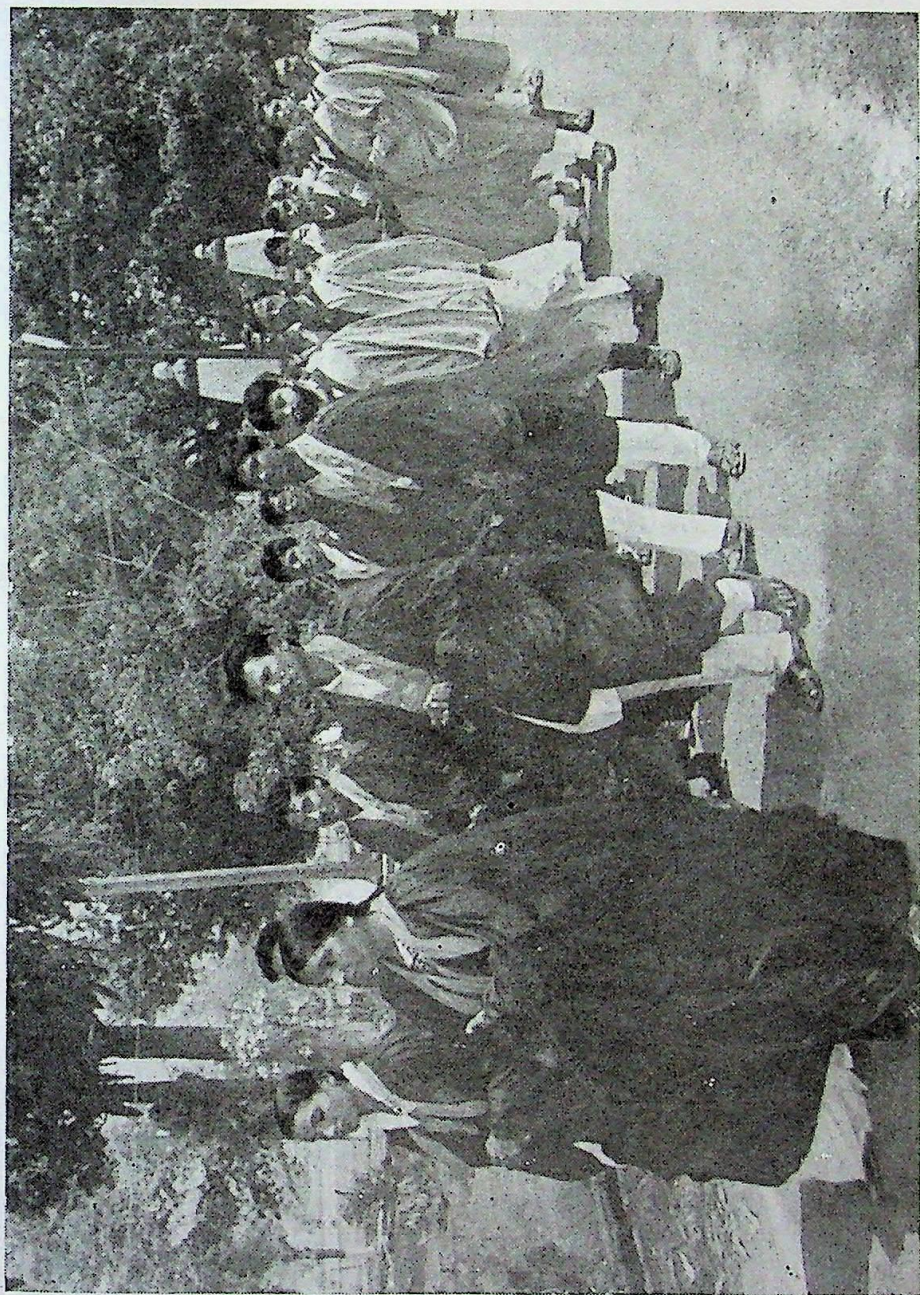
दीक्षान्त-समारोह (१९८८) के अवसर पर उपाधि प्राप्त्यर्थ स्नातकों की शोभा-यात्रा का दृश्य ।

दीक्षान्त-यज्ञ सम्पन्न करते हुए (बाएँ से) कुलाधिपति डा० सत्यकेतु, परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति श्री शर्मा, मुख्य अतिथि श्री देशपाण्डे, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा तथा प्रो० रामप्रसाद आचार्य एवं उपकुलपति ।
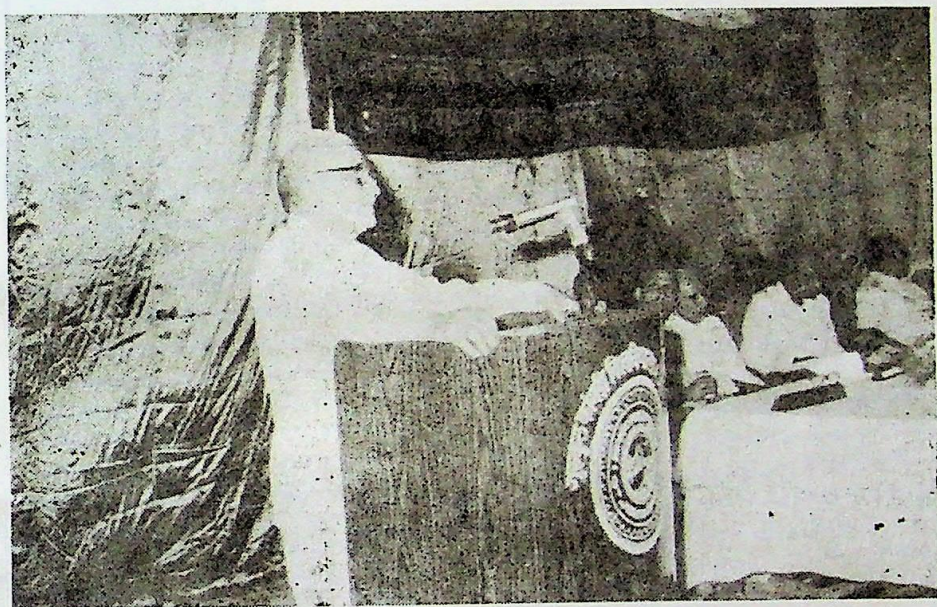
विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह, 'राष्ट्रीय दर्शन कान्फ्रेन्स एवं उत्तरप्रदेश दर्शन परिषद्' का १६ मई '८८ को उद्घाटन-भाषण प्रस्तुत करते हुए।

राष्ट्रीय महत्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक-प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षों में जहाँ विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में आचार्य पद प्राप्त हुए, समन्वित गंगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ़ शिक्षा-प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना हुई, वहाँ कम्प्यूटर प्रशिक्षण तथा प्रकाशन केन्द्र की स्थापना से व्यवसायोन्मुखी शिक्षा की धारणा को मूर्त्तरूप देने की कोशिश की गई स्नातकों को पुस्तकीय ज्ञान देने के अतिरिक्त समाज और देश की बुनियादी जरूरतों का परिचय देने के लिए उन्हें राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा से जोड़े रखने की चेष्टा भी की गई। मुझे प्रसन्नता है कि सीमित साधनों के रहते हुए भी हमारे स्नातक आस-पास के ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहे, ग्रामसुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण में संलग्न होकर वह शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो सके। इससे आशा बँधती है कि वह महात्मा गाँधी और स्वामी श्रद्धानन्द के विचारों को निष्ठापूर्वक भावी जीवन में भी क्रियान्वित कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से प्रो० हरगोपालसिंह ने २७ जून से ११ जुलाई तक "व्यक्तित्व के विकास तथा व्यवहार के रूपान्तरण" पर एक ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण संस्थान का आयोजन किया। इसमें भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। भारतीय विचार और तकनीक द्वारा व्यक्तित्व के विकास की संभावनाओं पर विचार इस संस्थान की प्रमुख विशेषता थी। मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत परियोजना "केन्द्रीय विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्षों एवं संकायाध्यक्षों की भूमिका" डा० सुवर्ण आतिश ने पूर्ण कर ली है और इसका प्रतिवेदन आयोग को भेज दिया गया है।

१५ मई से १८ मई ८७ तक दर्शन विभाग की ओर से डा० जयदेव वेदालंकार ने शिक्षापद्धति में मूल्य तथा भर्तृहरि और विटगेस्टाइन के भाषा-दर्शन पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें पंजाब विश्व-विद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डा० धर्मेन्द्र गोयल प्रमुख रूप से उपस्थित हुए। इसका उद्घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह ने किया तथा अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन के प्रोफेसर डा० सन्तोष कुमार ने की।

११ से १४ अक्टूबर ८७ तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की ओर से प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा ने एक राष्ट्रीय

सेमिनार का आयोजन किया, विषय था – प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन। इस संगोष्ठी का उद्घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह ने किया। इस अवसर पर अनेक इतिहासवेत्ता एकत्र हुए। इनमें कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, गया के प्रो० उपेन्द्र ठाकुर, सागर के प्रो० कृष्णदत्त वाजपेयी तथा लखनऊ के प्रो० बैजनाथ पुरी प्रमुख हैं।

इतिहास विभाग ने इस वर्ष सर्वेक्षण कार्य को और भी गतिमान किया। हरिद्वार के समीपवर्ती स्थानों से सर्वेक्षण के दौरान अनेक प्राचीन मृण्मूर्तियाँ तथा मृण्पात्र प्राप्त हुए। आशा है आगामी सत्र में उत्खनन कार्य भी प्रारम्भ किया जा सकेगा।

९ मार्च ८८ को गैर हिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दी-अध्येता छात्र-छात्राओं का एक अध्ययन दल केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार के शोध सहायक श्री अश्विनी कुमार के साथ गुरुकुल पधारा। इसमें आसाम, उड़ीसा, इम्फाल, अरुणाचल, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के प्रतिनिधि प्रमुख थे। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने इन विद्यार्थियों की हिन्दी-अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया। इस दल ने तीन दिन परिसर में रहकर विश्वविद्यालय की गतिविधियों का अवलोकन किया। इस दल को लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भी सम्बोधित किया। डा० दीक्षित ने हिन्दी विभाग के निमन्त्रण पर "भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता" विषय पर अपना रोचक भाषण दिया।

अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डा० आर० एल० वार्ष्णेय ने अंग्रेजी विभाग में मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डा० टी० आर० शर्मा का 'अरस्तू के कैथार्सिस सिद्धान्त' पर भाषण कराया।

श्रावणी पर संस्कृत विभाग ने संस्कृत-दिवस का आयोजन किया। इसमें नगर की संस्कृत पाठशालाओं के विद्वानों तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियों ने संस्कृतभाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। ३० सितम्बर को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा और रीडर श्री वेदप्रकाश शास्त्री ने किया। अनेक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी इसमें सम्मिलित हुए। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता वैदिक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार ने की। योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए ईश्वर भारद्वाज ने उल्लेखनीय कार्य किया।

वेद-विभागाध्यक्ष प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने वैदिक प्रयोगशाला को सर्वांगीण बनाने के लिये उचित कदम उठाए। विभिन्न प्रकार के यज्ञपात्रों,

यज्ञोषधियों तथा यज्ञवेदियों को प्रदर्शनार्थं तैयार कराया तथा सस्वर वेद मंत्र-पाठ, यज्ञों द्वारा रोग चिकित्सा, वृष्टि विज्ञान एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन की योजना बनाई। वैदिक कर्मकाण्ड सिखाने के लिये एक वर्ष के डिप्लोमा का प्रावधान किया गया। इसके अन्तर्गत आर्य समाज के मन्तव्यों, पंचमहायज्ञ, श्रौतयोग तथा षोडश संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रो० रामप्रसाद ने जनसामान्य तक वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द के विचारों को पहुँचाने के लिए अनेक छोटी पुस्तकों का प्रकाशन कराया। विश्वविद्यालय के विजिटिंग फैलो तथा अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० शिवराम चौधरी ने सम्पूर्ण गीता तथा तीन सौ वेद मंत्रों का अरबी और अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया है। इनका प्रकाशन भी विचाराधीन है। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों का साप्ताहिक सत्संग तथा यज्ञ कार्यक्रम भी आचार्य रामप्रसाद जी की देख-रेख में सुचारू रूप से चल रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल के प्राचीन प्रकाशित, किन्तु अब अनुपलब्ध ग्रन्थों के पुनः प्रकाशन और वैदिक साहित्य, इतिहास, संस्कृति, दर्शन, आर्य विचारधारा, भारतीय साहित्य, भारतीय विज्ञान और महर्षि दयानन्द सम्बन्धी शोधकार्य को विश्वविद्यालयस्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिये इस वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र की स्थापना कर दी गई है। इस कार्य के लिये सरकारी अनुदान भी प्राप्त हुआ है। इस केन्द्र की ओर से "शोध सारावली" तथा "वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन" ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा आचार्य प्रियव्रत वेदमार्तण्ड प्रणीत शोधग्रन्थ "महर्षि दयानन्द के वेद और धर्म सम्बन्धी विचार" प्रकाशनाधीन है। आशा है कि इस प्रकाशन केंद्र से विश्वविद्यालय और आर्यजगत के बीच एक सुखद सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा। आचार्य रामदेव, प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार जैसे मनीषियों के पूर्वप्रकाशित ग्रन्थों के परिवर्द्धित अद्यतन शोधसंवलित संस्करणों से गुरुकुल की महत्ता का आधुनिक पीढ़ी को आभास मिल सकेगा।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा अपने सहयोगियों के साथ संस्कृत सर्टिफिकेट कोर्स तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा० वार्ष्णेय अंग्रेजी सर्टिफिकेट कोर्स सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषाशिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अंग्रेजी में भाषाविज्ञान के लिये आवश्यक उपकरण मँगा लिये गए हैं। भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिये यह प्रयोगशाला अत्यन्त उपयोगी है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह हेतु एक राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय है। इस

पुस्तकालय में धर्म, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, वेद, साहित्य और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इस समय इस पुस्तकालय में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की एक लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह है, जिसका उपयोग देश एवं विदेश के विद्यार्थी करते हैं। ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत, प्रारम्भ में जहाँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ४ लाख रु० का अनुदान स्वीकार किया गया था, वहीं मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष १९८७-८८, ८९-९० के लिये सात लाख रुपये का विशेष अनुदान स्वीकृत किया गया है। आलोच्य वर्ष ८७ से अब तक पुस्तकालय द्वारा १५५३ विभिन्न विषयों की पुस्तकें क्रय की गईं।

विभिन्न विषयों की पत्रिकाओं के क्रय किये जाने के कार्य में पूर्व की अपेक्षा काफी वृद्धि हुई। १९८१-८२ में जहाँ १४८ पत्रिकायें आती थीं वहीं अब वर्ष १९८७-८८ में ४४५ पत्रिकायें मँगाई जा रही हैं। जिसमें से ५० पत्रिकायें तो विदेशों से आ रही हैं। पुस्तकालय के संग्रह को आधुनिक बनाने में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में कार्य कर रहे प्राध्यापकों का सक्रिय योगदान है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों से प्राध्यापकों को विश्व पुस्तक मेले में नवीन पुस्तकों के चयन किये जाने हेतु भेजा गया तथा विश्व पुस्तक मेले में आई नवीनतम पुस्तकों को पुस्तकालय के संग्रह में समाविष्ट किया गया। गुरुकुल पुस्तकालय में उपलब्ध प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध पुस्तकों की एक बृहत् सूचा प्रकाशित किये जाने का कार्य भी चल रहा है। शीघ्र ही यह बृहत्-सूची देश के शोध-छात्रों तथा विद्वानों को उपलब्ध हो सकेगी। उक्त बिबलियोग्राफी के प्रकाशित हो जाने से पुस्तकालय की संचित निधि का ज्ञान देश-विदेश के विद्वानों को हो सकेगा।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खण्ड गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की दुर्लभ, किन्तु रोचक सामग्री प्रदर्शित है। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमें पूज्य स्वामीजी की पादुकायें, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र और पत्रादि सुरक्षित हैं। इस वर्ष भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के अन्तर्गत कार्यरत राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली द्वारा संग्रहालय को एक लाख रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि में से ४५ हजार रु० की राशि के उपकरण कैमरा, छत के पंखे तथा प्रदर्शन संभाग निर्मित हुए। शेष राशि से मुद्रा कक्ष में शो केश तथा प्लास्टर कास्ट गैलरी में बिजली के पंखे लगवाये गए। उ० प्र० शासन द्वारा प्राप्त बारह हजार रु० की सहायता राशि से मुद्रा कक्ष में नोटों के प्रदर्शन हेतु शो केश तैयार हुए। फोटो इन्डेक्सिग कार्ड निर्माण हेतु ५५ हजार रु० की राशि स्वीकृत हुई जिसकी प्रथम २५ प्रतिशत किश्त का उपयोग मृण्मूर्ति, अष्टधातु कक्ष

तथा पाषाण-प्रतिमा कक्ष के फोटोग्राफ के लिए हुआ। उ० प्र० सरकार के मुख्य मंत्री द्वारा घोषित राशि में से पुस्तकालय को दो लाख एवं संग्रहालय को १ लाख की किश्त आर्य बन्धुओं के सहयोग से ३१ मार्च को प्राप्त हो गई है। संग्रहालय के निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर इसके विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं। वह भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय संग्रहालय सम्मेलन में भाग लेने के लिए विश्वविद्यालय की ओर से गये।

प्रो० सुरेशचन्द त्यागी के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय भी प्रगति की ओर उन्मुख है। इस बार जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा गणित में शोधकार्य करने की अनुमति प्राप्त हुई। जन्तु विज्ञान विभाग में तीन शोध परियोजनायें चल रही हैं। वन्य जन्तु संरक्षण पर गढ़वाल विश्वविद्यालय की डा० आशा सकलानी का व्याख्यान हुआ। विभागाध्यक्ष डा० बी० डी० जोशी के सम्पादन में "फिश एण्ड देयर एनवायरमेंट" पुस्तक प्रकाशित हुई। डा० भट्ट का शोधपत्र नीदरलैण्ड में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, मिनोसिटा विश्वविद्यालय के प्रो० हैल्बर्ग के सहलेखन में वाचनार्थ प्रस्तुत हुआ। रसायन विभाग में चल रहे एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा "कामर्शियल मैथड्स आफ कैमिकल एनेलेसिस" में विद्यार्थियों की माँग बढ़ रही है और इस बार भी डिप्लोमा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं में उचित स्थान प्राप्त हो गए हैं। विभागाध्यक्ष डा० रामकुमार पालीवाल इस कार्य को सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। विभाग के रीडर डा० ए० इन्द्रायण को टोरंटो एवं ग्रीस तथा रजनीशदत्त कौशिक को टोरंटो में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में निबंधवाचन के लिये आमंत्रित किया गया है। हिमालय पर्यावरण का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है। गंगा समन्वित योजना का कार्य डा० विजयशंकर, वनस्पति विभागाध्यक्ष के निर्देशन में सम्पन्न हो चुका है। गंगा और गंगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ़मुक्तेश्वर तक के सैंकड़ों ग्रामों का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया गया। प्रोजेक्ट की अन्तिम रिपोर्ट में गंगा के जल को स्वच्छ रखने के उपाय तथा पर्यावरणजन्य अपकर्ष निवारण के उपाय सुझाये गये हैं। यह रिपोर्ट परियोजना निदेशालय को भेजी जा चुकी है। गंगा एक्शन प्लान के अन्तर्गत हुए कार्यों से इस क्षेत्र के गंगाजल पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। परियोजना के अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी लवुगीतों की रचना एवं प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हुआ। डा० पुरुषोत्तम कौशिक, प्रवक्ता वनस्पति विभाग के निरीक्षण में गतिशील हिमालय आर्किड्ज की पर्यावर्णिक योजना भी सफलतापूर्वक चल रही है। गणित विभाग के प्रोफेसर डा० एम० एल० सिंह शोध-पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं तथा भौतिक

विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और प्राध्यापक भी विभाग को समुन्नत करने में लगे हुए हैं। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डा० ए० के० चोपड़ा देख रहे हैं। इस वर्ष विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा जनसाक्षरता अभियान के अन्तर्गत ८६ निरक्षर व्यक्तियों को अक्षरज्ञान कराया गया। ग्राम सराय, प्रतीत नगर तथा श्यामपुर में छात्रों के तीन शिविर आयोजित किये गये। कांगड़ी ग्राम में दस-दिवसीय शिविर लगाया गया। इन शिविरों में ग्रामसुधार के अनेक कार्य किये गये। डा० चोपड़ा के साथ विश्वविद्यालय के छात्र, उत्तर-प्रदेशीय अन्तर्विश्वविद्यालय युवा महोत्सव मेरठ में सम्मिलित हुए। कांगड़ी ग्राम के पुनरुत्थान का जो कार्य पूर्वकुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा द्वारा प्रारम्भ हुआ था, वह विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों के लिये पुनीत संकल्प का प्रतीक है। डा० विजयशंकर, डा० चोपड़ा तथा समन्वयक प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र के संचालन में इस ग्राम का संतोषजनक उत्थान हो रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा तथा प्रसार कार्यक्रम योजनान्तर्गत २०सूत्री कार्यक्रम में से १६वें सूत्र की पूर्ति हेतु ६० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गए। डा० अनिलकुमार, सहायक निदेशक अपने सहयोगियों के साथ कांगड़ी, श्यामपुर, मिस्सरपुर, फेरूपुर, धनपुरा तथा बहादराबाद ब्लाक के केन्द्रों पर इस योजना को सुचारू रूप से चला रहे हैं। प्रौढ़ शिक्षा के अधिकारी तथा प्रशिक्षक समय-समय पर कार्य-शालाओं, संगोष्ठियों तथा सलाहकार समितियों का आयोजन करते रहे हैं। इस कार्य की प्रगति को देखते हुए आशा है भविष्य में और अधिक नये केन्द्र खोले जा सकेंगे।

जैसा कि आपको विदित ही है, विश्वविद्यालय में सेवायोजना सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र भी कार्यरत है। इस केन्द्र द्वारा अभ्यर्थियों को व्यावसायिक सूचना प्रदान करने एवं स्नातकों का मार्गदर्शन करने हेतु "रोजगार दर्पण" नामक एक पाक्षिकपत्र का नियमित प्रकाशन हो रहा है। इस पत्र के माध्यम से शिक्षारत विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। व्यवसाय चयन करने में भी इससे स्नातकों को लाभ मिल रहा है। इस कार्यालय में एक "कैरियर कार्नर" की स्थापना भी की गई है जिसको व्यावसायिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं से सुसज्जित किया गया है। इस विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं कला स्नातक इस केन्द्र से विशेष लाभ उठा रहे हैं। फरवरी ८८ में ऐसे ३१ विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से इस विषय की जानकारी दी गई।

यह भी उल्लेखनीय है कि कामनवैल्थ विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के अध्यक्षों के सम्मेलन में इन पंक्तियों के लेखक ने पेनांग (मलेशिया) जाकर भारतीय शिक्षा और गुरुकुलीय शिक्षा के रूप से विदेशी विद्वानों को परिचित कराने का विनम्र प्रयास किया। इसी प्रकार कुलसचिवों तथा प्रशासकों की सिडनी (आस्ट्रेलिया) में सम्पन्न संगोष्ठी में हमारे कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने भी भाग लिया।

आर्य बन्धुओं एवं बहिनों,

विद्यालय के ब्रह्मचारियों को १०० वेदमंत्र सस्वर उच्चारण और अर्थसहित कंठस्थ कराये गये। मनोविज्ञान विभाग के रीडर श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने इस कार्य को निष्ठापूर्वक सम्पन्न किया। "गोवर्धन ज्योति" के रूप में जिज्ञासुओं के लाभ के लिए इन मंत्रों का संकलन प्रकाशित होने जा रहा है। दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी इन मंत्रों से पाठकों को विशेष लाभ मिल सकेगा।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाजसेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्रनिर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक एवं लोकतान्त्रिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से बल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरें, मेरी यही सदिच्छा है। इकबाल के शब्दों में कहना चाहूँ तो कहूँगा—दृढ़ विश्वास, निरन्तर कर्मठता तथा विश्वव्यापी प्रेम ही जीवन के महायुद्ध में पुरुषार्थी मनुष्यों की तलवारें हैं—

यकीं मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फातेहे आलम
ज़हादे ज़िन्दगानी में हैं यही मर्दों की शमशीरें।

गुरुकुल की उक्त उपलब्धियों के लिये मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, उ०प्र० सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट-परिषद् तथा शिक्षापटल के मान्य सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने समय-समय पर अमूल्य सहयोग देकर हमारा मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने में हमारी सहायता की।

इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनकी मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ हो सकीं। कुलसचिव, उप-कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी और उनके विभागीय सहयोगियों को भी मैं साधुवाद देता हूँ।

इस वर्ष पी-एच०डी० की ७, एम०ए० की ७३, एम०एस-सी० की २५, बी०एस-सी० की ५४ तथा अलंकार की १३ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं।

आइये एक बार कहें—जिस प्रकार आकाश एवं पृथ्वी निर्भय होकर निर्दोष कार्य करते हैं, उसी प्रकार हम भी भयरहित होकर सत्कर्म करते रहें।

यथा द्यौश्च पृथिवी न विभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राणं मा विभेः। (अथर्ववेद २/१५/१)

रामचन्द्र शर्मा
कुलपति

१६ अप्रैल, १९८८

दीक्षान्त के अवसर पर प्रख्यात शिक्षाशास्त्री डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भू०पू० परिद्रष्टा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 'वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं समाजदर्शन' नामक ग्रन्थ का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री वी०एस० देशपाण्डे, मुख्य न्यायाधीश (से०नि०) उच्च न्यायालय, दिल्ली। साथ में खड़े हैं (दाएँ से) श्री सोमनाथ मरवाह परिद्रष्टा, पं० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार तथा कुलपति श्री आर०सी० शर्मा ।

भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस देशपाण्डे द्वारा
दिया गया दीक्षान्त-भाषण
(१६ अप्रैल, १९८८)

धर्म और संविधान

भूमिका

धर्म के संकुचित अर्थ के कारण, भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की विभिन्न निष्ठाएँ होने का लाभ भारत में ब्रिटिश शासन ने खूब उठाया है। धर्म के आधार पर मतदातासमूहों के वर्गीकरण ने भारतीय समाज को धार्मिक-समूहों में विभाजित कर दिया तथा इसके प्रभाव से केन्द्रीय एवं राज्य विधायिकाओं में भाग लेने वाली निष्ठावान राजनीतिक पार्टियाँ भी अछूता नहीं रहीं। इसके परिणामस्वरूप कुछ लोगों की यह विचारधारा हो गई कि मुसलमानों का राष्ट्र दूसरा है तथा राजनीतिक उद्देश्य के लिए की गई धर्म को संकुचित व्याख्या के दुष्प्रभाव के कारण भारत का विभाजन हुआ। संविधाननिर्माताओं का यह प्रयास रहा कि इस दुष्प्रभाव से हमेशा के लिए मुक्त रहने के लिए भारतीय संविधान में मौलिक नियमों की व्यवस्था की जाए। इसे सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान में निम्न व्यवस्था की गई:—

धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतन्त्र

संविधान के आमुख का प्रारम्भ निम्न कथन से आरम्भ होता है — "हम भारत के लोग, भारत को संप्रभुतासम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक गणराज्य में संस्थापित करने का दृढ़तापूर्वक संकल्प करते हैं।" १९७६ में किये गये ४२वें संविधान-संशोधन में "धर्म निरपेक्ष" विशेषण समाविष्ट हुआ। ऐसा करने का एक बड़ा कारण यह था कि संविधान निर्माण व लागू किये जाने के बाद भी कुछ राजनीतिक पार्टियाँ (यथा—मुस्लिम लीग और अकाली लोग) राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का प्रयोग करती रही हैं। इसलिए यह अधिकृतरूप से घोषित किया गया कि संविधान धर्म निरपेक्ष है। संशोधन में "धर्म निरपेक्ष" शब्द का प्रयोग इस अर्थ में किया गया है। इसने उद्घोषितकिया

कि धर्म का प्रयोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए न किया जाये क्योंकि देश की राजनीति सचमुच में धर्म निरपेक्ष है। "धर्म निरपेक्ष" का अर्थ यह नहीं है कि अन्त:करण व धर्म की आजादी के अधिकार को मान्यता न दी जाय। इसके विपरीत आमुख में स्वत: ही "सोच, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था व पूजा की स्वाधीनता" को मान्यता प्रदान की गई है तथा धर्म के विभिन्न पहलुओं की स्वतन्त्रता को संविधान की धाराएँ २५ से ३० अनुरक्षण प्रदान करती हैं।

स्पष्टतया धारा २५ से ३० का अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि ये संविधान के आमुख के विपरीत हैं। वास्तव में, आमुख तो संविधान को समझने की कुँजी है। अस्तु, आमुख का ध्येय है कि धर्म वैयक्तिक अधिकार है और इसे भारतीयों के धर्म निरपेक्ष क्रिया-कलापों में निश्चय हो नहीं लाना चाहिए । सचमुच इसका आशय साम्प्रदायिकता का निरोध अथवा भारत से साम्प्रदायिकता का उन्मूलन था। वर्ष १९४८ के ३ जून या इसके आसपास, संविधान सभा ने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध यह प्रस्ताव दृढ़तापूर्वक पास किया था कि धर्म के आधार पर निर्मित समूहों को देश के धम निरपेक्ष क्रिया-कलापों में, धर्म के आधार पर भागीदारी की छूट न दी जा सके। यह बात संविधान की मूल-भावना में हमेशा ही रही है। हालाँकि पीपुल रिप्रजेन्टेशन एक्ट १९५१ (S. 123 (3)) के ध्येय को संविधान के आमुख में औपचारिक तौर से १९७६ में समाहित किया गया। इसमें स्पष्ट कहा गया कि लोकसभा या विधान-सभा के चुनावों में धर्म के आधार पर चुनावप्रचार करना या मतों के लिए धर्म का फतवा देना, भ्रष्ट कृत्य होंगे तथा चुनाव रद्द किये जाने की व्यवस्था है।

धर्म का वास्तविक अर्थ

अस्तु, संविधान में धारा २५ के अन्तर्गत अनुरक्षित, अन्तःकरण की स्वतन्त्रता वैयक्तिक अधिकार है। धारा २५ कुछ विशद् रूप से "धर्म को प्रकट करने, व्यवहार करने एवं प्रचार करने" की आजादी के अधिकार को अनुरक्षित करती है। किन्तु शब्द "प्रचार करने" का इस आशय में प्रयुक्त नहीं होता कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को अपने धर्म में परिवर्तित करे। इसीलिए फुसलाने, धमकी आदि द्वारा धर्म-परिवर्तन, मध्यप्रदेश व ओड़िसा द्वारा प्रदत्त संविधि से अमान्य होता है, जिसे उच्चतम न्यायालय ने परिपुष्ट किया है (देखें AIR 1977 SC (908)। फैसले के उन्नीसवें पैरा में न्यायालय ने "प्रचार" के प्रयोग के बारे में व्याख्या दी है कि "कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के धर्म को परिवर्तित करने का अधिकार नहीं रखता किन्तु वह अपने धर्म के सिद्धान्त की बातें संप्रेषित कर सकता है।" न्यायालय ने इस बात को इस प्रकार

स्पष्ट किया है—

"It has to be remembered that Article 25(1) guarantees "freedom of conscience" to every citizen, and not merely to the followers of one particular religion, and that, in turn, postulates that there is no fundamental right to convert another person to one's own religion because if a person purposely undertakes the conversion of another person to his religion, as distinguished from his effort to transmit or spread the tenets of his religion, that would impinge on the "freedom of conscience" guaranteed to all the citizens of the country alike'.

ईसाई उपदेशकों की यह गलत अवधारणा कि लोगों के धर्म-परिवर्तन का क्रिश्चियनिटी मौलिक अधिकार प्रदान करती है, न्यायालय द्वारा स्पष्ट रूप से इनकार कर दी गई है। इस निर्णय से, संविधान के अन्तर्गत, धर्म का वास्तविक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अन्त:करण की स्वतन्त्रता, समझाने की स्वतन्त्रता और अपने अंत:करण की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन धारा २५ द्वारा अनुरक्षित है। इसीलिए अंत:करण की स्वतन्त्रता व्यक्तिगत स्तर तक प्रतिबंधित है। धर्म निरपेक्ष गतिविधियों के क्षेत्र में इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। धर्म के क्षेत्र का यह सीमांकन संविधान को धारा २६ के द्वारा "धर्म के मामलों" तक ही सुनिश्चित किया गया है।

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता का ध्येय आमुख में उद्घोषित है। चूँकि संविधान की समझ के लिए आमुख मात्र एक कुंजी है, धारा २९ (१) को आमुख के प्रतिकूल नहीं माना जा सकता है। धारा २९ (१) द्वारा नागरिकों को उनकी विभिन्न भाषाएँ, लिपि या संस्कृति को सुरक्षित रखने का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है।

इस अनुरक्षण का यह तात्पर्य नहीं है कि भाषा, लिपि या संस्कृति का अलगाववादी यंत्र के रूप में प्रयोग किया जाय। यह ठीक है कि प्रत्येक व्यक्ति या साँस्कृतिक समूह की अपनी विशेष पहचान हो सकती है, किन्तु यह पहचान अलग राष्ट्रवाद का राग अलापने की अनुमति प्रदान नहीं करता। जैसे कि व्यक्ति को वैचारिक आजादी है, ठीक उसी प्रकार समूह-विशेष को भाषा व संस्कृति

की आजादी है। किन्तु जैसे कि व्यक्ति अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता के आधार पर राष्ट्र से अलग नहीं हो जाता, उसी प्रकार समूह या लोग अपनी सांस्कृतिक व भाषाई पहचान के आधार पर राष्ट्र से अलग नहीं हो जाते।

अल्पसंख्यकों के धार्मिक व भाषाई अधिकार को समझने में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि उनकी रुचि के आधार पर धारा ३०(१) के अन्तर्गत शैक्षणिक संस्थाएँ हो सकती हैं। उदाहरणार्थ, इस प्रकार की संस्थाओं का अच्छा प्रशासन उपेक्षित है तथा इस प्रकार की संस्थाओं पर देश के कानून को समान रूप से लागू करना सुनिश्चित होना चाहिए। इस प्रकार की संस्थाओं में अध्यापकों के स्थायित्व को सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा इस प्रकार की सस्थाएँ मात्र अल्पसंख्यक होने के कारण, अपने अध्यापकों को इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने से इनकार नहीं कर सकती हैं।

समुचित शिक्षा

अस्तु, जैसा कि संविधान में सँजोया गया है, देश के बच्चों एवं युवकों की समुचित शिक्षा, उनमें धर्म व संस्कृति के मूल्य निश्चय ही उत्पन्न करे। ये मूल्य हमारी राष्ट्रीयभावना को विशेषता प्रदान करते हैं। संविधान द्वारा अनुरक्षित ये मूल्य हमारी भारतीयता को परम आवश्यक मूल्य के रूप में उद्घोषित करते हैं। पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें प्राचीन संस्कृति की अविरलता सदियों से बनी हुई है। पुराने मूल्यों से बिखरे बगैर आधुनिकता को पुराने मूल्यों में जोड़ा जा सकता है। गुरुकुल व अन्य आदर्श संस्थाएँ जो शिक्षा देशवासियों को दे सकती हैं, वे ऐसी होनी चाहिए जो छात्र-छात्राओं को अपनी यशस्वी प्राचीन संस्कृति से अवगत कराये तथा उनमें उच्च नैतिकमूल्यों को उत्पन्न करे। ये मूल्य देश-भक्ति तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को समाहित करते हैं। आधुनिकता, विज्ञान व तकनालॉजी के कितने ही अध्याय क्यों न जोड़ दिये जायें किन्तु शाश्वतमूल्य शिक्षा द्वारा अनवरत बनाये रखे जाने चाहिएँ। मुझे विश्वास है कि इस कार्य में गुरुकुल देश का अगुवा बनेगा और इस क्षेत्र में पथप्रदर्शक होगा। मेरी शुभकामना है कि यहाँ के विद्यार्थी और वे जो उत्तीर्ण होकर जा रहे हैं, इस संदेश के अग्रदूत होंगे तथा अपने देश की महानता के निर्माता होंगे।

वेद तथा कला महाविद्यालय

१ – वेद महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत साहित्य	१(रिक्त)	२	२	५

२ – कला महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
दर्शन शास्त्र	१(रिक्त)	२	३	५
हिन्दी साहित्य	१	१ (रिक्त)	३	५
अंग्रेजी	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२	१	२	५

३ – वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर कर्मचारीवर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल, लिपिक

(२) श्री बलवीरसिंह, सेवक

(३) श्री रतनलाल, सेवक

(४) श्री रामसुमत, माली

४ – कला महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर कर्मचारीवर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज, योग प्रशिक्षक

(२) श्री लालनरसिंह नारायण, प्रयोगशाला सहायक

(३) श्री हंसराज जोशी लिपिक

(४) श्री अशोक डे लिपिक

(५) श्री कुंवरसिंह — सेवक
(६) श्री हरेन्द्रसिंह — सेवक
(७) श्री प्रेमसिंह — सेवक
(८) श्री रामपद राय — सेवक
(९) श्री मानसिंह — चौकीदार
(१०) श्री जग्गन — सफाई कर्मचारी
(११) श्री सन्तोषकुमार — फील्ड अटैन्डेन्ट

५—इस वर्ष सत्रारम्भ दिनाँक २०-७-८७ से हुआ। दिनाँक १-८-८७ से महाविद्यालय में कक्षाएँ विधिवत् आरम्भ हुई। अलंकार तथा विद्याविनोद कक्षाओं में इस वर्ष छात्रसंख्या निम्नप्रकार से है :—

कक्षा	विषय	प्रथमवर्ष	द्वितीयवर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	०२	०४	०६
विद्याविनोद	कला वर्ग	१४	१०	२४
वेदालंकार		०१	—	०१
विद्यालंकार		२०	१२	३२
			योग	६३

६—इस वर्ष सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक शनिवार को प्रातः साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संगादि कार्यक्रम हुआ। इसमें सभी शिक्षकों, छात्रों एवं कर्मचारियों का सम्मिलित होना अनिवार्य रखा गया।

७—दिनाँक १५-८-८७ को स्वतंत्रता-दिवस समारोह धूम-धाम से मनाया गया।

८—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सत्र ८७-८८ से स्नातक स्तर पर (वेदालंकार एवं विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है।

९—दिनाँक ११-१०-८७ से १४-१०-८७ तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में एक चारदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्‌धाटन-समारोह के मुख्य अतिथि श्री सोमनाथ मरवाहा, परिद्रष्टा, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय तथा अध्यक्ष डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय थे।

१०–दिनांक १९-१०-८७ की एम० ए०, द्वितीय वर्ष—इतिहास के छात्र श्री ऋषिपाल वेदालंकार ने भारतीय शहीद सैनिक स्मारक विद्यालय, नैनीताल में आयोजित अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

११–दिनांक २६-११-८७ को डॉ० प्रसन्नकुमार जी का "शारीरिक-ज्ञान, औषधियाँ तथा रोग" विषय पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ। उनका यह व्याख्यान बहुत ही ज्ञानोपयोगी था। सभी शिक्षक एवं छात्र इससे लाभान्वित हुए।

१२–दिनांक ३-१२-८७ को वेद एवं कला महाविद्यालय में मान्य कुलपति श्री आर०सी०शर्मा जी की अध्यक्षता में डॉ० जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष, दर्शन विभाग का अभिनन्दन करने हेतु एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया। उनका यह अभिनन्दन उन्हें इस वर्ष प्राप्त "स्वामी प्रणवानन्द राष्ट्रीय दर्शन पुरस्कार" के उपलक्ष्य में किया गया, जिसमें उन्हें ५०००/- रु० नकद व प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हुआ था।

१३–गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दि० २३-१२-८७ से ३०-१२-८७ तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८७ को प्रातः शोभा-यात्रा निकाली गयी। तत्पश्चात् श्रद्धाञ्जलि-सभा का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त दिनांक २८-१२-८७ को एक त्रिभाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय व बाहर की कई शिक्षण-संस्थाओं के छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री वेदप्रकाश शास्त्री, रीडर, संस्कृत विभाग थे।

१४–दिनांक २६-१-८८ को गणतन्त्र दिवस समारोह मनाया गया। ध्वजारोहण मान्य कुलपति श्री आर०सी०शर्मा जी के द्वारा किया गया।

१५–विद्यालंकार द्वितीय वर्ष के छात्र श्री राजेन्द्रकुमार ने दिनांक २० फरवरी को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में तथा २२ फरवरी ८८ को पंजाब वि०वि०, चण्डीगढ़ में आयोजित

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में भाग लेकर क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

१६–दिनांक ११-३-८८ को अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ० टी०आर०शर्मा का "कैथार्सिस" विषय पर एक व्याख्यान हुआ जिसमें सभी शिक्षक एवं छात्र उपस्थित थे।

१७–दिनांक २४-३-८८ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में डॉ० गणेशदत्त शर्मा, प्राचार्य लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद का एक महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ।

१८–दिनांक २५-४-८८ से वेद एवं कला महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ आरम्भ हुईं तथा दिनांक १३-५-८८ को सम्पन्न हुईं।

१९–दिनांक १९-५-८८ से १८-७-८८ तक वेद एवं कला महाविद्यालय में ग्रीष्मावकाश घोषित किया गया।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १९०० में स्थापना से ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जबकि १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० दामोदर सातवलेकर, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य अभयदेव, पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जो वेदवाचस्पति तथा पं० रामनाथ वेदालंकार आदि कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या

एम०ए० प्रथम वर्ष	—	४
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	४
अलंकार प्रथम वर्ष	—	२१
अलंकार द्वितीय वर्ष	—	१२
विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	१६
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	१४
योग		७१

विभागीय उपाध्याय

१. आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार — प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२. डा० भारतभूषण — रीडर
३. डा० सत्यव्रत राजेश — प्रवक्ता
४. डा० मनुदेव बन्धु — प्रवक्ता

रीडर का एक पद रिक्त है।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

(१) प्रो०रामप्रसाद वेदालंकार, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग,
आचार्य एवं उप-कुलपति

(अ) प्रकाशित पुस्तकें

अब तक प्रकाशित कुल पुस्तकें – ३६, एक पुस्तक 'अनन्त की ओर' का अंग्रेजी में अनुवाद। तीन पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकें :

१. यज्ञसुधा (पंच महायज्ञों के वैदिक स्वरूप को स्पष्ट करने वाली पुस्तक)
२. कहाँ है वह जो सब पर सुखों की वर्षा करती है ?
३. वैदिक रश्मियाँ—भाग ४ (घर - परिवार वालों के लिए एक उपयोगी देन)।

उपर्युक्त पुस्तकों में से स्वाध्यायप्रेमियों के आग्रह पर कुछ पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए।

वैदिक साहित्य सेवा पर दो विशेष पुरस्कार प्राप्त।

विश्व वेद परिषद् से 'वेद रत्न' की मानद उपाधि प्राप्त।

(ब) सेमिनार

१६, १७, १८ मई '८७ में राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन में 'शिक्षा में मूल्यों का महत्व' विषय पर वक्तव्य दिए तथा समापन-समारोह की अध्यक्षता की।

१०-११ जून '८७ में समर इन्स्टीट्यूट में 'भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व विकास का विशेष भाग' पर वक्तव्य दिया।

२९-१२-८७ को नजीबाबाद में 'कम्प्यूटर युग में वैदिक आदर्शों की प्रासंगिकता' पर लिखित वार्ता की तथा संगोष्ठी में भाग लिया, जिसका प्रसारण भी हुआ।

११-१३ अक्टूबर '८७ में इतिहास विभाग में हुए सेमिनार में 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' विषय पर विशेष भाषण।

(स) लेखादि

१. आर्य मर्यादा विशेषाँक में 'स्वामी श्रद्धानन्द : एक विलक्षण व्यक्तित्व'

२. महात्मा प्रभु आश्रित शताब्दी-स्मारिका में लेख

३. डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का एकादशोपनिषद् भाष्य पर लेख 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज-दर्शन'।

कुछ अन्य लेखादि स्मारिका एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

(द) वैदिक साहित्य का व्यापक प्रचार

एक ओर पुस्तकों और लेखों के माध्यम से वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि के गूढ़ रहस्यों को सरल, सरस एवं भावात्मक शैली में स्पष्ट करने का प्रयास किया, दूसरी ओर भारतवर्ष के अनेक नगरों, महानगरों, विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित विशाल समारोहों में वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक, विद्वत्तापूर्ण भाषण दिए।

२ अक्तूबर '८६ को तपोवन देहरादून में "राष्ट्रभृत यज्ञ में तीन देवता" विषय पर व्याख्यान दिया। ९, १० अक्टूबर '८६ को तत्वज्ञान मण्डल कोपरगाँव (महाराष्ट्र) में "मानवजीवन में वेद की उपयोगिता" विषय पर भाषण दिया।

११ नवम्बर से १७ नवम्बर तक आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, देहली में विशाल उपस्थिति में "वेदों में परमपुरुष का स्वरूप", "वैदिक यज्ञ और उसकी उपयोगिता", "वेदाध्ययन और मानवजीवन" आदि विभिन्न विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान दिए।

२४, २५ अक्टूबर '८६ को महर्षि दयानन्द मठ, जालन्धर में "वेदों के आधार पर नारी का स्वरूप," "कहाँ है वो" इन विषयों का प्रतिपादन किया। ५, ६ नवम्बर '८६ को नया बाजार, ग्वालियर में तथा २४, २५, २६ दिसम्बर '८६ को सान्ताक्रुज बम्बई में तीन देवता, वेदों का स्वाध्याय, आर्यों की दिनचर्या, भ्रातृत्व आदि विषयों पर भाषण दिए, जिन्हें श्रोताओं ने बहुत सराहा।

२८ फरवरी '८७ को वदायूँ में "वेद संगोष्ठी" की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय भाषण दिया।

१३, १४, १५ फरवरी ' ८७ को कोटा-राजस्थान में आर्यों का आराध्य देव, वेद प्रतिपादित वेदाध्ययन की महिमा, आदि विषयों पर व्याख्यान दिए।

२० फरवरी '८७ को रोहतक में यज्ञ-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्षीय भाषण दिया।

इनके अतिरिक्त देहली, बम्बई, बी०एच०ई०एल हरिद्वार, आई०डी०पी० एल० ऋषिकेश, कानपुर, देहरादून आदि अनेक स्थानों पर वेदविषयक व्याख्यान दिए।

विषय को नवदिशा प्रदान करने के लिए, विश्वविद्यालय में अपनी सूझ-बूझ तथा मौलिक चिन्तन के आधार पर सत्र ८६-८७ में वैदिक प्रयोगशाला का शुभारम्भ किया, जिसमें स्नातकोत्तर छात्र, शोधार्थी एवं वेदप्रेमीजन १६ संस्कारों एवं पंचमहायज्ञों के स्वरूप को प्रत्यक्ष देखकर व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

हापुड़ में अगस्त '८७ में वेदों के आधार पर—१. इन्द्र परमेश्वर का स्वरूप और उसका कार्य, २. विश्वातेरम दुरिता—हम ज्ञानियों से मिलकर संसार के सभी दुरित तर जाएँ, पर व्याख्यान दिए।

१६-१७ अगस्त में चण्डीगढ़ में वेद के आधार पर "विश्वशान्ति और उसके उपाय" विषय पर व्याख्यान।

अर्बन स्टेट करनाल में १२-१३ सितम्बर को "मा प्रगाम पथो वयम्"—हम अपने पथ से कभी विचलित न हों, "वरदा वेदमाता" तथा वेदों में अध्यात्म विषयों पर वक्तृता दी।

सोनीपत हरियाणा में "यज्ञ इन्द्रमवर्धयत्" — यज्ञ मनुष्य को सब प्रकार से उठाता है। मानवजीवन के उत्थान में वेदों का योगदान विषयों पर व्याख्यान।

मुजफ्फरनगर में ६ अक्टूबर '८७ को आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता एवं अध्यक्षीय भाषण।

१७ अक्टूबर को जिला मुरादाबाद में जनपदी तहसील ठाकुरद्वारा द्वारा आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता एवं अध्यक्षीय भाषण

दिल्ली. हनुमान रोड में वैदिक संस्कृति के विभिन्न विषयों पर वक्तृत्व दिये।

जिला मण्डी, स्टेट हिमाचल प्रदेश में २८-२९ नवम्बर में वेद के आधार पर दो-तीन भाषण दिये।

२५ दिसम्बर को चेम्बूर, बम्बई में "स्वामी श्रद्धानन्द—एक विशेष व्यक्तित्व" विषय पर व्याख्यान दिया। "संसार को वैदिक साहित्य की देन" विषय पर भी भाषण दिया।

९—१० जनवरी में दिल्ली, अशोकविहार में "कबस्य वृषभः त्र" कहाँ है वह ? जो सब पर सुखों की वर्षा करता है, तथा "मानवजीवन के उत्थान में यज्ञों का महत्व" पर दो व्याख्यान। टंकाराद-गुजरात में फरवरी मास में "यजुर्वेद के यज्ञ के साथ-साथ, यजुर्वेद के आधार पर आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक उत्थान" आदि विषयों पर भाषण दिए।

८ मार्च को प्रौढ़ शिक्षा पर हुए विशेष आयोजन में अध्यक्षता की एवं अध्यक्षीय भाषण (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में) दिया।

९ मार्च को विभिन्न प्रान्तों से आए हुए छात्रों की एक विशेष सभा की अध्यक्षता एवं भाषण दिया।

१०-४-८८ को "होम्योपैथिक डाक्टर्स एसोसियेशन" जिला सहारनपुर की ओर से डा० हेनीमन् के २३४वें जयन्ती-समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित और विशेष व्याख्यान।

३०-४-८८ एवं १-५-८८ को तपोवन, देहरादून में "घर परिवार को स्वर्गमय बनाने के लिये वैदिक साहित्य का योगदान, वेदों में अध्यात्म" पर भाषण हुए। इस वर्ष "ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विधाओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन" विषय पर मेरे निर्देशन में पी-एच०डी० का कार्य सम्पन्न हुआ।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आचार्य एवं उप-कुलपति पद के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व को बड़ी लगन से करने का प्रयास किया।

२—डा० सत्यव्रत राजेश, प्राध्यापक

(अ) निर्देशन कार्य

मेरे द्वारा निर्देशित छात्र-छात्राओं ने दो शोधप्रबन्ध पूर्ण कर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की।

दो छात्र मेरे निर्देशन में शोधकार्य कर रहे हैं।

(ब) लेखन कार्य

"वृक्षों में जीव और हिंसा" पुस्तिका प्रकाशित। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे।

(स) सम्मेलनों में भाग

(क) गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली में—"अर्घ तथा मधुपर्क ··· " विषय पर निबन्धवाचन।

(ख) ऋषिकेश में संस्कृत रक्षा-सम्मेलन में सभापति।

(ग) जींद (हरियाणा) में विद्वद्गोष्ठी में मुख्य अतिथि।

(द) वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार का कार्य—

ग्रीष्मावकाश तथा अन्य अवकाशों में अहमदाबाद, बड़ौदा, भावनगर (गुजरात), कोल्हापुर–चालीस गाँव–धुले (धुलिया–महाराष्ट्र), बेलगाँव (कर्नाटक), चण्डीगढ़, जींद–हिसार–बखाला (हरियाणा), नंगल डैम–मुहाली (पंजाब), मेरठ, मुजफ्फरनगर, रुड़की, हरिद्वार–ज्वालापुर–भेल, देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी (उत्तरप्रदेश) आदि स्थानों पर वैदिक संस्कृति प्रचार।

(क) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत शिक्षापटल का सदस्य होने के कारण उसकी मीटिंगों में भाग लिया।

३—डा० मनुदेव बन्धु, प्रवक्ता

योग्यता :

एम.ए.–वेद, संस्कृत, हिन्दी; व्याकरणाचार्य, पी-एच.डी., लब्ध स्वर्णपदक

पुस्तकें :

१. वेद मंथन

२. मानवता की ओर

३. भाष्यकार दयानन्द

४. वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

लेख एवं वक्तव्य :

(क) तीन राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स में सक्रिय भाग लिया तथा निवन्धवाचन किया।

(ख) अनेकों वेद-सम्मेलनों तथा संस्कृत-सम्मेलनों में निवन्धवाचन किया।

(ग) इस सत्र में १० लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

(घ) आर्य समाज के विभिन्न मंचां से वेद और दयानन्द-दर्शन पर भाषण दिए।

—**रामप्रसाद वेदालंकार**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग

अपने आविर्भावकाल से ही संस्कृत-विभाग अपनी क्षमता, श्रम एवं सहयोग के कारण विश्वविद्यालय की श्रीवृद्धि में सतत् प्रयास करता आ रहा है। परिणामस्वरूप इस विश्वविद्यालय के दो यशस्वी छात्र श्री आनन्दकुमार तथा श्री तपेन्द्रकुमार भारतीय प्रशासनिक सेवा में अपनी प्रसिद्धि एवं प्रशंसा के साथ कार्यरत हैं। उस्मालिया, देहली, पटना, जयपुर, रोहतक, चण्डीगढ़, कुरुक्षेत्र, आगरा आदि विश्वविद्यालयों में इस विश्वविद्यालय के दीक्षित तथा परीक्षित छात्र, जिनकी संख्या शताधिक है, उच्चपदों पर प्रशंसा एवं प्रसन्नता के साथ कार्यरत हैं। बीस छात्रों ने पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त करके गुरुकुल की गरिमा में शोभा प्रदान की है।

इस वर्ष सत्र १९८७-८८ में विभाग मे निम्न महानुभाव कार्यरत हैं—

१. डा० निगम शर्मा — अध्यक्ष
२. प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री — रीडर
३. डा० रामप्रकाश शास्त्री — प्रवक्ता
४. डा० महावीर अग्रवाल — प्रवक्ता

इस वर्ष विभिन्न विषयों तथा क्षेत्रों में प्रतिभा-सम्पन्न अनुरूप शोध-कार्य के सम्पादन के कारण निम्न महानुभावों को पी-एच० डी० की उपाधि से सम्मानित किया गया —

१. श्रीमती सुषमा स्नातिका
२. श्रीमती राजकुमारी शर्मा
३. श्री सुरेन्द्रकुमार
४. श्री वसन्तकुमार
५. श्री रविदत्त

निम्न छात्रों ने एम०ए० द्वितीय वर्ष में लघु शोधप्रबन्ध लिखकर विशेष

योग्यता अर्जित की :

१. कु० अनुपमा शर्मा
२. श्री सोमपाल
३. श्री लेखराज शर्मा

छात्र श्री राजेन्द्रसिंह (विद्यालंकार) ने गुरुकुल आर्यनगर-हिसार, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जयिनी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय तथा मेरठ विश्वविद्यालय में अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पाकर प्रशंसा तथा गुरुकुल के लिए प्रसन्नता प्राप्त की। श्री अरविन्द कुमार, एम०ए०-द्वितीय वर्ष तथा श्री सोमपाल, एम०ए०-द्वितीय वर्ष ने गुरुकुल आर्यनगर-हिसार, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जयिनी में प्रतियोगिताओं में प्रशंसनीय स्थान प्राप्त किए।

इस वर्ष विभाग में निम्न शोधार्थी पी-एच०डी० के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं :

१. कु० राजिन्द्र कौर
२. श्रीमती उर्मिला देवी
३. कु० सतीश कुमारी
४. कु० सुखदा
५. श्रीमती राजेश्वरी बहुगुणा
६. श्रीमती वन्दना त्रिपाठी
७. श्रीमती मनजीत कौर
८. श्रीमती नन्दिनी आर्य
९. कु० वेदवती
१०. श्री नरेन्द्रकुमार
११. सुश्री पुष्पा श्रीवास्तव
१२. सुश्री राजवन्ती
१३ सुश्री किरणमयी
१४. सुश्री अन्जू आर्या

संस्कृत विभाग ने समय-समय पर बाहर से योग्य विद्वानों को आमन्त्रित

किया और उनके भाषणों की व्यवस्था की, जिनमें निम्न मुख्य हैं :

१. डा० वी०के० वर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बी०एच०यू०
विषय : भाष्य प्रक्रिया

२. डा० कृष्णकुमार, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गढ़वाल वि०वि०, श्रीनगर—विषय : काव्य में ध्वनि-विचार

३. डा० रामनाथ वेदालंकार, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय—विषय : वेद की वर्णन पद्धति ।

४. डा० कृष्णलाल, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, देहली विश्वविद्यालय, देहली
विषय : वैदिक साहित्य-परिचय

५. डा० सत्यव्रत शास्त्री, भूतपूर्व कुलपति, पुरी विश्वविद्यालय
विषय : थाईलैण्ड में संस्कृतशब्दों का प्रयोग

६. डा० वेदप्रकाश उपाध्याय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
विषय : हिन्दू-विधि

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१—डा० निगम शर्मा

पद — रीडर-अध्यक्ष

योग्यता — शास्त्री—अंग्रेजी सहित, एल०टी०, साहित्याचार्य;
एम०ए० (स्वर्णपदक—प्रथम श्रेणी—प्रथम स्थान) पी—एच०डी०

अध्यापन — अनुभव — स्नातक — स्नातकोत्तर
२६ वर्ष २६ वर्ष

शोध निर्देशन—

१. सात छात्रों को को पी—एच०डी० की उपाधि मिल चुकी है।

२. पाँच लघु शोधप्रबन्ध सम्पन्न ।

३. आठ छात्र पी—एच०डी० के लिए कार्यरत ।

४. नव पी—एच०डी० ग्रन्थों का मूल्यांकन।

५. ग्यारह ग्रन्थों का मूल्यांकन (भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय की योजना में)।

शोध निबन्ध – ५० से अधिक प्रकाशित।

विशिष्ट संगोष्ठी—

१. कालीदासे ऋग्वेदस्य प्रभावः (विक्रम वि०वि०, उज्जयिनी)।
२. हिमालयः (गढ़वाल वि०वि०, श्रीनगर)।
३. वेद एवं भाष्यकारः (पंजाब वि०वि०, चण्डीगढ़ ।
४. सृष्टि-प्रर्वचः (प्रभात आश्रम, मेरठ)।
५. शिशु निकेतन — बी०एच०ई०एल०।
६. डी०पी०एस० — बी०एच०ई०एल०।
७. भिक्षानन्द संस्कृत महाविद्यालय-बुलन्दशहर।
८. लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद।
९. ज्वालापुर महाविद्यालय, ज्वालापुर।
१०. निर्धन निकेतन, हरिद्वार।
११. भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार।

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, रीडर

शोधलेख प्रकाशन—

१—(क) जम्मू से प्रकाशित "आर्षधारा" पत्रिका में जीवनपद्धति के लिए "वेद के आदेश" नामक शोधलेख प्रकाशित हुआ।

(ख) पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार के अभिनन्दन ग्रन्थ में "आर्य संस्कृति के मूलतत्व" शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ।

२— विशिष्ट व्याख्यान तथा विद्वद्गोष्ठी में भाग—

(क) २८ सितम्बर ८७ को जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में "काव्यलक्षण समीक्षा" पर विशेष व्याख्यान दिया।

(ख) १५ दिसम्बर ८७ को दयालसिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, करनाल

में संस्कृत, हिन्दी विभाग में "रस प्रक्रिया" पर विशेष व्याख्यान दिया।

(ग) २० मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित विद्वद्गोष्ठी में "नवजागरण संस्कृतन्च" पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान का माध्यम संस्कृतभाषा रही।

(घ) १५ मार्च ८८ को गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में भारत सरकार की सहायता से आयोजित पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर में मुण्डन संस्कार को दृष्टिगत करते हुए शोधात्मक व्याख्यान दिया।

(ङ) ७ अप्रैल ८८ को लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद में "कालिदास का रघुवंश" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

(च) १२-१३ अप्रैल ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित शिक्षासम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन में प्रमुख वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।

(छ) २१-२२ अप्रैल ८८ को गीताश्रम, ज्वालापुर में आयोजित विद्वद्गोष्ठी में भाग लिया।

परीक्षण कार्य

(क) २० अगस्त ८७ को गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के संस्कृत विभाग में डी०फिल उपाधि के लिए एक शोधार्थी की मौखिकी परीक्षा ली।

(ख) १६ नवम्बर ८७ को मेरठ विश्वविद्यालय के जे०वी० जैन कालेज सहारनपुर में पी-एच०डी० की मौखिक परीक्षा ली।

संयोजन कार्य

(क) ३० दिसम्बर ८७ को श्रद्धानन्द बलिदान समारोह के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का संयोजन किया।

(ख) १४ अप्रैल ८८ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का संयोजन किया।

(ग) विश्वविद्यालय के वेद एवं कला महाविद्यालय के बौद्धिक एवं

साँस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन किया।

सम्मानित कार्य

(क) ३० जनवरी ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर में संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

(ख) १२-१३ मार्च ८८ को ऋषि संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में मुख्यनिर्णायक के रूप में कार्य किया।

(ग) १६ मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

(घ) अनेक संस्थाओं की चयन समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

व्यवस्थात्मक कार्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की वर्ष ८८ की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

प्रचारात्मक कार्य

वैदिक संस्कृति के प्रचाराथ अनेक शिक्षण-संस्थानों, धार्मिक संस्थानों तथा अन्य स्थानों में लगभग ६० (साठ) व्याख्यान दिये।

अन्य

(क) संस्कृत महाविद्यालय के परामर्शदातृमण्डल का सदस्य रहा।

(ख) संस्कृत परिषद् हरिद्वार का महामंत्री रहा।

३—डा० महावीर अग्रवाल, प्राध्यापक

शोधलेख प्रकाशित—

(क) भारतीय संस्कृतेः गायकः कविकुलगुरुः कालिदासः (गुरुकुल पत्रिका)।

(ख) डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के अभिनन्दन ग्रन्थ में "पं० सत्यव्रत जी का गीता भाष्य" लेख प्रकाशित हुआ।

विशिष्ट विद्वद्गोष्ठियों में व्याख्यान—

(क २० मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में विद्वद्गोष्ठी में "संस्कृतभाषा की प्रासङ्गिकता" विषय पर व्याख्यान दिया।

(ख) कालिदास समारोह, उज्जैन में विद्वद्गोष्ठी के अन्तर्गत "कालिदासस्य हिमालय वर्णनम्" पर शोधलेख पढ़ा।

(ग) १० मार्च ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर में आयोजित पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर में "संस्कारों एवं यज्ञों का महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया।

(घ) सहारनपुर, रुड़की, मुरादाबाद, बरेली, कानपुर, ज्वालापुर आदि नगरों में समायोजित सम्मेलनों, आर्य समाज के उत्सवों में वेद, दर्शन, उपनिषद्, भारतीय संस्कृति पर लगभग ४० व्याख्यान दिये।

शोध परीक्षा—

२५ मार्च को अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में पी–एच०डी० की शोध-छात्रा की मौखिक परीक्षा ली।

संयोजन—

(क) गुरुकुल वि०वि० में वर्षभर साप्ताहिक यज्ञ, हवन आदि का संयोजन किया।

(ख) अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में सह-संयोजक का कार्य किया।

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) स्थापना—१९१० ई० में अलंकार और दर्शनवाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम०ए० स्तर का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९८३ ई० से पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य हो रहा है।

संस्थापक-अध्यक्ष—स्व० प्रोफेसर सुखदेव दर्शनवाचस्पति

अपने स्थापनाकाल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शन के मौलिक-ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाए, तथा पाश्चात्य दर्शनशास्त्र की अवधारणाओं का उसके स्नातकों को गहन अध्ययन हो और वे स्नातक अपने-अपने विषय के मर्मज्ञ विद्वान सिद्ध हों।

यह विभाग अपने इस दायित्व को सम्यक् रूप में निभा रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार एवं प्रसार और अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुये हैं।

(२) छात्र संख्या—

विद्याविनोद	—	२३
अलंकार	—	६
एम०ए०	—	१६
पी-एच०डी०	—	६
	योग—	५४

(३) वर्तमान अध्यापकगण—

१—डा० जयदेव वेदालंकार — रीडर एवं अध्यक्ष
२—डा० विजयपाल शास्त्री — प्राध्यापक
३—डा० त्रिलोकचन्द्र — प्राध्यापक
४—डा० उमरावसिंह बिष्ट — प्राध्यापक

(४) आई०ए० एस० और पी०सी०एस० के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था –

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये दर्शन विषय के मार्ग-दर्शन की निःशुल्क समुचित व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी०एच०ई०एल०, हरिद्वार एवं अन्य स्थानों के छात्र मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

प्राध्यापकगण—

(क) **डा० जयदेव वेदालंकार**—पद—रीडर-अध्यक्ष
नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर फरवरी १९८४ से।

(ख) **योग्यतायें**—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), न्यायदर्शनाचार्य, पी-एच०डी०, डी०लिट्०।

(i) **मुख्य शोधग्रन्थ**—(१) उपनिषदों का तत्त्वज्ञान—पृष्ठ २६५ (पी-एच०डी० का शोध-ग्रन्थ)।

(२) महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन। पृष्ठ १५०

(३) भारतीय दर्शन की समस्यायें। पृष्ठ ४२५

(ii) **शोध-पत्र (१९८७)**—

(१) वैदिक दर्शन में सृष्टि प्रक्रिया।

(२) भारतीय दर्शन में आत्मा का स्वरूप।

(३) भारतीय दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप।

(४) मुक्ति का स्वरूप।

(५) वैदिकसमाज संरचना।

(६) वेदों में एक ईश्वर।

(७) मानव का चरमोत्कर्ष।

(८) उपनिषद् प्रकाश : एक समीक्षा।

समस्त शोधपत्र गुरुकुल मासिक शोधपत्रिका में प्रकाशित हैं।

(iii) **सेमिनार**—

राष्ट्रीयदर्शन महासम्मेलन—१६ मई ८७ से १८ मई ८७ तक दर्शन विभाग में दो राष्ट्रीय कान्फ्रैन्सों का आयोजन किया।

(क) श्री भर्तृहरि और विट्गेन्सटाइन का भाषा-दर्शन।

(ख) शिक्षा में मूल्यों का महत्त्व।

दोनों कान्फ्रैन्सों के लिए यू. जी. सी. से बीस हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इनमें निदेशक पद के रूप में कार्यरत।

(ग) उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का १३वाँ वार्षिक अधिवेशन भी दर्शन-विभाग के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ। इसमें स्थानीय सचिव के रूप में कार्य किया और प्रबन्ध-व्यवस्था की।

(iv) **स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार**—डा० वेदालंकार को अखिल भारतीय दर्शन के वार्षिक अधिवेशन मुरादाबाद के अवसर पर, उनके शोधग्रन्थ "भारतीय दर्शन की समस्यायें" पर स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। डा० जयदेव वेदालंकार को पाँच हजार रुपये नकद और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

(v) **इण्डियन फिलासोफिकल कांग्रेस** श्रीनगर-कश्मीर विश्वविद्यालय में ६ जून से ९ जून ८७ तक होने वाले उक्त कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया और शोधपत्रवाचन किया।

(vi) **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्**—रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३२वें वार्षिक अधिवेशन में "वेदों में सृष्टि प्रक्रिया" विषय पर शोधपत्रवाचन किया और तत्त्वमीमाँसा सत्र की अध्यक्षता की (सितम्बर १९८७)।

(अ) दिल्ली विश्वविद्यालय की अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी में सक्रिय भाग लिया।

(vii) **अन्य कार्य**—

(i) आर्यसमाज नकुड़—फरवरी १९८८ में भारतीय संस्कृति और दर्शन पर निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिये :

❀ वैदिक दर्शन के मूल तत्त्व।
❀ भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धान्त।
❀ दर्शन में सृष्टि-दृष्टि वाद।

❀ मानव का लक्ष्य।

❀ वैदिक नीति सिद्धान्त।

❀ मूर्तिपूजा वैदिक मान्यता के विरुद्ध।

(ii) आर्य वानप्रस्थाश्रम में व्याख्यान

जून १९८७ में भारतीय धर्म और दर्शन पर ६ व्याख्यान दिये।

(viii) **सम्पादन**— गुरुकुल पत्रिका (मासिक शोध पत्रिका) के नियमित सम्पादक के रूप में कार्यरत।

(ix) **शोधकार्य**—शोधछात्र निम्नलिखित विषयों पर पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं -

(अ) श्री अरविन्द और स्वामी दयानन्द का दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन।

(ब) महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द के दर्शन का अनुशीलन।

(स) भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में अन्तःकरण।

(द) मध्यकालीन द्वैतवादी और अद्वैतवादी आचार्यों के दर्शन में प्रमाण समीक्षा।

विशेष तीन शोध छात्रों ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

यह ज्ञातव्य है कि दर्शन विभाग में पाँच राष्ट्रीय दर्शन कान्फ्रैन्सों का आयोजन हुआ है। उन सभी राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलनों का विभाग के समस्त प्राध्यापकगणों ने प्रबन्ध किया और छात्रों ने भी उक्त प्रबन्ध में पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। विभाग के समस्त प्राध्यापकगण और छात्र धन्यवाद के पात्र हैं।

(ख) डा० विजयपाल शास्त्री

पद – प्रवक्ता

प्रकाशित लेख—

१. शुभ संकल्प से विश्वशान्ति
राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन (एक समालोचनात्मक शोधपत्र संकलन) अप्रैल १९८७।

२. ख्यातिवाद गुरुकुल पत्रिका, १९८७।

३. बुद्ध और शंकर का साधनमार्ग, गुरुकुल पत्रिका (शोधपत्र विशेषांक) अप्रैल १९८८।

४. 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार', डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक पर लिखित समीक्षा (डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ, मार्च १९८७)।

कान्फ्रैन्स—अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का अधिवेशन के. जी. के. कालिज मुरादाबाद में आयोजित। ८-११ अक्टूबर १९८७।

(ग) डा० त्रिलोकचन्द

पद — प्रवक्ता

योग्यताएँ – एम. ए., पी-एच.डी.

(१) शोधपत्र—

(क नशामुक्ति के कारगर साधन—योग और संगीत : दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित (१९ दिसम्बर ८७)।

(ख) योग और स्वास्थ्य (ई०वी०आर०आई० रुड़की में प्रस्तुत, दिसम्बर १९८७)।

(२) वार्ता तथा भाषण—

(१) कृषि विश्वविद्यालय सोलन में शोधपत्रवाचन किया (जून १९८७)।

(२) वानप्रस्थाश्रम में अनेक भाषण।

(३) दिल्ली, गुड़गांव, जालन्धर और लुधियाना आदि आर्यसमाजों में अनेक भाषण।

(३) अन्य कार्य—

योग और संगीत द्वारा दिल्ली में १ जुलाई से १८ जुलाई ८७ तक नशा छुड़वाने के लिये अनेक व्यक्तियों पर प्रयोग किये और सफलता प्राप्त की।

(घ) डा० उमरावसिंह बिष्ट

पद — प्रवक्ता

(१) **शोधपत्र**—(i) धर्म और विज्ञान (अंग्रेजी में)। गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित (१९८७)।

(ii) शिक्षा की भूमिका (Role of Education) हॉक में प्रकाशित (सितम्बर १९८७)।

(iii) शिक्षा की भूमिका–द्वितीय भाग (अंग्रेजी में, हॉक सितम्बर १९८७)।

(iv) धर्म और विधि की प्रकृति (वैदिक पाथ में प्रकाशित)।

(२) **रेडियो-वार्ता**—

नजीबाबाद आकाशवाणी (२४-८-८७)—विषय—भारतीय दर्शन के विदेशी विद्वान।

(३) (क) **कान्फ्रैंन्स**—दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् एवं राष्ट्रीय कान्फ्रैन्स में सक्रिय भाग लिया और प्रबन्ध में पूर्ण सहयोग किया।

(ख) दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित; आई०सी०पी०आर० दिल्ली की ओर से प्रोफेसर पी०एफ० सतवासन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के भाषण में भाग लिया।

—डा० जयदेव वेदालंकार
रीडर एवं अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ—

(१)	श्री ओम्प्रकाश मिश्र	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(२)	डा० हरगोपाल सिंह	प्रोफेसर
(३)	श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी	रीडर
(४)	श्री सतीशचन्द्र धमीजा	प्रवक्ता
(५)	डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता
(६)	श्री लाल नरसिंह	प्रयोगशाला सहायक
(७)	श्री कुंवरसिंह नेगी	प्रयोगशाला एटेन्डेन्ट

इस वर्ष मनोविज्ञान की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों ने निम्नलिखित वर्णन के अनुसार प्रवेश लिया :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	१५ छात्र
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	०६ छात्र
अलंकार प्रथम वर्ष	११ छात्र
अलंकार द्वितीय वर्ष	०८ छात्र
एम०ए० प्रथम वर्ष	०९ छात्र
एम०ए० द्वितीय वर्ष	०१ छात्र

पूरे सत्र में अध्ययन—अध्यापन सुव्यवस्थित रूप से शान्तिपूर्ण चलता रहा। इस वर्ष एम०ए० द्वितीय वर्ष के ४ विद्यार्थियों ने लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए, जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) कु० सोनिया सेठी : "विवाहित और अविवाहित महिलाओं की समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ"।
निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र

(२) कु० मंजुलता सिन्हा : "नारी का नारी के प्रति सौन्दर्य बोध"।
निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र

(३) कु० शोभा गुप्ता : "खेलने वाले एवं न खेलने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व चरों का तुलनात्मक अध्ययन"।
निर्देशक—श्री सतीशचन्द्र धमीजा

(४) शिवकुमार झा : "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्य और समायोजन—एक तुलनात्मक अध्ययन"।
निर्देशक—डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव

इस वर्ष विभाग में रिसर्च डिग्री कमेटी की मीटिंग हुई जिसमें डा० प्रभा गुप्ता, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। विभाग में कुल ९ विद्यार्थी शोध-कार्य कर रहे हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) कु० कमला पाण्डेय : "A Psycho-social Study of the Attitude of Acceptors and Non-acceptors Towards Family Planning Programme", Supervisor—Prof. O P. Mishra.

(२) कु० मीनाक्षी छावड़ा : "A Psycho-social Study of Retired People (An Exploratory Study)", Supervisor - Prof. O.P. Mishra

(३) कु० ममता श्रीवास्तव : "A Study of the Personality Patterns, Value System and Aspirations of Working and Non-working Women", Supervisor—Prof. O.P. Mishra.

(४) शमशेर सिंह : "Small and Large Scale Industries Achievement, Motivation and Leadership Style", Supervisor—Prof. O.P. Mishra.

(५) कु० देवेन्द्र भसीन : "A Comparative Study Between Hindu Grahasthas and Sanyasis on Machivellian Personality and Some Other Psycho-social Variable", Supervisor—Prof. O P. Mishra.

(६) कु० शोभना पाण्डेय : "A Study of the Mental Health of the Visually Handicapped Sportsmen", Supervisor—Prof O.P. Mishra.

(७) कु० मंजुरानी : "वैवाहिक समायोजन एवं सम्बन्धित मनो-सामाजिक चर : हिन्दू एवं मुसलमानों का तुलनात्मक अध्ययन", निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ।

(८) राजेश कुँवर : पूर्वी एवं पश्चिमी उत्तर-प्रदेश की अनुसूचित एवं अन्य जातियों के छात्रों में समायोजन, व्यक्तित्व-प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि—एक तुलनात्मक अध्ययन", निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ।

(९) श्री मदनसिंह : "A Study of Breathing Patterns of High and Low Anxiety Persons", निर्देशक—प्रो० हरगोपाल सिंह।

विभाग के तत्वावधान में डा० स्वर्ण आतिश ने "Role of Deans and Chair Persons in Central Universities" नामक प्रोजेक्ट पर कार्य पूर्ण कर लिया है, जो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत की गयी थी।

विभाग के शिक्षकों की शैक्षणिक गतिविधियाँ :

(१) प्रोफेसर ओम्प्रकाश मिश्र के निर्देशन में इस वर्ष श्री नन्दकुमार तिवारी एवं श्री जयप्रकाश नौटियाल को गढ़वाल विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गयी। गढ़वाल विश्वविद्यालय में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने प्रो० मिश्र को पाठ्यक्रम समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया है। विभागीय कार्य के अतिरिक्त प्रो० मिश्र राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक तथा University Employment and Guidance Bureau के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(२) प्रोफेसर हरगोपाल सिंह विभागीय कार्यों के अतिरिक्त वैदिक पाथ का सम्पादन भी कर रहे हैं तथा अनेक सम्पादकीय भी लिखे हैं। डा० सिंह ने—"Indian Approaches and Techniques of Personality Development and Behaviour Modification" पर विभाग के तत्वावधान में एक समर इन्स्टीट्यूट निर्देशित किया। उन्होंने नजीबाबाद रेडियो स्टेशन से २ वार्ताएँ प्रसारित की तथा "Stress Management Through Yoga, Mental Health and Yogic Approach to Crime" विषय पर O.N.G.C. Dehradun, सागर विश्वविद्यालय, तथा Police Training College सागर में भाषण दिए। डा० सिंह के ४ शोधपत्र वैदिक पाथ, आयुर्वेद विकास, पण्डित सत्यव्रत

सिद्धान्तालंकार के अभिनन्दनग्रंथ तथा Indian Journal of Applied Psychology में प्रकाशित हुए इन्हें NCERT, New Delhi ने Course Book Revision Committee में आमंत्रित किया तथा सागर विश्व-विद्यालय की Research Degree Committee में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। डा० सिंह ने Institute of Criminology and Forensic Sciences में Yogic Psychological Approach to Crime पर ४ भाषण दिए। इन्होंने अपने शोध-पत्रों के Abstracts सिंगापुर और लुसियाना में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पढ़ने हेतु भेजे हैं।

(३) श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने मनोविज्ञान विभाग की प्रयोगशाला, विशेषकर Testing Section को व्यवस्थित करने में अपना योगदान दिया। विद्यालयीय छात्रों के व्यक्तित्वविकास को ध्यान में रखते हुए श्री त्रिवेदी नित्य एक वेदमन्त्र अर्थसहित वताते हुए कण्ठस्थ कराते हैं। इसके अतिरिक्त भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार में इन्होंने एक्सटेंशन लेक्चर भी दिए हैं।

(४) श्री सतीशचन्द्र धमीजा विश्व पुस्तक मेले में विभाग के लिए पुस्तकें खरीदने हेतु सम्मिलित हुए। श्री धमीजा ने रुड़की विश्वविद्यालय में मानवीकी तथा समाज विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित "सांस्कृतिक एकता एवं साहित्यिक अनुवाद" विषय पर हुए सेमिनार में भाग लिया।

(५) डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव को I.C.S.S.R. New Delhi ने "Leadership Styles and Effectiveness – A Comparative Study of Private and Public Organizations" Research Project पर कार्य करने हेतु Rs. 9,975/- का अनुदान स्वीकृत किया है। इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ३ शोध-पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए, जो कि इस प्रकार हैं :

(i) Achievement Motivation Among Urban and Rural School Students. Journal of Education and Psychology.

(ii) Industrial Unrest in Public Sector—A Case Study. The Management Review.

(iii) Industrial Unrest and Productivity—Case Study. Journal of Business Administration.

इसके अतिरिक्त डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने ४ शोध-पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने हेतु भेज रखे हैं। डा० श्रीवास्तव की Ph.D. Thesis "Relationship Between Job Satisfaction and Organizational Climate—A Comparative Study of Private and Public Sectors" प्रकाशनाधीन है।

—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र

अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

पूर्व की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। वर्तमान में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर, दो लेक्चरर अपने अध्ययन-अध्यापन के कार्य को पूर्ण लगन व निष्ठा के साथ कर रहे हैं।

विभाग में कार्यरत प्राध्यापक :

१. डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२. डा० जबरसिंह सेंगर, एम०ए०, पी-एच०डी०—रीडर

३. डा० श्यामनारायण सिंह, एम०ए०, पी-एच०डी० —रीडर

४. डा० काश्मीरसिंह भिण्डर, एम०ए०, पी-एच०डी०— लेक्चरर

५. डा० राकेशकुमार शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी० लेक्चरर

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध-छात्रों की संख्या :

एम०ए० प्रथम वर्ष	—	१७
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	११
शोध छात्र	—	१३

शोध-कार्य :

विभाग के १८ वर्षों के काल में २१ महत्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य सम्पन्न हो चुका है। प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के निर्देशन में १२ तथा डा० सेंगर व डा० भिण्डर के निर्देशन में एक-एक शोधार्थी पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं। इस वर्ष डा० श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में श्री सुखवीरसिंह ने अपना "पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की मृण-मूर्तियों एवं पाषाण-मूर्तियों का अध्ययन" नामक शोध-प्रबन्ध पूर्ण करके विश्वविद्यालय में जमा करा दिया है। इन सबके अतिरिक्त विभाग में शोध-

कार्य उच्चस्तर का हो रहा है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल नेतृत्व में निम्न विद्यार्थी महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य सम्पन्न करने की दिशा में अग्रसर हैं :

नाम	विषय	निर्देशक
१. श्री जसवीर मलिक	–प्राचीन भारत में पौरोहित्य	डा० श्यामनारायण सिंह
२. श्री भारतभूषण	–गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० काश्मीर सिंह
३. श्री विनोद शर्मा	–प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थायें	डा० काश्मीर सिंह
४. श्री जगदीशचन्द्र ग्रोवर	–ब्रह्मोनिकल स्कल्प्चरस अन्डर दी पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
५. श्री फैयाज अहमद	–गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	डा० जबरसिंह सेंगर
६. श्री सुरेशचन्द्र	–पश्चिम उत्तर-प्रदेश में चौहान जाति का इतिहास	डा० जबरसिंह सेंगर
७. कु० मधुबाला	–महाभारतकालीन युद्ध-प्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र	डा० जबरसिंह सेंगर
८. श्री जितेन्द्रनाथ	–दी ध्यानो बुद्धा, देयर प्रज्ञाज एण्ड बोधिसत्त्वाज इन इन्डियन आर्ट	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
९. श्रीमती साधना मेहता	–प्राचीन भारत में शक्तिपूजा	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
१०. श्रीमती डॉली चटर्जी	–प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालंकरणों का चित्रण	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
११. श्री आर्मेन्द्र सिंह	–प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा

१२. श्री सुधाकर शर्मा — बुद्धिस्ट स्कलप्चर अन्डर दी पालाज — डा० विनोदचन्द्र सिन्हा

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा शैक्षिक गतिविधियाँ :

इस सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार लेख प्रकाशित हुए। प्रथम लेख "प्रह्लाद" शोध-त्रैमासिक पत्रिका के संग्रहालय-विशेषांक में "संग्रहालय – संक्षिप्त परिचय" तथा द्वितीय दिव्यानन्द शारदा स्मारिका में "वृहत्तर भारत में भारतीय संस्कृति"। पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व" पर समीक्षात्मक निबन्ध का भी लेखन डा० सिन्हा ने किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की "शोध-सारावली" के प्रकाशन में संयोजक-सम्पादक की भूमिका डा० सिन्हा की रही, जिसके फलस्वरूप उक्त सारावली प्रकाशित हो सकी। फरवरी ८८ में राजकीय स्नातकोत्तर कालेज, ऋषिकेश में इतिहास परिषद् का उद्घाटन भी डा० सिन्हा द्वारा किया गया। डा० सिन्हा का एक लेख गुरुकुल पत्रिका के संस्कृति-अंक में भी प्रकाशित हुआ।

वर्तमान समय तक डा० सिन्हा की १०, डा० सेंगर की १ तथा डा० सिंह की २ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर का एक लेख "प्रह्लाद" के पुरातत्व संग्रहालय विशेषाँक में "संग्रहालय में श्रद्धानन्द वीथिका" प्रकाशित हुआ। डा० सेंगर ने "आल इण्डिया म्युजियम कान्फ्रेंस में इस वर्ष ८-१० जनवरी को भाग लिया तथा वहाँ पर आपने एक पेपर पढ़ा।

विभाग के लेक्चरर डा० राकेशकुमार शर्मा के दो लेखों के प्रकाशन की स्वीकृति जे०बी०ओ०आर०एस० से मिल चुकी है। इस वर्ष वि०वि० की पत्रिका "प्रह्लाद" के पुरातत्व संग्रहालय विशेषांक में "पुरातत्व संग्रहालय की पाण्डुलिपियाँ" नामक लेख प्रकाशित हुआ। विश्वविद्यालय की शोध-सारावली के कार्य में भी डा० शर्मा का विशेष योगदान रहा। एक लेख गुरुकुल-पत्रिका के संस्कृति-अंक में भी प्रकाशित हुआ।

इस वर्ष विश्वविद्यालय प्रशासन ने पुरातत्व के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विभाग को ५००० रु० की धनराशि दी। प्रशासन को उसके इस प्रगतिशील कार्य के लिये विभाग की ओर से धन्यवाद। भविष्य में इस राशि को बढ़ाने हेतु आग्रह विभाग द्वारा किया जा चुका है। उक्त राशि से विभाग ने इस वर्ष हरिद्वार के समीपवर्ती उत्खननयोग्य स्थलों का सर्वेक्षण किया।

यह सर्वेक्षण विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के नेतृत्व में अत्यन्त सफल प्रयास रहा। इस सर्वेक्षण में विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह तथा संग्रहालय के क्यूरेटर श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव की विशेष भूमिका रही। पुरातत्व सम्बन्धी विषय पर उनका विशेष अधिकार है। सर्वेक्षण में डा० जबरसिंह सेंगर, डा० काश्मीर सिंह, डा० राकेशकुमार शर्मा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा तथा विभाग के लिए कुछ अमूल्य पुरातात्विक महत्व की वस्तुओं का संग्रह इस सर्वेक्षण की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी :

विभाग ने इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान के सहयोग से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का विषय था "प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन"। पूरे देश से संगोष्ठी में भाग लेने के लिए इतिहासविद् पधारे, जिनमें निम्न उल्लेखनीय हैं—प्रो० बी०एन० पुरी, प्रो० उपेन्द्र ठाकुर, प्रो० के०डी० वाजपेयी तथा डा० आर०सी० अग्रवाल आदि। संगोष्ठी का कुशल निर्देशन प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा द्वारा किया गया। प्रबन्धसचिव की भूमिका डा० भिण्डर की रही। आवास-व्यवस्था को डा० सेंगर व डा० एस०एन० सिंह ने सम्भाला। आतिथ्य एवं भोजन की व्यवस्था का प्रबन्ध डा० राकेश शर्मा ने किया। आये हुए अतिथियों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। सत्रों के मध्य पत्र-वाचन की व्यवस्था में श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने सराहनीय भूमिका अदा की।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ :

अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त वि०वि० के प्रशासन में भी विभाग का योगदान उल्लेखनीय कहा जायेगा। विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा ने वि०वि० के वित्ताधिकारी का कार्यभार भी संभाला। डा० सेंगर पुरातत्व संग्रहालय के निर्देशक पद पर कार्य कर रहे हैं। विभाग के अन्य रीडर डा० श्यामनारायण सिंह विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव का कार्य गत वर्षों की भाँति कुशलता से कर रहे हैं। डा० भिण्डर ने इस वर्ष भी उप-परीक्षाध्यक्ष के कार्य को पूर्ण गरिमा के साथ किया। डा० राकेश कुमार शर्मा को इस वर्ष वि०वि० प्रशासन द्वारा एन०सी०सी० का कार्यभार सौंपा गया, जिसे वे पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर वि०वि० प्रशासन द्वारा सौंपे गये कार्यों को विभागीय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सम्पन्न किया है।

—बिनोदचन्द्र सिन्हा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

पुरातत्व संग्रहालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय ने सत्र १९८७-८८ में ८१ वर्ष पूर्ण कर लिये हैं। संग्रहालय के विकास में विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों का समय-समय पर सहयोग मिलता रहा, जिसका ही ये परिणाम है कि पुरातत्व संग्रहालय अपने रूप को निखार पाया है।

विश्वविद्यालय को सत्र १९८६-८७ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय के मद में, मात्र कर्मचारियों का वेतन एवं २४,०००) रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश शासन द्वारा एवं भारत सरकार (संस्कृति विभाग एवं आरकाइव्स) से जो हमें अनुदान प्राप्त हुए हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार है :—

१— भारत सरकार से रु० ४५,०००) की ग्रान्ट प्राप्त हुई थी, जिसमें मुद्रा कक्ष के शोकेसेज तैयार कराये गये और अस्त्र-शस्त्र एवं प्लास्टर कक्ष एवं अष्टधातु कक्ष में पंखे लगवाये गये, क्योंकि इन दीर्घाओं में कोई पंखा नहीं था। इसका उपयोग-पत्र चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट द्वारा भारत सरकार को भेज दिया गया है।

२— भारत सरकार से फोटो कार्ड इन्डेक्सिंग हेतु ५५,०००) रुपये की ग्रान्ट स्वीकृत हुई थी, जिसमें भारत सरकार से प्रथम किश्त १३,७५०) रुपये अनुदान के रूप में प्राप्त हुई थी। इसमें से प्रस्तर प्रतिमा, मृण्मूर्तियाँ एवं अष्टधातु प्रतिमा की पुरातात्विक सामग्री के फोटो करवाये गये। इसका उपयोग प्रमाण-पत्र चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट द्वारा भारत सरकार को भेज दिया गया है।

३ — उत्तर प्रदेश सरकार से १२ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ था, जिसमें मुद्राकक्ष के लिये एक बड़ा शोकेस एवं दो बड़े पैडस्टल एवं पंखे क्रय किये गये हैं। इसका उपयोगपत्र उत्तर प्रदेश सरकार के विभाग द्वारा आडिट होकर जा चुका है।

४— आरकाइव्स विभाग, भारत सरकार द्वारा ३० हजार रुपये का अनुदान पाण्डुलिपियों की सुरक्षा हेतु प्राप्त हुआ है। इसके उपयोग करने का समय अक्टूबर १९८८ है। इसमें वुडेन थाइमोल फ्यूमीगेशन चैम्बर बनकर तैयार हो गया है। एग्जास्ट फैन एवं पी-डाइक्लोरीबेन्जीन स्टील फ्यूमीगेशन चैम्बर विषयक क्रय करने की कार्यवाही प्रगति पर है। आशा है विश्वविद्यालय के अधिकारियों के सहयोग से इस ग्रान्ट का उपयोग समय पर हो जायेगा।

५— उत्तर प्रदेश सरकार से १५ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है, जिसमें से स्वामी श्रद्धानन्द गैलरी के विकास हेतु राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय, नई दिल्ली से श्रद्धानन्द के जीवन से सम्बन्धित छायाचित्रों को तैयार करवाने के लिये ३५०० रुपये की धनराशि अग्रिम रूप से जमा कर दी गयी है। फोटो प्राप्त होने पर कार्यक्रमानुसार स्वामी जी से सम्बन्धित छाया-चित्रों को इस कक्ष में प्रदर्शित किया जायेगा। इस ग्रान्ट के उपयोग का समय ३० जून है। आशा है इसे समय पर उपयोग कर लिया जायेगा।

६— माननीय मुख्यमन्त्री द्वारा घोषित एक लाख का अनुदान चित्रकला कक्ष, अस्त्र-शस्त्र कक्ष आदि हेतु शोकेसेज एवं अन्य कार्यों हेतु प्राप्त हुआ है। इसके उपयोग का समय २३ नवम्बर, १९८८ है। आशा है यह कार्य भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के सहयोग से शीघ्र सम्पन्न हो जायेगा।

इस वर्ष पुरातत्व संग्रहालय में विभिन्न दानदाताओं की कृपा से प्राप्त वस्तुओं का विवरण निम्न प्रकार है—

१— डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (भूतपूर्व विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) द्वारा प्रशंसा ताम्र-पत्र, अभिनन्दन-पत्र, आदि १० की संख्या में प्राप्त हुये हैं, जिनके प्रदर्शन की व्यवस्था यथाशीघ्र की जायेगी।

२— डा० ज्ञानचन्द्र जी रावल, उपाध्याय हिन्दी विभाग ने १२ सिक्के (ताम्र सिक्के) आधुनिककाल के भेंटस्वरूप संग्रहालय को प्रदान किये।

३— इसी प्रकार श्री रामकुमार नारंग, ज्वालापुर ने आधुनिक काल (ताम्र एवं निकिल) के २२ सिक्के सप्रेम संग्रहालय को भेंट किये।

४— स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्मस्थल तलवन से एक प्राचीन कृष्ण की मूर्ति श्री रघुवीरचन्द्र जोशी ने भेंटस्वरूप संग्रहालय को प्रदान की। इस मूर्ति का एक हाथ खण्डित था, जिसे जोड़कर संग्रहालय में सुरक्षित कर लिया गया है।

व्यवस्थात्मक कार्य :

(अ) इस संग्रहालय की गैलरियों को हमारे संग्रहालय स्टाफ ने उनकी समुचित व्यवस्था के लिये अलग-अलग जिम्मेदारियाँ वहन की हुई हैं। इनमें मृण्मूर्तियाँ, सिन्धु सभ्यता (मोहन जोदाड़ो, कालीबंगा), कापर होर्ड्स (ताम्रनिधि उपकरण), अष्टधातु कक्ष एवं चित्रकला कक्ष की देख-रेख एवं उनको सुचारू रूप से व्यवस्थित रखने का श्रेय श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, संग्रहाध्यक्ष को है। इसके साथ ही दर्शकों को निर्देशन एवं सुविधायें उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भी वहन कर रहे हैं।

(ब) इसी प्रकार से प्रस्तर प्रतिमाकक्ष, मुद्राकक्ष एवं हस्तलिखित ग्रन्थकक्ष, नोट्स, वीड्स आदि की देख-रेख एवं उनको प्रदर्शित करने की जिम्मेदारी श्री सुखवीरसिंह, सहायक संग्रहाध्यक्ष वहन कर रहे हैं। साथ ही दर्शकों को संग्रहालय दिखाने आदि का भी कार्य करते रहते हैं।

(स) संग्रहालय सहायक श्री वृजेन्द्रकुमार जैरथ अस्त्र-शस्त्र कक्ष, मृद्भाण्ड कक्ष, प्लास्टर कास्ट अनुकृतियाँ, स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष, भूगर्भीय वनस्पति विभाग, लिपि चार्ट आदि की देख-रेख एवं प्रदर्शन की व्यवस्था देख रहे हैं। साथ ही दर्शकों को भी सुविधायें उपलब्ध कराते रहते हैं।

उक्त गैलरियों हेतु गैलरी अटेंडेन्ट मात्र एक श्री रमेशचन्द्र पाल ही हैं। जबकि, अन्य संग्रहालयों में हर गैलरी में एक-एक अटेण्डेन्ट होता है। हम गैलरी अटेण्डेन्ट बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

इस वर्ष संग्रहालय में दर्शकों की संख्या ७३०४ रही है। संग्रहालय आने वाले कुछ विशिष्ट संग्रहालयदर्शकों के निम्न नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :

(१) श्री अशोक मरवाह, एडवोकेट, नई दिल्ली।
(२) श्री प्रेम अहूजा, आई०एफ०एस० (इण्डियन फारेन सर्विस)।
(३) श्री जगदीशप्रसाद शर्मा, बैंक अध्यक्ष।
(४) श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।
(५) श्री सतीशकुमार वेदालंकार।
(६) जस्टिस चन्द्रप्रकाश, अवकाशप्राप्त न्यायमूर्ति, इलाहाबाद उच्च न्यायालय।

(७) डा० पांड्या, निदेशक ब्रह्मवर्चस्व शोध संस्थान, हरिद्वार।

(८) कमोडोर श्री सत्यवीर, सलाहकार वि०वि० अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

(९) श्री आर०एस० चितकारा, भूतपूर्व निदेशक यूनिवर्सिटीज, भारत सरकार नई दिल्ली।

उक्त महानुभावों ने संग्रहालय के विषय में प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ दी हैं। साथ ही संग्रहालय के विकास आदि हेतु कुछ सुझाव प्राप्त हुए हैं, जिन पर संग्रहालय विशेषरूप से जागरूक है।

सामान्यत: संग्रहालय दर्शकों के लिए प्रात: १० बजे से सायं ४ बजे तक खुला रहता है। गर्मियों में गर्मी की स्थिति को देखते हुए, दर्शकों की सुविधा के अनुसार प्रात: ७ बजे से १ बजे तक भी कर दिया जाता है। संग्रहालय में विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं :

१. निदेशक	डा० जबरसिंह सेंगर
२. संग्रहाध्यक्ष	श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव
३. सहायक संग्रहाध्यक्ष	श्री सुखवीर सिंह
४. संग्रहालय सहायक	श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ
५. लिपिक	श्री बालकृष्ण शुक्ल
६. गैलरी अटेण्डेन्ट	श्री रमेशचन्द्र पाल
७. भृत्य	श्री ओमप्रकाश
८. चौकीदार	श्री वासुदेव मिश्र
९. माली	श्री गुरुप्रसाद
१०. सफाई कर्मचारी	श्री फूलसिंह

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के अधिकारियों के निम्न कार्य उल्लेखनीय हैं :

निदेशक

१. आल इण्डिया म्यूजियम कांफ्रेन्स भोपाल के अधिवेशन में ८ से १० जनवरी में सम्मिलित हुए एवं वहाँ म्यूजियम आउट रिच प्रोग्राम एडल्ट एजूकेशन के माध्यम पर पेपर पढ़ा।

२. 'पुरातत्व संग्रहालय में श्रद्धानन्द वीथिका' नामक लेख 'प्रह्लाद' पत्रिका के संग्रहालय विशेषांक में प्रकाशित हुआ ।

३. एक्सप्लोरेशन आदि कार्य में लालढांग, पाण्डुस्रोत एवं कालसी आदि स्थानों का सर्वेक्षण किया ।

४. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ११ से १४ अक्टूबर तक आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' में अपना सक्रिय योगदान दिया ।

संग्रहाध्यक्ष

१. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों के सर्वेक्षणकार्य में सहयोग किया ।

२. इस सत्र में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :

(अ) आर्य समाज के सजग प्रहरी श्री सोमनाथ मरवाह, गुरुकुल पत्रिका वार्षिकोत्सव एवं दीक्षान्त विशेषांक, अप्रैल-मई १९८७, पृष्ठ १९-२४ ।

(ब) वाल्मीकीय रामायण में वर्णित गुप्तचर व्यवस्था, गुरुकुल पत्रिका, अंक ३-४, जून १९८७, पृष्ठ ५-१२ ।

(स) भारतीय मृण्मूर्तियाँ एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मृण्मूर्ति संग्रह, प्रह्लाद संग्रहालय विशेषांक, जुलाई से सितम्बर १९८७, पृष्ठ २२ से २७ ।

(द) आर्य समाज के कर्मठ व्यक्तित्व—श्री सोमनाथ मरवाह, भाग-१, आर्य मर्यादा अंक, जुलाई १९८७ ।

(च) आर्य समाज के कर्मठ व्यक्तित्व—श्री सोमनाथ मरवाह, भाग-२, आर्य मर्यादा अंक, अगस्त १९८७ ।

इसके अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ११ से १४ अक्टूबर, १९८७ तक आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' में सक्रिय योगदान दिया तथा सिन्धु सभ्यता में स्थानीय स्वशासन की अवधारणा पर लेख प्रस्तुत किया।

सहायक संग्रहाध्यक्ष

सहायक संग्रहाध्यक्ष के इस वर्ष निम्न लेख प्रकाशित हुए :

१. 'गुरुकुल संग्रहालय में सुरक्षित पाषाण प्रतिमायें', प्रह्लाद संग्रहालय विशेषांक, पृ० ३१-३८।

२. 'गुरुकुल संग्रहालय की मुद्रा वीथिका', प्रह्लाद संग्रहालय विशेषांक, पृ० ४८-५०।

इसके अतिरिक्त 'पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पाषाण मूर्तियों तथा मृण्मूर्तियों का अध्ययन' विषय पर अपना शोधप्रबन्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत किया। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा ११ से १४ अक्टूबर १९८७ में 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' विषय पर आयोजित सेमिनार में सक्रिय योगदान दिया।

संग्रह-सहायक

संग्रह-सहायक श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ का इस वर्ष एक लेख 'मृदिकापात्र संग्रह' प्रह्लाद के संग्रहालय विशेषांक में प्रकाशित हुआ।

प्राचीन भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में आयोजित सेमिनार में अपना सक्रिय योगदान दिया।

—डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक

अंग्रेजी विभाग

विभागीय प्राध्यापक—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय, एम०ए०, पी-एच०डी०, पी०जी०सी.टी०ई०, डिप०टी०ई० (सी०आई० एफ०एल०), प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

(२) श्री सदाशिव भगत, एम०ए०, रीडर।

(३) डा० नारायण शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, रीडर।

(४) डा० श्रवणकुमार, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

(५) डा० अम्बुजकुमार शर्मा, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

विभागीय गतिविधियाँ तथा अनुसन्धान में प्रगति—

विभाग में एम०ए० तथा पी-एच०डी० तक अध्ययन की व्यवस्था है। एम०ए० प्रथम वर्ष में ५० प्रतिशत अंक प्राप्त होने पर, द्वितीय वर्ष में लघुप्रबन्ध (Dissertation) लेने की तथा दोनों ही वर्षों में मौखिक परीक्षाओं का प्रावधान है। विभाग में वर्तमान समय में पाँच में मे चार प्राध्यापक पी-एच.डी. हैं, तथा अन्य एक डाक्टरेट उपाधि हेतु शोध-कार्य में संलग्न हैं और शीघ्र ही डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर लेंगे।

विभाग में भाषा-विज्ञान प्रयोगशाला का भी विकास किया गया है।

विभाग में अनुसन्धान की विशेषता यह है कि इसमें भारतीय आंग्ल-साहित्य (Indo-English) तथा भारतीय विचार और विषयों (Indian thoughts and themes) एवं तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) को प्राथमिकता दी जाती है। इस समय विभाग के विभिन्न अध्यापकों के अधीन लगभग १२ शोधार्थी शोध कर रहे हैं। कुछ अन्य अभ्यार्थियों के अनुसन्धान हेतु आए हुए प्रस्ताव और आवेदन-पत्र विभाग की रिसर्च डिग्री कमेटी ने अस्वीकृत कर दिये थे। अंग्रेजी विभाग की ओर से अनुसन्धान की उन्नति हेतु पुस्तकालय में नवीन पुस्तकें तथा अनुसन्धान-पत्रिकाएँ एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ भी मँगवाए गये हैं।

गत वर्ष अंग्रेजी विभाग में एक त्रैमासिक दक्षता प्रमाण-पत्र कोर्स भी प्रारम्भ किया गया। इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी बोलना सिखाना है।

इस वर्ष विभाग में रिसर्च डिग्री कमेटी तथा बोर्डस् ऑव स्टडीज़ की बैठकें हुईं।

विभाग में अनेक विद्वानों के भाषण भी हुए। मुख्य रूप से प्रो० टी.आर. शर्मा का "कैथारसिस" महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों ने भी सेमिनारों में पेपर पढ़े।

विभागीय शिक्षकों के व्यक्तिगत कार्य-विवरण—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय—

विभागाध्यक्ष डा. राधेलाल वार्ष्णेय ने १९८४ में सोवियत संघ की यात्रा की। मास्को और लेनिनग्राद के विश्वविद्यालयों तथा उच्च-संस्थानों में भाषण दिए। यू.जी.सी. समर इन्स्टीट्यूट इंगलिश में उच्चस्तर का कार्य करने के कारण यू.जी.सी. फैलोशिप प्राप्त की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट ३१० में अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा शील्ड प्राप्त की। लगभग १०० पुस्तकें, ५० लेख और कविताएँ प्रकाशित। अनेक पुस्तकों की समीक्षा लिखी। उच्चस्तरीय सम्मेलनों का संचालन किया। वैदिक-पाथ के सम्पादन तथा प्रशासनिक कार्यों में सहयोग। अनेक साहित्यिक सम्मेलनों, संगोष्ठियों, टीचर्स ट्रेनिंग सम्मेलनों में सक्रिय योगदान तथा अंग्रेजी प्राध्यापकों को प्रशिक्षण एवं विभिन्न रिपोर्ट आदि का लेखन-सम्पादन।

परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य करके परीक्षाओं को सम्पन्न कराया। साथ हां "वैदिक-पाथ" के सम्पादन में सहायता प्रदान की। वार्षिक-विवरणी का सम्पादन किया। विश्वविद्यालय की वार्षिक-विवरणी का अंग्रेजी सारांश तैयार किया। यू.जी.सी. की विजिटिंग कमेटी के लिए "A View for Review" लिखा। विश्व-पुस्तक मेले का भ्रमण किया और अंग्रेजी साहित्य पर विश्वविद्यालय हेतु पुस्तकों का चयन किया।

(क) शोध निर्देशन—

निम्न शोधार्थियों को विभिन्न विषयों पर शोध करा रहे हैं:

१–पी०एस० नेगी — "एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव कीट्स"

२–ए० गुप्ता — "एक्सप्रेसिनिज्म एण्ड रिअलिज्म इन द प्लेज़ ऑव टिनैसी विलियम्स"

३—पी० चौधरी — "इमेजरी इन द प्लेज् ऑव क्रिस्टोफर फ्राई"

४—ए० मगन — "द थीम ऑव एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव बाइरन।"

५—राका गुप्ता — "मिस्टिसिज्म इन द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो "

६—एन०एल० शर्मा — "नेचर इन इन्डो-इंगलिश पोइट्री विद स्पेशल रैफरेन्स टु श्री अरविन्दो।"

७—आशा सरदाना — "द इनफ्लूअन्स ऑव द वेदाज् आन श्री अरविन्दोज सावित्री"।

८—इस वर्ष आर.डी.सी. ने दो अन्य शोधार्थियों के शोध-विषय भी स्वीकृत कर दिए हैं। एक छात्र ने इस वर्ष डा० वार्ष्णेय के निर्देशन में लघु-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

(ख) कान्फ्रेंस तथा व्याख्यान—

१—मेरठ विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. कान्फ्रेंस में "द टीचिंग ऑव इंगलिश इन रसिया" पर व्याख्यान दिया।

२—रुड़की विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. सेमिनार में "ए लिंगविस्टिक एप्रोच टु ट्रांसलेशन" नामक पेपरवाचन।

(ग) लेखन, सम्पादन, प्रकाशन—

प्रकाशित पुस्तकें :

१. मेजर मूवमैन्टस इन इंगलिश लिट्रैचर।

२. मूवमैन्टस एण्ड ट्रेन्ड्स इन इंगलिश लिट्रेचर।

श्री सदाशिव भगत—रीडर।

(क) एक शोधार्थी स्वामी दयानन्द तथा अरविन्दो पर तुलनात्मक शोध कर रहा है।

(ख) अवध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी अनुसन्धान समिति की बैठकों में भाग।

(ग) रुड़की विश्वविद्यालय में "कल्चरल इन्टीग्रेशन एण्ड ट्रांसलेशन" नामक सेमिनार में भाग लिया।

(घ) विश्व-पुस्तक मेले का भ्रमण।

(३) **डा० नारायण शर्मा**—रीडर।

(क) चार शोध-विद्यार्थियों को पी-एच.डी. करा रहे हैं। इनके विषय टैगोर के काव्य में रहस्यवाद, राजा राउ की उपन्यास-कला एवं अंग्रेजी और भारतीय कवियों की अंग्रेजी कविता में स्वतन्त्रता, समानता और सौहार्द्र की भावनाओं से सम्बन्धित हैं।

(ख) विश्वविद्यालय तथा कालिज स्तर के सेमिनारों में भाग लिया।

(ग) निम्नलिखित लेख प्रकाशित होने वाले हैं :

१-रिद्म एण्ड इमेजरी इन द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो।

२—गीता एण्ड द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो।

३—श्री अरविन्दोज कान्सेप्ट ऑव ओवरहैड पोइट्री।

(४) **डा० श्रवणकुमार शर्मा**—प्रवक्ता।

(क) श्री अरविन्दो पर एक लेख प्रकाशित।

(ख) रुड़की में बी.एस.एम. कालेज में इंगलिश क्रिटीसिज्म पर हुई कान्फ्रेन्स में भाग लिया और आर्नल्ड पर पेपरवाचन किया।

(ग) अन्य विश्वविद्यालयीय तथा कालेज स्तर की कान्फ्रेन्स तथा सेमिनारों में भाग लिया।

(घ) लेखों का प्रकाशन।

(५) **डा० अम्बुज शर्मा**—प्रवक्ता।

(क) सभी विभागीय गतिविधियों में योगदान।

(ख) मुल्कराज आनन्द पर शोध-प्रबन्ध को प्रकाशित कराने के प्रयत्न।

(ग) रुड़की में बी.एस.एम. कालेज में इंगलिश क्रिटीसिज्म पर हुए सेमिनार में भाग लिया।

(घ) एक लेख प्रकाशित।

(ङ) खेलनिदेशक के रूप में कार्यरत।

—डा० आर०एल० वार्ष्णेय
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का यह सौभाग्य है कि इसके स्थापनाकाल में शाहपुरापीठ पर तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा प्रतिष्ठित रहे। हिन्दी के प्रख्यात वैयाकरण और भाषाशास्त्री आचार्य पण्डित किशोरीदास वाजपेयी ने भी कुछ समय यहाँ हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। विश्वविद्यालय का दर्जा पाने के बाद विश्वविद्यालय के संस्थापक-अध्यक्ष ने मध्यकालीन साहित्य सम्बन्धी शोधकार्य से इसका गौरव बढ़ाया। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान तथा शैलीविज्ञान के विशेषज्ञ डा० सुरेशकुमार विद्यालंकार भी इस विभाग के साथ संलग्न रहे। गुरुकुल के विद्यार्थियों में प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, अभयदेव विद्यालंकार तथा डा० हरिवंश कोछड़ ने जहाँ हिन्दी की उल्लेखनीय सेवा की वहाँ हिन्दीप्रचार और लेखन के क्षेत्र में डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया। सम्प्रति यहाँ के हिन्दी विद्यार्थी उच्च शिक्षणालयों में हिन्दी अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं।

विभागीय प्राध्यापक :

(१) डा० विष्णुदत्त राकेश, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी०लिट्०
—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

(२) रिक्त —रीडर

(३) डा० ज्ञानचन्द्र रावल, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता

(४) डा० भगवानदेव पाण्डेय, एम०ए०,पी-एच०डी०—प्रवक्ता

(५) डा० संतराम वैश्य, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता

इस वर्ष नियमित अध्यापन तथा अनुसंधान के अतिरिक्त विभाग के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दीप्रचार तथा लेखनकार्य में भी रुचि ली। विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में आयोजित भाषण-प्रतियोगिता में भाग लिया। हिन्दी-दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना के तहत श्री अश्विनीकुमार, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, निदेशालय के नेतृत्व में अहिन्दीभाषी क्षेत्र के हिन्दीअध्येता विद्यार्थियों का एक दल

विश्वविद्यालय में अध्ययनयात्रा के लिए आया। मद्रास, आसाम, बंगाल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के विद्यार्थियों के इस त्रिदिवसीय शिविर में जहाँ उनकी सर्जनात्मक क्षमता का जायज़ा लिया गया वहाँ उनकी हिन्दी अध्ययन सम्बन्धी जिज्ञासाओं और कठिनाइयों का समाधान भी किया गया। श्री कुलसचिव डा० अरोड़ा ने शिविर की सफलता में पूर्ण सहयोग दिया।

लखनऊ विश्वविद्यालय के आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्य प्रसाद दीक्षित, डी० लिट्० 'भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता' विषय पर हिन्दी विभाग के निमंत्रण पर व्याख्यान देने के लिए पधारे। अध्यक्षता उपकुलपति एवं आचार्य प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने की।

जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० नित्यानंद शर्मा का पदार्पण भी विश्वविद्यालय में हुआ। शोधकार्य के लिए इस वर्ष जो विषम स्वीकृत हुए उनमें आर्यसमाज की भूमिका का अध्ययन अपेक्षित समझा गया। फलतः महर्षि दयानन्द का हिन्दी गद्य, आर्यसमाज और भारतेन्दु मण्डल, मैथिलीशरण गुप्त और आर्यसमाज तथा यशपाल और आर्यसमाज विषय अनुसंधान के लिए स्वीकृत हुए।

विभाग की यह योजना है कि हिन्दी प्रचार- प्रसार, साहित्यसृजन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में आर्यसमाज और गुरुकुल कांगड़ी के अवदान का शोधस्तरीय मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाए। विभाग में अब तक लगभग चालीस शोधप्रबंध पी-एच०डी० के लिए स्वीकृत हो चुके हैं। 'शोध सारावली' में इस वर्ष इन सभी शोधप्रबंधों का सारांश प्रकाशित हो गया है। विभाग इसके लिए प्रेरक मान्य कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

शैक्षणिक दृष्टि से विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने मेरठ विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर महाविद्यालय इस्माइल नेशनल कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया तथा आधुनिक साहित्य और बदलते हुए जीवन-मूल्य, रीतिकाल का पुनर्मूल्यांकन तथा मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीयता विषय पर व्याख्यान दिए। शिवानन्द शताब्दी राष्ट्रीय संगोष्ठी, ऋषिकेश तथा प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन संगोष्ठी, गुरुकुल कांगड़ी में भी व्याख्यान दिए।

डा० राकेश ने इस वर्ष 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन' ग्रंथ का

सम्पादन किया। इसका विमोचन दीक्षान्त-समारोह में हुआ। शोधपत्रिकाओं और साहित्यिक ग्रन्थों में निबंध प्रकाशित हुए। 'हिन्दू धर्म विश्वकोश' लेखन की परामर्शदातृ समिति में भाग लिया।

विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने भी लेख लिखे तथा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में भाग लिया।

—डा० विष्णुदत्त राकेश
प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना १ अगस्त १९५८ को भारत के प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित श्री जवाहरलाल नेहरू के करकमलों द्वारा हुई थी। पिछले २९ वर्षों में इस संस्था ने इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, मिलिटरी के आफिसर और पी०सी०एस० अफसर तथा उच्चकोटि के वैज्ञानिक उत्पन्न किये हैं, जो देशसेवा में संलग्न है।

विज्ञान महाविद्यालय में इस समय २३ शिक्षक तथा २४५ छात्र बी०एस०सी० तथा एम०एस-सी० में अध्ययनरत हैं। योग्यता तथा प्रतिभा की पूरी जाँच करके ही छात्रों को प्रवेश दिया जाता हैं।

भारत सरकार से अनुमोदित हिमालय प्रोजेक्ट योजना, एन०एस०एस०, विज्ञान महाविद्यालय के शिक्षकों की देख-भाल में चल रही हैं। हाकी, क्रिकेट, वालीबाल, बैडमिन्टन आदि खेलों में यहाँ के छात्र अग्रणी हैं। साँस्कृतिक कार्यक्रमों में भी यहाँ के छात्र अग्रणी हैं।

जौलाई १९८८ से कम्प्यूटर कोर्स, बी०एस–सी० में भौतिक विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर साइंस के रूप में तथा कम्प्यूटर साइंस में पी०जी० डिप्लोमा शुरु हो रहा है। इससे विज्ञान महा विद्यालय आधुनिक युग की ओर बढ़ने की तैयारी कर रहा है।

—एस० सी० त्यागी
प्रिंसिपल

गणित विभाग

(१) **अध्यापक :**

एस०सी० त्यागी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
एस० एल० सिंह, प्रोफेसर
वी० पी० सिंह, रीडर
वी० कुमार, रीडर
एम० पी० सिंह, प्रवक्ता
हरबंशलाल, प्रवक्ता

❀ उमेशचन्द्र गैरोला, प्रवक्ता (१२ अगस्त १९८७ से १५ मई ८८ तक ।

❀ डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, रीडर के कुलसचिव पद पर कार्यरत होने के कारण अवकाश रिक्ति में तदर्थ नियुक्ति ।

(२) **छात्र संख्या :**

(क) बी.एस-सी. (भाग एक एवं दो) : १३९
(ख) विद्यालंकार : ०१
(ग) एम.एस-सी. : १२
(घ) शोध छात्र (पी-एच.डी. उपाधि हेतु : ०३

(३) **छात्रों की गणितीय कठिनाइयाँ :**

छात्रों की गणित सम्बंधी कठिनाइयों को विभागीय अध्यापकों द्वारा दूर किया जाता है तथा गणित विषय में रुचि लेने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाता है।

(४) **शोध छात्रों को समय देना :**

शोधछात्र लगन से कार्य करते हैं तथा उनको नियमित समय दिया

जाता है। शोध निर्देशक एवं विभाग के अन्य अध्यापकों के बीच शोधछात्रों को सेमिनार देने के लिए प्रेरित किया जाता है तथा सेमिनार देने से उनका कार्य सहज होता है।

(५) विभागीय अध्यापकों द्वारा शोध-कार्य :

विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशित/प्रकाशनार्थ स्वीकृत शोध-पत्रों का विवरण—

1. S.L Singh and Virendra Arora : Fixed point theorems for family of mappings, Lusan Kyo. Math. J. 3(1987).

2. S.L. Singh : Contractors and fixed points (joint with J.H.M. Whitfield), Colloq. Math (1987/88).

3. S.L. Singh : Fixed point theorems for expansion mappings on probabilistic metric spaces (joint with B.D. Pant and R.C. Dimri), Honam Math. J. I. (1987), 77-81.

4. S L. Singh : Coincidence and fixed point theorems for family of mappings on Menger spaces and extension to uniform spaces (joint with B.D. Pant) Mathematica Japonica, 33 (1988).

5. एस०एल० सिंह एवं वी० कुमार : उपगामी क्रमविनिमयी प्रतिचित्रणों हेतु २-दूरीक समष्टि में एक स्थिर बिंदु प्रमेय, विज्ञान परिषद् अनुसंधान पत्रिका, जुलाई (१९८७)।

6. एस०एल० सिंह एवं वी० कुमार : तदैव II, तदैव (१९८७)।

7. Harbansh Lal : On multi-input bi-tandum queue modelling (joint with A.D. Heydari), Pure Appl. Math. Sci. 25 (1987).

(६) विभागीय अध्यापकों के शोध-प्रबन्ध :

(क) श्री एम.पी. सिंह ने मेरठ विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० (गणित)

उपाधि हेतु अप्रैल १९८८ में अपना शोधप्रबन्ध "Some Vibration Problems of Isotropic Elastic Plates of Varying Thickness" जमा किया।

(ख) गढ़वाल विश्वविद्यालय की डी०फिल्० (गणित) उपाधि हेतु श्री हरबंशलाल अपना शोधप्रबन्ध ' Some Problems of Queueing and Sequencing Theory" जमा करने की प्रक्रिया में हैं।

(७) अधिवेशन में भाग लेना :

डा० एस०एल० सिंह तथा श्री वी० कुमार एवं श्री हरबंशलाल ने उ०प्र० राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन (ऋषिकेश १९८७) में क्रमशः उपाध्यक्ष तथा सदस्य के रूप में भाग लिया। डा० सिंह ने "प्राचीन भारतीय गणित में शून्य द्वारा विभाजन" पर एक संक्षिप्त वार्ता भी दी।

(८) शोध-पत्रिका का प्रकाशन :

प्रोफेसर एस०सी० त्यागी के निर्देशन में प्रधानसम्पादक डा० एस०एल० सिंह ने "प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध-पत्रिका—Journal of Natural and Physical Sciences" के प्रवेशांक (खण्ड एक, १९८७) का प्रकाशन रिकार्ड समय में किया, जिसका विमोचन श्री कुलाधिपति द्वारा विगत दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर हुआ। विषयविशेषज्ञों की राय के अनुसार ही इस प्रवेशांक में कुल नौ शोध प्रपत्र सम्मिलित हैं। उल्लेखनीय है कि शोध-पत्रिका का अन्तर्राष्ट्रीयमानक बनाये रखा गया है और प्रसन्नता की बात है कि शोध-पत्रिका को ISSN (International Standard Serial Number) भी प्राप्त हो गया है। शोध-पत्रिका का प्रवेशांक देश व विदेशों में इस प्रत्याशा में लगभग २५० स्थानों को प्रेषित किया जा रहा है कि विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित शोध-पत्रिकाएँ पुस्तकालय को विनिमय में प्राप्त हो सकें।

इंस्टीट्यूट आव मैथेमेटिक्स, हनोई (वियतनाम) ने अपनी शोध-पत्रिका विनिमय में भेजने की स्वीकृति प्रदान की है, तथा युगोस्लाविया के तीन शोध-संस्थानों ने तो अपनी शोध-पत्रिकाएँ प्रेषित भी कर दी हैं। विनिमय अभियान को सक्रियतापूर्वक चलाये जाने पर लगभग दो सौ शोध-पत्रिकाओं के विनिमय में प्राप्त करने की आशा की जा सकती है।

(६) हिन्दी भाषा में गणितीय शोध-प्रकाशन :

हिन्दी भाषा में गणितीय शोध-कार्य का प्रकाशन प्रायः मुश्किल माना जाता है। शोध-पत्रिका में विज्ञान एवं गणित के शोध-पत्रों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये जाने का प्रावधान रखा गया है। विभाग में कार्यरत दो शोध-छात्रों के अतिरिक्त श्री विजयेन्द्र कुमार अपना शोध-कार्य हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

—प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी
अध्यक्ष

भौतिकविज्ञान विभाग

भौतिकविज्ञान विभाग का निर्माण यू. जी. सी. से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। एक प्रवक्ता की स्वीकृति यू.जी.सी. ने पिछले वर्ष दे दी थी। दो प्रयोगशाला—बी.एस-सी. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष कमरा, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम-प्रकोष्ठ हैं। बी.एस-सी के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी, बी०एस-सी. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए सभी उपकरण विद्यमान हैं। बी.एस-सी. के लिए अधिकतर पुस्तकें यू.जी.सी. (Dev) ग्रान्ट से खरीदी गई हैं। एक Colour T.V., U. G. C अनुदान से भौतिकी विभाग द्वारा खरीदा गया। इससे B Sc. के विद्यार्थियों को U.G.C. प्रोग्राम से बहुत लाभ पहुँच रहा है।

भौतिक विज्ञान में बी.एस-सी. तृतीय वर्ष खोलने का प्रयास जारी है। आशा है कि अगले सत्र में दो लैब एवं उपकरण खरीदने की स्वीकृति मिलने पर बी.एस-सी. तृतीय वर्ष भौतिक विज्ञान की कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी जायेंगी।

भावी योजना—

(१) भौतिक विभाग में Post Graduate कक्षाएँ चालू करना।
(२) भौतिक विज्ञान विभाग में Research Programme शुरु करना।
(३) Project Work बी.एस-सी. तृतीय वर्ष के लिए एक प्रयोगशाला स्थापित करना।

स्टाफ -

(१) प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर, रीडर एवं अध्यक्ष।
(२) प्रो० बी.पी. शुक्ल, रीडर।
(३) डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल, प्रवक्ता
(४) डा० परमानन्द पाठक, प्रवक्ता
(५) रिक्त, प्रवक्ता

(६) श्री प्रमोदकुमार शर्मा, प्रयोगशाला सहायक
(७) श्री ठकुरासिंह, लैब ब्याय
(८) रिक्त, लैब ब्याय

सत्र १९८७-८८ में भौतिकविज्ञान विभाग में बी.एस-सी. प्रथम वर्ष में ७५ तथा द्वितीय वर्ष में ६७ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम —

(A) **बी.एस-सी. प्रथम खण्ड**
(1) Mathematical Physics.
(2) Classical and Relativitic Mechanics.
(3) Vibrations and Optics.
(B) **बी. एस-सी. द्वितीय खण्ड**
(1) Thermodynamics and Statistical Physics.
(2) Electricity and Magnetism.
(3) Atomic Physics and Quantum Mechanics.
(C) **बी०एस-सी० तृतीय खण्ड**
(1) Physics of Materials/Environmental Physics.
(2 Nuclear Physics.
(3, Electronics.

बी०एस-सी० तृतीय वर्ष में Project Work जो कि पूर्णरूप से व्यवहारिक होगा, विद्यार्थियों के लिए आधुनिक इलैक्ट्रोनिक यंत्रों को सीखने का अवसर देगा।

शक्षक-छात्र का अनुपात— १ : ३६

इस वर्ष T. D. C. Course की बी०एस-सी० की प्रथम वर्ष की कक्षाएँ नये पाठ्यक्रम के अनुसार चालू कर दी गई।

विभागीय उपाध्यायों का लेखनकार्य —

विभाग के सभी अध्यापकों के कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं रिसर्च जनरल में प्रकाशित हुए हैं। हरिशचन्द्र ग्रोवर, मेरठ विश्वविद्यालय में पी.एच-डी.

कार्य में लगे हुए हैं। इसके साथ ही साथ विज्ञान महाविद्यालय में Integrated Study of Ganga में P.I. के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रो० बी०पी० शुक्ल ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मार्च ३, १९८८ में पी०एच-डी० की थीसिस जमा कर दी है। इसके साथ-साथ, १५-३-८८ को रेडियो स्टेशन नजीबाबाद से 'हमारा पर्यावरण' पर Radio talk में भी भाग लिया। डा० परमानन्द प्रकाश ने भी एक U.G.C. Project लिया है तथा उस पर कार्य कर रहे हैं।

परीक्षा परिणाम—

पिछले वर्षों की भाँति १९८६-८७ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

—हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायनविज्ञान विभाग

विभाग में लगभग २०० से अधिक छात्र संख्या रही। बी.एस-सी. व पी.जी. डिप्लोमा कक्षाएँ नियमित रूप से प्रारम्भ की गईं व कोर्स समय में ही पूरे कराये गये। सामान्य / विशिष्ट विभागीय गतिविधियाँ निम्नवत रहीं।

१—पी.जी डिप्लोमा के छात्रों को पी.सी.आर.आई. हरिद्वार, डी.रि.लै. उ०प्र०, हरिद्वार तथा एच.पी.एल. गाजियाबाद ले जाकर प्रशिक्षण दिलाया गया।

२—२१-९-८७ को स्व० श्री ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान-दिवस मनाया गया।

३—दिसम्बर १९८७ में विज्ञान महाविद्यालय में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम, कार्टून प्रदर्शनी आदि में डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, डा० कौशलकुमार व डा० रजनीशदत्त कौशिक ने सह-संयोजक का कार्य किया।

४—डा० कौशलकुमार ने विश्वविद्यालय सुन्दरीकरण का कार्यभार संभाला व १५ अगस्त व २६ जनवरी के समारोहों के आयोजनों में योगदान दिया।

शोध गतिविधियाँ :

१—अ) डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण का एक U.G.C. शोध प्रोजेक्ट चल रहा है। उन्होंने एक अन्य प्रोजेक्ट U.G.C. स्वीकृति हेतु भेजा है।

ब) उनके दो शोध-पत्र ग्रीक व कनाड़ा में होने जा रही कान्फ्रेन्सों में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए।

२—अ) डा० रणधीरसिंह को U.G.C. से एक शोध प्रोजेक्ट "सिन्थेसिस एण्ड इलेक्ट्रोकेमिकल स्टडीज आव मेक्रोसाइक्लिक काम्पलेक्सेज" स्वीकृत हुआ।

ब) उन्होंने एक अन्य शोध प्रोजेक्ट CSIR को भेजा।

स) डा० रणधीरसिंह ने "Industrial Effluents and Pollution Hazards" पर २२–२४ फरवरी, १९८८ को दिल्ली में हुई कान्फ्रेंस में भाग लिया।

द) उनका एक शोध-पत्र "5th IPMR (अल्बाना वि० वि०)" तथा दूसरा पत्र "XIII International Symposium on Macrocyclic Chemistry (W. Germany)" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए।

३—डा० रामकुमार पालीवाल ने जोधपुर वि०वि० में हुई Workshop cum Symposium on Polymer Aided Reactions में भाग लिया।

४—डा० इन्द्रायण ने जयपुर में "New trends in Kinetics and Mechanism and role of trace metals" पर हुई कान्फ्रेंस में भाग लिया।

५—अ) डा० रजनीशदत्त कौशिक को यू.जी.सी. से एक शोध प्रोजेक्ट "Kinetic Spectrophotometric identification and determination of organic amino compound of importance in minor amount in industrial effluents" स्वीकृत हुआ। इसकी अवधि दो वर्ष है।

ब) डा० कौशिक का एक शोध-पत्र कनाड़ा में होने जा रही कान्फ्रेंस में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

अन्य गतिविधियाँ :

१—डा० रजनीशदत्त कौशिक विश्वविद्यालय की शिक्षापटल के सदस्य चुने गये।

२—विभागीय सदस्यों द्वारा निम्नलिखित लेख प्रकाशित किये गए :

अ) "अति सूक्ष्म उपयोगी जीवाणु", डा० रामकुमार पालीवाल, आर्यभट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० ३४ से ३६)।

ब) "यूकेलिप्टिस कितना लाभप्रद, कितना हानिकारक" डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, आर्यभट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० २८ से ३३)।

स) "संश्लेषित रंगपदार्थों से हानियाँ", डा० रजनीशदत्त कौशिक, आर्य-भट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० ३७ से ३९)।

द) "Gurukula System of Education and New Education Policy", Dr. Rajneesh Dutt Kaushik, Proceedings of National Philosophy Conference on Values in Education. 16, 17, 18 May, 1987. p.p. 21 to 23.

—डा० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

जन्तुविज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तुविज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

१—विभाग ने इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) से छात्रों को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त करने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाने की अनुमति प्राप्त कर ली है। एक विद्यार्थी ने डा० बी०डी० जोशी के शोध-निदेशन में अपनी 'सिनोप्सिस' भी विश्वविद्यालय में जमा की है।

२—सितम्बर १९८७ में विभाग में एक चारदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला [Annual Workshop of the Research Projects of MAB (DOEn)] का आयोजन डिपार्टमेंट आव इनवायरनमेंट, मिनिस्ट्री आव इनवायरनमेंट, फोरेस्ट एण्ड वाइल्ड लाइफ, भारत सरकार के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। विभागाध्यक्ष डा० जोशी इस कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक थे।

३—दिसम्बर १९८७ में 'फिश एण्ड देयर इनवायरनमेंट' नामक शोध-पुस्तक का प्रकाशन कराया गया। इस पुस्तक में भारत के ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों के शोधपत्र संकलित हैं। इस प्रकाशनकार्य हेतु डी०एस०टी० (भारत सरकार) एवं यू०पी०सी०एस०टी० (उ०प्र० सरकार) से आंशिक अनुदान प्राप्त हुआ था।

४—मार्च १९८७ में 'वन्यजन्तु संरक्षण' नामक विषय पर, छात्रों के ज्ञानवर्धन हेतु एक व्याख्यान का आयोजन कराया गया। यह व्याख्यान अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डा० आशा सकलानी (गढ़वाल विश्वविद्यालय) के द्वारा दिया गया।

विभागीय प्राध्यापकों का शोध एवं प्रसार कार्य :

प्रो० बी०डी० जोशी (विभागाध्यक्ष)—

डा० जोशी के विभिन्न शोधपत्र कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है—

1. Changes in some blood values of C. batracus exposed to lead nitrate. Him. J. Env. Zool. 1(1) : 33-36.

2. Sex related hematological values of G. domesticus. Him. J. Env. Zool. 1(2) : 80-83.

3. Cytomorphological classification and key to the identification of circulating blood of freshwater teleost from India. Him. J. Env. Zool. 1(2) : 98-113.

4. Chemical constituent of gonads during different physiological phases of C. batracus. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp. 110-113.

5. On some hematological values of the fish N. rupicola as affected by a sudden change in its ambient water salinity. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp 11–15.

6. Blood values of some freshwater fishes under varying ecophysiological and toxic conditions (Abstract). Natl. Symp. on past, present & future of Bhopal lakes. July 1987 (Bhopal).

7. Physio-biochemical alterations in fish-blood under stress (Abstract). X Annual Conf. Ind. Soc. Comp. Ani. Physiol., Dec. 1987 (Hyderabad).

8. Blood values of the freshwater fishes under diseases (Abstract). National Seminar on Aquatic Biol., March, 1988 (Nainital),

9. Effect of Trypanosome infection on some blood value of fishes (Abstract). All India Seminar on Ichthyology, Santiniketan, Nov. 1987.

आमन्त्रित वक्तव्य :

1. "Progess, problem & prospect of an Himalayan Eco-development Project." In : Natl. Seminar on the role of young scientists in Env. Conservation & Management, Oct. '87. मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।

2. "On some physiological changes in the blood of fishes under stress". In : Natl. Seminar on recent trend in fish-biology, Dec, '87, मगध विश्वविद्यालय।

3. "On the effect of stress on some blood constituents of fresh-water fishes." In : Natl. Symp. Threatened Habitat. Jan. '88. मुरादाबाद।

4. Effect of stress on some blood values of freshwater fishes". In : I Conf. current trends in Zool teaching & Res., March '88. लखनऊ।

विविध लेख :

मोटाढाक (कोटद्वार : पौड़ी-गढ़वाल) क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण।

रेडियो वार्त्ता (आकाशवाणी नजीबाबाद से) :

१. बड़े-बड़े जलाशयों का उपयोग

१. वनों का महत्व

एम.एस-सी. डिस्सर्टेशन कार्य :

प्रो० जोशी के सुपरविज़न में दो एम०एस-सी० छात्रों ने लघु-शोधप्रबन्ध पर कार्य किया :

1. Isolation & Preliminary Genetic Analysis of Transposon Tn 5 Derivatives of Azospirillum brasilense. —अरविन्द मोहन

2. Haematological studies on some tubercular patients during a short-term period of treatment with special reference to Sex and Age. —अभयकुमार

संपादकीय कार्य :

1. मुख्य संपादक — "Fish & their Environment" (Proc. Natl. Symp. Fish & Env.)

2. मुख्य संपादक — "Himalayan Journal of Environment and Zoology".

3. संपादक — "Journal of Natural & Physical Sciences".

4. एडिटोरियल मेम्बर — आर्यभट्ट

शोध-परियोजनायें/शोध-निदेशन :

डा० जोशी के निदेशन में D.O.E. और U.G.C. द्वारा प्रदत्त दो शोध-परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है। डा० जोशी के एक शोध-छात्र को इस वर्ष कुमाऊँ विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त हुई है।

डा० टी.आर. सेठ (रीडर) :

डा० सेठ ने वि०वि० एवम् विभाग के क्रिया-कलापों में सक्रिय योगदान दिया। इनके सुपरविज़न में छात्र महेन्द्रकुमार ने निम्नलिखित लघु शोध-प्रबन्ध पर कार्य किया :

Antimicrobial Effects of Tinospora Cordifolia (Miers).

डा. ए.के. चोपड़ा (रीडर) :

डा० चोपड़ा का प्रकाशन-कार्य निम्नवत है, इनके कई लेख राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय जरनल में प्रकाशित हुए :

1. Malaria Infection in and around BHEL locality of Hardwar. Him. J. Env. Zool. Vol-I, 118–122.

2. Inflammatory response of the integument to the meta carcarial infection in cold water fish Acta Parasitologica Polanica, 32 : 53–58.

3. Seasonal Variations in population of different nematode of sheep. J. Currt. Bioscience 4, 1–4.

4. Pathogenecity of black spot disease in fins of Schizothorax spp. of Garhwal Himalaya. Proc. Natl. Symp. Fish Env. pp. 46–50.

जनरल आर्टिकल : ''उपयोगी मछलियाँ हानिकारक भी''
आविष्कार, (नेशनल रिसर्च डेवलपमेंटल कारपोरेशन) 4, 165–167।

एम.एस-सी. लघु शोध-प्रबन्ध :

छात्र सुनीलकुमार ने डा० चोपड़ा की गाइडेन्स में निम्नलिखित Dissertation पर कार्य किया :

"Some Kinetic properties of Acid-phosphatase Activity in cysts of Giardia lamblia."

कान्फ्रेंस/व्याख्यान/एक्सटेंशन वर्क :

डा० चोपड़ा ने मगध वि०वि० बोध-गया द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सेमिनार (Natl. Seminar on Recent Trends in Fish-Biology) में भाग लिया व शोध-पत्र प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त अन्य सम्मेलनों/ट्रेनिंग-प्रोग्राम में भी भाग लिया, जिसका विवरण निम्नवत है :

1. "Master Trainers Programme". Lucknow Literacy House. May '87.

2. "NSS Training & Orientation Course". Roorkee Univ. June–July '87

3. "NSS-Camp-Punya Bhumi". December '87

4 "N.S.S. Inter University Youth Festival" Meerut University, 1988.

सम्पादन कार्य :

1. एसोशिएट-एडीटर : फिश एन्ड देयर इनवायरनमेंट
(Proc. Natl. Symp. Fish Env.)

2. एसोशिएट-एडीटर : हिमालयन जरनल आव इनवायरनमेंट एण्ड जूलाजी

डा० दिनेश भट्ट :

डा० भट्ट का शोध-पत्र एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस (XVIII Intl. Conf Chronobiol. Leiden, The Netherlands) में को-आथर प्रो० फैंस हैल्वर्ग (Director Chronobiology lab. Univ. Minnesota, Minneapolis, USA) द्वारा प्रस्तुत किया गया। इनका दूसरा शोध-पत्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन के "इन्डोक्रायनोलाजी-सेशन" में प्रेजेन्टेशन हेतु स्वीकृत हुआ। डा० भट्ट का प्रकाशनकार्य इस प्रकार है :

1. Gradual shift in circannual avian body weight rhythm after abrupt reversal of seasonal lighting cycle. Proc. XVIII Intl. Conf. Chronobiol. Leiden.

2. Some eco-biological aspects of Homaloptera brucii (Day) endemic to hill streams of Garhwal-Himalayas. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp. 70–75.

3. Effect of pinealectomy on the gonadal cycle of spotted munia. J. Comp. Physiol. A (Springer-Verlag)

एम.एस-सी. लघु शोधप्रबन्ध (Dissertation) :

डा० भट्ट के सुपरविज़न में एक M.Sc. छात्र विजयकुमार ने अपना Dissertation का कार्य किया। टाइटल था :

"Incidence of Protozoan Infection in the Intestine of Humans in Hardwar."

सम्पादन :

1. एसोशिएट एडीटर : "फिश एण्ड देयर इनवायरनमेंट" (Proc. Natl. Symp. Fish & Env.)
2. मैनेजिंग एडीटर : "हिमालयन जरनल आव इनवायरनमैंट एण्ड जूलाजी"

विभाग के सभी प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर सौंपे गये सभी कार्यों को निष्ठापूर्वक निभाया।

वर्तमान में विभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत है :

शिक्षक वर्ग :

(1) प्रो० बी०डी० जोशी, विभागाध्यक्ष

(2) डा० टी०आर० सेठ, रीडर

(3) डा० ए०के० चोपडा, रीडर

(4) डा० दिनेश भट्ट, प्रवक्ता

शिक्षकेत्तर कर्मचारी :

(1) श्री हरिश्चन्द्र, लैब सहायक

(2) श्री प्रीतमलाल, लैब परिचारक

छात्र-संख्या इस प्रकार रही :

(1) एम०एस-सी० प्रथम सेमेस्टर — १०

(2) एम०एस-सी० द्वितीय सेमेस्टर — ८

(3) एम०एस-सी० तृतीय सेमेस्टर — ८

(4) बी०एस-सी० प्रथम वर्ष — २८

(5) बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष — २६

—प्रो० बी०डी० जोशी
विभागाध्यक्ष

हिमालय पारिस्थितिकी विकास शोध परियोजना

जन्तुविज्ञान विभाग

इस परियोजना ने अप्रैल १९८८ में तीन वर्ष की परियोजना-अवधि पूर्ण कर ली है तथा वर्तमान में यह तीन माह के विस्तरण काल में है। वर्ष १९८७-८८ में इस परियोजना ने डा० बी०डी० जोशी, अध्यक्ष जन्तुविज्ञान विभाग के निर्देशन में निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त कीं :

१. सितम्बर १९८७ में एक १५ दिवसीय वृक्षारोपण शिविर का आयोजन गुरुकुल विद्यालय कण्वाश्रम के शंकर आश्रम फार्म में किया गया, जिसमें उक्त विद्यालय के ३० विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा विभिन्न प्रजातियों के १५,००० पौधों का रोपण किया।

२. लगभग १० विभिन्न प्रजातियों के ६१,००० से अधिक पौधों का रोपण हेतु, कण्वघाटी व आस-पास के निवासियों में निशुल्क वितरण किया गया।

३. ग्राम उदयरामपुर का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण किया गया, जिसमें बहुत दिलचस्प व उल्लेखनीय तथ्य प्राप्त हुए।

४. ग्राम कांगड़ी, चिड़ियापुर वनक्षेत्र, जाफराबाद वनक्षेत्र तथा कण्व घाटी के विभिन्न ८० स्थानों से मृदा परीक्षण किया गया, तथा उसकी उपजाऊ-शक्ति तथा संरचना का अध्ययन किया गया।

५. कण्व घाटी के कृषि के हानिकारक कीटों का अध्ययन किया गया, जिससे पता चला कि वहाँ लगभग २५ कीट प्रजातियाँ सामान्यत: मिलती हैं, जिनमें से १९ प्रजातियाँ कृषि/वन उपज हेतु अति हानिकारक हैं। विभिन्न कीट-नाशक रसायनों का प्रयोग करके प्रभावी मात्रा ज्ञात की गयी, जिसे परियोजना की तृतीय वार्षिक प्रगतिआख्या में सम्मिलित कर पर्यावरण मन्त्रालय को भेजा है।

६. मालिनी नदी के जलागम क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें वनों का सर्वेक्षण भी सम्मिलित है। इससे अत्यधिक उपयोगी तथ्य प्राप्त हुए।

७. मालिनी नदी के उद्गम से २५ किमी० तक कुछ स्थान ऐसे पाये गये जहाँ पर न्यूनतम व्यय से शासन द्वारा बाँध बनवाकर बाढ़ तथा सिंचाई की समस्या का हल किया जा सकता है।

८. सितम्बर ८७ के वृक्षारोपण शिविर तथा अन्य वितरित पौधों का मार्च १९८८ में सर्वेक्षण किया गया तथा वर्ष के भयंकर सूखे के बावजूद वृक्षारोपण में रोपित पौधों में से ५२ % जीवित पाये गये।

९. परियोजना क्षेत्र के ग्रामवासियों को कुछ मुख्य फसलों हेतु बीजों की उच्च उत्पादक प्रजातियों के बारे में सुझाव दिये गये, जो कि ग्रामीणों द्वारा प्रयुक्त करने पर उपयोगी साबित हुए।

१०. बेहतर उत्पादन हेतु वर्तमान भूमि उपयोग-प्रकार तथा नियोजन का विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया। विभिन्न प्रकार के वनों से कार्बनिक प्राप्तियों की मात्रा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिससे बहुत उपयोगी तथ्य प्रकाश में आये।

हम भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, नई दिल्ली के सामयिक तथा निरन्तर सहयोग हेतु एवं विश्वविद्यालय के कुलपति श्री आर.सी.शर्मा (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.) जिनके संरक्षण में रहकर उपरोक्त लक्ष्य तथा उपलब्धियाँ प्राप्त की, के अत्यन्त आभारी हैं।

—बी०डी० जोशी

निदेशक

वनस्पतिविज्ञान विभाग

इस वर्ष भी विभाग में बी०एस-सी० तथा एम०एस-सी० माइक्रोबायलोजी की कक्षाएँ विधिवत् चलीं। विभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत रहा :

शैक्षणिक :

१. डा० वि० शंकर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२. डा० पु० कौशिक, प्राध्यापक

३. डा० गं०प्र० गुप्ता, प्राध्यापक

शिक्षकेत्तर :

४. श्री रुद्रमणि, प्रयोगशाला सहायक

५. श्री चन्द्रप्रकाश, प्रयोगशाला सहायक

६. श्री विजयसिंह, लैब ब्वाय

७. श्री सूरजदीन, माली

एम०एस-सी० के विद्यार्थियों ने निम्नलिखित विषयों पर शोध-निबन्ध प्रस्तुत किए :

I. Supervisor – Prof. V. Shankar

1. Studies on certain physico-chemical and microbiological characters of Ganga & Pond water at Hardwar.
2. Studies on physico-chemical and microbiological characters of Upper Ganga Canal at Hardwar.
3. Studies on physico-chemical and microbiological characters of Sewage at Hardwar.

II. Supervisor—Dr. P. Kaushik

4. Rhizobium-legume activity in vivo and response of

Rhizobium to certain antibectus in vitro.

5. Clinical and mycological study of Dermatophytoses at Hardwar.

6. Studies on Mycorrhizae.

III. Supervisor—Prof. V. Shankar

7. Studies on effect of pesticides on soil microflora.

8. Studies on antimicrobial activity of ocimum sanctum leaves.

9. Physico-chemical and microbiological characters of oxidation-stabilization pond.

विभाग में निम्नलिखित रिसर्च प्रोजेक्ट चलीं/पूरी हुईं :

Title of Project	Principal Investigator	Research Fellows	Scientist
1. Integrated Study of the Ganga (Rs. 9·37 lacs) Govt of India	Dr. V. Shankar	6	1
2. Environmental Biology of Himalayan Orchids (Rs. 2.64 lacs) Govt. of India	Dr. P. Kaushik	2	—
3. Project on Lectins (Rs. 0·5 lac)	Dr. P. Kaushik	1	—

विभाग से निम्नलिखित लेख/रिपोर्ट प्रकाशित हुए :

1. Ganga—Rishikesh to Garhmukteshwar (Final report of Integrated Study of the Ganga, sanctioned by the Govt. of India, Deptt. of Environment/Ganga Project Directorate in 1983)
—V. Shankar

2 Ganga and the basin —V. Shankar

3 A brief history of space flight —V. Shankar

4. Editorial on Environment (Arya Bhatt) —V. Shankar

5. Studies on some microbiological aspects of river Ganges at Hardwar & Garhmukteshwar (Accepted for publication, K.U. Res. Jn.) —V. Shankar & G.P. Gupta

6. Influence of IDPL effluent on water quality of Ganga at Shyampur Khadir (communicated)
—V. Shankar & G.P. Gupta

7. Studies on diurnal variation in abiotic factors in relation to plankton density in Ganga near Motighat at Hardwar. —V. Shankar, et. al.

8. Mycoflora of Ganges water in Rishikesh.
—V. Shankar & G.P. Gupta

9. Lectins and their application (communicated)
—P. Kaushik

10. वन-महोत्सव को सार्थक बनाना होगा। —पी० कौशिक

छात्र-संख्या :

बी०एस-सी०	५४
एम०एस-सी० (माइक्रोबायलोजी)	१८

—प्रो० वि० शंकर
विभागाध्यक्ष

कम्प्यूटर विभाग

हर्ष का विषय है कि इस वर्ष इस विभाग का भवन-निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है। इसके अतिरिक्त यू०जी०सी० द्वारा प्राप्त अनुदान से कुछ संयन्त्र खरीद लिए गए हैं तथा वे सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही "डिपार्टमेंट ऑव इलेक्ट्रानिक्स" से प्राप्त अनुदान से कुछ और संयन्त्र मंगाए जा रहे हैं, जिनके शीघ्र स्थापित हो जाने की आशा है।

इसी वर्ष सभी भारतीय विश्वविद्यालयों एवं प्रमुख समाचारपत्रों द्वारा "पी०जी० डिप्लोमा इन कम्प्यूटर साइंस" और "इन्टिग्रेटिड कोर्स ऑव कम्प्यूटर साइंस विद अदर सब्जैक्टस् एट बी०एस-सी० लेवल" कोर्स में प्रवेश की सूचना दे दी है और आशा है कि ३० जुलाई १९८८ तक अध्यापनकार्य प्रारम्भ हो जाएगा।

इस विभाग के लिए यू०जी०सी० ने चौदह शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की स्वीकृति प्रदान की है।

स्टाफ :

१. रीडर	एक	रिक्त
२. प्रवक्ता	दो	नियुक्त
३. सिस्टम मैनेजर	एक	रिक्त
४. सिस्टम इंजीनियर	एक	श्री नरेन्द्र पाराशर
५. प्रोग्रामर	दो	नियुक्त
६. कम्प्यूटर आपरेटर	दो	रिक्त
७. की पंच आपरेटर	दो	रिक्त
८. टैक्निकल असिस्टेंट	दो	रिक्त
९. यू.डी.सी./एल.डी.सी.	एक	रिक्त

कम्प्यूटर सिस्टम की इन्सटालेशन तथा उसकी सम्पूर्ण देख-रेख सिस्टम-इंजीनियर श्री नरेन्द्र पाराशर द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। विभाग

के अन्य सभी कार्य आपके द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। डिप्लोमा कोर्स के लिए स्वीकृति, विभाग की समुचित व्यवस्था के लिए स्टाफ की स्वीकृति और अनुदान आदि को स्वीकृत कराने के लिए श्री नरेन्द्र पाराशर ने विशेष प्रयास किए।

इस वर्ष अप्रैल मास में यू०जी०सी० कन्सल्टेन्ट श्री एस०आर० ठाकुर ने कम्प्यूटर विभाग का निरीक्षण किया, एवं अधिकारियों की एक मीटिंग में कुछ और सुझाव प्रस्तावित किए जिन पर अमल किया जा रहा है।

—नरेन्द्र पाराशर

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदांग, आर्यसाहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्यभण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय का स्थान भारत के सर्वाधिक पाँच पुस्तकालयों में से एक है।

वर्ष १९८७-८८ में लगभग २४,२०० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है :

१. संदर्भ ग्रन्थ, २. पत्रिकासंग्रह, ३. आर्यसाहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५. विभिन्न विषयों का हिन्दी-पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७. अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८. पं० इन्द्रजी संग्रह, ९. दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाण्डुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह, १३. शोध-प्रबन्ध संग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७. मराठी संग्रह, १८. गुजराती संग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१ वेद मन्त्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ६ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तकसंग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १५ पत्रिकायें नियमित आ रही हैं। इस संग्रह के माध्यम से गुरुकुल के बहुत से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

फोटोस्टेट सेवा :

विश्वविद्यालय के शोध-छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों का लगभग ८४२९-३५ रु० का कार्य अब तक किया गया है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का ४९९१-५० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध-छात्रों को व्यापकरूप में फोटोस्टेट की सुविधा दिये जाने हेतु वर्ष १९८८-८९ में प्लेनपेपर कोपियर "मोदीजीराक्स" भी क्रय किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी :

इस विराट पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय में २३ कर्मचारी कार्यरत हैं। पुस्तकालय-कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	नाम	पद	योग्यता
१.	श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइंस, बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग
२.	श्री गुलजारसिंह चौहान	सह-पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइंस
३.	श्री उपेन्द्रकुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, योग प्रमाण-पत्र
४.	श्री ललितकिशोर	पुस्तकालय सहायक	एम.ए , पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
५.	श्री मिथलेशकुमार	पुस्तकालय सहायक	बी.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
६.	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	पुस्तकालय सहायक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, हिन्दी आशुलिपि
७.	श्री अनिलकुमार धीमान	पुस्तकालय सहायक	एम.एस-सी., एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई. जी. डी. बोम्बे, पत्रकारिता विज्ञान
८.	श्री जगपाल सिंह	लिपिक	मध्यमा
९.	श्री रामस्वरूप	लिपिक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
१०.	श्री मदनपाल सिंह	लिपिक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई.टी.आई.
११.	श्री हरिभजन	काउन्टर सहायक	मिडिल
१२.	श्री जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
१३.	श्री गोविन्दसिंह	बुक लिफ्टर	मिडिल
१४.	श्री घनश्याम सिंह	सेवक	मिडिल
१५.	श्री शशिकान्त	सेवक	मिडिल
१६.	श्री बुन्दू	सेवक	——
१७.	श्री रघुराज सिंह	सेवक	बी.ए.
१८.	श्री शिवकुमार	सेवक	मिडिल

क्र.स.	नाम	पद	योग्यता
१९.	श्री सुशीलकुमार	स्वीपर	——
२०.	श्री लालकुमार कश्यप	लेखक	——
२१.	श्री दीपक घोष	लेखक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई.टी.आई
२२.	श्री सुरेन्द्र शर्मा	लेखक	बी.एस-सी , पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
२३.	श्री विक्रम शाह	दैनिक	इण्टर
२४.	श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा	दैनिक	हायर सेकेण्डरी

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में :

		१९८६-८७	१९८७-८८
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	—	२४,०००	२४,२००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	—	६१	३९३
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	—	१८३१	१५५३
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	—	१६८६	३५००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	—	१६८६	३२७३
६. पत्रिकाओं की संख्या	—	४५४	४५४
७. पत्रिकाओं की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्रों की संख्या	—	१७०	२०३
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	—	६५७२	७०१६
९. पत्रिकाओं की जिल्दबंदी की संख्या	—	७२	४३४
१०. पुस्तकों की जिल्दवन्दी	—	२११६	१८७३
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	—	९७,९१५	९९,४६८
१२. सदस्य संख्या	—	४३६	४९८

प्रगति का आयाम :

१. १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा कुल ४०४ पुस्तकें क्रय की गई थीं, वहीं वर्ष १९८७-८८ में १५५३ नई पुस्तकें क्रय की गई हैं।

२. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएँ मँगाई जाती थीं, वहीं आलोच्य वर्ष में ४५४ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जाती हैं।

३. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दि-समारोह के अवसर पर पुस्तकालय द्वारा रोहतक में विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उक्त प्रदर्शनी में गुरुकुल के विभिन्न साहित्यसंग्रहों का शताब्दि-समारोह में भाग लेने आये हजारों आर्यबन्धुओं ने अवलोकन किया। 'गुरुकुल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर भी पुस्तकालय द्वारा आर्य साहित्य संग्रह एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह आदि पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। दीक्षान्त-समारोह के मुख्यअतिथि श्री देशपाण्डे जी ने उक्त प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

४. पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध वैदिक साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की लगभग ७,००० पुस्तकों की बृहद् बिबिलियोग्राफी भी संस्कृति विभाग, भारत सरकार के सहयोग से तैयार की जा रही है। वाणी प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जा रही उक्त पुस्तक का सम्पादन श्री एस.के. श्रीवास्तव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया।

५. ७वीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में पुस्तकालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ४ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था तथा वर्ष १९८८-८९ के लिये ७ लाख रु० का विशेष अनुदान स्वीकृत किया गया है।

६. विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा विश्वविद्यालय में प्रकाशित सभी प्रकाशनों को देश के सभी विश्वविद्यालयों में भेजने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया जाता है। इसके अन्तर्गत प्रकाशित लगभग ३००० प्रतियों को देश के सभी विश्वविद्यालयों में भेजा गया।

७. पुस्तकों की बाइंडिंग के कार्य को गतिशील बनाये जाने हेतु पुस्तकालय द्वारा कटिंग मशीन भी क्रय की जा चुकी है।

८. गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत सभी शोध-प्रबन्धों की सारावली पुस्तकालय के सहयोग से "शोध सारावली" के रूप में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है। उक्त सारावली का सम्पादन डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग द्वारा किया गया। उक्त पुस्तक के द्वारा शोधछात्रों को अपने शोध-कार्य में काफी सहायता मिल सकेगी।

९. श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र द्वारा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डा० विष्णुदत्त राकेश, निदेशक, श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र के निर्देशन में 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति' नामक ५३० पृष्ठों को एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। उक्त पुस्तक के प्रकाशन में पुस्तकालयाध्यक्ष का भी सहयोग रहा।

१०. पुस्तकालय में फर्श, रैक्स एवं फर्नीचर आदि की सफाई हेतु दो डस्टक्लीनिंग मशीने क्रय की गई हैं। उक्त आधुनिक्तम (वैज्ञानिक) मशीनों द्वारा पुस्तकालय में सफाई का कार्य किया जा रहा है।

११. पुस्तकालय की पुस्तकों के केटेलाग कार्ड बनाये जाने हेतु केटेलाग कार्ड डुप्लीकेटर भी क्रय किया गया है जिससे कार्य की गति के काफी अच्छे परिणाम पैदा हो रहे हैं।

—जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

राष्ट्रीय छात्र सेना

मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा के त्यागपत्र देने के पश्चात्, ३ सितम्बर १९८७ को एन०सी०सी० के संचालन का दायित्व विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रवक्ता डा० राकेशकुमार शर्मा को विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा, एन०सी०सी० केयरटेकर इन्चार्ज के रूप में सौंपा गया।

विश्वविद्यालय को वर्तमान समय में ५५ छात्रों के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। अतः इस वर्ष भी एन०सी०सी० में विश्वविद्यालय के ५५ छात्रों का नियमानुसार पंजीकरण किया गया।

गत वर्षों की भाँति इस वष भी ८ अक्टूबर से १८ अक्टूबर १९८७ तक विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० के कैडेट्स ने कोटद्वार में वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया तथा शिविर के प्रत्येक कार्य में परिश्रम एवं समर्पण से सराहनीय योगदान दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर २६ जनवरी १९८८ के समारोह में माननीय कुलपति कर्नल आर०सी० शर्मा (अवकाशप्राप्त आई०ए०एस०) ने ध्वजारोहण किया। उक्त अवसर पर एन०सी०सी० के कैडेट्स का निरीक्षण करते हुए कर्नल शर्मा ने सलामी ली।

वर्ष ८७-८८ में 'बी' प्रमाणपत्र के लिए १० तथा 'सी' प्रमाणपत्र के लिए ७ कैडेट्स ने परीक्षा दी। परीक्षा-परिणाम की प्रतीक्षा है। 'बी' प्रमाणपत्र की परीक्षा का आयोजन १० फरवरी ८८ को विश्वविद्यालय परिसर में ही किया गया।

वर्ष १९८९ के गणतन्त्रदिवस के लिए विश्वविद्यालय के तीन कैडेट्स— सुनील शर्मा, सुधांशु एवं गिरीश शर्मा का चयन बटालियन स्तर पर हुआ। जिसके फलस्वरूप उक्त कैडेट्स ५ जून से १५ जून के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने मनेरी (उत्तरकाशी) गये। कैडेट्स का शिविर के प्रत्येक कार्य में प्रशंसनीय योगदान रहा।

डा० राकेशकुमार शर्मा का चयन विधिवत रूप से एन०सी०सी० कमांडिग आफिसर के रूप में दिनांक २४ मार्च १९८८ को हो गया तथा उनको १२ सितम्बर से १० दिसम्बर तक कमीशन के लिये प्रशिक्षण पर जाने की अनुमति विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रदान की है।

—डा० राकेशकुमार शर्मा
केयरटेकर-इंचार्ज

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८७-८८ की उपलब्धियाँ निम्न हैं :

१—प्रोग्राम आफिसर डा० ए०के०चोपड़ा ने २५-२६ मई १९८७ को लिटरेसी हाउस, लखनऊ में आयोजित जनसाक्षरता अभियान के अन्तर्गत मास्टर ट्रेनर्स के प्रशिक्षण तथा रुड़की विश्वविद्यालय में ट्रेनिंग एवं ओरियन्टेशन द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में दिनांक २२ जून से ४ जुलाई '८७ तक भाग लिया।

२—अगस्त माह में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८७-८८ के लिए १३१ छात्रों का पंजीकरण किया गया।

३—छात्रों को समय-समय पर राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों तथा कार्यक्रमों से अवगत कराया गया।

४—विश्वविद्यालय परिसर में अगस्त माह में छात्रों द्वारा दो सौ गड्ढे खोद कर उनमें वृक्षारोपण किया गया।

५—जनसाक्षरता अभियान (MPFL) के अन्तर्गत ४८ छात्रों को निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने हेतु दो दिन का प्रशिक्षण दिया गया। प्रत्येक छात्र को लिटरेसी हाउस, लखनऊ से उपलब्ध १ से ५ तक किट्स दी गईं। इस सत्र के अन्त तक इन छात्रों द्वारा ७६ निरक्षरों को साक्षर किया गया।

६—समय-समय पर छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में सफाई तथा उद्यानों के रख-रखाव का कार्य किया गया।

७—तीन एकदिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया। ये शिविर सराय, प्रतीतनगर तथा श्यामपुर गाँवों में आयोजित किए गये। ग्रामीणों के अनेक कार्यों में सहयोग दिया गया तथा उनकी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया तथा सामाजिक सर्वेक्षण हेतु आँकड़े एकत्रित किए गये।

८- विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी, टूर्नामेंट तथा दीक्षान्त-समारोह के आयोजन में छात्रों ने सहयोग दिया।

९—छात्रों ने विज्ञान महाविद्यालय द्वारा नशाबन्दी, दहेजप्रथा एवं परिवार नियोजन से सम्बन्धित प्रदर्शनी तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया।

१०—दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर दिनांक २४-१२-८७ से २-१-८८ तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर की अवधि में छात्रों द्वारा निम्न कार्य किए गए :

(अ) ग्राम को मुख्य सड़क से जोड़ने वाले खडन्जे की मरम्मत की गई तथा उसके दोनों ओर बढ़ी हुई बाढ़ की छंटाई की गई।

(ब) ९० किचन साकेट्स, ५ बड़े गड्ढे तथा ४० नालियों का निर्माण किया गया।

(स) जनसाक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों द्वारा नित्य अशिक्षित ग्रामीणों को साक्षर बनाने का प्रयास किया गया।

(द) ग्रामीणों को प्राथमिक चिकित्सा दी गई तथा रोगियों का मल-परीक्षण किया गया।

(क) खेतों में खाद का छिड़काव तथा गेहूँ की बुवाई में ग्रामीणों की सहायता की गई।

(ख) गाँव के कुओं में दवा डालकर जल को स्वच्छ किया गया।

(ग) झोंपड़ियों के निर्माणकार्य में कुछ ग्रामीणों की सहायता की गई।

(घ) ग्रामीणों को परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण तथा पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी दी गई।

(च ग्रामीणों की समस्याओं को समझकर, उन्हें दूर करने के उपाय सुझाये गए।

(छ) राष्ट्रीय सेवा योजना से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया जिसमें मद्यनिषेध तथा प्रौढ़शिक्षा पर लघुनाटिका प्रस्तुत की गई।

११—छात्रों ने दिनांक २९-२-८८ से २-३-८८ तक मेरठ में आयोजित उत्तर-प्रदेशीय अन्तर्विश्वविद्यालय युवा महोत्सव में भाग लिया। छात्र श्री राजेन्द्र सिह, विद्यालंकार (द्वितीय वर्ष) ने वाद–विवाद प्रतियोगिता 'धर्म भारत की एकता में बाधक है' विषय पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को सांत्वना पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

—डा० ए०के० चोपड़ा

प्रोग्राम आफिसर

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

पिछले अनेक वर्षों के सतत प्रयास एवं परिश्रम से काँगड़ी ग्राम के विकास के कार्य में अब तक निम्नलिखित प्रगति हुई :

१—मिलन-केन्द्र का निर्माण।

२—चबूतरे का निर्माण।

३—जिला विकास अधिकारी, बिजनौर ने ग्राम की गलियों को पक्का कराने एवं कुएँ के निर्माणकार्य को पूरा कराने की कार्यवाही प्रारम्भ की है।

४—कांगड़ी तथा निकटवर्ती ग्रामों को बाढ़ से बचाने के लिए जिलास्तर पर कार्यवाही प्रगति पर।

५—राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम में विभिन्न सामाजिक कार्य किये गए।

६—हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

७—शराब के ठेके की दुकान को बस्ती से दूर हटवाने के सफल प्रयास।

८—वाचनालय की स्थापना।

९—ग्रामवासियों को स्वरोजगार योजना के तहत सरकारी बैंकों से ऋण उपलब्ध करवाया गया।

१०—सड़क के खडंजे पर मिट्टी डलवाना तथा सड़क की मरम्मत।

११—बाढ़ नियन्त्रण के लिए चैक डैम का आरम्भ।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर ग्रामवासियों को परिवार नियोजन, मद्य निषेध, दहेजप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के विषय में बतलाया गया। वृक्षारोपण तथा प्रौढ़शिक्षा कार्यक्रम को पिछले अनेक वर्षों से समर्पण-भावना से चलाया जा रहा है।

—प्रो० वि० शंकर

निदेशक

गंगा समन्वित योजना

(पर्यावरण विभाग—भारत सरकार)

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग ने उक्त शोध योजना १९८३ में डा० वि० शंकर, अध्यक्ष वनस्पतिविज्ञान विभाग के निर्देशन में स्वीकृत की। Extension के पश्चात योजना का कार्यकाल नवम्बर १९८७ में समाप्त हुआ। योजना की Final Technical Report तैयार की गई तथा गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टरेट को प्रेषित की गई। इस रिपोर्ट में निम्नलिखित विषयों पर हुए शोधकार्य का विवरण दिया गया है तथा भविष्य के लिए गंगा एवं गंगा के मैदान पर शोधकार्य के लिए सुझाव दिए गये।

1. Water Quality of the Ganga
2. Macrophytes--Medicinal Plants
3. Municipal & Industrial Effluents
4. Erosion & Siltation
5. Mass Bathing Effect, Socio-economic Study, Experimental Work
6. Environmental Education
7. Conclusion & Future Strategy
8. General Features of the Region

—प्रो० वि० शंकर
मुख्य अन्वेषक

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग द्वारा राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया। यह कार्यक्रम ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में चलाया गया है। शहरी क्षेत्रों में हरिद्वार, कनखल, रानीपुर, ज्वालापुर, व ग्रामीण क्षेत्रों में जगजोतपुर, मिस्सरपुर, पंजनहेड़ी, अजीतपुर, कटारपुर, फेरूपुर, एक्कड़कलां, जमालपुर, बहादरपुर जट, कांगड़ी, गाजीवाली आदि ग्राम इस विभाग की परिधि में हैं। कार्यक्रम की भावना के अनुरूप इन केन्द्रों के संचालन में पिछड़े-अल्पसंख्यक क्षेत्र एवं हरिजन जातियों को प्राथमिकता दी गई। पुरुष एवं महिलाओं के लिये कुछ अलग-अलग एवं कुछ मिश्रित केन्द्र चलाये गये। अनुदेशकों के रूप में छात्रों, गृहणियों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं, अध्यापकों, अध्यापिकाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि को चुना गया।

विभाग द्वारा बराबर यह प्रयास किया गया कि भारत सरकार व उतर प्रदेश शासन में प्रौढ़ एवं विस्तार विभागों में कार्यरत उच्चाधिकारियों से बरावर मार्गदर्शन लिया जाता रहे। इसी सम्वन्ध में श्री दीपचन्द्र राम, उपनिदेशक योजना, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री एस० डी० शर्मा, क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, देहरादून मण्डल, उप-निदेशक, प्रशासन, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री वी० एन० श्रीवास्तव, जिला विभाग अधिकारी रामपुर, डा० ओ० पी० शर्मा, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी सहारनपुर, श्री के० एस० त्यागी, खण्ड विकास अधिकारी, बहादराबाद आदि विभाग में पधारे व उनसे कार्यक्रम को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने हेतु सुझाव प्राप्त किए गये।

श्री आई० एस० गौड, निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वयं विभाग सलाहकार समिति में दिनांक १५-११-८७ को भाग लिया व कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये जिन पर विभाग द्वारा तुरन्त कार्यवाही की गई।

दस दिन का अनुदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, सहारनपुर के सहयोग से विभाग में दिनाँक ७ मार्च से १६ मार्च १९८७ तक

आयोजित किया गया। इसमें लगभग १०० महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर श्री के० चन्द्रमौलि, जिला अधिकारी, सहारनपुर ने भी विभाग का भ्रमण किया।

निदेशक प्रौढ़ शिक्षा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार ३०० अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की स्वीकृति हेतु एक परियोजना उत्तर प्रदेश शासन को जनवरी ८८ में प्रस्तुत की गई। शिक्षा द्वारा जीवनयापन एवं स्वरोजगार के क्षेत्र को अधिक बलशाली बनाने हेतु विभिन्न छोटे-छोटे पाठ्यक्रमों—जैसे रेडीमेड गारमेन्ट, शार्टहैन्ड एवं टाईपिंग, फोटोग्राफी आदि को भी प्रारम्भ करने हेतु परियोजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व उत्तर प्रदेश सरकार को प्रेषित की गई।

साक्षरता निकेतन लखनऊ द्वारा आयोजित दो-दिवसीय जन साक्षरता कार्यक्रम के प्रशिक्षण में विभाग के सहायक निदेशक एवं अध्यक्ष द्वारा भाग लिया गया। इसी प्रकार सहायक निदेशक व परियोजना अधिकारी ने भी समय-समय पर आयोजित कार्यगोष्ठियों में भाग लेकर उनमें विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

विभाग अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त विस्तार शिक्षा में भी जुटा हुआ है। इस सम्बन्ध में क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, देहरादून क्षेत्र के सहयोग से प्रौढ़ शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आदि पर विभिन्न फिल्मों का प्रदर्शन आस-पास के गाँवों व शहरी क्षेत्रों में किया गया। उपरोक्त अवसर पर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। विभाग में रुड़की विश्वविद्यालय के सहयोग से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्राँगण में सोलर कुकर का भी प्रदर्शन किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए। ग्राम कांगड़ी में विभिन्न विकास योजनाओं हेतु प्रयास किया जाना एवं प्रधानमंत्री सूखा राहत कोष में नवम्बर १९८७ में मात्र एक हजार सोलह रुपया दान किया जाना, आदि विभिन्न क्रियाएँ भी इसमें सम्मिलित हैं।

—अनिल चोपड़ा

निदेशक

क्रीड़ा विभाग

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का कार्य प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र के कुशल निर्देशन में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा सुचारू रूप से प्रारम्भ किया गया। मार्च माह में प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र द्वारा त्यागपत्र दिए जाने के पश्चात् डा० अम्बुजकुमार शर्मा को विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया। डा० शर्मा के नेतृत्व में विभागीय कार्य निर्विघ्न सम्पादित हो रहा है।

इस वर्ष विभाग द्वारा निम्नलिखित खेलों का संचालन/प्रशिक्षण दिया गया—

हाकी, क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबलटेनिस, फुटबाल, कबड्डी, कुश्ती, एथलेटिक्स, वालीबाल, शरीर-सौष्ठव तथा भारोत्तोलन।

१—हाकी

हाकी का अभ्यास सितम्बर से प्रारम्भ किया गया। राजकीय आयुर्वेदिक कालेज तथा हरिद्वारस्थ क्लबों के साथ मैत्री-मुकाबलों का आयोजन करके छात्रों की रुचि में वृद्धि की गई। छात्रों ने अनवरत अभ्यास में भाग लिया।

नवम्बर मास में खेलकूद निदेशालय, उ०प्र० द्वारा गोरखपुर में आयोजित उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय हाकी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की टीम ने भाग लिया। नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय की टीम को २-१ से पराजित किया। किन्तु तालमेल के अभाव में कुमाऊँ वि०वि० से ३-० से पराजित हुए। अलीगढ़ वि०वि० की टीम के साथ एकतरफा मैच रहा।

जनवरी में उत्तरक्षेत्रीय हाकी प्रतियोगिता में भाग लेने चण्डीगढ़ गए। अवध वि०वि० फैजाबाद के साथ संघर्षपूर्ण मुकाबले में ३-२ से पराजय हुई। यद्यपि खिलाड़ियों में उत्साह की कमी न थी किन्तु तालमेल का अभाव पराजय का कारण बना। टीम मैनेजर के रूप में डा० महावीर अग्रवाल (प्रवक्ता, संस्कृत विभाग) गए।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित अ०भा० हाकी टूर्नामेंट में लगातार तीन मुकाबले जीतकर सेमिफाइनल में जिला हाकी एसोसिएशन अम्बाला की टीम से पराजित हुए। टीम का प्रदर्शन अत्यन्त सराहनीय रहा।

बी०एच०ई०एल० की टीम से विभिन्न मैच खेले गए। कुल मिलाकर हाकी टीम का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

२—कुश्ती

उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता बरेली में २९-३१ अक्टूबर १९८७ को सम्पन्न हुई। हमारे तीन छात्रों ने प्रथम बार कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेकर अच्छा प्रदर्शन किया। अभ्यास तथा तकनीक के अभाव के कारण सभी का चतुर्थ स्थान रहा। कुश्ती में अभ्यास हेतु यदि कोच की व्यवस्था हो जाती तो अवश्य ही कोई स्थान प्राप्त हो सकता था, फिर भी छात्रों ने अपने-अपने वर्ग के दो-दो मुकाबले जीतकर विजय के निकट पहुँचने का प्रयास किया।

३—कबड्डी

उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता में आगरा गए। लखनऊ विश्वविद्यालय तथा गोविन्दवल्लभ पन्त कृषि व प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय की टीमों को परास्त करके सेमिफाइनल में पहुँचे। सेमिफाइनल में मेरठ के साथ हुए मुकाबले में इस वर्ष तथा गत वर्ष की विजेता टीम मेरठ विजयी रही। कबड्डी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की टीम का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा।

आगरा से लौटने के बाद सभी खिलाड़ियों के अस्वस्थ हो जाने के कारण १६-२१ नवम्बर '८७ को होने वाली उत्तरक्षेत्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेने पन्तनगर न जा सके।

४—क्रिकेट

क्रिकेट का अभ्यास अनवरत चलता रहा। उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने कानपुर गए। किन्तु अच्छा प्रदर्शन न कर सके तथा चुस्त फील्डिंग न होने के कारण पराजित हुए। डा० राकेशकुमार शर्मा (प्रवक्ता, इतिहास विभाग) टीम मैनेजर के रूप में गए।

उत्तरक्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में कुरुक्षेत्र गए। प्रदर्शन अच्छा था किन्तु रनों की गति धीमी होने के कारण वाँछित स्कोर न जुटा पाए और पराजित

हुए। एकदिवसीय मैच की तकनीक का प्रायः अभाव-सा हो है। श्री नन्दकिशोर (विज्ञान महाविद्यालय) टीम मैनेजर के रूप में साथ गए।

५—एथलेटिक्स

नवम्बर मास में विश्वविद्यालय की एथलेटिक-मीट की गई। इसमें विद्या-विनोद तथा विद्याधिकारी के छात्रों को कनिष्ठ वर्ग में तथा अलंकार, बी.एस-सी. व एम.एस-सी./एम.ए. के छात्रों को वरिष्ठ वर्ग में विभाजित करके दोनों वर्गों में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। वरिष्ठ वर्ग में बी०एस-सी० के छात्र धर्मेन्द्रकुमार तथा कनिष्ठ वर्ग में विद्याधिकारी के छात्र अतुलकुमार को चैंम्पियन घोषित किया गया।

६ – शरीर-सौष्ठव तथा भारोत्तोलन

दिसम्बर मास में 'द्वितीय आर्यवीरश्री शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता' का आयोजन श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर गत वर्ष की भाँति किया गया। वि०वि० के छात्रों के अतिरिक्त देहरादून, सहारनपुर, नजीबाबाद, मुजफ्फरनगर तथा हरिद्वार की व्यायामशालाओं के साधकों ने भाग लिया। ६० किग्रा०, ६५ किग्रा. तथा ६५ किग्रा० से अधिक—तीन भारवर्गों में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। 'आर्यवीरश्री' की उपाधि देहरादून के राजेन्द्रकुमार शर्मा ने प्राप्त की। विश्वविद्यालय के छात्र वीरेन्द्रकुमार ने ६५ किग्रा० से अधिक भारवर्ग में तथा अजयकुमार ने ६५ किग्रा० भारवर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस बार प्रतियोगिता के स्तर में काफी वृद्धि हुई। प्रतियोगिता का संचालन व संयोजन श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के मुख्य-अतिथि के रूप में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा मुख्यनिर्णायक के रूप में अर्जुनश्री भारतभूषण जी उपस्थित थे। सहनिर्णायक श्री राममोहन शर्मा तथा श्री अशोककुमार शर्मा रहे। विश्वविद्यालय के पूर्वछात्र श्री राधेमोहन शर्मा ने विशेष प्रदर्शन करके दर्शकों का मन मोह लिया।

दिसम्बर में ही श्री गंगा सभा हरिद्वार द्वारा आयोजित शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र अजयकुमार को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

७—बैडमिन्टन

बैडमिन्टन का अभ्यास अनवरत चलता रहा। सीनेट हाल में स्टाफ के लिए बैडमिन्टन की व्यवस्था की गई। स्टाफ व विद्यार्थियों के मध्य बैडमिन्टन के शो-मैच कराए गये।

८—फुटबाल

विद्यालय विभाग के मैदान में फुटबाल की व्यवस्था की गई। किन्तु कुछ छात्र ही इसमें भाग ले सके।

१०—वालीबाल

गत वर्षों की अपेक्षा वालीबाल के खेल के प्रति कुछ जागृति आई। इसके लिए डा० अम्बुजकुमार शर्मा तथा डा० उमरावसिंह बिष्ट का प्रयास सराहनीय है।

मार्च माह में स्टाफ व छात्रों के मध्य एक शो-मैच खेला गया जिसमें माननीय कुलपति जी विशिष्ट दर्शक के रूप में उपस्थित थे।

१०—टेबल-टेनिस

टेबल-टेनिस का अभ्यास वेद-मन्दिर में प्रारम्भ किया गया, किन्तु अभ्यास विधिवत् न चल सका।

विभागीय कार्यसंचालन में मान्य कुलपति जी, उप-कुलपति एवं आचार्य जी, कुलसचिव जी, विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों तथा आचार्यवर्ग के सक्रिय सहयोग के लिए विभाग उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है।

—ईश्वर भारद्वाज

योग केन्द्र

योग केन्द्र द्वारा चारमासीय योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिससे विश्वविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त स्थानीय आयुर्वेदिक महाविद्यालयों तथा अन्य महाविद्यालयों के छात्रों के साथ-साथ जनसामान्य ने भी लाभ प्राप्त किया है। गत शिक्षापटल द्वारा पूर्ण शैक्षिकसत्र के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम को स्वीकृति दे दी गई है।

अगस्त ८७ से ७ नवम्बर ८७ तक प्रथम प्रशिक्षण सत्र चलाया गया। २० छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें से १४ उत्तीर्ण हुए।

जनवरी ८८ से अप्रैल ८८ तक द्वितीय प्रशिक्षणसत्र में १४ छात्रों को परीक्षा के योग्य पाया गया है। इनको परीक्षाएँ जुलाई में सम्पन्न होंगी।

५ जून ८७ से १९ जून ८७ तक गुरुकुल परिसर के बालकों के शारीरिक-मानसिक विकास हेतु योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें १४ बालकों ने भाग लिया।

इसी अवसर पर अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस द्वारा संचालित बाल गृह, लखनऊ के बालकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

वर्ष १९८७-८८ में विद्यालय विभाग के छात्रों को प्रतिदिन योग प्रशिक्षण दिया गया जिसका वार्षिकोत्सव पर प्रदर्शन भी किया गया।

गुरुकुल के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का विशेष महत्व है। अपने तृतीय वर्ष में दिनांक २९ दिसम्बर ८७ को उक्त प्रतियोगिता में योग केन्द्र के साधकों के अतिरिक्त हरयाणा, सहारनपुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर तथा स्थानीय साधकों ने भाग लिया। इसमें कनिष्ठ व वरिष्ठ दो वर्गों में प्रतियोगिताएँ की गईं। इसमें योग केन्द्र के साधकों का उत्कृष्ट प्रदर्शन सराहनीय रहा। इस प्रतियोगिता में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष तथा अर्जुनश्री भारतभूषण मुख्य निर्णायक थे।

१७ दिसम्बर को श्री गंगा सभा हरिद्वार द्वारा आयोजित योग प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के योग के छात्र हरेन्द्रचन्द्र नाथ व जितेन्द्रकुमार को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुए। कनिष्ठ वर्ग में विद्यालय के साधक शैलेन्द्र कुमार, संजय व वीरेन्द्रकुमार को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

जनवरी में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित योग प्रतियोगिता में विद्यालय के योगसाधक शैलेन्द्रकुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गुरुकुल परिसर के वासी तथा अन्य स्थानीय लोग योग केन्द्र में आकर स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं तथा रोगग्रस्त लोगों को यौगिक उपचार द्वारा स्वास्थ्य रक्षा का प्रशिक्षण दिया जाता है।

योग केन्द्र की समुचित उन्नति हेतु प्रयास किया जा रहा है जिसके लिए मान्य कुलपति जी तथा कुलसचिव जी विशेष ध्यान दे रहे हैं। इसी के फलस्वरूप केन्द्र के लिए ८ दरियाँ व कालीन की व्यवस्था की जा सकी है।

विभाग के सुचारू कार्य हेतु मान्य कुलपति जी, आचार्य जी, कुलसचिव जी, प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, डा० अम्बुजकुमार शर्मा, श्री महेन्द्रकुमार चतुर्वेदी (रुड़की विश्वविद्यालय), श्री भारतभूषण जी (सहारनपुर) आदि महानुभावों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है। विभाग की ओर से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन।

—ईश्वर भारद्वाज

विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र

पूर्व की भाँति यह केन्द्र कमरा नं० ५, श्रद्धानन्द चिकित्सालय, सिंहद्वार गुरुकुल में कार्यरत है। इसमें निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत है :

१. निदेशक	डा० बालकृष्ण भारद्वाज, एम.डी., पी०एम०एस० सेवानिवृत्त मुख्य चिकित्साधिकारी
२. कम्पाउन्डर	श्री अनूपकुमार दास—अपरिशिक्षित
३. नर्स	श्रीमती वलसम्मा दास—अपरिशिक्षित
४. भृत्य	श्री घासीराम
५. सेविका	श्रीमती बालादेवी

भृत्य श्री घासीराम के अलावा समस्त स्टाफ अस्थाई है और तदर्थ नियुक्ति पर है।

केन्द्र एक बाह्य विभाग के रूप में परामर्शदात्री सेवाएँ विश्वविद्यालय के कर्मचारियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों को प्रदान करता है। इस वर्ष ५२०२ व्यक्ति इस केन्द्र में आए और लाभान्वित हुए।

श्रद्धानन्द चिकित्सालय में रोगी-कर्मचारियों के भरती करने की व्यवस्था है तथा नियमानुसार चिकित्सालय की शय्याओं पर केन्द्र द्वारा रोगी भरती किये जाते हैं और उनका उपचार होता है। आवश्यकता पड़ने पर विश्वविद्यालय परिसर में भी रोगियों को देखा जाता है।

यहाँ पर रश्मि किरण की निदानिक व्यवस्था उपलब्ध है तथा पेथालोजी विभाग में एक टेक्नीशियन चिकित्सालय की ओर से कार्यरत है जो भिन्न-भिन्न परीक्षण—रक्त, मल-मूत्र आदि के करता है। बायो-कैमिस्ट्री टैस्ट, जैसे ब्लड-शूगर आदि भी होते हैं।

कम्पाउन्डर चिकित्सालय के शल्य-कक्ष में कार्य करता है और हर समय

उपलब्ध रहता है और शल्यक की सहायता करता है। इस वर्ष लगभग ३५० आपरेशनों में उनका योगदान रहा।

संक्षिप्त में स्वास्थ्य केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा इसके और विस्तार की आवश्यकता है। कर्मचारियों को पेथालोजी टैस्ट की नि.शुल्क सुविधा होनी चाहिए। स्वास्थ्य केन्द्र तथा श्रद्धानन्द चिकित्सालय के समस्त कर्मचारियों में पूर्ण तालमेल और सहयोग है।

—**डा० बालकृष्ण भारद्वाज**
निदेशक

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1987 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 8-10-1987 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्न प्रकार बजट पारित किया :

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 87-88	बजट अनुमान 88-89
वेतन एवं भत्ते आदि	53,83,780.00	56,52,050.00
अंशदायी भविष्यनिधि	2,13,170.00	2,29,950.00
अन्य व्यय	13,84,310.00	15,01,000.00
योग व्यय	69,81,260.00	73,83,000.00
आय	1,812,60.00	1,83,000.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान—	67,90,000.00	72,00,000 00

समीक्षाधीन वर्ष 1987-88 में 67,90,000/- रु० के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है–

क्र.सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	6,30,000.00	वि०वि० अनुदान आयोग	कम्प्यूटर हेतु
2.	1,50.000.00	,,	हाऊस बिल्डिंग लोन-एडवांस
3.	15,000.00	,,	अनएसाइन्ड ग्रान्टस

क्र सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
4.	2,00,000.00	वि० वि० अनुदान आयोग	प्रोफेसर्स क्वाटर्स
5.	5,095 66	,,	स्वास्थ्य केन्द्र
6.	10,027.20	,,	वेतन
7.	50,000.00	,,	विजिटिंग प्रोफ़ेसर/फैलो
8.	30,000.00	,,	पब्लिकेशन्स
9.	50,000.00	,,	माइनर रिसर्च प्रो० डा० पुरुषोत्तम कौशिक
10.	10,000.00	,,	रि. प्रो. डा. स्वर्ण आतिश
11.	4,000.00	,,	माइनर रि० प्रो० डा० बी०डी० जोशी
12.	2,500.00	,,	माइनर रि० प्रो० डा० ए०के० इन्द्रायण
13.	15,396.77	,,	डा० कृष्णकुमार
14.	10,000.00	,,	नेशनल कान्फ्रेंस आन फिलोसफी
15.	25,000.00	,,	सेमिनार आन लोकल सैल्फ गवर्नमैंट आव एनशिएन्ट इण्डिया
16.	1,00,000.00	,,	प्रौढ़ शिक्षा
17.	40,660.52	,,	समर इन्स्टीट्यूट आन साइकोलोजी
18.	66,000.00	भारत सरकार	दुर्लभ पाण्डुलिपियों की सुरक्षा
19.	12,000.00	,,	श्री भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर
20.	30,000.00	,,	पुरातत्व संग्रहालय
21.	5,000.00	,,	सेमिनार आन फिश एण्ड देयर एन्वायरनमैंट
22.	2,368.00	इन्डियन काउन्सिल आव साईंस, नई दिल्ली	माइनर रि०प्रो० डा० एस०के० श्रीवास्तव

क्र.सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
23.	12,000.00	भारत सरकार	स्टडी आन दा एनवायरनमैंटल बायलोजी आव दा हिमालयन आर्किड्स
24,	1,70,000.00	……… ,, ………	हिमालय रिसर्च प्रोजेक्ट

—आर०पी० सहगल
वित्त-अधिकारी

आय का विवरण

१९८७-८८

क्र०सं०	आय का मद	धनराशि
	(क) दान और अनुदान—	
1.	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान—	67,90,000.00
	योग—(क)	67,90,000.00
	(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—	
1.	पंजीकरण शुल्क	6,533.00
2.	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	490.00
3.	पी-एच०डी० मासिक शुल्क	1,770.00
4.	परीक्षा शुल्क	50,797.00
5.	अंकपत्र शुल्क	2,533.00
6.	पड़ताल शुल्क	48.00
7.	विलम्बदण्ड, टूट-फूट	6,396.00
8.	माइग्रेशन शुल्क	1,632.00
9.	प्रमाण-पत्र शुल्क	1,407.00
10.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का शुल्क	1,308.00
11.	सेवा आवेदन-पत्र	2,854.00
12.	शिक्षा शुल्क	37,133.00
13.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	7,782.00

क्र.सं.	आय का मद	धनराशि
14.	भवन शुल्क	1,167.00
15.	क्रीड़ा शुल्क	6,174.00
16.	पुस्तकालय शुल्क	4,136.00
17.	परिचयपत्र शुल्क	266.00
18.	एसोशियेशन शुल्क	2,744.00
19.	प्रयोगशाला शुल्क	794.00
20.	मंहगाई शुल्क	6,542.00
21.	विज्ञान शुल्क	5,727.00
22.	पुस्तकालय से आय	8,051.00
23.	पत्रिका शुल्क	7,249.00
24.	अन्य आय	15,740.00
25.	किराया प्रोफेसर्स क्वाटर्स	43,414.00
26.	सरस्वती यात्रा	1,500.00
27.	वाहन ऋण	22,864.00
28.	छात्रावास	1,457.00
	योग—(ख)	2,48,512.00
	सर्वयोग—(क+ख)	70,38,512.00

—आर०पी० सहगल
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

१९८७-८८

क्र.सं.	व्यय का मद	धनराशि
	(क) वेतन—	
1.	वेतन	50,79,836 00
2.	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	2,83,507.00
3.	ग्रेच्युटी	9,012 00
	योग—(क)	53,72,355.00
	(ख) अन्य —	
1.	विद्युत व जल	1,10,342.00
2.	टेलीफोन	16,391.00
3.	मार्ग व्यय	1,10,042.00
4.	लेखन सामग्री एवं छपाई	30,505.00
5.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	49,396.00
6.	डाक एवं तार	13,614.00
7.	वाहन एवं पेट्रोल	76,904 00
8.	विज्ञापन	39,467.00
9.	न्यायिक व्यय	10,751.00
10.	आतिथ्य व्यय	36,609.00
11.	दीक्षान्त उत्सव	25,136 00

क्र.सं.	व्यय का मद	धनराशि
12.	लॉन संरक्षण	11,300.00
13.	भवन मरम्मत	1,03,289.00
14.	आडिट व्यय	67,285.00
15.	उपकरण	80,444.00
16.	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	42,084.00
17.	राष्ट्रीय छात्र सेवा	68.00
18.	छात्र कल्याण	3,164 00
19.	छात्रों को छात्रवृत्ति	40,519.00
20.	खेल-कूद एवं क्रीड़ा	21,319.00
21.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	2,792.00
22.	सरस्वती शै० यात्रा	14,626.00
23.	वाग्वर्धिनी सभा	5,841 00
24.	वेद प्रयोगशाला	6,712.00
25.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	1,282.00
26.	रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	29,294.00
27.	भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	21,590.00
28.	वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	20,973 00
29.	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	18,036.00
30.	गैस प्लांट	6,069.00
31.	इतिहास	4,538.00
32.	गणित	3,794 00
33.	वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाऊस)	1,024.00
34.	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ	80,038.00
35.	पुस्तकें	19,933.00
36.	जिल्दबंदी एवं पुस्तकसुरक्षा	13,611.00
37.	केटेलॉग एण्ड कार्डस्	10,282.00
38.	वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्यभट्ट, गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका	76,305.00

क्र०सं०	व्यय का मद	धनराशि
39.	मिश्रित	16,175.00
40.	आकस्मिक	3,823.00
41.	सदस्यताशुल्क अंशदान	31,409.00
42.	सेमिनार	4,081.00
43.	पढ़ते हुए कमाओ	6,093.00
44.	वाहन हेतु ऋण	1,02,220.00
45	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प डयूटी को प्रति पूर्ति	14,272.00
	योग (ख)	14,03,442.00
46.	परीक्षकों का पारिश्रमिक	39,052.00
47.	मार्गव्यय परीक्षक	16,055.00
48.	निरीक्षण व्यय	9,164 00
49.	प्रश्न-पत्रों की छपाई	36,657.00
50.	डाक-तार व्यय	10,094.00
51.	लेखन सामग्री	3,946.00
52.	नियमावली, पाठविधि छपाई	10,545.00
53.	अन्य व्यय	737.00
	योग (ग)	1,26,250 00
	योग (ख+ग)	15,29,692.00
	योग (क+ख+ग)	69,02,047.00

—आर०पी० सहगल
वित्त-अधिकारी

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर बी०एस-सी० (गणित/बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	384	850162	आदित्यकुमार शर्मा	श्री विजयेन्द्र कुमार	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र गणित	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	385	850124	अजयवीर वर्मा	श्री रामेश्वरसिंह वर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
3.	386	850121	अजय श्रीवास्तव	श्री एम.पी. श्रीवास्तव	,,	,,	,,	प्रथम
4.	387	850125	अमलेश कुमार	श्री मानसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
5.	388	850123	अमित मदान	श्री प्रेमकुमार	,,	,,	,,	द्वितीय
6.	389	850119	अनुराग ग्रोवर	श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर	,,	,,	,,	प्रथम
7.	390	850126	अरविन्दकुमार बंसल	श्री संतलाल बंसल	,,	,,	,,	प्रथम
8.	391	840056	बालकृष्ण पाल	श्री शीशराम	,,	,,	,,	द्वितीय
9.	392	830056	गुरमीत सिंह	श्री अमरसिंह	,,	,,	,,	तृतीय
10.	393	850137	हर्ष गुप्ता	श्री के०के० गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
11.	395	840051	जयप्रकाश	श्री शंभुदयाल थपलियाल	,,	,,	,,	तृतीय
12.	396	850141	जोगिन्दर लाल	श्री सीताराम यादव	,,	,,	,,	द्वितीय
13.	397	850149	लवलीकुमार दुबे	श्री एस०एस० दुबे	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
14.	398	840046	मुकेशचन्द्र भट्ट	श्री हरगोविन्द भट्ट	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र, गणित	गु०कां०वि०	प्रथम
15.	399	850047	नन्दकिशोर	श्री रामलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
16.	400	850046	नरेश बब्बर	श्री गोपालकृष्ण	,,	,,	,,	द्वितीय
17.	401	840042	परमजीत सिंह	श्री गुरुमुख सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
18.	402	850144	राजीव चौहान	श्री वाई पी.एस. चौहान	,,	,,	,,	द्वितीय
19.	404	850060	राजीव कुमार	श्री बृजभूषण	,,	,,	,,	द्वितीय
20.	405	850055	राजीव सिंहान	श्री ओमप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितीय
21.	406	840035	राजेश गुप्ता	श्री रामनाथ गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
22.	407	850061	रोहिताशकुमार जिंदल	श्री प्रीतमदास	,,	,,	,,	द्वितीय
23.	409	850063	सन्दीप गोयल	श्री जी.सी. गोयल	,,	,,	,,	प्रथम
24.	410	840029	संजीवकुमार गुप्ता	श्री दौलतराम गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
25.	411	850070	संजयकुमार	श्री रामलाल कालरा	,,	,,	,,	द्वितीय
26.	412	850075	संजयकुमार भटनागर	श्री एस०वी०भटनागर	,,	,,	,,	द्वितीय
27.	413	850065	सुधीरकुमार	श्री एस०पी० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
28.	415	850082	विनीतकुमार	श्री कृष्णकुमार वशिष्ठ	,,	,,	,,	द्वितीय
29.	416	850090	विपुलकुमार	श्री बी०सी० सिन्हा	,,	,,	,,	प्रथम

क्र.सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
30	417	850089	वीरेन्द्रसिंह	श्री उम्बरसिंह	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, गणित	गु०कां०वि०	तृतीय
31.	419	850042	महेन्द्रकुमार शर्मा	श्री सुखबीरसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
32.	420	850041	मनोजकुमार उप्रेती	श्री रमेशचन्द्र	,,	,,	,,	प्रथम
33.	717	840033	राकेशकुमार	श्री मोहनलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
34.	421	850099	अमरदीप	श्री शांतानन्द उपाध्याय	बायोग्रुप	रसायन शास्त्र, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञ.न	,,	द्वितीय
35.	422	850098	अनोजकुमार	श्री सुरेशप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितोय
36.	423	850100	हरीशकुमार	श्री जगदीशलाल	,,	,,	,,	प्रथम
37.	424	850101	ललित वर्मा	श्री आर०के० वर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
38.	425	840005	मदनमोहन पन्त	श्री बी०सी०पन्त	,,	,,	,,	द्वितीय
39.	426	850094	मनोजकुमार सिंह	श्री विजेन्द्रसिंह	,,	,,	,,	प्रथम
40.	427	850146	नन्दकिशोर	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
41.	428	850103	पविन्दरसिंह	श्री जरनैलसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
42.	429	840011	राजकुमार शर्मा	श्री धनप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
43.	430	850107	रजत शर्मा	श्री आर०के० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय

43. 430 850107 रजत शर्मा श्री आर०के० शर्मा ,, ,, ,, द्वितीय

क्र सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
44.	431	850104	रविकान्त	श्री नरेन्द्रकुमार शर्मा	वायोग्रुप	रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान	गु०कां०वि०	द्वितीय
45.	432	850114	शिव शर्मा	श्री हरपाल सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
46.	433	850154	सन्दीपकुमार जैन	श्री ज्ञानचन्द्र जैन	,,	,,	,,	द्वितीय
47.	434	840014	संजय जैन	श्री मोतीलाल जैन	,,	,,	,,	प्रथम
48.	435	850108	संजय गोस्वामी	श्री सुदर्शन कुमार	,,	,,	,,	प्रथम
49.	436	850112	विधुशेखर पालीवाल	श्री विष्णुदत्त राकेश	,,	,,	,,	प्रथम
50.	437	850111	विक्रमसिंह	श्री कुँवरसिंह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
51.	438	840018	योगेशकुमार वर्मा	श्री लालसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
52.	439	850151	अनिल बाबू गुप्ता	श्री किशोरीलाल गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
53.	440	850105	रूपककुमार	श्री जगदीशप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
54	441	840012	रामधन	श्री अमरचन्द	,,	,,	,,	तृतीय

दीक्षान्त-समारोह १६८८ पर अलंकार की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क.सं.	अनुक्रमांक	पं०सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	215	850197	कु० ज्योतिप्रभा राय	श्री दीनदयाल राय	विद्यालंकार	हिन्दी, संगीत गा०	कन्या गुरुकुल देहरादून	द्वितीय
2.	216	850202	कु० कंचन	श्री विजयकुमार मिश्रा	,,	हिन्दी, संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
3.	217	850204	कु० क्रान्ति आर्या	श्री अशोक जी	,,	,,	,,	प्रथम
4.	218	850196	कु० कल्पना	श्री हरिशचन्द्र चौरसिया	,,	हिन्दी, संगीत गा०	,,	तृतीय
5.	219	850201	कु० मीनाक्षी तिवाड़ी	श्री सुरेन्द्र नाथ	,,	हिन्दी, संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
6.	220	850199	कु० सोमा	श्री हीरालाल	,,	हिन्दी, संगीत वादन	,,	द्वितीय
7.	221	850203	कु० शशि किरन	श्री विरेन्द्रकुमार	,,	इतिहास, संगीत गा०	,,	प्रथम
8.	222	850198	कु० सुलोचना देवी	श्री दुर्गासिंह ठाकुर	,,	हिन्दी, संगीत वादन	,,	प्रथम
9.	223	850200	कु० सन्तोष	श्री रामलाल यादव	,,	इतिहास, चित्रकला	,,	तृतीय
10.	224	850180	अम्बरीश कुमार	श्री लल्लूसिंह	,,	हिन्दी, मनोविज्ञान	गु०कां०वि०	द्वितीय
11.	226	850186	प्रभातकुमार सिंह	श्री जबरसिंह सेंगर	,,	इतिहास, दर्शन	,,	द्वितीय
1.	227	850255	देवदत्त	श्री रोढूसिंह	वेदालंकार	हिन्दी, वेद, संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	228	850256	ब्र० ईश्वरानन्द	श्री काशीराम	,,	मनोविज्ञान	,,	प्रथम

2. 228 850256 ब्र० ईश्वरानन्द श्री काशीराम ,, मनोविज्ञान ,, प्रथम

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सूची

क्र.सं.	नाम शोधार्थी	विभाग	विषय	शोध-निर्देशक
1.	कु० सुमेधा	वैदिक-साहित्य	"महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में अग्नि-देवता का अध्ययन।"	डा० सत्यव्रत राजेश प्रवक्ता, वेद विभाग
2.	श्री रामनारायण रावत	वैदिक-साहित्य	"वैदिक एवं औपनिषदिक दर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में)।"	डा० भारतभूषण रीडर, वेद विभाग
3.	श्री वसन्तकुमार	संस्कृत-साहित्य	"वाल्मीकि रामायण एक परिशीलन (स्मृति-शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में)।"	डा० वेदप्रकाश रीडर, संस्कृत विभाग
4.	श्रीमती राजकुमारी शर्मा	संस्कृत-साहित्य	"महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों व दर्शनों का समीक्षात्मक अध्ययन।"	डा० निगम शर्मा रीडर, संस्कृत विभाग
5.	श्री सुरेन्द्रकुमार	संस्कृत-साहित्य	"ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विद्याओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन (दयानन्द भाष्य पर आधारित)।"	प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार अध्यक्ष, वेद विभाग
6.	श्री रविदत्त	संस्कृत-साहित्य	"गुह्यसूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कारविधि का अध्ययन।"	डा० सत्यव्रत राजेश प्रवक्ता, वेद विभाग
7.	श्री ओम शर्मा	दर्शनशास्त्र	"जैन. बौद्ध और न्याय दर्शनों में ज्ञान मीमांसा : एक तुलनात्मक अध्ययन।"	डा० जयदेव वेदालंकार रीडर, दर्शन विभाग

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर एम०ए०/एम०एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	590	850173	साधु प्रतिज्ञा दास	श्री गुरुप्रसाद साहब	एम०ए०	वेद	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	591	820030	सोमपाल	श्री दयाचन्द	,,	,,	,,	प्रथम
3.	592	820132	पीताम्बर शर्मा	श्री श्यामप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
4.	608	830115	दूधपुरी गोस्वामी	श्री सेढूराम गोस्वामी	,,	दर्शनशास्त्र	,,	प्रथम
5.	610	840164	स्वामी भीष्म चैतन्य	श्री स्वामी आत्मानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
6.	593	850187	अम्बरीष कुमार	श्री सेठ सन्तप्रसाद आर्य	,,	संस्कृत साहित्य	,,	द्वितीय
7.	594	850184	भूप्रकाश सिंह चौहान	श्री तोताराम सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
8.	595	830099	देवशर्मा आर्य	श्री हरपाल शास्त्री	,,	,,	,,	प्रथम
9.	596	850182	दशरथ कुमार	श्री शिवराम सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
10.	597	850193	दिनेश चन्द्र	श्री जयप्रकाश	,,	,,	,,	प्रथम
11.	598	850237	हेमकुमार विद्यार्थी	श्री मनोरथ उप्रेती	,,	,,	,,	प्रथम
12.	599	850183	इन्द्रप्रकाश गौतम	श्री दाताकर्ण गौतम	,,	,,	,,	प्रथम
13.	600	850181	विष्णुप्रसाद गौतम	श्री प्रेमनारायण प्रसाद	,,	,,	,,	प्रथम
14.	601	830144	कु० मीना	श्री ओमप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितीय
15.	602	850024	कु० मीना	श्री सूरजभान शर्मा	,,	,,	,,	तृतीय

15. 602 850024 कु० मीना श्री सूरजभान शर्मा ,, ,, ,, तृतीय

क्र सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
16.	604	850015	श्रीमती शकुन्तला	श्री शुभराम	एम०ए०	संस्कृत साहित्य	गु०कां०वि०	प्रथम
17.	605	850038	कु० सन्तोष	श्री महासिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
18.	611	850235	अशोककुमार विश्नोई	श्री बालेश्वर चन्द्र	,,	हिन्दी साहित्य	,,	द्वितीय
19.	612	850230	अमरोशचन्द्र ढौंडियाल	श्री अनुसूयाप्रसाद ढौंडियाल	,,	,,	,,	प्रथम
20.	613	850179	अमलदार	श्री सम्पति	,,	,,	,,	प्रथम
21.	614	850244	दिनेशकुमार चौहान	श्री मेदसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
22.	615	850242	खीमानन्द	श्री ईश्वरीदत्त टिटगाँई	,,	,,	,,	द्वितीय
23.	616	850177	लालजी पाण्डेय	श्री सूर्यनारायण पाण्डेय	,,	,,	,,	प्रथम
24.	617	850178	मिथिलेश्वर झा	श्री सर्वेश्वर झा	,,	,,	,,	द्वितीय
25.	618	850176	प्रकाश पाटील	श्री बाबूराव पाटील	,,	,,	,,	द्वितीय
26.	619	850222	परमवीर सिंह	श्री सुखबीर सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
27.	621	850189	योगेशचन्द्र पाण्डेय	श्री श्यामदत्त पाण्डेय	,,	,,	,,	द्वितीय
28.	622	840121	वीरेन्द्रसिंह असवाल	श्री मोहनसिंह असवाल	,,	,,	,,	द्वितीय
29.	623	850007	श्रीमती बीना सिंह	श्री मान्धाता सिंह	,,	,,	,,	प्रथम
30.	624	850207	श्रीमती कमलेश सिंह	श्री रामसिंह पंवार	,,	,,	,,	द्वितीय
31.	625	850010	कु० किरण रिखी	श्री रमेशचन्द्र रिखी	,,	,,	,,	द्वितीय
32.	626	850225	श्रीमती कृष्णा	श्री वाचस्पति घिल्डियाल	,,	,,	,,	द्वितीय
33.	627	830162	कु० माधुरी ध्यानी	श्री गिरिधारीप्रसाद ध्यानी	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
34.	629	840092	कु० पूनम	श्री नन्दकिशोर गुप्ता	एम०ए०	हिन्दी	गु०कां०वि०	तृतीय
35.	630	850212	कु० रश्मि	श्री सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल	,,	,,	,,	द्वितीय
36.	631	850001	कु० सुलोचना नेगी	श्री लोकसिंह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
37.	632	850008	कु० तारा पाण्डे	श्री देवीदत्त पाण्डे	,,	,,	,,	द्वितीय
38.	633	850006	कु० उमेश कुमारी	श्री कंवरभान जैसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
39.	634	850018	कु० विजयलक्ष्मी	श्री कृष्णदास	,,	,,	,,	द्वितीय
40.	635	850022	श्रीमती विनोद बाला	श्री रिछपाल सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
41.	636	850021	श्रीमती वीना रानी	श्री नेतानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
42.	638	820154	बलराम आर्य	श्री सुन्दरलाल	,,	इतिहास	,,	द्वितीय
43.	639	850219	भूपेन्द्रकुमार शर्मा	श्री शिवकुमार शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
44.	640	850249	बंशराज राम	श्री बद्रीप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
45.	641	840146	चन्द्रशेखर शर्मा	श्री रघुनाथ शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
46.	642	850234	प्रमोदकुमार	श्री सुखवीर सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
47.	643	840149	रमेशचन्द्र पंत	श्री पी०डी० पंत	,,	,,	,,	तृतीय
48.	644	850254	सुरेशकुमार अग्रवाल	श्री त्रिलोकीनाथ	,,	,,	,,	तृतीय
49.	645	850236	श्रीराम	श्री मदनलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
50.	647	850249	सत्यपाल	श्री दिलीपसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
51.	649	850221	विवेक मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	एम०ए०	इतिहास	गु०कां०वि०	द्वितीय
52.	650	840131	कु० आभा भंडारी	श्री ठाकुरसिंह भंडारी	,,	,,	,,	द्वितीय
53.	651	850033	कु० अंजू बाला	श्री रमेशचन्द्र	,,	,,	,,	द्वितीय
54.	652	850253	कु० नीलम रानी	श्री जियालाल शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
55.	653	850012	कु० रजनी सेंगर	श्री जबरसिंह सेंगर	,,	,,	,,	प्रथम
56.	654	850168	कु० शशि कान्ता	श्री रघुनाथ शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
57.	657	850171	अनिलकुमार	श्री बालबचन सिंह	,,	मनोविज्ञान	,,	प्रथम
58.	658	850231	राजेश कुँवर	श्री रामखिलावन सिंह	एम०एस-सी०	,,	,,	द्वितीय
59.	659	850169	श्रीमती अंजू द्विवेदी	श्री ब्रह्मदेव पचौरी	,,	,,	,,	प्रथम
60.	660	850034	कु० प्रवीन त्यागी	श्री महेन्द्रसिंह त्यागी	एम०ए०	,,	,,	द्वितीय
61.	664	850192	देवेन्द्रप्रसाद डोभाल	श्री विद्यादत्त डोभाल	,,	अंग्रेजी साहित्य	,,	द्वितीय
62.	665	850157	कर्मवीर सिंह	श्री इसम सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
63.	667	840169	रविशंकर शर्मा	श्री काशीराम शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
64.	669	850191	सुरेशकुमार	श्री मदनसिंह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
65.	670	840156	शम्भू प्रसाद	श्री सदानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
66.	671	840066	संजयकुमार मेहता	श्री आनन्दप्रकाश मेहता	,,	,,	,,	द्वितीय
67.	672	840172	विजयकुमार	श्री सौमदत्त सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
68.	674	840151	लक्ष्मण	श्री श्रीचन्द	एम०ए०	अंग्रेजी साहित्य	गु०कां०वि०	तृतीय
69.	676	850159	रामकृष्ण शर्मा	श्री हरिराम	,,	,,	,,	द्वितीय
70.	677	850028	कु० आशारानी सढाना	श्री मोतीराम सढाना	,,	,,	,,	द्वितीय
71.	678	850156	कु० देविन्द्र कौर	श्री प्रीतमसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
72.	681	840117	कु० ममता	श्री शिवकुमार शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
73	682	850009	कु० मनजीत कौर	श्री सोहनसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
74.	686	850160	श्रीमती शशिप्रभा	श्री जमुनादास लुन्याल	,,	,,	,,	प्रथम
75.	687	850029	कु० सरस्वती	श्री विश्वबन्धु	,,	,,	,,	द्वितीय
76.	693	820072	अखलेशकुमार	श्री ऋषिराज	एम०एस-सी०	गणित	,,	द्वितीय
77.	697	840071	द्विजेन्द्र पन्त	श्री हेमचन्द्र पन्त	,,	,,	,,	द्वितीय
78.	699	820082	मनोजकुमार	श्री जयप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
79.	700	810071	नीरज	श्री प्यारेलाल	,,	,,	,,	प्रथम
80.	701	850217	शेखरानन्द उनियाल	श्री जयानन्द शास्त्री	,,	,,	,,	प्रथम
81.	703	830038	विजयपाल	श्री अकलचन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
82.	704	840170	वीरेन्द्रकुमार	श्री हरस्वरूप सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
83.	705	830129	कु० शशि गौतम	श्री जगदीशप्रसाद गौतम	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	1081	820066	अजयशंकर	श्री विजयशंकर	एम.एस-सी.	माइक्रोबायलोजी	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	1082	840145	अजय नागयान	श्री कलीराम नागयान	,,	,,	,,	प्रथम
3.	1083	820063	अनुराग मित्थल	श्री कमलेश्वर मित्थल	,,	,,	,,	प्रथम
4.	1084	840147	हितेन्द्रकुमार शर्मा	श्री महन्तराम शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
5.	1085	840152	ललितमोहन वत्स	श्री सुखवीरसिंह	,,	,,	,,	प्रथम
6.	1086	820061	मनोजकुमार अग्रवाल	श्री रामतीर्थ अग्रवाल	,,	,,	,,	प्रथम
7.	1087	840127	महेशचन्द्र जोशी	श्री क्षेमानन्द जोशी	,,	,,	,,	प्रथम
8.	1088	820054	सुनीलदत्त पंवार	श्री सत्यपाल	,,	,,	,,	प्रथम
9.	1089	820058	पुरुषोत्तमकुमार सिंह	श्री वकीलसिंह	,,	,,	,,	प्रथम
10.	1090	820053	तरुणकुमार रिखरा	श्री पुरुषोत्तमलाल रिखरा	,,	,,	,,	प्रथम
11.	1091	840126	विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ	श्री धर्मेन्द्रप्रसाद कुलश्रेष्ठ	,,	,,	,,	प्रथम
12.	1106	850157	अरविन्दर मोहन	श्री मनमोहन सिंह	,,	,,	,,	प्रथम
13.	1107	830078	महेन्द्र सिंह	श्री जहानसिंह	,,	,,	,,	प्रथम
14.	1108	830066	सुनीलकुमार शर्मा	श्री कैलाशचन्द्र शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
15.	1109	830061	विजयकुमार	श्री नरेशकुमार	,,	,,	,,	प्रथम

ओ३म्

८९वाँ

वार्षिक विवरण

१९८८-८९

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

डा० वीरेन्द्र अरोड़ा

कुलसचिव,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

जुलाई, १९८९ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :

जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
कार्यवाहक कुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री आर० पी० सहगल (१ मई, १९८९ तक)
	—डा० बी०सी० सिन्हा (२ मई, १९८९ से)
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० जे० एस० सेंगर
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

———

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापनाकाल के ८९ वर्ष पूरे कर रहा है। वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, पुराविद्या, राष्ट्रसेवा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय के स्नातकों द्वारा की गई सेवाएँ स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य हैं। विश्वविद्यालय के संस्थापक अमरहुतात्मा कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भारतीय पुनर्जागरण और स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ थे। वही एक ऐसे दीपाधार थे जिनके प्रेम और ज्ञान की रोशनी ने हिन्दू और मुसलमान राष्ट्रभक्तों को समानरूप से प्रभावित किया तथा पराधीन भारत में पाश्चात्य शिक्षा की आँधी में अविचल खड़े रहकर भारतीय जीवनमूल्यों और आदर्शों पर आधारित शिक्षा का क्रान्ति-बिगुल बजाया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अनुसंधान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था है जिसको प्रशंसा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, महाकवि रवीन्द्रनाथ तथा महामना मदनमोहन मालवीय जैसे शिक्षाविद् मुक्तकंठ से करते रहे हैं। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के पश्चात कला, विज्ञान और वैदिक विषयों में उच्चतम अध्ययन और अनुसंधान के अलावा गुरुकुल ने ग्रामोद्धार, प्रसार कार्य, प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में शिक्षा की प्रासंगिता बनाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायताराशि से इस वर्ष संस्कृत विभाग में महाभाष्यकार पतंजलि पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन आफ कालेजेज डा० सूबेसिंह राणा तथा समापन प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी. एस-सी. ने किया। जीवविज्ञान विभाग के तत्वावधान में "बदलता पर्यावरण एवं जन्तु संरक्षण" विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें भारतीय विश्वविद्यालयों के लगभग ६५ वैज्ञानिक-प्राध्यापकों ने भाग लिया। इसी प्रकार गणित विभाग में वैदिक गणित की परम्पराएँ एवं अनुप्रयोग तथा आधुनिक विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी में गणित के अनुप्रयोग पर दो सिम्पोजियम आयोजित हुए। राष्ट्रीयस्तर का यह आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

फरवरी, ८९ में राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का सफल आयोजन हुआ। इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग २०० छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। डा० सतीशचन्द्र, निदेशक, भारत सरकार ने इस शिविर का उद्घाटन किया तथा समापन पर श्री जगदम्बिका पाल, मन्त्री शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। इस शिविर का संयोजन डा० जयदेव वेदालंकार, को-आर्डिनेटर, राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया। योग विभाग का कार्य भी अत्यन्त सन्तोषजनक रहा।

कुलपतिजी ने इस वर्ष ख्यातिलब्ध विद्वानों को आमन्त्रित कर उनके व्याख्यानों से विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को लाभान्वित कराया। इस क्रम में इसी विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा पंजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द पीठ के निदेशक डा० रामनाथ वेदालंकार, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० रामकरण शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० वृजमोहन चतुर्वेदी, सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य डा० लक्ष्मीनारायण दूबे, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पुष्पा बंसल, पंजाब विश्वविद्यालय की अंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा डा० निर्मला मुखर्जी, न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रभा शर्मा, प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री डा० वी. जी. झिंगरन, तथा प्रयाग विश्वविद्यालय के डा० चट्टोराज के सारगर्भित व्याख्यान हुए।

गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट, वैदिक पथ तथा प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञान प्रकाशित हुए। इन पत्रिकाओं में से कुछ के ज्ञानवर्द्धक विशेषांक भी निकले। विश्वविद्यालय के श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र से इस वर्ष "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" सन्दर्भ-ग्रन्थ अंग्रेजी में प्रकाशित किया। इससे पूर्व प्रकाशन केन्द्र के दो प्रकाशन वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन तथा शोध सारावली विद्वानों में बहुचर्चित हो चुके हैं।

राष्ट्रीय छात्रसेना, प्रौढ़ सतत् शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना तथा क्रीड़ा विभाग की गतिविधियां भी सुचारू रूप से संचालित हुईं। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित प्रतियोगिताओं का उद्घाटन प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने किया। विद्यार्थियों ने संस्कृत दिवस, युवा दिवस, हिन्दी दिवस, त्रिभाषा वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा वृक्षारोपण एवं मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों में सोत्साह भाग लिया। अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में

भी हमारे छात्र भाग लेते रहे। इतिहास विभाग के छात्र ऐतिहासिक सरस्वती यात्रा पर गए। अध्ययन की दृष्टि से यह यात्रा छात्रों के लिए लाभकारी सिद्ध हुई। हमारे विद्वान प्राध्यापक इस वर्ष विदेश यात्रा पर भी गए। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने अमेरिका, डा० इन्द्रायण ने कनाडा, डा० बी० डी० जोशी ने फिनलैंड तथा डा० पी० पी० पाठक ने स्वीडन जाकर विद्वतापूर्ण व्याख्यान देकर एवं प्रपत्र वाचन कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए हमारे मध्य माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी, पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार पधारे। विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति एवं इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को निधनोपरान्त उनकी अमूल्य सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह जी ने डा० विद्यालंकार की पत्नी को उत्तरीय तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया। वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार को विश्वविद्यालय को सर्वोच्च पूजोपाधि विद्यामार्तण्ड प्रदान की गई तथा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार डी०ए०वी० कालेज न्यास के प्रधान प्रो० वेदव्यास को भव्य समारोह के बीच प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन-प्रकाशन तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या, पाठ्यक्रमों तथा आयोजनों में भाग लेकर अपने पद की गरिमा बढ़ाई है। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में इन विद्वानों के व्यक्तिगत क्रियाकलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते रहे हैं।

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव
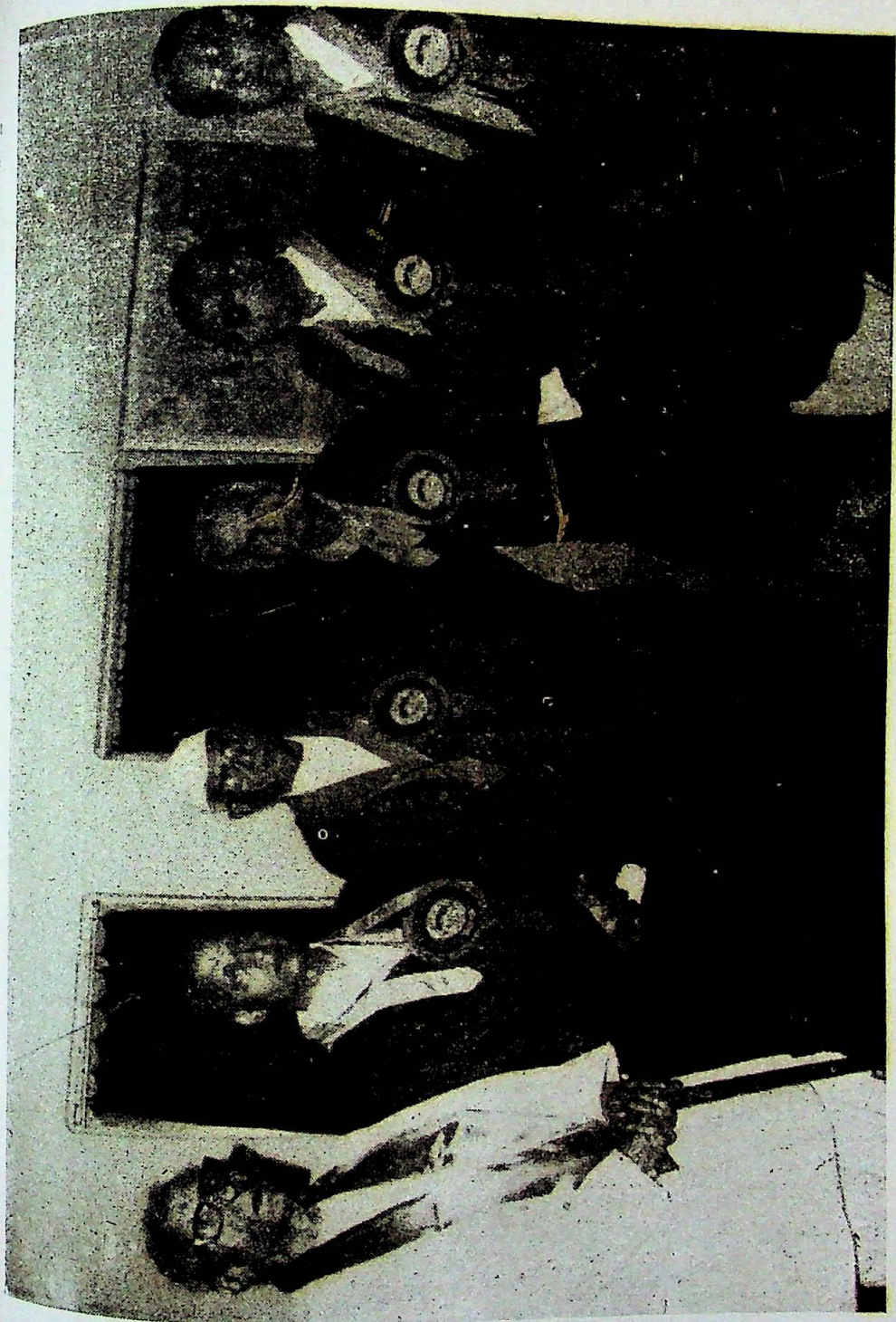
दीक्षान्त के लिए परिधान ग्रहण करते विश्वविद्यालय के अधिकारी बाएँ से—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पूर्व कुलपति और आचार्य गुरुकुल कांगड़ी; प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एवं कार्यवाहक कुलपति, प्रो० शेरसिंह जी कुलाधिपति; श्री ब्रह्मदत्त जी पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार मुख्य अतिथि; डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव तथा डा० श्यामनारायण सिंह, उपकुलसचिव।

दीक्षान्त भवन में आयोजित दीक्षान्त पूर्व यज्ञ का भव्य दृश्य—गुरुकुल के पदाधिकारी तथा आचार्यवृन्द यज्ञ प्रारम्भ करते हुए।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नए पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८८ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंगलैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आयी इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप

मूलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय

२ साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव

सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जो गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जो, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जो अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जो विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम० ए०

कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था)भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६६ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर. सी शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय को शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८८ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल को पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजोतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहाँ स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर(वेदालंकार में)त्रिवर्षीय पाठ्य-

क्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम० ए० और पी-एच० डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम० ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच० डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी० एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलोजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलोजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू० जी० सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसके निकट-भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़

रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गोशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलत हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों – परिदृष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत चार वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्त-र्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों का आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत पांच वर्षों से चल रहा है। दो वर्षों से अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा' का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हुए। गंगा समन्वित योजना एव हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

— रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिदृष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी (पैट्रोलियम मन्त्री, भारत सरकार) माताओं, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्यभूमि में आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई में जूझने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनंर्जागरण के प्रणेता थे। राष्ट्रभक्त युवकों तथा युवतियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन और नवीन ज्ञान-विज्ञान का समन्वय कर, उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात किया। उन्हीं से प्रेरणा लेकर बाद में शान्ति निकेतन और काशी विद्यापीठ जैसे शिक्षण-संस्थान स्थापित हुए। आज उसी महापुरुष की तपस्यास्थली में नवदीक्षित स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नव-स्नातक गुरुकुल को अपनी माता की तरह आदर और प्रेम देंगे तथा स्वामी जी के बताये सिद्धान्त पर चलकर, अपने राष्ट्र और समाज की उन्नति चाहते हुए, सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिए प्रयत्न करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओं ! इस वर्ष दीक्षान्त के लिए हमारे मध्य उत्तर-प्रदेश की प्रखरमेधा और केन्द्रीय सरकार के पैट्रोलियम राज्य मन्त्री माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी उपस्थित हैं। आप निष्ठावान आर्यसमाजी, दूरदर्शी राजनेता, कर्मठ, समाजसेवी, उच्चकोटि के शिक्षा-शास्त्री, राजनीतिशास्त्र के पण्डित, भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य के पोषक तथा गुरुकुल के अत्यन्त हितैषी हैं। उत्तर प्रदेश के वित्त-मन्त्री के रूप में आपने बड़ी ख्याति अर्जित की और अब केन्द्रीय सरकार को आपका रचनात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है। मैं माननीय राज्यमन्त्री जी का हार्दिक आभारी हूँ कि उन्होंने अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी हमारे बीच पधार कर हमारा गौरव बढ़ाया है।
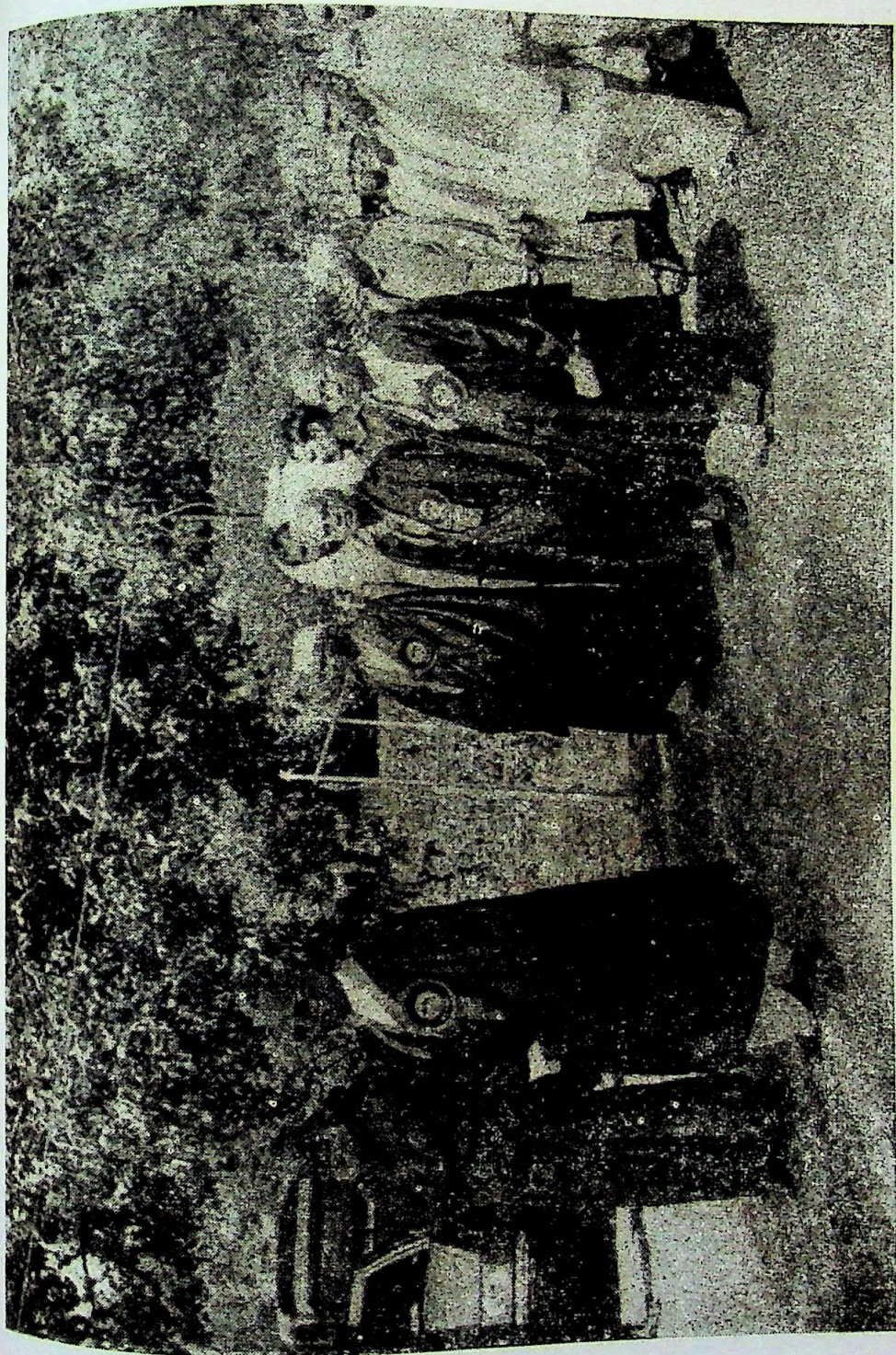
दीक्षान्त के अवसर पर कुलपताका के आरोहण के लिए उपस्थित पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह, माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी, कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, श्री प्रो० धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रो० वेदव्यास आदि महानुभाव ।

गुरुकुल के पूर्व आचार्य एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रामनाथ जी वेदालंकार (पूर्व अध्यक्ष, दयानन्द पीठ पंजाब यूनिवर्सिटी) को विद्यामार्तण्ड की मानद् उपाधि प्रदान की गई। इस अवसर पर कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने उन्हें उत्तरीय प्रदान कर अभिनन्दित किया ।

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० रामनाथ जी वेदालंकार को विद्यामार्तण्ड की पूजोपाधि प्रदान करते हुए कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार तथा कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ।

दीक्षान्त भवन की ओर जाते हुए नव-स्नातक

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास के कुछ बिन्दुओं का उल्लेख करना भी मैं आवश्यक समझता हूँ। विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, इतिहास जैसी पुराविद्याओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है, वहाँ कम्प्यूटर जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन और अध्यापन का कार्य भी सुचारू रूप से सम्पन्न कर रहा है। प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम, योग प्रशिक्षण तथा कमर्शियल मैथडस् आफ कैमिकल एनेलिसिस जैसे व्यवसायोन्मुख डिप्लोमाओं का प्रशिक्षण देकर वह समाज और देश की मौलिक आवश्यकताओं को भी पूरा कर रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों द्वारा हमारे स्नातक, राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा में भी जुड़े और ग्रामसुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण में संलग्न होकर शिक्षा को व्यवहारिक रूप दे सके। इससे आशा बनती है कि वे स्वामी श्रद्धानन्द और गांधी जी के विचारों को साकार रूप देने में पीछे नहीं हटेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से इस वर्ष संस्कृत विभाग में महाभाष्यकार पतंजलि पर त्रिदिवसीय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन आफ कालेजेज, डा० सूबेसिंह राणा ने तथा समापन स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी-एस० सी० ने किया। इसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनेक विद्वानों ने पधार कर निबन्धों का वाचन किया। विशिष्ट व्याख्यान के लिए सम्पूर्णानन्द वि० वि० के कुलपति डा० रामकरन शर्मा, डा० रामनाथ जी वेदालंकार, पंजाब वि० वि० के डा० वेदप्रकाश उपाध्याय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० बृजमोहन चतुर्वेदी पधारे। विभाग के अध्यक्ष डा० योगेश्वरदत्त शर्मा अपने सहयोगियों के साथ अखिल प्राच्य विद्या संगोष्ठी में भाग लेने के लिये विशाखा-पत्तन गये। मुझे कहते हुए हर्ष होता है कि १९९० में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या संगोष्ठी का आयोजन गुरुकुल में होगा।

वेद विभाग में वैदिक यज्ञ-याज्ञ विधान (वैदिक कर्म-काण्ड) और संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए वैदिक डिप्लोमा शुरु किया गया तथा वैदिक संग्रहालय को अत्याधुनिक बनाने के विषय में कार्य किया गया। वैदिक प्रयोग-शाला में अलंकार से एम० ए० तक प्रयोगात्मक वैदिक कक्षा भी प्रारम्भ की गई। इस वर्ष वेद विभाग में डा० रामनाथ वेदालंकार आदि कई अन्य विद्वानों के व्याख्यान हुए।

हिन्दी विभाग में सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा राष्ट्रीय प्रोफेसर डा० लक्ष्मीनारायण दूबे, रोहतक वि० वि० के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पुष्पा बन्सल, रेल मन्त्रालय के हिन्दी सलाहकार श्री बलदेव बंशी

के उपयोगी व्याख्यान हुए तथा फिजी से विशेषरूप से हिन्दी-अध्ययन के लिए पधारे हुए छात्र श्री नेतराम शर्मा ने फिजी में हिन्दी शिक्षण के लिए हिन्दी पर एक पुस्तक की रचना की। विभाग की सुचारू गतिविधि के लिए हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने उल्लेखनीय कार्य किया। विभाग के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए जनसम्पर्क किया तथा अनेक आयोजनों में भाग लिया। मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने विभागीय उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। विभाग के प्राध्यापक डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने इण्डियन काउन्सिल आफ सोशल साइन्स रिसर्च, नई दिल्ली के तत्वावधान में रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा करके प्रस्तुत कर दिया।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग डा० बिनोद चन्द्र सिन्हा की अध्यक्षता में प्रगति की ओर उन्मुख है। इस वर्ष विभाग में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अवकाशप्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चन्द्र प्रकाश का 'प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान हुआ। विभाग ने एक सरस्वती-यात्रा का भी आयोजन किया। इस यात्रा में थानेश्वर, दिल्ली, आगरा, मथुरा तथा खजुराहों के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारकों का अध्ययन किया गया। थानेश्वर में भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे उत्खनन कार्य का अवलोकन भी विद्यार्थी और अध्यापकों ने किया। विभाग ने निकट-भविष्य में उत्खनन की योजना बनाई है और इसका प्रारूप सर्वेक्षण विभाग को भेज दिया है। सरस्वती यात्रा के संयोजक डा० जबरसिंह सेंगर और डा० श्यामनारायण सिंह थे।

सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक पुरातत्व संग्रहालय, विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। सिन्धु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक की विभिन्न पुरातन वस्तुयें, प्रतिमायें, कलाकृतियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं मुद्रायें यहाँ संकलित हैं। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष में स्वामी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल, दुर्लभ चित्र तथा पत्र आदि सुरक्षित हैं। उत्तर प्रदेश की सहायता राशि से जहाँ कलावीथिका के लिए सोलह प्रदर्श पटल बनवाये गये वहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित लगभग २०० छायाचित्र राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली से क्रय किये गये। राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त अनुदान राशि से पाण्डुलिपि के संरक्षण के लिए काष्ठ एवं परिशोधित अयश धूमण प्रकोष्ठों का निर्माण कराया गया। फिजी के निवासी तथा हमारे छात्र श्री नेतराम जी शर्मा ने छह ताम्र एवं रूपक मुद्रायें भेंट कीं। संग्रहालय निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर के निर्देशन एवं संग्रहालय के अध्यक्ष सूर्यकान्त श्रीवास्तव के तकनीकी ज्ञान से संग्रहालय विकास की ओर उन्मुख है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय दर्शनीय है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की एक लाख से अधिक पुस्तकें संकलित हैं। शोध-कार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में संग्रहित संस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य, धर्म-दर्शन, आर्य समाज और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों का अध्ययन करते हैं। सातवीं पंचवर्षीय योजना में अनुदान आयोग ने नवीनतम पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के क्रय के लिए ११ लाख रुपयों का अनुदान स्वीकृत किया था। इस वर्ष ३६५६ नई पुस्तकें क्रय की गईं, ४५४ पत्रिकायें मंगाई गई जिनमें ४१ पत्रिकायें विदेशी हैं। वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की ७५०० पुस्तकों की बिबलियोग्राफी तैयार की गई जो ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो गई। दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिये प्लेन पेपर कापियर मशीन खरीदी गईं: पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार के निर्देशन में २६०० पुस्तकों का वर्गीकरण तथा २५१७ का सूचीकरण किया गया। आलोच्य वर्ष में २४,१०० पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग किया गया।

विश्वविद्यालय छात्रावास के नवीनीकरण के साथ प्रतिदिन संध्या एवं अग्निहोत्र की व्यवस्था की गयी तथा विश्वविद्यालय के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रति सप्ताह सामूहिक अग्निहोत्र की व्यवस्था की गयी जो सुचारू रूप से सम्पन्न हुई। परिसर में प्रति सप्ताह वैदिक पारिवारिक यज्ञ समिति के आयोजन आर्य विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए किये जाते रहे। इन साप्ताहिक आध्यात्म सत्संग के आयोजन के लिए वित्ताधिकारी श्री राजेन्द्र प्रसाद सहगल बधाई के पात्र हैं। डा० अम्बुजकुमार शर्मा और डा० ईश्वर भारद्वाज के निर्देशन में क्रीड़ा एवं योग विभाग ने पर्याप्त उन्नति की। लखनऊ, मेरठ, दिल्ली, कुरुक्षेत्र,आगरा तथा कानपुर में आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे छात्र सम्मिलित हुए तथा योग विभाग में योग चिकित्सा केंन्द्र की स्थापना के साथ योग के एकवर्षीय और चतुर्मासीय पाठ्यक्रम भी विधिवत् सम्पन्न हुए।

प्रौढ़ सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम का संचालन डा०अनिल कुमार, सहायक निदेशक के तत्वावधान में सफलतापूर्वक चला आ रहा है। विभाग की प्रगति से संतुष्ट होकर अनुदान आयोग ने इस विभाग को ६० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अतिरिक्त ३ जनशिक्षण निलयम्,३ सतत शिक्षा परियोजनाएँ तथा १ जनसंख्या शिक्षा क्लब स्वीकार किया है। ५५ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का संचालन हरिद्वार और उससे लगे ग्रामीण शिक्षा क्षेत्रों में किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डा० जयदेव वेदालंकार तथा डा० ए० के० चोपड़ा देख रहे हैं।

फरवरी '८६ में राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण शिविर डा० जयदेव वेदालंकार, समन्वयक के संचालन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के २०० छात्र एवं छात्राओं ने ग्राम जमालपुर एवं जगदीशपुर में रात-दिन सड़कों का निर्माण, औषधि वितरण, साक्षरता अभियान आदि कार्यों को किया।

इसके उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जगदम्बिका पाल, मंत्री शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश सरकार पधारे थे। उन्होंने विशिष्ट व्याख्यान में विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग की प्रशंसा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन करके इस विश्वविद्यालय ने अपनी गौरवपूर्ण परम्परा का निर्वाह किया है। डा० सतीश चन्द्र, निदेशक भारत सरकार ने इस शिविर का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर एक विशाल रैली का आयोजन किया गया।

गत जून में दर्शन विभाग के तत्वावधान में माननीय डा० के० सच्चिदानन्द मूर्ति, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली का वैदिक दर्शन विषय पर डा० जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष दर्शन बिभाग के संयोजकत्व में एक विशिष्ट व्याख्यान सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से उन्हें प्रशस्ति-पत्र व शाल भेंट की गई। डा० मूर्ति ने अपने व्याख्यान में दर्शन विभाग की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए, राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन के लिए, साथ ही विश्वविद्यालय की प्रगति पर, प्रसन्नता व्यक्त की। डा० जयदेव वेदालंकार एवं डा० यू० एस० बिष्ट ने इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस के पाण्डिचेरी अधिवेशन, १९८८ में सक्रिय भाग लिया। डा० विजयपाल शास्त्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रिफ्रेसर्स कोर्स पूर्ण किया।

प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय प्रगति की ओर उन्मुख है। भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, गणित, कम्प्यूटर, जन्तुविज्ञान, तथा वनस्पतिविज्ञान में उच्चतर अध्ययन और जन्तु विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान तथा गणित में शोध-कार्य चल रहा है। इस वर्ष गणित विभाग में वैदिक गणित परम्परायें एवं अनुप्रयोग तथा आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी में गणित के अनुप्रयोग पर दो सिम्पोजियम आयोजित हुए। अखिल भारतीय स्तर की विज्ञान सोसायटी, विज्ञान परिषद् के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध गणितशास्त्री प्रोफेसर जे० एन० कपूर ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस आयोजन में दो दर्जन आमन्त्रित भाषण हुए तथा ६० शोध-पत्र प्रस्तुत

हुए। प्रो० त्यागी और प्रो० डा० एस० एल० सिंह को इसकी सफलता का श्रेय जाता है। प्रो० त्यागी के निर्देशन में प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध-पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है जिसके विनिमय में युगोस्लाविया, पाकिस्तान, पोलैण्ड और वियतनाम आदि से गणित एवं विज्ञान की उत्कृष्ट शोध-पत्रिकायें प्राप्त हो रही हैं। श्री एच० एल० गुल्नाटी ने डा० फिल० उपाधि हेतु अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। भौतिकविज्ञान विभाग श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर को अध्यक्षता में सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को यू० जी० सी० द्वारा संचालित कार्यक्रम दिखाने के लिए विभाग में टी० वी० जैसे उपकरण भी उपलब्ध हैं तथा बी० एस-सी० तृतीय वर्ष में प्रोजेक्ट वर्क का प्रावधान किया गया है। इससे विद्यार्थियों को आधुनिक इलैक्ट्रोनिक यंत्र सीखने का अवसर मिला है।

भौतिकी विभाग के प्राध्यापक डा० पी०पी० पाठक ने स्वीडन के उप्शाला विश्वविद्यालय में आयोजित वायुमण्डलीय विद्युत पर आठवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा जर्मनी में बॉन विश्वविद्यालय के रेडियो ऐस्ट्रोनोमिकल इन्स्टीट्यूट में यज्ञ द्वारा वर्षा (रेन मेकिंग बाई यज्ञ) पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया। रसायन विभाग के अध्यक्ष डा० रामकुमार पालीवाल के निर्देशन में रसायन विभाग में कमर्शियल मेथड्स ऑफ कैमिकल एनेलिसिस डिप्लोमा नियमित अध्ययन के साथ सफलतापूर्वक चल रहा है और इसमें विद्यार्थियों द्वारा प्रवेश की माँग निरन्तर बढ़ रही है। जन्तुविज्ञान विभाग प्रो० बी० डी० जोशी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। हिमालय शोध परियोजना के प्रमुख-अन्वेषक प्रो० बी० डी० जोशी ने परियोजना की अन्तिम रिपोर्ट भारत सरकार को भेज दी है। विभाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० चट्टोराज का महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ तथा 'बदलता पर्यावरण एवं जन्तु संरक्षण' विषय पर एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें भारतीय वि०वि० के लगभग ६५ वैज्ञानिक-प्राध्यापकों ने भाग लिया।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक, मुख्य अन्वेषक वनस्पति विज्ञान विभाग, गुरुकुल के निर्देशन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत लैक्टिन परियोजना तथा हिमालय आर्किड्स की पर्यावरण शोध योजना भी सफलतापूर्वक चल रही है। विभाग के अध्यक्ष प्रो० विजयशंकर ने वनस्पति विभाग को प्रगति की ओर ले जाने में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम मिलाकर चल रहा है।

आर्य बन्धु एवं बहनों!

विश्वविद्यालय के शोधात्मक कार्यक्रम, शैक्षिक प्रगति तथा आर्य

विचारधारा और भारतीय विज्ञान को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय से नियमित पत्र-पत्रिकायें निकल रहे हैं। इनमें आर्यभट्ट के सम्पादक डा० विजयशंकर, वैदिक पथ के सम्पादक डा० राधेलाल वार्ष्णेय, गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक डा० जयदेव वेदालंकार तथा प्रह्लाद के सम्पादक डा० विष्णुदत्त राकेश के प्रयास सराहनीय हैं। मैंने भी जन-सामान्य तक वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द के विचारों को सुगमता के साथ पहुँचाने के लिए सरल, सुबोध रूप में अनेक पुस्तिकाओं का प्रकाशन कराया जो लाखों की संख्या में जिज्ञासुओं में वितरित की जा चुकी हैं। दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी मंत्र-पुस्तिकाओं से पाठकों को विशेष लाभ मिल रहा है। इन पुस्तकों की देश-विदेश से संस्तुतियाँ प्राप्त हो रही हैं तथा कई भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इनका अनुवाद हो रहा है, जैसे कन्नड़, अंग्रेजी, उर्दू आदि। डा० लूथरा यूमा (आरिजना) से यह आग्रह किया गया है कि इन विचारों को कैसेट्स के रूप में भी तैयार किया जाय, इसके लिए जो भी सहायता अपेक्षित होगी मैं भेजूँगा।

अंग्रेजी विभाग प्रोफेसर डा० राधेलाल वार्ष्णेय के निर्देशन में आशातीत प्रगति कर रहा है। विभाग में डा० निर्मल मुखर्जी, प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग, पंजाब वि०वि० का व्याख्यान "ए पेसेज मोर देन इण्डिया" विषय पर हुआ। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर सेमिनार पेपर्स पढ़े। डा० वार्ष्णेय ने बी०एच० ई०एल० में आयोजित क्षेत्रीय अंग्रेजी अध्यापकों की अध्यापन-सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए एक त्रिदिवसीय अंग्रेजी कार्यशाला का आयोजन कराया। रुड़की विश्वविद्यालय तथा बी० एस० एम० कालेज रुड़की में हुई दो शोध संगोष्ठियों में डा० वार्ष्णेय एवं विभागीय सहयोगियों ने भाग लिया।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाज सेवा मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र-निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना तथा ज्ञान की खोज के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं और आप महानुभावों का प्यार और सहयोग पाकर हम इसी प्रकार आगे बढ़ते रहेंगे। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन का बल लेकर राष्ट्रीय जीवन में उतरें और सफलता प्राप्त करें, यही मेरा आशीर्वाद है।

गुरुकुल की उक्त उपलब्धियों के लिये मैं सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर की कृपा और अपने ज्ञानी विद्वान् संन्यासियों के आशीर्वाद को कारण समझता

हूँ तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, उ०प्र० सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् तथा शिक्षा पटल के मान्य सदस्यों के आर्थिक, बौद्धिक और मानसिक सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर हर प्रकार का अमूल्य सहयोग देकर हमारा मार्ग-दर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने में समय-समय पर हमारी सहायता की।

इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके पुरुषार्थ और लगन से ये सब उपलब्धियाँ प्राप्त हो सकीं। कुलसचिव, उपकुलसचिव एवं वित्ताधिकारी और उनके विभागीय सहयोगियों को भी मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ।

इस वर्ष पी-एच०डी० की ७, एम. ए. की ६६, एम. एस-सी. की १५, बी. एस-सी. की ६४ तथा अलंकार की १७ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं। आईये एक बार कहें—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत॥

आपका अपना ही
रामप्रसाद वेदालंकार
कुलपति

१४ अप्रैल, १९८९

दीक्षान्त भाषण

द्वारा

माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी

पैट्रोलियम राज्य मन्त्री, भारत सरकार

ज्ञान मनुष्य को अपने अस्तित्व और मानव-जीवन के उद्देश्यों के बारे में कुसंस्कारों से मुक्त करता है। मानव-प्रकृति के विषय में सत्य को प्रकट करता है। वास्तव में मनुष्य का अस्तित्व विचारशक्ति पर आधारित है। मनुष्य खोज करके ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

मानव-जीवन का मूल प्रेरणास्रोत स्वतन्त्रता है! स्वतन्त्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है, परन्तु उन तमाम परिस्थितियों में परिवर्तन लाना है जो मनुष्य के विकास में बाधक हैं। शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में निहित संभावनाओं का विकास है।

एक विचारशील प्राणी होने के कारण मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता है। वह एक व्यक्ति के रूप में भी कार्य कर सकता है क्योंकि विचार करने का यंत्र अर्थात मस्तिष्क व्यक्तिगत होता है, सामूहिक नहीं। संसार में बड़े-बड़े परिवर्तन विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा विकसित विचारों के कारण ही हुए हैं। यह विचार एक मानवसमाज को प्रेरित करते हैं और ऐसे परिवर्तन का कारण बनते हैं जिससे मानव-समाज के विकास में आने वाली बाधाएँ दूर हों।

यह कहा जा सकता है कि आदर्श शिक्षा, समाज के पुनर्गठन के लिए तथा प्रगति सुनिश्चित करने के लिए आधारभूत आवश्यकता है। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

परस्पर सहयोग करके और समाज में उचित समन्वय स्थापित करके मनुष्य ऐसा समाज बनाता है, जो प्रत्येक व्यक्ति तथा पूरे समाज के विकास के लिए द्वार खोल देता है। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का मुख्य उद्देश्य यही था अर्थात व्यक्तित्व के विकास के साथ एक आदर्श समाज का संगठन जिसे महर्षि दयानन्द ने "आर्य समाज" का नाम दिया। आर्य समाज एक संकुचित कल्पना नहीं थी।
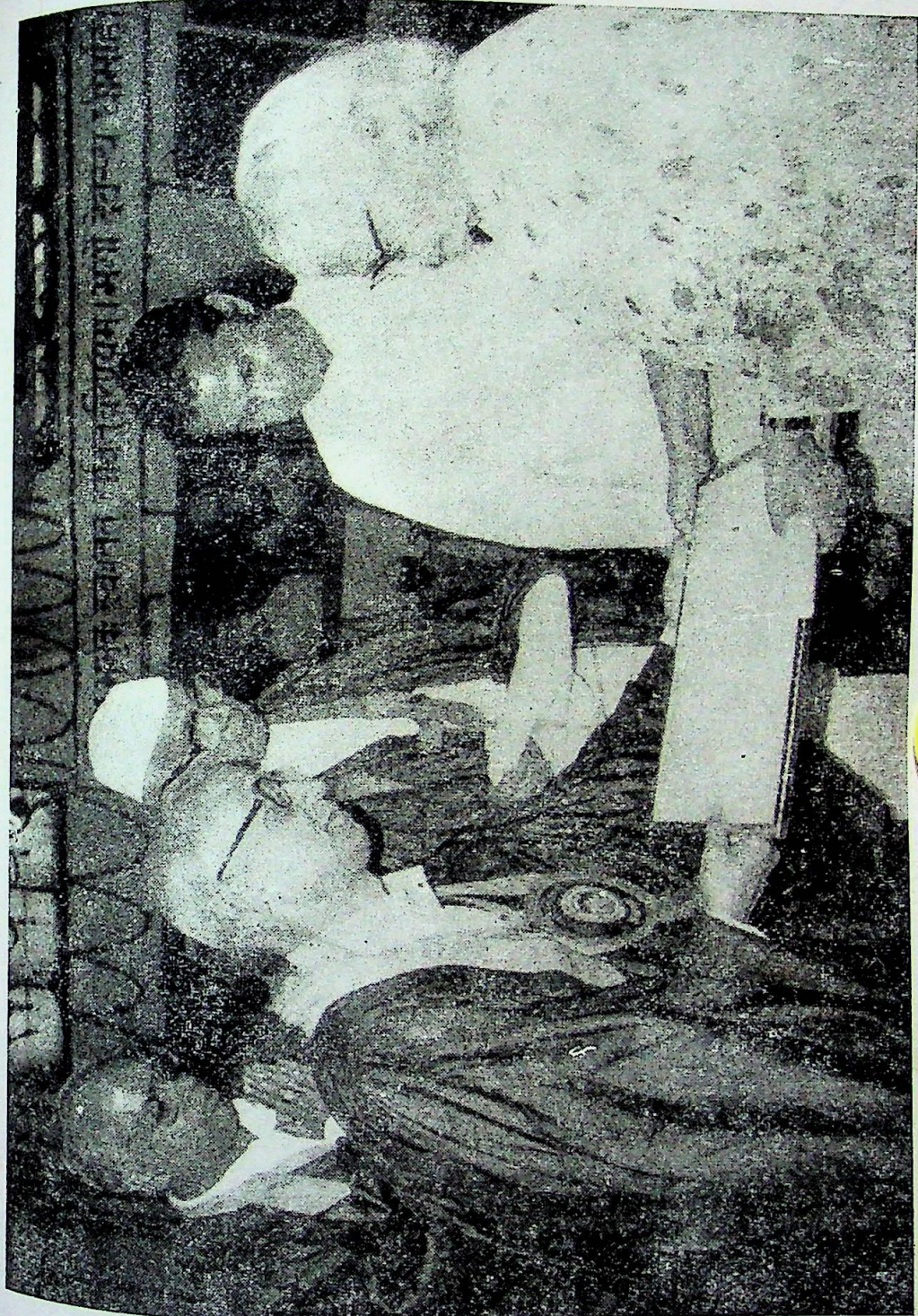
गुरुकुल के यशस्वी स्नातक, पूर्व कुलपति एवं कुलाधिपति तथा सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को निधनोपरान्त उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। स्व० डा० विद्यालंकार जी की पत्नी सम्मान ग्रहण करने मंच पर उपस्थित हुईं। भावविभोर और विह्वल कर देने वाले इस दृश्य पर सभी के नेत्र सजल हो उठे। चित्र में कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी प्रशस्तिपत्र तथा कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी उत्तरीय प्रदान करते हुए।
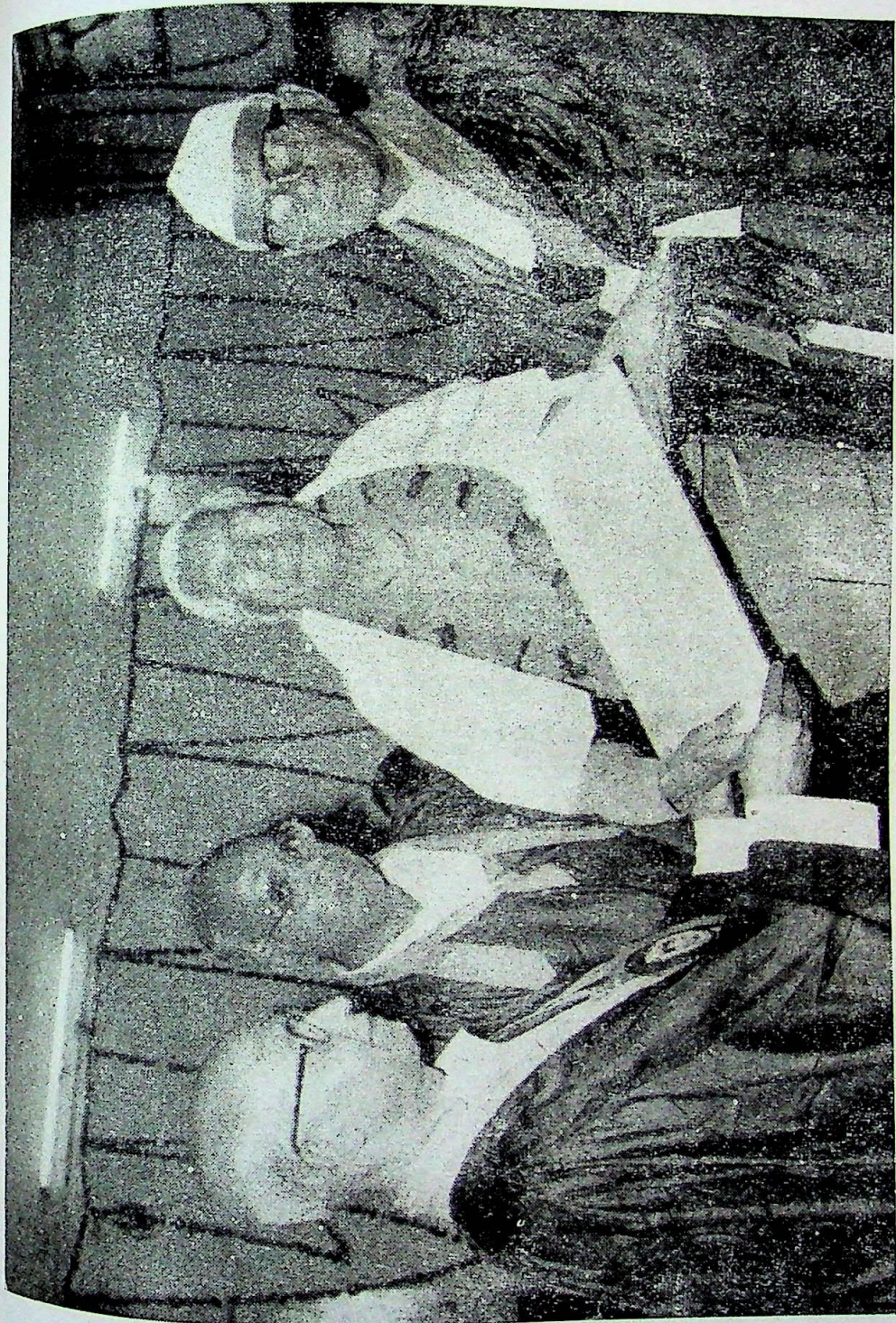
संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा स्थापित आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित प्रो० वेदव्यास जी को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए माननीय प्रो० शेरसिंह, कुलाधिपति तथा प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, कार्यवाहक कुलपति।
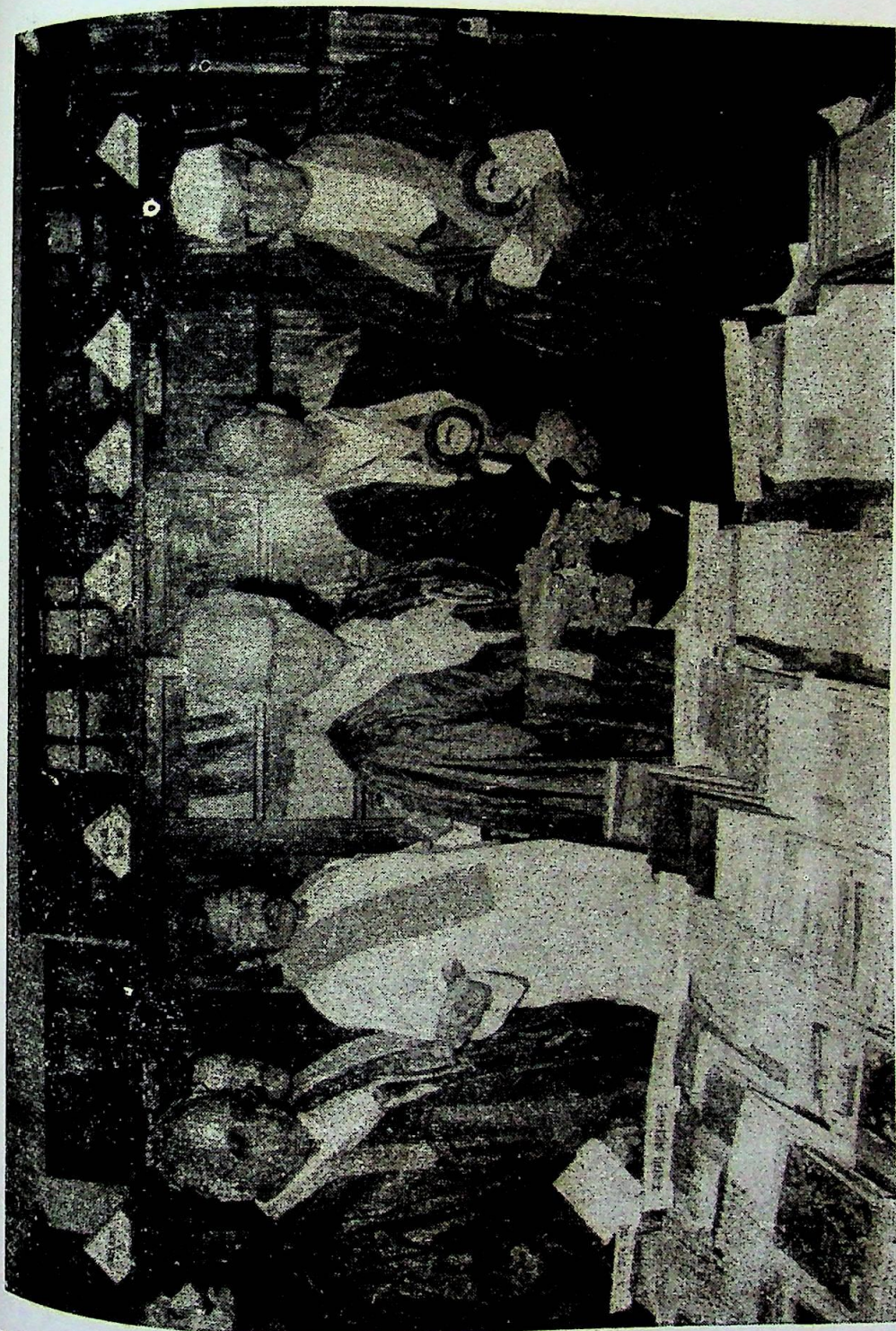
पुस्तकालय में नवागत पुस्तकों और विश्वविद्यालय प्रकाशन का अवलोकन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी तथा कुलाधिपति प्रो॰ शेरसिंह जी।

सत्य की खोज के द्वारा व्यक्ति और मानव-समाज के विकास में बाधाओं को दूर करना हमारे मूल प्रेरणास्रोत हैं। प्रकृति के बारे में निरंतर बढ़ती हुई जानकारी मनुष्य को इस दिशा में ले जाती है। सामूहिकरूप से अथवा व्यक्तिगतरूप से मनुष्य का प्रत्येक कार्य निरन्तर बढ़ती हुई मात्रा में ज्ञान प्राप्त करके व्यक्ति और समाज के विकास में आने वाली समस्त बाधाओं को दूर करना है। एक आदर्श शिक्षा-प्रणाली का यह उद्देश्य होना चाहिए।

मनुष्य नियमों के अनुसार कार्य करने वाली प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, अतः उसका तर्कसंगत और नैतिक होना अवश्यम्भावी है। इस कार्य में भी शिक्षा सबसे बड़ी सहायक बनती है।

गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली का महत्व पाश्चात्य देशों में भी स्वीकार किया गया है, आवासीय शिक्षासंस्थाएँ गुरुकुलीय प्रणाली का पाश्चात्य स्वरूप हैं। वर्तमान गुरुकुलीय शिक्षापद्धति में पाश्चात्य देशों में प्रचलित आवासीय शिक्षा-संस्थाओं की अनुकरणीय एवं हमारे परिप्रेक्ष्य में संगत विशेषताओं को यदि आत्मसात किया जाए, तो न केवल हमारी गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली अधिक समृद्ध होगी, राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरूप अपने आपको विकसित भी कर सकेगी। नवोदय विद्यालयों का वर्तमान प्रयोग गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली को उपयोगिता एवं महत्व की स्वीकृति है।

वर्तमान शिक्षाप्रणाली में गुरु-शिष्य के मध्य सुन्दर एवं सुखद संबंध स्थापित करने की आवश्यकता पर जितना भी बल दिया जाए,कम है। गुरु-शिष्य के संबंध के समुचित विकास के बिना शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता है। शिक्षा के स्तर में गिरावट एवं अनुशासनहीनता से न केवल विद्यार्थियों की, अपितु राष्ट्र की भारी क्षति हो रही है। विद्यार्थी देश का भावी निर्माता एवं कर्णधार है। शिक्षा-दीक्षा में किसी प्रकार की बाधा, अवनति, अनुशासनहीनता, चारित्रिक न्यूनता अथवा अकर्मण्यता नितांत अवांछनीय है। इन सब समस्याओं के निराकरण में अध्यापकों, अभिभावकों एवम् समाज के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग आवश्यक है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली एवम् गुरु-शिष्य के सम्बन्धों का विकास इन सभी समस्याओं के निराकरण की दिशा में सार्थक कदम बन सकते हैं।

आज भारतवर्ष की अधिकांश समस्याओं का एक मौलिक कारण राष्ट्रीय भावना का अभाव है। सांप्रदायिक भावना, जातीय भेदभाव, जातीय संघर्ष, प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय विद्वेष, भाषा संबंधी विवाद इन सभी के मूल में राष्ट्रीय एकता, समन्वय की भावना एवं राष्ट्रीय भावना का न होना है। राष्ट्र की प्रगति

के लिए यह आवश्यक है कि हमें भारतवासी होने का गर्व एवं भारतीय होने का गौरव हो।

समाज में व्याप्त सांप्रदायिक-जातीय संघर्षों, असहिष्णुता, स्वार्थपरता एवं कर्तव्य की उपेक्षा जैसी व्यापक कुरीतियों पर उदारता एवं सह-अस्तित्व की भावना से विजय प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य जन-मानस में यह भाव जाग्रत करना है कि प्रत्येक धर्म समन्वय, सद्भावना एवं सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाता है। प्रकृति स्वयं सह-अस्तित्व एवं समन्वय का ज्वलंत उदाहरण है। नव-स्नातकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे एक नये स्वस्थ समाज को सृजित करें जिसमें विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को स्थान न हो।

वैदिक संस्कृति विश्व में भारत का गौरव रही है। वैदिक संस्कृति का आधार ज्ञान व कर्म का समन्वय था। संस्कृत भाषा के सम्यक् ज्ञान के बिना इस असीम आगार से लाभान्वित होना संभव नहीं है।

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। भारतीय भाषाएँ अपनी मौलिक शब्दावली के लिए संस्कृत पर निर्भर हैं। एक अनुमान के अनुसार उर्दू भाषा के ८० प्रतिशत शब्दों का स्रोत संस्कृत है। यही नहीं, मलयालम भाषा के शब्दों में से ९० प्रतिशत एवं तेलगू भाषा के शब्दों में से ६० प्रतिशत शब्द संस्कृत में निहित हैं।

संस्कृत को केवल प्राचीन ग्रंथों, वेदों एवं उपनिषदों की भाषा की संज्ञा देना अनुचित है। व्याकरण की वैज्ञानिकता एवं शब्दों के सौष्ठव के कारण आज संस्कृत का उपयोग कंप्यूटर्स के क्षेत्र में किया जा रहा है। अमरीका में टेक्सास विश्वविद्यालय में संस्कृत-आधारित एक वृहत् कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कंप्यूटर्स के माध्यम से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के लिए विकसित किये जा रहे साफ्टवेयर में संस्कृत भाषा को मूल भाषा के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। अनुवादित भाषा का पहले संस्कृत में अनुवाद किया जाता है और उसके बाद संस्कृत को अपेक्षित अनुवादित भाषा में परिवर्तित किया जाता है। मुझे विश्वास है कि संस्कृत की उच्चशिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होने के कारण यह महाविद्यालय संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन एवं आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर रहेगा।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना पुरातन व आधुनिक शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय करने के लिए की गई थी। संस्कृत साहित्य के साथ आधुनिक विज्ञान का इसमें स्थान है। मातृभाषा हिन्दी को माध्यम बनाकर इसे जन-साधारण के

लिए सुलभ बनाया गया तथा यह आधुनिक ज्ञान के विषय में नये साहित्य की रचना में प्रेरक बनी।

इस विश्वविद्यालय ने पर्यावरण सम्बन्धी तथा गंगा समन्वित योजना में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

आज सारे संसार की यह आवश्यकता है कि मानव समाज विज्ञान के रचनात्मक रूप से लाभान्वित होते हुए, उन संकटों के प्रति सावधान रहे जो सारे मानव समाज का विनाश कर सकते हैं। यह तभी सम्भव है जब पुरातन मूल्यों पर आधारित एक मानव संस्कृति का विकास हो। इस दिशा में भारत सारे ससार को दिशा दे सकता है। क्योंकि हमारा देश व राष्ट्र वैचारिक सहिष्णुता पर आधारित है। यहाँ पुरातन मूल्यों से आधुनिक ज्ञान को जोड़ना सम्भव है।

मुझे विश्वास है कि इस कार्य में गुरुकुल अगुवाई करने में समर्थ है।

मेरी शुभकामना है कि यहाँ के नव-स्नातक उन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करें जहाँ पुरानी पीढ़ी सफल नहीं हो सकी और प्राप्त की गई उपलब्धियों का संरक्षण करने में समर्थ हों।

मेरा अनुरोध है कि आप इसे शिक्षा की समाप्ति न समझते हुए, शिक्षा का प्रथम सोपान समझें और निरंतर अपनी शैक्षिक योग्यता विकासोन्मुखी रखें। समाज में वर्तमान कुरीतियों को दूर करने के लिए दृढ़ संकल्प होकर आप जीवन में प्रवेश करें।

कभी भी पुरुषार्थ से विमुख न हों। विपत्तियों और कठिनाइयों से कभी भी विचलित न हों। दृढ़ निश्चय ही आपकी सफलता की कुँजी होगी। आत्म-निर्भरता एवं आत्म-विश्वास की भावना से सदा उन्नतिपथ पर अग्रसर हों। साध्य की प्राप्ति के लिये साधन की पवित्रता बनाए रखें।

—ब्रह्मदत्त

१४ अप्रैल, १९८९

वेद तथा कला महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यायय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत साहित्य	१	२	२	५

२—कला महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
हिन्दी	१	१ (रिक्त)	३	५
दर्शनशास्त्र	१ (रिक्त)	१	३	५
अंग्रेजी	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२ (१ रिक्त)	१	२	५

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल, लिपिक
(२) ,, बलबीर सिंह भृत्य
(३) ,, रतनलाल भृत्य
(४) ,, रामसुमित माली

४—कला महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज योग प्रशिक्षक
(२) ,, लाल नरसिंह नारायण प्रयोगशाला सहायक
(३) ,, हंसराज जोशी लिपिक
(४) ,, अशोक कुमार डे लिपिक

(५) श्री कुँवर सिंह — भृत्य
(६) ,, हरेन्द्र सिंह — भृत्य
(७) ,, प्रेमसिंह — भृत्य
(८) ,, रामपद राय — भृत्य
(९) ,, सन्तोष कुमार राय — फील्ड अटैन्डेन्ट
(१०) ,, मान सिंह — चौकीदार
(११) ,, जग्गन — सफाई कर्मचारी

५–इस वर्ष सत्रारम्भ दिनांक १९-७-८८ से हुआ। दिनांक ०१-०८-८८ से महाविद्यालय में कक्षाएँ विधिवत् आरम्भ हुईं। अलंकार तथा विद्याविनोद में इस वर्ष छात्र-संख्या निम्न प्रकार से थी :–

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	२	२	०४
विद्याविनोद	कला वर्ग	२२	४	२६
वेदालंकार		१	१	०२
विद्यालंकार		४२	९	५१

६—इस वर्ष सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक सोमवार को प्रातः साप्ताहिक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ आदि का आयोजन किया जाता रहा, जिसमें सभी शिक्षक, छात्र तथा कर्मचारी सम्मिलित हुए।

७—दिनांक १५-८-८८ को स्वतन्त्रता-दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया।

८—दिनांक २५-८-८८ को संस्कृत-दिवस मनाया गया। इसकी अध्यक्षता मान्य कुलपति जी ने की तथा इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा० रामकरण शर्मा, भूतपूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय थे।

९—दिनांक २७-१०-८८ को विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पुनरीक्षण समिति आयी। उक्त समिति दिनांक ३०-१०-८८ तक विश्वविद्यालय में रही। सभी विभागों द्वारा अपने-अपने विभाग की विकास-योजनाएँ समिति के समक्ष प्रस्तुत की गईं।

१०—दिनांक २१-११-८८ को न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, इलाहाबाद का

'प्राचीन भारत में न्याय-व्यवस्था' विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान हुआ, जिसमें सभी शिक्षक एवं छात्र उपस्थित हुए ।

११—दिनांक २३-१२-८८ से ०१-०१-८९ तक राष्ट्रीय सेवा योजना का वार्षिक शिविर डा० जयदेव वेदालंकार, कोआर्डिनेटर एवं डा० ए० के० चोपड़ा, प्रोग्राम आफिसर के निर्देशन में ग्राम श्यामपुर,जिला बिजनौर में आयोजित किया गया। इसमें वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्रों ने सक्रिय भाग लिया।

१२—गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दिनांक २३-१२-८८ से २९-१२-८८ तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८८ को प्रातः श्रद्धानन्द द्वार से शोभा-यात्रा निकाली गई जो बाद में श्रद्धाञ्जलि सभा में परिवर्तित हुई। इस अवसर पर संस्कृत त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता तथा योग, शरीर सौष्ठव, कबड्डी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया।

१३—दिनांक २६-०१-८९ को गणतन्त्र-दिवस समारोह सोल्लासपूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण आचार्य एवं उप-कुलपति ने किया।

१४—दिनांक १६-०२-८९ को संस्कृत विभाग के अन्तर्गत प्रोफेसर बृजमोहन चतुर्वेदी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का एक विशिष्ट व्याख्यान हुआ जिसमें संस्कृत, वेद, हिन्दी एवं दर्शन के सभी प्राध्यापक व छात्र सम्मिलित हुए।

१५—दिनांक १४-०३-८९ से १६-०३-८९ तक संस्कृत विभाग के तत्वावधान में "महाभाष्यकार पतंजलि" पर एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये व वाचन किये।

१६—इस वर्ष भी वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्र विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेने विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में गए तथा पर्याप्त पुरस्कार प्राप्त किए।

१७—इस सत्र में वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्र हाकी, क्रिकेट, बैडमिन्टन,

कुश्ती, कबड्डी, तैराकी आदि की उत्तर प्रदेश स्तरीय व उत्तर क्षेत्र स्तरीय अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने गये।

१८—दिनांक २४-४-८९ से वेद एवं कला महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ आरम्भ हुईं तथा दिनांक १६-५-८९ को भलीभाँति सम्पन्न हुईं।

१९—दिनांक १९-५-८९ से १८-७-८९ तक वेद एवं कला महाविद्यालय में ग्रीष्मावकाश घोषित किया गया।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सन् १९०० में स्थापना के साथ ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जब १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति एवं पं० रामनाथ वेदालंकार, आदि कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
एम० ए०	वैदिक साहित्य	०६	०४	१०
अलंकार	,,	४३	१०	५३
विद्याविनोद	,,	२४	०६	३०
				९३

विभागीय उपाध्याय

१-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार – प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति
२-डा० भारत भूषण विद्यालंकार – वेदाचार्य, एम०ए०, पी-एच०डी० रीडर
३-डा० सत्यव्रत राजेश – शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी० प्रवक्ता
४-डा० मनुदेव बन्धु – एम०ए०, पी-एच०डी० प्रवक्ता

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१. श्री रामप्रसाद वेदालंकार

(अ) प्रकाशित पुस्तकें :-

अब तक प्रकाशित पुस्तकें-३६, एक पुस्तक "अनन्त की ओर" का अंग्रेजी में अनुवाद। ४ अनुवाद हुए जिनमें से एक प्रकाशित हुआ।

इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकें -

१-महान विदुर के महान उपदेश (परिवर्तित संस्करण)
२-केनोपनिषद्

उपर्युक्त पुस्तकों में से स्वाध्याय-प्रेमियों के आग्रह पर कुछ पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए। इसके साथ-साथ बड़े आग्रहपूर्वक लिखित पुस्तकों के साथ कैसेटस् की भी माँग की गई है।

१-वैदिक साहित्य सेवा पर दो विशेष पुरस्कार – १९८१, १९८३

२-विश्व वेद परिषद् से (साहित्य सेवा) पर "वेदरत्न" की मानद उपाधि प्राप्त-१९८४

सेमिनार/संगोष्ठी

१. दिनांक १४-१६ मार्च ८९ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में "महाभाष्यकार पतंजलि" पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और वक्तव्य दिया।

२. दिनांक १०-११ फरवरी ८९ को गणित विभाग के तत्वावधान में विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया के प्रथम वार्षिक अधिवेशन एवं 'वैदिक गणित परम्पराएँ एवं अनुप्रयोग' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में एक विशिष्ट व्याख्यान दिया।

३. १० अप्रैल ८९ को होम्योपैथिक डाक्टर्स एसोशियेशन के सहारनपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय भाषण दिया।

४. ८ मई ८९ को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 'वेद मानवजीवन के प्रेरणा स्रोत' विषय पर संगोष्ठी में विशेष व्याख्यान दिया।

लेखादि

अनेक पत्रिकाओं में कुछ लेख व पुस्तकों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए।

वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

एक ओर पुस्तकों और लेखों के माध्यम से वेद, उपनिषद् आदि के रहस्यों को सरल, सरस एवं भावात्मक शैली में स्पष्ट करने का प्रयास किया, दूसरी ओर भारतवर्ष के अनेक नगरों, संस्थाओं द्वारा आयोजित विशाल समारोहों में वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक, विद्वतापूर्ण भाषण दिए।

१. ११ जून ८८ से २७ जुलाई ८८ तक अमेरिका में लास एंजलिस, अरिजाना प्रान्त के ह्यूमा शहर आदि कई स्थानों पर विभिन्न वैदिक विषयों व योग सम्बन्धी विषयों पर व्याख्यान दिया।

२. १ मार्च ८९ से ६ मार्च ८९ तक टंकारा (गुजरात) में वैदिक आध्यात्म, वैदिक परिवार, वैदिक समाज आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

३. १९ मई ८९ को वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, धर्मपुरा कालोनी, यमुनानगर में आयोजित यज्ञ सम्मेलन में भाग लिया।

४. २४ मई को बिराटनगर (नेपाल) में वैदिक नारी और परिवार-निर्माण में उनका योगदान, वैदिक यज्ञ और समाज में उसकी उपयोगिता आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

५. इसके अतिरिक्त दिल्ली, गुड़गांव, कोटा (राजस्थान) आदि की विभिन्न आर्य सभाओं में वैदिक विषयों पर व्याख्यान दिए।

६ दैनिक मिलाप संदेश में भी वेदमत्रों पर कभी-कभी व्याख्या की जाती है।

२-भारतभूषण विद्यालंकार, रीडर

शैक्षिक योग्यता - विद्यालंकार, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान) वेदाचार्य, पी-एच०डी०

शैक्षणिक अनुभव -

स्नातक स्तर - २३ वर्ष

स्नातकोत्तर - २३ वर्ष

सत्र ८८-८९ में-

१. ओरियन्टल कान्फ्रेंस विशाखापत्तनम में भाग लिया तथा शोध-पत्र पढ़ा।

आगामी वर्ष के लिए गुरुकुल काँगड़ी में आमन्त्रित किया।

२. सोनीपत में छात्रों को दर्शन एवं पौर्णमास तथा अग्न्याधान एवं नवसश्येष्ठि नामक श्रोतयोग दिखायें।

३. संस्कृत विभागान्तर्गत सेमिनार में भाग लिया।

४. विभिन्न प्रान्तों में वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

५. नेपाल में हिन्दु संस्कृति रक्षा सम्मेलन में भाग लिया एवं वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार किया।

६. विभाग में डा० रामनाथ वेदालंकार के भाषण का संयोजन।

७ योग का एकवर्षीय कोर्स किया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण कार्यों को विधिवत् पूर्ण किया।

३-डा० सत्यव्रत राजेश, प्रवक्ता

शैक्षणिक कार्य -

१. अलंकार द्वितीय वर्ष, एम०ए० प्रथम वर्ष तथा द्वितोय वर्ष, पी-एच०डी० के छात्रों को निर्देशन।

२. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र की शिक्षापटल की मीटिंगों में सदस्य के कारण भाग लिया।

३. अखिल भारतीय वेद संगोष्ठी के अधिवेशन में चण्डीगढ़ सैक्टर-१६ में भाग लिया तथा निबन्धवाचन।

४. गु०कां०वि०वि०, हरिद्वार की ओर से गुरुकुल भैंसवाल में पर्यवेक्षक कार्य।

५. अनेक पत्रिकाओं में लेख।

६. पूना, कोल्हापुर, गाँधीनगर, इचलकरंजी, सांगली, धुलिया तथा चालीसगांव (महाराष्ट्र), अहमदाबाद, गांधीधाम, बड़ौदा तथा ध्रांगध्रा (गुजरात), बेलगाम (कर्नाटक) एवं हरियाणा, उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

७. वैदिक प्रयोगशाला तथा वैदिक संग्रहालय का निदेशन।

४. डा० मनुदेव बन्धु, प्रवक्ता

शैक्षणिक योग्यता - एम०ए०-वेद, संस्कृत, हिन्दी; आचार्य, पी-एच०डी०

(क) लेखन तथा प्रकाशन

१. भाष्यकार दयानन्द

२. वेदमन्थन

३. मानवता की ओर

४. चरित्र-निर्माण

५. बृहदारण्यकोपनिषद : एक अध्ययन (प्रेस में)

६. वेदोऽखिलोधर्ममूलम्, आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई ।

(ख) प्रकाशित लेख

१. महर्षि यास्क और निरुक्त

२. दयानन्द वेद भाष्यकार सूक्ष्मेक्षिका

३. आचार्य दयानन्द का आचार्यत्व

४. महर्षि दयानन्द की दार्शनिक उद्भावनाएँ

५. वर्णव्यवस्था और अस्पृश्यता

६. स्वार्थ और परार्थ

विविध व्याख्यान

(क) चार राष्ट्रीय कान्फ्रैन्स में सक्रिय भाग लिया तथा निबन्धवाचन किया ।

(ख) अनेक वेद सम्मेलनों और संस्कृत सम्मेलनों में निबन्धवाचन किया ।

(ग) आर्य समाज के विभिन्न मंचों से वेद, दयानन्द दर्शन तथा भारतीय दर्शन पर भाषण दिये ।

इस वर्ष विभाग में वैदिक यज्ञ-याज्ञ विधान (वैदिक कर्मकाण्ड) और

संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए एकवर्षीय डिप्लोमा शुरु किया गया है तथा वैदिक संग्रहालय को अधिक उपयोगी एवं सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया। वैदिक प्रयोगशाला में अलंकार कक्षाओं से एम० ए० तक वैदिक अध्ययन को प्रयोगात्मक बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

इस वर्ष समय-समय पर विभाग में डा० रामनाथ जी वेदालंकार, भूतपूर्व आचार्य एवं उप-कुलपति के वेद विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुए।

—रामप्रसाद वेदालंकार
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रमुख अंग रहा है। इस विभाग के उपाध्यायों एवं छात्रों का गुरुकुल के यश को अभिवृद्ध करने में प्रशंसनीय योगदान रहा है। प्रायः संस्कृत के छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी वाग्मिता की अमिट छाप अंकित की है। इस विभाग के अनेक मेधावी छात्र आज विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्तुत्य शिक्षक के रूप में कार्य रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भी इस विभाग के छात्रों का चयन हो चुका है। संस्कृत विभाग का संपोषण एवं विकास डा० रामनाथ जी वेदालंकार जैसे संस्कृत-जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रशंसनीय पद्धति के साथ हुआ है।

विभागीय उपाध्याय—

१. डा० योगेश्वरदत्त शर्मा — प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष (१९ जौलाई ८८ को कार्यभार ग्रहण किया तथा १२ मई ८९ को अपने पूर्व स्थान पर चले गए।)

२. डा० निगम शर्मा — रीडर

३. आचार्य वेदप्रकाश — रीडर एवं अध्यक्ष

४. डा० रामप्रकाश शास्त्री — प्रवक्ता

५. डा० महावीर अग्रवाल — प्रवक्ता

विभागीय कार्य-विवरण—

विभाग में २० अगस्त ८८ को संस्कृत-दिवस सोल्लास मनाया गया, जिसमें समस्त पंचपुरी के संस्कृत विद्वान उपस्थित हुए।

८ अक्टूबर ८८ को विभाग की शोध-समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें विषय-विशेषज्ञ के रूप में डा० शिवशेखर मिश्र, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय तथा डा० राममूर्ति शर्मा, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय उपस्थित हुए।

विभाग के प्रतिभासम्पन्न छात्र (हरिशंकर, जयेन्द्र, राजेश, विद्यानिधि, ताराचन्द) विभिन्न विश्वविद्यालयों से वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा संस्कृत संभाषण प्रतियोगिताओं में विजयी होकर आए।

विभाग में निम्न विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान हुए :

१. डा० रामनाथ जी वेदालंकार	(पूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी वि० वि०)
२. डा० पुष्पेन्द्रकुमार	(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली वि० वि०)
३. डा० वेदप्रकाश उपाध्याय	(रीडर संस्कृत विभाग, चण्डीगढ़ वि० वि०)
४. डा० बृजमोहन चतुर्वेदी	(अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली वि० वि०)

इस वर्ष विभाग के दो छात्रों को पी-एच०डी० की उपाधि से अलंकृत किया गया, जिनके नाम निम्न हैं—

१. श्री मणिराम त्रिपाठी

२. श्री सत्यदेव

विभाग में एक अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री के संयोजकत्व में हुआ जिसका कार्यक्रम सभी के द्वारा प्रशंसित रहा।

विभाग में १४-१६ मार्च ८९ को महाभाष्यकार पतञ्जलि पर त्रिद्विवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें लगभग दस विश्वविद्यालयों के उच्चस्तरीय विद्वानों ने भाग लेकर अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

विभाग में समय-समय पर संस्कृत भाषण में पाटव प्राप्त करने के लिए छात्रों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षण में आचार्य वेदप्रकाश तथा डा० महावीर का योगदान विशेषरूप से प्रशंसनीय है।

विशाखापत्तनम में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें संस्कृत विभाग से डा० योगेश्वरदत्त शर्मा एवं डा० महावीर अग्रवाल सम्मिलित हुए। दोनों ही विद्वानों ने अपने शोध-पत्रों का वाचन किया तथा कुलपति महोदय के उस पत्र को प्रस्तुत किया जिसमें आगामी सम्मेलन गुरुकुल काँगड़ी में करने का निमंत्रण दिया गया था। परिणामस्वरूप कुलपति महोदय के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए सम्मेलन की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से सन् १९९० में होने वाले अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन का स्थल गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पुण्यभूमि को स्वीकार कर लिया।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१. **नाम** - निगम शर्मा, रीडर - संस्कृत
२. **योग्यता** - एम०ए०, एल०टी०, साहित्याचार्य, पी-एच०डी०
३. **पता** - संस्कृत-विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
४. **विशेष योग्यता** - एम०ए० में प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान, स्वर्णपदक, कविता, लेख आदि पर अनेक पुरस्कार।
५. **भाषायें** - संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू।
६. **अध्यापन - अनुभव** स्नातक - स्नातकोत्तर २७ वर्ष २७ वर्ष } १९६२-६३ एस० डी० कालेज मुजफ्फरनगर १९६३ से गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
७. **शोध -निर्देशन** १-लघुशोध-प्रबन्ध—५
२-सात को पी-एच०डी० मिल चुकी है।
३-दो ने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिये हैं।
४-छः पी-एच०डी० के लिए कार्यरत।
५-दस पी-एच०डी० छात्रों का मूल्याङ्कन।
६-चौदह ग्रन्थों का मूल्याङ्कन(शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार)
८. **विशिष्ट संगोष्ठी** - १-ध्वनेरुद्भवो विकासश्च, कुरुक्षेत्र वि० वि०
२-मल्लिनाथः – विश्वसंस्कृतम्—वाराणसी
३-वेद एवं भाष्यकारः—पंजाब वि०वि०, चंडीगढ़
४-हिमालयः—गढ़वाल वि० वि०, श्रीनगर
५-कालिदासे ऋग्वेदस्य प्रभावः—कालिदास जयन्ती उज्जैन
६-ऋग्वेदे परिवार स्वरूपम्—प्रभाताश्रमः, मेरठ
७-भाष्यकारः पतञ्जलिः—गुरुकुल काँगड़ी
९. **शोध-लेख** – ९० से अधिक प्रकाशित।

१० **विशेष** - ६० से अधिक छात्र उच्च पदों पर कार्यरत।

११. **अभिनन्दन ग्रन्थों में विशेष लेख**

१-आचार्य गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी २-श्री पोतदार (पूना वि० वि०)
३-डा० निरूपण जी ४-श्री प्रभुदत्त स्वामी

१२. **विशिष्ट स्थानों पर व्याख्यान** - १-सभापतित्व, उत्तर बंगाल वि०वि० सिलीगुड़ी, २-मेरठ वि०वि० प्रादेशिक संस्कृत अकादमी, ३-विद्वत् परिषद् बरेली, ४-भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार, ५-निर्धन निकेतन, हरिद्वार, ६-गरीबदासीय संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार, ७-गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, ८-प्रतिवर्ष विद्यार्थी वैजयन्ती पुरस्कार आदि लाते हैं।

१३. **वर्ष १९८८-८९ का कार्य-विवरण**

१) १२ जनवरी ८८, बी०एच०ई०एल०, शिशु निकेतन—सभा अध्यक्षता
२) १३ जनवरी ८८, प्रभाताश्रम, मेरठ—सभा अध्यक्षता
३) ६ फरवरी ८८, डी०पी०एस०—प्रमुख वक्ता
४) १२ फरवरी से १९ फरवरी तक वानप्रस्थ आश्रम में वेद विषय पर विशेष व्याख्यान।
५) ६, ७ मार्च लाजपत कालेज साहिबाबाद, गाजियाबाद
६) १२, १३ मार्च ८८, निर्धन निकेतन हरिद्वार—व्याख्यान
७) १९, २० मार्च ८८, भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार
८) २५ मार्च ज्वालापुर महाविद्यालय
९) ११ अप्रैल ,, ,, वेद सम्मेलन
१०) १२ ,, ,, ,, संस्कृत सम्मेलन
११) १३ ,, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१२) १८ ,, वानप्रस्थ आश्रम
१३) १, २ अक्टूबर, दयानन्द पीठ चण्डीगढ़ वि०वि०—वेदस्य सार्वभौमता
१४) ११ नवम्बर भिक्षानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बुलन्दशहर
१५) १४ ,, संस्कृत परिषद् हरिद्वार 'रसनिष्पत्तिः'
१६) २४ ,, विक्रम वि० वि० उज्जयिनि—सभापतित्व किया।
१७) २८, २९, ३० नवम्बर, निर्धन निकेतन हरिद्वार

१८) आर्य समाजों में विशेष व्याख्यान दिये।

१४. इस वर्ष दो छात्रों ने (श्रीमती सुखदा तथा श्रीमती राजेन्द्र कौर) अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

१५. **आकाशवाणी प्रसारण रामपुर** -१-काव्य पाठ
२-विशिष्ट भाषण

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

शोध-लेख प्रकाशन — "वैदिक संहिताओं में लोक-परिकल्पना" नामक शोध-लेख पावमानी शोधपत्रिका में प्रकाशित हुआ। "ऋग्वेदे पारिवारिकादर्शः" नामक संस्कृत का शोध लेख गुरुकुल पत्रिका के शोध विशेषाङ्क में प्रकाशित हुआ। उक्त लेख पुनः संस्कृत की शोध पत्रिका "आदर्श" में प्रकाशित हुआ।

विद्वत् गोष्ठी में भाग — १ अक्टूबर ८८ को गुरुकुल प्रभात आश्रम में आयोजित शोध गोष्ठी में भाग लिया तथा शोधपत्र का वाचन किया।

२८, २९, ३० नवम्बर को ऋषि संस्कृत महाविद्यालय में मेरठ मंडलीय संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उक्त सम्मेलन में विशिष्ट व्याख्याता के रूप में सम्मिलित होकर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिए।

१७ दिसम्बर ८८ को गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में संस्कृत सम्मेलन में विशिष्ट वक्ता के रूप में संस्कृत-भाषण किया जिसकी विद्वानों द्वारा प्रशंसा की गई।

भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर में संस्कारों की महत्ता पर दो विशेष व्याख्यान दिए।

११, १२ अप्रैल ८९ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में शिक्षा सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन में व्याख्यान दिए।

२८ अप्रैल ८९ को देवबन्द में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर संस्कृत की महत्ता पर व्याख्यान दिया।

शोध निर्देशन - इस वर्ष निर्देशन में श्री मणिराम त्रिपाठी तथा श्री सत्यदेव को शोध उपाधि प्राप्त हुई है। वर्तमान में सात शोधार्थी निर्देशन में अनुसंधान कार्य कर रहे हैं।

संयोजन कार्य - २० अगस्त ८८ को संस्कृत-दिवस समारोह का संयोजन किया। २९, ३० दिसम्बर ८८ को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण-प्रतियोगिता का सयोजन किया।

प्रतिष्ठात्मक कार्य - ३०, ३१ जनवरी ८९ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित मेरठ मंडलीय संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत प्रतियोगिता में निर्णायक पद पर कार्य किया।

१० अप्रैल से १५ अप्रैल तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उत्सव पर आयोजित विशेष यज्ञ में मंत्र प्रवाचक के रूप में कार्य किया।

सांस्कृतिक प्रचार - विभिन्न धार्मिक संस्थानों, शिक्षण संस्थानों एवं प्रचार प्रतिष्ठानों में समय-समय पर पहुँच कर लगभग १०० व्याख्यान वेद, धर्म, दशन एवं संस्कृति को लक्ष्य करके दिए। विशेषकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में ही व्याख्यान दिए गए।

डा० रामप्रकाश शर्मा

शोध निर्देशन - अनेक शोधार्थी शोध निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं। अपना शोध-कार्य पूर्ण करके श्री तारानाथ मनाली ने अपना शोध-प्रबन्ध मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर दिया है।

डा० महावीर अग्रवाल प्राध्यापक - संस्कृत

योग्यता - एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी०

विशिष्ट शोध-गोष्ठियों में प्रतिनिधित्व -

१) अखिल भारतीय प्राच्य विद्या संगोष्ठी विशाखापत्तनम में ५ से ६ जनवरी ८९ तक आयोजित सम्मेलन में भाग लिया एवं 'वैदिकी सृष्टिः' विषय पर शोध लेख पढ़ा।
२) स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान, प्रभात आश्रम मेरठ में शोध संगोष्ठी के अन्तर्गत 'ऋग्वेद पारिवारिक कल्पना' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
३) महर्षि दयानन्द वि० वि० रोहतक में २५ से २७ मार्च तक आयोजित शोध-

संगोष्ठी में 'अश्वघोष के साहित्य में दार्शनिक तत्व' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४) गुरुकुल गौतम नगर, देहली में अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत में विशिष्ट व्याख्यान दिया।

५) देहली पब्लिक स्कूल, बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में मुख्य अतिथि के रूप में 'प्राचीनकाल में गुरु-शिष्य परम्परा' विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रकाशित शोध लेख

१) वाल्मीकि रामायण का अङ्गीरस।

२) संस्कृत गीति मन्दाकिनी।

३) भारतीय संस्कृतेः गायकः महाकवि कालिदासः

४) वैदिकी सृष्टिः

५) ऋग्वेद में पारिवारिक कल्पना

शोध-निर्देशन

वर्ष १९८८-८९ में एक छात्रा ने लघुशोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

विशिष्ट व्याख्यान

१) जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू में "कालिदास के काव्यों में भारतीय संस्कृति" विषय पर व्याख्यान दिया।

२) एन०ए०एस० कालेज मेरठ में संस्कृत परिषद् में मुख्य अतिथि के रूप में विशिष्ट व्याख्यान दिया।

देहली, जम्मू, कानपुर, मेरठ, देहरादून, हरिद्वार, रुड़की आदि नगरों में विशेष समारोहों में लगभग ६० व्याख्यान दिये। श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अन्तर्गत समायोजित 'अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता' में सह-संयोजक का कार्य किया। गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० के वार्षिकोत्सव पर "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" का संयोजन किया।

संस्कृत-छात्रों को विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं हेतु तैयार किया, जहाँ से वे अनेक पुरस्कार लेकर आये।

—वेदप्रकाश शास्त्री
विभागाध्यक्ष

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) स्थापना—१९१० ई० में।

(२) स्थापना-अध्यक्ष—स्व० आचार्य सुखदेव दर्शनवाचस्पति।

दर्शन विभाग में अलंकार, एम० ए० और पी-एच० डी० तक अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। अपने-अपने विषय के विद्वान प्राध्यापक, जो भारतीय दर्शनों के मौलिक ग्रन्थों के विशिष्ट विद्वान् और पाश्चात्य दर्शनों के भी विद्वान् हैं, विभाग में सेवारत हैं।

दर्शन विभाग के छात्र, परीक्षा में अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत माध्यम रख सकते हैं।

(३) यह विभाग १९८२ से राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन करता रहा है।

(१) राष्ट्रीय-शिक्षा कार्यशाला—१९८२

(२) राष्ट्रीय सेमिनार—"मानवीय मूल्य और समाज में अन्त:सम्बन्ध" १९८४; उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन।

(३) "विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दर्शनिक निदान"—विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। अखिल भारतीय दशन परिषद् का ३० वाँ वार्षिक अधिवेशन १९८६।

(४) राष्ट्रीय संगोष्ठी—विषय—"भर्तृहरि एवं विटगिन्स्टाइन का भाषादर्शन" एवं उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का अधिवेशन-१९८७। इन समस्त राष्ट्रीय संगोष्ठियों का निदेशकत्व डा० जयदेव वेदालंकार ने किया। उक्त संगोष्ठियों के शोधपत्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। १९८८ में भी विभाग ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिये आवेदन किया था, परन्तु अर्थाभाव में सम्पन्न नहीं की जा सकी।

(४) आई० ए० एस० और पी० सी० एस० के मार्गदर्शन की व्यवस्था—

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रो के

लिये निःशुल्क अध्यापन एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी० एच० ई० एल० एवं हरिद्वार के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(५) छात्र संख्या —

विद्याविनोद—२५
अलंकार —१०
एम० ए० —१६
पी-एच०डी० — ५

योग—५६

(६) वर्तमान स्टाफ—

(१) डा० जयदेव वेदालंकार—रीडर-अध्यक्ष।
(२) डा० विजयपाल शास्त्री—प्राध्यापक
(३) डा० त्रिलोकचन्द—प्राध्यापक
(४) डा० यू० एस० विष्ट—प्राध्यापक

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दो पद प्रोफेसर के स्वीकृत किये हैं।

(७) प्राध्यापकगण

१-डा० जयदेव वेदालंकार—

पद—रीडर-अध्यक्ष।

नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर फरवरी ८४ से।

योग्यताएँ—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान) दर्शनाचार्य, सिद्धान्तभूषण, पी-एच० डी०, डी० लिट्०।

१९८८ में शोधकार्य

(१) 'भारतीय दर्शनों में प्रमाण परिक्रमा" शोध ग्रन्थ की पाण्डुलिपि

तैयार की गई है।

शोध लेख—

(१) "वैदिक शासन पद्धति"—गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।
(२) "वह इतिहास का दीपक बुझ गया"।
(३) "आचार्य शंकर के दर्शन का वैदिक-आधार" भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार—शंकराचार्य शोधग्रन्थ में प्रकाशित।
(४) "वैदिक संस्कृति के कतिपय सूत्र" दिव्यानन्द शारदा फाउन्डेशन

प्रकाशित शोधग्रन्थ—महर्षि दयानन्द की विश्व-दर्शनों को देन
—उपनिषदों का तत्त्वज्ञान
—महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त
—भारतीय दर्शन की समस्याएं

शोधपत्र वाचन—ऑल इण्डिया फिलॉसोफिकल कांग्रेस के पाण्डेचुरी अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया एवं शोधपत्र वाचन किया—विषय—"वैदिक दर्शन"।

अन्य दार्शनिक विषयों पर भाषण—वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, जून ८८ में आठ भाषण।

अज्ञान दूर करने के वैदिक उपाय
उपनिषदों का दर्शन
भारतीय दर्शनों में मोक्ष के साधन
नैतिक मूल्य और समाज
कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य
यज्ञ का दार्शनिक रूप
ज्ञान और कर्म मीमांसा
सांख्य का पुरुष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश (हैदराबाद) के तत्त्वावधान में अगस्त में भाषण :—

१५ अगस्त और अहिंसा दर्शन

अज्ञान को दूर करने के दार्शनिक उपाय

आर्यसमाज त्रैतवाद

वैदिक दर्शन में तत्त्व-मीमाँसा

वेद में मुक्ति का स्वरूप

मूल्यों का संरक्षण

पुरुषार्थ चतुष्टय

धर्म और दर्शन

मुक्ति से पुनरावर्तन

मासिक शोध पत्रिका – गुरुकुल पत्रिका का सम्पादन

इस वर्ष चार विशेषांक प्रकाशित किये गये।

एन० एस० एस० के समन्वयक पद पर डा० वेदालंकार को अवैतनिक रूप में नियुक्त किया। राष्ट्रीय एकीकरण शिविर—१९ फरवरी ८९ से २७ फरवरी ८९ तक—राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वावधान में डा० जयदेव वेदालंकार के आयोजकत्व में राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ५ प्रान्तों के २०० छात्र एवं छात्राओं ने सक्रिय भाग लिया। दो ग्रामों में सड़क एवं स्वास्थ्य विषय में कार्य सम्पन्न किये गये।

राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत—अखिल भारतीय दर्शन परिषद् की ओर से स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार डा० वेदालंकार को उनके शोध ग्रन्थ—"भारतीय दर्शन की समस्यायें" पर प्रदान किया गया है।

(२) डा० विजयपाल शास्त्री

पद—प्रवक्ता, दर्शन शास्त्र

नियुक्ति तिथि—७-२-८१

योग्यता—एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, दर्शनशास्त्र) साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदान्ताचार्य। वर्ष १९८८-८९ के सत्र में निम्नलिखित शोधलेख पत्रिकाओं और पुस्तकों में प्रकाशित हुए—

(१) शंकर और बुद्ध का साधनमार्ग—गुरुकुल पत्रिका अप्रैल ८८

(२) "वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार" (डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक पर समालोचना)

उक्त लेख "वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं समाज दर्शन" पुस्तक में प्रकाशित हुआ।

(३) ख्यातिवाद (दार्शनिक लेख) ⎫ गुरुकुल पत्रिका
(४) कीदृशं ब्रह्म जगतः कारणम्? ⎬ जून-सितम्बर १९८८
(दार्शनिक संस्कृत लेख) ⎭

(५) प्राचीन भारते वैदिक्यर्थ व्यवस्था—गुरुकुल पत्रिका अक्तूबर-नवम्बर ८८।

(६) आचार्य शंकर और उनका गीता-भाष्य

(७) आचार्य शंकर और सांख्य योग

उक्त दोनों लेख "भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार श्री जगद् गुरु आद्य शंकराचार्य" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए। यह पुस्तक डा० विष्णुदत्त राकेश के सम्पादकत्व में वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई।

(८) पंचाहुति विद्या—(१)गुरुकुल पत्रिका दिसम्बर-मार्च ८९

२—गुरुकुल पत्रिका के सहायक सम्पादकत्व पर कार्य किया।

३—इनके निर्देशन में सुरेन्द्रकुमार शोधछात्र ने "भारतीय दर्शनों में अहिंसा-तत्त्व का तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण" इस शीर्षक से लिखित शोध-प्रवन्ध पी-एच० डी० परीक्षा के अन्तर्गत मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किया।

४—रिफ्रैशर कोर्स

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अन्तर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित १३-२-८९ से १४-३-८९ तक दर्शनशास्त्र विषयक रिफ्रैशर कोर्स पूर्ण किया।

(३) डा० त्रिलोकचन्द्र—

योग्यतायें—एम० ए०, पी-एच० डी०
नियुक्ति—१९८२
योगदर्शन पर आर्य वानप्रस्थाश्रम में आठ व्याख्यान दिये।

(१) आर्यसमाज ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद में २४ दिसम्बर ८८ से ३१ दिसम्बर ८८ तक योग दर्शन पर व्याख्यान।

(२) "योग व संगीत से नशों से मुक्ति" ६-७-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(३) "योग से उच्च रक्तचाप व हृदयरोग का उपचार सम्भव" २८-७-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(४) "योग से मस्तिष्क व फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है" ११-८-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(४) **डा० उमरावसिंह बिष्ट**—प्राध्यापक-नियुक्ति १९८६

योग्यतायें—एम० ए० संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र, पी०-एच० डी०

कार्य - ऑल इण्डिया फिलासाफिकल कांग्रेस के पाण्डेचुरी अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया। शोधपत्र वाचन किया। विषय Epestimology of Bharthihari.

शोधलेख—काण्ट का शुभ और अशुभ का प्रत्यय—गु० पत्रिका में प्रकाशित

—डा० जयदेव वेदालंकार
विभागाध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ

१. श्री ओम्प्रकाश मिश्र	प्रोफेसर
२. ,, चन्द्रशेखर त्रिवेदी	रीडर एवं अध्यक्ष
३. ,, सतीशचन्द्र धमीजा	प्राध्यापक
४. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	प्राध्यापक
५. श्री लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक एवं इंजार्ज
६. ,, कुंवरसिंह नेगी	प्रयोगशाला अटेन्डैण्ट

नोट :- डा० हरगोपाल सिंह प्रोफेसर ३० जून १९८८ को अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। उनका पद रिक्त पड़ा हुआ है। विज्ञापन बहुत पहले चला गया था परन्तु उक्त पद पर अब तक नियुक्ति नहीं की जा सकी।

इस सत्र (१९८८-८९) में मनोविज्ञान की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का निम्नलिखित संख्या में प्रवेश हुआ :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	२२
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	७
अलङ्कार प्रथम वर्ष	—	२२
अलङ्कार द्वितीय वर्ष	—	७
एम०ए० (प्री.)	—	१९
एम०ए० (फा.)	—	०१

पिछले सत्र की अपेक्षा इस सत्र में मनोविज्ञान विषय लेने वाले छात्रों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई। पूरे सत्र में अध्ययन-अध्यापन सुव्यवस्थित रूप से चलता रहा, यद्यपि प्रोफेसर का एक पद रिक्त पड़ा रहा परन्तु विभागीय सदस्यों विशेषतः प्रो० सतीशचन्द्र धमीजा व श्री लाल नरसिंह नारायण के

सहयोग से इस कमी को पूरा करने में बड़ी सुविधा हुई। प्रारम्भ से ही महिलाओं एवं सैनिकों को स्नातकोत्तर कक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से परीक्षाएँ देने की सुविधा रही है। कु० संगीता शुक्ला ने एम०ए० (फा.) परीक्षा १९८९ हेतु एक लघु शोध प्रबन्ध 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का व्यक्तित्व चरों पर प्रभाव' विषय पर डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रस्तुत किया। विभाग में ९ अनुसंधित्सु पी-एच०डी० उपाधि हेतु पञ्जीकृत हैं और विभिन्न सामयिक विषयों पर संतोषजनक शोधकार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विज़िटिंग कमेटी विश्वविद्यालय की गतिविधियों का सिंहावलोकन करने आई। मनोविज्ञान विभाग की ओर से क्षेत्रीय समस्याओं के संदर्भ में कई योजनाएँ कमेटी के सामने प्रस्तुत की गईं जिन पर विचारोपरान्त समुचित आर्थिक अनुदान प्रदान किए जाने का उत्शीलन किया गया।

विभागीय सदस्यों की शैक्षणिक गतिविधियाँ :-

१. गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने प्रोफेसर ओम्प्रकाश मिश्र को पाठ्यक्रम समिति एवं शोध समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया है। प्रोफेसर मिश्र ने विभागीय प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान किया तथा राजकीय आयुर्वेदिक कॉलिज गुरुकुल कांगड़ी में 'आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति एवं मनोविज्ञान' विषय पर आयोजित गोष्ठी में सक्रिय भाग लिया। ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशन नजीबाबाद से सामाजिक पर्यावरण विषय पर एक वार्ता भी मिश्र जी ने प्रस्तुत की।

२. श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने मनोविज्ञान विषय को लोकप्रिय बनाने हेतु स्थानीय जनता एवं स्नातक महाविद्यालयों में व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करके विभाग की स्नातकोत्तरीय कक्षाओं में छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि कराई। अन्य सभी विभागीय शिक्षकों/सदस्यों के सहयोग से प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें अधिक सफलता नहीं मिल सकी। इसका प्रमुख कारण अनुदान राशि की कमी रहा।

३. प्रो० सतीशचन्द्र धमीजा विश्वविद्यालय की ओर से अन्तर्विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता में मेरठ गए और टीम का नेतृत्व किया। छात्रोपयोगी पाठ्यक्रमानुसार अद्यतन जानकारी से युक्त विषय से संबद्ध पुस्तकें क्रय करने में पुस्तकालयाध्यक्ष की सहायता की। अपने निर्धारित Work Load के अतिरिक्त एक प्रश्न-पत्र स्नातक-कक्षाओं में अत्यन्त कुशलता एवं योग्यता के साथ छात्रों को पढ़ाया। श्री धमीजा जी ने आवश्यकतानुसार सदैव अपना सहयोग दिया है।

४. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। अपनी अध्ययन-शीलता एवं लगन के फलस्वरूप उनकी निम्नलिखित शैक्षणिक उपलब्धियाँ हैं।

(i) Indian Council of Social Science Research New Delhi के तत्वावधान में Leadership Style and Effectiveness—A Comparative Study of Private and Public Organisations रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा करके दिसम्बर १९८८ में प्रस्तुत कर दिया है।

(ii) औद्योगिक मनोविज्ञान पर एक पुस्तक प्रकाशित कराई है।

(iii) विभिन्न उच्चस्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में सत्रान्तर में ४ शोध-पत्र प्रकाशित कराए हैं।

(iv) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ पाँच शोध-पत्र प्रेषित कर रखे हैं।

(v) ICSSR, New Delhi से स्वीकृत Researh work प्रकाश-नाधीन है।

(५) चूंकि विभाग में एक प्रोफेसर का पद रिक्त पड़ा है अतः शिक्षणकार्य में कठिनाई हो रही थी। श्री लालनरसिंह नारायण लैब असिस्टैण्ट व इन्चार्ज हैं तथा प्रथम श्रेणी में एम० ए० (मनोविज्ञान) परीक्षा उत्तीर्ण हैं। आवश्यकता पड़ने पर इन्होंने सदैव शिक्षणकार्य में भी हाथ बँटाया है। सत्र १९८८-८९ में भी इन्होंने अलङ्कार कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में 'वैदिक गणित' पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री लालनरसिंह नारायण ने वीडियो फिल्म का निर्देशन व सम्पादन भी किया।

(६) श्री कुँवरसिंह नेगी लैब अटेन्डेण्ट हैं। विभाग के स्थापनाकाल से ही वह लगभग २८/२९ वर्ष से सेवारत हैं और अत्यन्त आज्ञाकारी एवं विभागीय हित में कार्य करने वाले विश्वासपात्र कर्मचारी हैं।

— **चन्द्रशेखर त्रिवेदी**
अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहने की दिशा में सफल रहा। विभाग में इस समय एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर निष्ठापूर्वक अपने अध्ययन-अध्यापन का कार्य पूर्ण सजगता के साथ सम्पन्न कर रहे हैं।

विभागीय प्राध्यापक :—

(१) डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम० ए०, पी-एच० डी०—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

(२) डा० जबरसिंह सेंगर—एम० ए०, पी-एच० डी०—रीडर।

(३) डा० श्यामनारायण सिंह—एम० ए०, पी-एच० डी०, एल-एल० बी०—रीडर।

(४) डा० काश्मीरसिंह भिण्डर—एम ए०, पी-एच० डी०—लेक्चरर।

(५) डा० राकेशकुमार शर्मा,—एम० ए०, पी-एच० डी०—लेक्चरर।

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध छात्रों की संख्या—

एम० ए० प्रथम वर्ष	१७
एम० ए० द्वितीय वर्ष	१४
शोध छात्र	१३

शोध-कार्य—विभाग में वर्तमान समय तक २३ महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य हो चुका है। इस वर्ष दीक्षान्त समारोह में दो शोधार्थियों को पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया गया। उक्त दोनों शोधार्थियों ने डा० श्यामनारायण सिंह के कुशल निर्देशन में अपना शोध-कार्य सम्पन्न किया। प्रथम डा० सुखबीर सिंह जिनका शोध विषय "पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की मृण्मूर्तियों एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन" है। द्वितीय डा० जसवीरसिंह मलिक का शोध विषय "प्राचीन भारत में पौरोहित्य" है। इस वर्ष डा० बिनोदचन्द्र

सिन्हा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के निर्देशन में श्री आर्येन्द्र ने अपना "प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध" नामक शोध प्रबन्ध पूर्ण करके विश्वविद्यालय में जमा करा दिया है। उपर्युक्त के अतिरिक्त विभाग में उच्च स्तर का शोध-कार्य हो रहा है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थी अपने शोध-कार्य को सम्पन्न करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं।

नाम	विषय	निर्देशक
१—जितेन्द्रनाथ	दी ध्यानी बुद्धाज प्रानम एण्ड बुद्धिस्ट एवेयर इन इण्डियन आर्ट	डा० विनोदचन्द्रसिन्हा
२—डाली चटर्जी	प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालकरणों का चित्रण।	,, ,,
३—सुधाकर शर्मा	बुद्धिस्ट स्कल्प्चर अण्डर द पालाज	,, ,,
४—डा० विनोद शर्मा	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास	,, ,,
५—श्रीमती रश्मि सिन्हा	प्राचीन भारत में समाजवाद	,, ,,
६—फयाज अहमद	गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	डा० जबरसिंह सेंगर
७—सुरेश चन्द	पश्चिम उ० प्र० में चौहान जाति का इतिहास	,, ,,
८—श्रीमती मधुबाला	महाभारतकालीन युद्धप्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र।	,, ,,
९—जगदीशचन्द्र ग्रोवर	ब्राह्मी स्कलपचर्स अण्डर द पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
१०-ऋषिपाल आर्य	प्राचीन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व	,, ,,
११—रजनी सेंगर	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (वैदिककाल से गुप्तकाल तक)	,, ,,
१२—भारत भूषण	गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० कश्मीरसिंह
१३—विनोद कुमार शर्मा	प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थाएँ	,, ,,

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित लेख—

वर्तमान सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार लेख प्रकाशित हुये। प्रथम लेख "**वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन** नामक पुस्तक में डा० सत्यव्रत की प्रेरक कृति "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व"; द्वितीय

भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य नामक पुस्तक में शंकर और भारतीय संस्कृत; तृतीय **गुरुकुल पत्रिका** के "प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन" शोध विशेषांक में हड़प्पा संस्कृति में नगर व्यवस्था; चतुर्थ **प्रह्लाद विशेषांक** (युगीन शिक्षा पर शोध पत्रों का संकलन) में "गांधी और गुरुकुल शिक्षा"। वर्तमान समय तक डा० सिन्हा की १० पुस्तकें तथा ५० शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेगर के तीन शोध लेख निम्नतः प्रथम "प्राचीन भारत की मुद्रायें" द्वितीय अंक सितम्बर १९८८ **प्रह्लाद** में, द्वितीय म्यूजियम आउट रीच प्रोग्राम **वैदिक पाथ अंक सितम्बर** से दिसम्बर १९८८ में तथा तृतीय युगों-युगों में नारी **प्रह्लाद** में प्रकाशित हुये।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा के इस सत्र में तीन शोध लेख निम्नतः प्रथम "गुप्त कौन थे" **गुरुकुल पत्रिका** में; द्वितीय "सावरनिटी इन वैदिक पीरियड" **वैदिक पाथ** में तथा तृतीय "प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप-**प्रह्लाद** विशेषांक (युगयुगीन शिक्षा पर शोध-पत्रों का संकलन) में प्रकाशित हुये।

विभाग द्वारा शैक्षणिक गतिविधियाँ—

इस सत्र के दिसम्बर माह में न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा का "प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था" पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ। माह मार्च में एक सरस्वती यात्रा का आयोजन डा० सेंगर एवं डा० श्यामनारायण सिंह के नेतृत्व में हुआ. जिसमें छात्रों ने थानेश्वर, दिल्ली, मथुरा, आगरा, ग्वालियर, झांसी एवं खजुराहो का भ्रमण किया। अध्ययन की दृष्टि से यह यात्रा विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त लाभकारी रही। विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर ने इस वर्ष २६ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक होने वाले आल इण्डिया म्यूजियम कांफ्रेन्स में भाग लिया। न्यू म्यूजियोलोजी की गोष्ठी में डा० सेंगर ने अपने विचार भी रखे। प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन पर पिछले वर्ष सम्पन्न हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी मे पढ़ जाने वाले शोध-पत्रों को शोध-लेख विशेषांक के रूप में इस सत्र में डा० जयदेव के सौजन्य से प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार पिछले वर्ष विभाग में हुई राष्ट्रीय गोष्ठी "युगयुगीन शिक्षा" के शोध- लेखों को "प्रह्लाद" में शोधपत्र विशेषांक के रूप में डा० विष्णुदत्त राकेश के सौजन्य से प्रकाशित किया गया।

विभाग के प्राध्यापक डा० कश्मीरसिंह भिण्डर ने आल इण्डिया रेडियो

नजीबाबाद में परिचर्चा में भाग लिया, जिसका विषय "साम्प्रदायिकता" था। रुड़की में हुई धार्मिक गोष्ठी जिसका विषय **सिख धर्म का योगदान व महत्व** एवं निर्मल सम्प्रदाय के सौजन्य से कुरुक्षेत्र में हुये धार्मिक सम्मेलन में सिख धर्म पर हुई परिचर्चा में भाग लिया। इसके अतिरिक्त डा० भिण्डर ने शाहबाद मारकंडा में सनातन हिन्दू सभा द्वारा आयोजित गोष्ठी में "गुरुग्रन्थ साहिब में राम महिमा" पर तीन व्याख्यान दिये।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ—

विश्वविद्यालय में स्थित पुरातत्व संग्रहालय जो कि विभाग का एक अभिन्न अंग है, उसके निदेशक पद पर डा० जबरसिंह सेंगर कार्य कर रहे हैं। विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्व-विद्यालय के उप-कुलसचिव का कार्यभार कुशलतापूर्वक देख रहे हैं। डा० कश्मीरसिंह ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सहायक परीक्षाध्यक्ष की भूमिका को गरिमा के साथ सम्पन्न किया। विभाग के लेक्चरर डा० राकेशकुमार शर्मा विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर के पद पर कुशलता से कार्य कर रहे हैं। इसी सन्दर्भ में वे इस वर्ष तीन माह का प्रशिक्षण भी ले चुके हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य को विभाग के सभी सदस्यों ने पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न किया है।

—डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
विभागाध्यक्ष

———

पुरातत्व संग्रहालय

पुरातत्व संग्रहालय विश्वविद्यालय के पास गत ८२ वर्षों से देश की संस्कृति के धरोहर के रूप में विद्यमान है। सिन्धु सभ्यता से लेकर १६वीं शताब्दी की विभिन्न वस्तुएं संग्रहालय को विभिन्न वीथिकाओं में दर्शन एवं उच्च अध्ययन के लिये नियोजित की गयी हैं। विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट के अतिरिक्त संग्रहालय को अन्य शासकीय संस्थाओं से भी अनुदान प्राप्त होता रहा है। सन् १९८८-८९ के इस सत्र में संग्रहालय को उ० प्र० शासन द्वारा एवं भारत सरकार के मानव संसाधन विभाग–राष्ट्रीय अभिलेखागार से अनुदान प्राप्त हुये।

१- उत्तर प्रदेश सरकार से १५ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इस अनुदान राशि से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित लगभग २०० छायाचित्र राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय नई दिल्ली से क्रय किये गये। इसके अतिरिक्त प्रस्तर कक्षा के लिये कुछ काष्ठ आधार भी तैयार करवाये गये।

२- उत्तर प्रदेश राज्य के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुर सिंह द्वारा प्रदत्त एक लाख की राशि से संग्रहालय कक्ष में कला वीथिका हेतु प्रदर्श पटल निर्मित करवाये गये हैं। इस वीथिका के पूर्ण होने में अभी लगभग ७५ हजार रुपये के व्यय का अनुमान है। वर्ष १९८८-८९ के वित्त वर्ष में १५ हजार रुपये की राशि और उपलब्ध हुई है। इस राशि से कला वीथिका की पेंटिंग की माउन्टिंग सम्बन्धी कार्य प्रगति पर है।

३- राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त ३० हजार रुपये की अनुदान राशि से तथा १० हजार रुपये विश्वविद्यालय द्वारा दिये गये धन से पाण्डुलिपियों की संरक्षण प्रक्रिया हेतु एक काष्ठ एवं १० परिशोधित अयन परिकोष्ठों का निर्माण कराया गया है। इसी राशि से वायु निशेषण पंखे एवं पाण्डुलिपियों के संरक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित रसायन भी क्रय किये गये हैं। यह उपलब्धि संग्रहालय की अति विशिष्ट उपलब्धि है। इस व्यवस्था के अनुसार पाण्डुलिपियों का संरक्षण संग्रहालय में ही किया जाना संभव हो गया है।

इस वर्ष पुरातत्व संग्रहालय को फीजो राष्ट्र के भारतीय मूल के निवासी श्री नेतराम जी शर्मा द्वारा ६ ताम्र एवं रूपक मुद्रायें भेंटस्वरूप प्राप्त हुईं हैं।

इस वर्ष दर्शकों की संख्या ६४७९ रही है। संग्रहालय आने वाले कुछ दर्शकों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :-

१-सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार (सीनेट सदस्य)
२-श्रीमती कुसुम स्वरूप, अध्यक्ष, आल इण्डिया वीमेन्स कांफ्रैंस लखनऊ शाखा।
३-श्री के० एस० मूर्ति, उपाध्यक्ष वि०वि० अनुदान आयोग, नई दिल्ली।
४-श्री गोपाल जी त्रिवेदी, कुलपति राजेन्द्र कृषि वि०वि० समस्तीपुर बिहार।
५-वी०ए० केहरजी, महालेखाकार, आडिट-१ उ०प्र० इलाहाबाद।
६-पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भू०पू० परिदृष्टा, गु०का० वि०वि० हरिद्वार।
७-श्री सुरेन्द्र लाल, क्यूरेटर ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी लन्दन।

इसके अतिरिक्त अक्टूबर मास में श्री आर० एस० चितकारा भूतपूर्व निदेशक यूनिवर्सिटीज की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिव्यू कमेटी के सदस्यों ने भी संग्रहालय का निरीक्षण किया। प्रायः सभी महानुभावों ने संग्रहालय संकलन एवं भावी विकास के प्रति अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये। सामान्यतः संग्रहालय दर्शकों के लिये प्रातः १० बजे से सायं ४-३० तक खुला रहता है। ग्रीष्मकाल में दर्शकों की सुविधा हेतु कुछ अवधि के लिये संग्रहालय का समय विश्वविद्यालय कार्यालय के अनुरूप प्रातः ७ बजे से दोपहर १ बजे तक किया जाता है।

वर्तमान में संग्रहालय के विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं :-

१-डा० जबरसिंह सेंगर	निदेशक
२-श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
३-डा० सुखवीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
४-श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ	संग्रहालय सहायक
५-श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
६-श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
७-श्री ओमप्रकाश	भृत्य
८-श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार
७-श्री गुरुप्रसाद	माली
१०-श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के अधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य इस प्रकार हैं :-

निदेशक

आल इण्डिया म्यूजियम कॉंफ्रेंस गोहाटी के अधिवेशन में दिनाँक २६ से २९ दिसम्बर १९८८ में भाग लिया। न्यू म्यूजियोलोजी की गोष्ठी में अपने विचार भी व्यक्त किये।

२- प्राचीन भारत की मुद्रायें नामक लेख प्रह्लाद पत्रिका के सितम्बर १९८८ के अंक में प्रकाशित हुआ।

३- म्यूजियम्स आउट रीच प्रोग्राम नामक लेख आंग्ल भाषा में वैदिक पाथ जर्नल के अंक सितम्बर से दिसम्बर १९८८ में प्रकाशित हुआ।

४- युगों-युगों में नारी—प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

५- छात्रों को मास मार्च १९८९ में प्राचीन मोनूमेंट्स, खुदाई स्थल आदि प्राचीन स्थलों का दृश्यावलोकन अध्ययन की दृष्टि से कराने गये।

क्यूरेटर :- (संगोष्ठियाँ)

१- सितम्बर १९८८ में राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली एवं मैक्समूलर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार "दि इण्डस वैली सिविलाइजेशन" में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। इस संगोष्ठी में राष्ट्र के लगभग ३५ सिन्धु-संस्कृति के विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था।

२- विश्वभारती विश्वविद्यालय शान्ति निकेतन के तत्वावधान में सम्पन्न इण्डियन आर्कियोलॉजीकल सोसायटी एवं इण्डियन सोसायटी फार प्री-हिस्टोरिक एवं क्वार्टरली स्टडी की वार्षिक बैठक एवं आयोजित संगोष्ठी में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

इस संगोष्ठी में निम्नलिखित लेख प्रस्तुत किये :-

अ- Some more Copper objects from Sheorajpur

ब- Number

फरवरी १९८८ में बिहार पुराविद् परिषद पटना के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "आर्कियोलॉजी आफ ईस्टर्न इण्डिया" में आमन्त्रित विद्वान के रूप में विश्वविद्यालय की ओर से भाग लिया। संगोष्ठी में निम्न-लिखित लेख प्रस्तुत किया।

Sringewerepur : A Meeting Place of East and West.

लेखन एवं प्रकाशन

१- झेलेम के आँचल में :—श्री सोमनाथ मरवाहा के संस्मरण गुरुकुल पत्रिका अंक जून-अगस्त १९८८, पृष्ठ ११-२०

२- सिन्धु सभ्यता में स्थानीय स्वशासन की अवधारणा, **गुरुकुल पत्रिका** शोध पत्र संकलन विशेषांक, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर १९८८, पृष्ठ ८२से ८७।

३- ए नोट आन द सोल एण्ड सीलिंग फ्राम भारद्वाज आश्रम, **वैदिक पाथ** ग्रन्थ ५२ अंक १ मार्च १९८९

४- दैनिक जनसत्ता नई दिल्ली के रविवारीय परिशिष्ट हेतु "हरिद्वार: ऐतिहासिक एवं पुरातत्व परिप्रेक्ष्य" नामक लेख आमन्त्रण पर लिख कर प्रेषित किया।

प्रकाशन

क्लासीकल राइटिंग आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर, स्वामी श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार १९८८।

सहायक क्यूरेटर

निदेशक के आदेशों का कार्यपालन करते हुये संग्रहालय में नियोजन हेतु निम्नलिखित कार्य किये :-

१- मुद्रा कक्ष के सिक्कों का कालानुसार वर्गीकरण करके दर्शकों की सुविधानुसार दर्शक पटल में नियोजित किये।

२- पाषाण प्रतिमा कक्ष में भी कालानुसार वर्गीकरण करके दर्शकों की सुविधा के लिये काष्ठ आधारों पर मूर्तियों का पुर्ननियोजन किया।

३- श्रद्धानन्द कक्ष के पुर्ननियोजन में सक्रिय योगदान दिया।

४- संग्रहालय में संग्रहीत लगभग ३०० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त अनुदान राशि का उपयोग कर एक काष्ठ एवं १० स्टील फ्यूमीगेशन चेम्बर बनवाने का कार्य सम्पन्न करवाया। साथ ही हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की सुरक्षार्थ कैमिकल्स आवश्यकतानुसार क्रय किये गये।

"पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी में संग्रहीत मृण्मूर्तियाँ एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन" नामक शोध कार्य पर विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

मुख्यमन्त्री द्वारा प्राप्त १ लाख की धनराशि से पेंटिंग गैलरी के शोकेसज बनवाने में तकनीकी सहायता एवं देख-रेख आदि कार्य सम्पन्न कराये। माउन्टिग कार्य हेतु वे प्रयत्नशील हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय सहायक के साथ स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष में वर्गीकरण के अनुसार छायाचित्रों को लगवाकर तकनीकी निर्देशन कर नया रूप दिया गया। वेद संग्रहालय के शोकेसेज बनवाने में भी तकनीकी सहायता देकर वहाँ के शोकेसेज भी बनवाये। इसी प्रकार पुस्तकालय में वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की अनुक्रमणिका तैयार कराने में प्रमुख योगदान रहा, जो विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

संग्रहालय सहायक

संग्रहालय सहायक ने इस वर्ष संग्रहालय में निम्न कार्य किये :-

१- स्वामी श्रद्धानन्द वीथिका के लिये क्रय किये गये छाया-चित्र एवं संकलित छायाचित्रों का कालानुक्रम वर्गीकरण करके वीथिका पुनर्नियोजन का काय किया।

२- प्लास्टर कास्ट वीथिका का कालानुक्रम के अनुसार नियोजित किया।

३- राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली द्वारा २० माह शार्ट टर्म इन सर्विस ट्रेनिंग आफ म्यूजियालोजी का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र बी ग्रेड में प्राप्त किया।

आर्कियोलोजी आफ भावनगर, डिस्ट्रिक्ट गुजरात स्टेट, लगभग १५वीं शताब्दी से ईसा पूर्व शताब्दी तक ईस्वी सन् के प्रारम्भ तक विषय पर एम०एस० विश्वविद्यालय बड़ौदा से पी-एच०डी० की डिग्री प्राप्त की।

लेख

श्रद्धानन्द वीथिका, प्रह्लाद, अंक सितम्बर १९८८ में पृष्ठ ६०-६१ पर प्रकाशित हुआ।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रो०एवं अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, डा० श्यामनारायण सिंह, डा० कश्मीरसिंह एवं डा० राकेश शर्मा ने भी समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देशन देकर संग्रहालय को विकास की ओर अग्रसर करने में अपना महत्वपूण योगदान दिया।

संग्रहालय लिपिक एवं अन्य सहयोगियों द्वारा दर्शकों की सुविधा के लिये विभिन्न वीथिकाओं में प्रकाश एवं हवा के लिये पंखों के लगवाने का कार्य अन्य

प्रभारियों के सहयोग से किया। संग्रहालय की साफ-सफाई में तथा दर्शकों को मार्गदर्शन कर सुविधा देने में संग्रहालय के सभी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का कार्य विशेषरूप से सराहनीय रहा। संग्रहालय भवन के आस-पास के क्षेत्र में पर्यावरण को ध्यान में रखते हुये माली द्वारा विशेषरूप से पुष्पों एवं सदाबहार वृक्षों से संग्रहालय परिसर सुसज्जित किया गया। यदि अनुदान की राशि बढ़ा दी जाये, तो प्रकाश, सौन्दर्यीकरण आदि कार्यों को कराकर संग्रहालय के स्वरूप में निखार लाया जा सकता है।

डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक

————

अंग्रेजी विभाग

अंग्रेजी विभाग इस वर्ष उत्तरोतर प्रगति पर रहा। विभाग में अनेक छात्र अधुसन्धान कर रहे हैं। इस वर्ष भी नए छात्रों का पंजीकरण हुआ। विभाग में एम० ए० के छात्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई। विभाग Certificate Course in English भी चला रहा है।

विभाग में इस वर्ष पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ की अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर तथा भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती निर्मला मुखर्जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने—"ए पैसेज मोर दैन टू इण्डिया" नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

विभाग में निम्नलिखित आचार्य काम कर रहे हैं।

१) डा० आर० एल० वार्ष्णेय—एम० ए०, पी-एच० डी०, पी० जी० सी० टी०, डिप० टी०।

—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२) श्री एस० एस० भगत – एम० ए०

—रीडर

३) डा० नारायण शर्मा—एम० ए, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०

—रीडर

४) डा० श्रवणकुमार—एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०

— प्रवक्ता

५) डा० अम्बुजकुमार शर्मा—एम० ए०, एम० फिल, पी-एच० डी०

— प्रवक्ता

डा० आर० एल० वार्ष्णेय ने वैदिक पाथ का सम्पादन किया। उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए। इस वर्ष उनकी दो पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

डा० वार्ष्णेय ने बी० एस० एम० कालेज रुड़की में "Tagore" तथा

"Renaissance" पर व्याख्यान दिये तथा E. M. B. BHEL के तत्वावधान में त्रिदिवसीय English Teachers की Workshop का संचालन किया । यह वर्कशाप English Language Teaching पर थी।

डा० नारायण शर्मा ने वर्ष में निम्नलिखित कार्य किए—

(i) अपने पद से सम्बन्धित सभी कर्त्तव्य ।

(ii) नवम्बर १९८८ में मेरठ विश्वविद्यालय में टालस्टाय पर एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए एवं उसमें एक रिसर्च पेपर पढ़ा ।

(iii) मार्च १९८९ में बी० एस० एम० कालेज रुड़की में एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए एवं उसमें एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया व पढ़ा ।

(iv) अप्रल १९८९ में रुड़की विश्वविद्यालय में एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए। उसमें भाग लेकर एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया और पढ़ा ।

(v) फरवरी १९८९ में नई दिल्ली में साहित्य एकाडमी का वार्षिकोत्सव हुआ "फैस्टिवल आफ लैटर्ज" के नाम से । इन्हें इसमें आमन्त्रित किया गया । छुट्टी सम्बन्धित समस्या उत्पन्न होने से वहाँ नहीं जा सके ।

(vi) इसके अतिरिक्त प्रकाशन हेतु दो रिसर्च पेपर्स पर काम किया जा रहा है ।

डा० श्रवणकुमार शर्मा ने निम्नलिखित कार्य किए—

(i) मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'लियो टालस्टाय' पर हुई गोष्ठी (नवम्बर १९-२०,१९८८) में भाग लिया तथा एक शोधपत्र "Tolstoy's Quest for Spiritual Perfection" पढ़ा जो प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया ।

(ii) बी० एस० एम० कालिज रुड़की द्वारा आयोजित 'Twentieth Century Literature' पर हुई गोष्ठी (मार्च-१२, ८९) में भाग लिया तथा एक शोध-पत्र 'The Vedic Sagacity in Wasteland' पढ़ा जो 'गुरुकुल पत्रिका' में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है ।

(iii) रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी "Nature, Technology and Society Kanada". (April 3, 4, 5, 1989) में भाग लिया तथा एक शोध-पत्र 'Archibald Lampman's Treatment of Nature' पढ़ा ।

(iv) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० द्वारा आयोजित 'महाभाष्यकार पातञ्जलि' पर हुई गोष्ठी में भाग लिया।

(v) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० के "वैदिक पाथ" जून अंक में एक शोध-पत्र 'The Rig. Vedic Echo in Aurobindo's Savitri' प्रकाशित हुआ।

(vi) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० के "वैदिक पाथ" में एक शोध-पत्र "Huxley's Theme of Non-attachment & Srimad Bhagavadgita" प्रकाशित हुआ।

(vii) गुरुकुल काँगडो वि० वि० की गुरुकुल पत्रिका जून, जुलाई, अगस्त अंक में एक शोधपत्र " Social Realism in Kamala Markandaya' प्रकाशित हुआ।

(viii) M. D. Univ. Research Journal of Arts में एक शोधपत्र Tagore's Adolescent Mind अप्रैल अंक में प्रकाशित हुआ।

(ix) गु० का० वि० वि० के वैदिक पाथ March अंक में एक शोध पत्र "The Bhagvadgita & Matthew Arnold" प्रकाशित हुआ।

(x) पंजाब वि० वि० के रिसर्च बुलेटिन में एक शोध पत्र 'Hegelian Dialectic in Arnold's Elegies' स्वीकार किया गया है।

(xi) गु० कां० वि० वि० की गुरुकुल पत्रिका में एक शोध पत्र "The Vedic Sagacity in the Wasteland" प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है।

(xii) गु० कां० वि० वि० के वैदिक पाथ में चार Book-Review प्रकाशित हुए।

(i) Influence of Bhagavadgita on Literature written in English, edi. by T. R. Sharma.

(ii) Images of India in World Literature, ed. by. -Rita Sil

(iii) Indo-English literature by Prof. R. L. Varshney.

(iv) Savitri. by R. K. Singh

अन्य विभागीय बन्धु अपने विभागीय कर्त्तव्यों को पूरा करते रहे हैं तथा वैचारिक गोष्ठियों एवं सेमिनारों में भाग लेते रहे। डा० अम्बुजकुमार शर्मा का एक पेपर "Relevance of the Vedas in Modern Times" वैदिक पाथ में छपा। श्री सदाशिव भंगत का एक लेख Sri Aurobindo पर वैदिक पाथ के मार्च १९८९ में अंक में प्रकाशित हुआ।

—प्रो० आर० एल० वार्ष्णेय
विभागाध्यक्ष

———

हिन्दी विभाग

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का यह सौभाग्य है कि इसके स्थापना-काल में शाहपुरा हिन्दी पीठ पर तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा प्रतिष्ठित हुए। हिन्दी व्याकरण दर्शन के उद्भावक और प्रख्यात भाषाशास्त्री आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने भी कुछ समय तक यहाँ अध्यापन कार्य किया। विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने पर गुरुकुल में तुलसी साहित्य के विशेषज्ञ डा० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। उनके सहयोगियों में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान तथा शैली विज्ञान के विशेषज्ञ डा० सुरेशकुमार विद्यालंकार (सम्प्रति प्रोफेसर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) तथा मध्यकालीन साहित्य और साहित्यशास्त्र के विशेषज्ञ डा० विष्णुदत्त राकेश ने विभाग की उन्नति में रचनात्मक सहयोग दिया। सम्प्रति डा० विष्णुदत्त राकेश विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष हैं। गुरुकुल के हिन्दी विद्यार्थी भारत के उच्च शिक्षणालयों में उच्च-स्तरीय हिन्दी अध्यापन तथा शोध का कार्य करा रहे हैं। हिन्दी विभाग की शोध के क्षेत्र में भी विशेष उपलब्धियाँ हैं। हिन्दी प्रचार-प्रसार, साहित्य सृजन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में आर्य समाज और गुरुकुल काँगड़ी के अवदान का शोधस्तरीय मूल्यांकन का कार्य भी विभाग में प्रारम्भ हुआ है। शोध सारावली में उपाधिप्राप्त प्रबन्धों का सारांश छप चुका है तथा कुछ शोध ग्रंथ भी विभिन्न प्रकाशन प्रतिष्ठानों से प्रकाशित हुए हैं।

विभाग के प्राध्यापक :

(१)	डा० विष्णुदत्त राकेश	एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्० साहित्यवाचस्पति, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
(२)	रीडर	रिक्त
(३)	डा० ज्ञानचन्द्र रावल	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
(४)	डा० भगवानदेव पाण्डेय	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
(५)	डा० संतराम वैश्य	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

इस वर्ष नियमित अध्यापन तथा अनुसन्धान कार्य के अतिरिक्त विभाग

के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दी प्रचार तथा लेखनकार्य में रुचि ली। फीजी से हिन्दी अध्ययनार्थ आए छात्र नेतराम शर्मा की पुस्तक 'हिन्दी प्रदीप' का फीजी में विमोचन हुआ। वहाँ के हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए श्रीयुत शर्मा ने यह पुस्तक हिन्दी विभाग के सहयोग से तैयार की है। अहिन्दी-भाषी क्षेत्र वारंगल से आए छात्र बशीर अहमद ने हिन्दी प्रचार का कार्य किया। हिन्दी विभाग के प्राध्यापकों ने इस दिशा में सफल मार्गदर्शन किया।

सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य तथा लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पुष्पा बसल तथा हिन्दी के प्रख्यात कवि और आधुनिक साहित्य के विशेषज्ञ डा0 बल्देव वंशी के विशेष व्याख्यानों का आयोजन हिन्दी विभाग में हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी कविता, आधुनिक कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ तथा मेरी रचना प्रक्रिया पर क्रमशः उक्त तीनों महानुभावों ने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० त्रिभुवनसिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित तथा पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के हिन्दी रीडर डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा विश्व-विद्यालय में शोध समिति की बैठक तथा परीक्षाकार्य के सिलसिले में पधारे। विद्यार्थियों ने शोधसम्बन्धी समस्याओं पर इन विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शैक्षणिक दृष्टि से विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश का कार्य उल्लेखनीय है। भारतीय विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों के सुप्रसिद्ध संगठन 'भारतीय हिन्दी परिषद्' के लखनऊ अधिवेशन में निर्वाचित कार्यकारिणी के डा० राकेश सदस्य चुने गए। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार की पाठ्यक्रम पर आधारित कोश निर्माण सम्बन्धी बैठक में परामर्श-दाता के रूप में भाग लिया। आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्रसिद्ध शोध केन्द्र वृन्दावन शोध संस्थान में 'मधुरोपासना के स्रोत' विषय पर व्याख्यान दिया। आर० सी० ए० बालिका महाविद्यालय मथुरा में अनुदान आयोग की कोहसिप योजना के अन्तर्गत तंत्र वाङ्मय से सम्बद्ध संगोष्ठी का उद्घाटन-भाषण दिया। बी0 एस0 एम0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की में आयोजित जयशंकर प्रसाद जन्मशती समारोह का उद्घाटन किया तथा 'प्रसाद की इतिहास और आलोचना दृष्टि' पर व्याख्यान दिया। गुरुकुल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर आयोजित शिक्षा सम्मेलन का संचालन-संयोजन किया। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह तथा उद्घाटन डा० धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। प्रह्लाद पत्रिका के शिक्षा विशेषाङ्क का

सम्पादन किया। 'भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार जगद्गुरु श्री आद्यशंकराचार्य' शीर्षक शोधग्रंथ का सम्पादन किया। उत्तर और दक्षिण भारत के शीर्षस्थ विद्वानों के शोध लेखों से संवलित इस ग्रन्थ का विमोचन इलाहाबाद कुंभ के अवसर पर विराट् सम्मेलन में हुआ। ग्रंथ के सम्पादन के लिए इस अवसर पर जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी लोकेशानन्द जी गिरि ने डा० राकेश को उत्तरीय प्रदान कर उनका भावभीना अभिनन्दन किया। चारों वेदों के चुने हुए सौ वेद मंत्रों का 'वेद प्रभा निर्झर' नाम से पद्यानुवाद किया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित उ० प्र० नागरिक परिषद् लखनऊ की जिला शाखा हरिद्वार की समिति में सदस्य मनोनीत हुए। इसके अतिरिक्त शोध पत्रिकाओं और साहित्यिक ग्रन्थों में शोध लेख प्रकाशित हुए। अब तक आपके १४ उत्कृष्ट आलोचना ग्रन्थ और लगभग १०० शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं। स्वामी श्रद्धानंद अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र के निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय की आप सराहनीय सेवा कर हैं।

विभाग के प्राध्यापक डा० भगवानदेव पाण्डेय के निर्देशन में शोधार्थी अशोककुमार शर्मा को उनके शोध प्रबन्ध 'दिनकर साहित्य के प्रेरक एवं प्रभावक तत्व' पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई। अन्य प्राध्यापक डा० संतराम वैश्य ने प्रह्लाद के लिए पुस्तक समीक्षा लिखी। विज्ञान परिषद् आफ इन्डिया के सिम्पोजियम तथा संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 'महाभाष्यकार पतञ्जलि संगोष्ठी'' के आयोजन और व्यवस्था में सक्रिय भाग लिया। कु० अपर्णा पालीवाल ने डा० वैश्य के निर्देशन में 'विष्णु प्रभाकर का निबन्ध साहित्य' विषय पर अपना लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। डा० ज्ञानचन्द्र रावल ने अध्यापन कार्य सुचारू रूप से सम्पादित किया।

— **डा० विष्णुदत्त राकेश**
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् जौलाई १९८८ को नये सत्र के लिये खुला। इस वर्ष बी.एस-सी. प्रथम वर्ष में छात्रों का प्रवेश साक्षात्कार के द्वारा किया गया।

कालेज में इस समय कुशल शिक्षक महानुभाव कार्यरत हैं तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारी भी कार्यरत हैं। कालेज में इस समय छात्रों की संख्या निम्न है -

कक्षा	ग्रुप	संख्या	विशेष
१- बी०एस-सी० (प्रथम वर्ष)	गणित	७२	सन् १९८८-८९ में विज्ञान
२- —,,—	बायो	३०	महाविद्यालय में
३- —,,—	कम्प्यूटर	२०	छात्रों की संख्या
४- पी०जी०डिप्लोमा Chemistry	Chemistry	१०	२५० थी।
५- एम०एस-सी० प्रथम वर्ष-गणित	गणित	१८	
६- पी०जी०डिप्लोमा	कम्प्यूटर	२०	
७- बी०एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	गणित	३७	
८- —,,—	बायो	१६	
९- एम०एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	गणित	३	
१०- एम०एस-सी० I,II,IV(Semester)	Micro Biology	२४	

—प्रो० एस० सी० त्यागी
प्रिंसीपल

गणित विभाग

१. शिक्षक

एस. सी. त्यागी
एस. एल. सिंह
वी. पी. सिंह
विजयेन्द्र कुमार
एम. पी. सिंह
एच. एल. गुलाटी
यू. सी. गैरोला*

*डा० वीरेन्द्र अरोड़ा के कुलसचिव पद पर होने से अवकाशरिक्ति में तदर्थ नियुक्ति।

२. छात्र संख्या

२.१	बी० एस-सी०	भाग एक	—	७२
		भाग दो	—	३५
२.२	एम० एस-सी०	पूर्वार्द्ध	—	१८
		उत्तरार्द्ध	—	०३

२.३ विद्यालंकार भाग एक व दो में संप्रति कोई छात्र नहीं है।

२.४ शोध छात्रों की संख्या — ०४

शोध छात्रों के स्वीकृत विषय

२.४.१ रेखा मेंहदीरत्ता : Fixed Point Theorems in Probabilistics Analysis and Uniform Spaces (वर्ष १९८८-८९ से)

२.४.२ उमेशचन्द्र गैरोला : दूरीक एवं बनाख समष्टियों में संपात, स्थिर एवं संकर स्थिर बिंदुओं का अस्तित्व (वर्ष १९८७-८८ से)

२.४.३ रमेशचंद : A Study of Sidhanta Siromani (वर्ष १९८६-८७ से)

२.४.४ देवेन्द्र दत्त : २-दूरीक, २- बनाख एवं सांस्थितिकत : सदिश समष्टियों में अमूर्त संपात तथा स्थिर बिंदु समीकरणों के साधन का अस्तित्व।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश वरीयता क्रम से दिये जाते हैं तथा शोध हेतु उपयुक्त एवं परिश्रमी छात्रों को ही लिया जाता है।

२.५ उक्त चार शोध छात्रों के अतिरिक्त डा० एस० एल० सिंह के निर्देशन में अन्य दो प्राध्यापक (श्री वी. कुमार एवं आर. सी. अजीज) गढ़वाल वि वि. की डि. फिल. (गणित) उपाधि हेतु पहिले से कार्यरत हैं।

३. शोध प्रबन्ध

विभाग के श्री एच. एल. गुलाटी ने विषय "Some Problems on Queueing and Sequencing Theory" पर गढ़वाल वि.वि. (श्रीनगर) की शोध उपाधि (डी. फिल. -गणित) हेतु अपना शोध प्रबंध दो निर्देशकों के अतर्गत जमा किया, जिनमें एक निर्देशक डा. एस. एल. सिंह हैं।

४ शोध प्रपत्र

४.१ बनारस मैथेमेटिकल सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन (१९८८) हेतु विभाग के डा. एस. एल. सिंह, सर्वश्री एच. एल. गुलाटी एवं यू. सी. गैरोला के शोध प्रपत्र स्वोकार किये गये।

४.२ उ. प्र. राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसाइटी के पाँचवे अधिवेशन (कोटद्वार) में विभाग के डा. एस. एल. सिंह एवं श्री वी. कुमार ने क्रमशः सोसाइटी के उपाध्यक्ष एवं सदस्य के रूप में भाग लिया, जहाँ इन लोगों ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये वहीं "संस्कृत व्याकरण, विज्ञान एवं वैदिक गणित" विषय से संबधित डा० सिंह का एक रेडियो वार्ता भी नजीबाबाद आकाशवाणी ने नवम्बर २२, १९८८ को प्रसारित की। यह वार्ता सोसाइटो के अधिवेशन अवधि में रेकाड की गई थी।

५. विभाग के शोध छात्रों - श्री उमेशचन्द्र गैरोला एवं देवेन्द्रदत्त ने दो Instructional Workshop में क्रमशः टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई एवं कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरुक्षेत्र में भाग लिया। विभाग के प्राध्यापक श्री विजयेन्द्र कुमार ने विगत ग्रीष्म में दिल्ली में कम्प्यूटर संबंधी एक लघु प्रशिक्षण प्राप्त किया।

६. शोध पत्रिका का प्रकाशन - प्रो. एस.सी. त्यागी के निर्देशन में मुख्य संपादक डा. एस.एल. सिंह द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान शोध पत्रिका "प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध पत्रिका-Journal of Natural and Physical Sciences" का प्रकाशन किया जा रहा है। इसका प्रवेशांक (१९८७) मार्च १९८८ में प्रकाशित हुआ था। लेखों की अधिक संख्या

होने आदि कारणों से वर्ष १९८८ (खण्ड २) एवं १९८९ का प्रथम अंक प्रकाशनाधीन है।

७. उक्त शोध पत्रिका (Journal of Natural and Physical Sciences) के विनिमय में विभिन्न देशों से निम्न शोध पत्रिकाएँ प्राप्त हो रही हैं -

i) Review of Research, Faculty of Science, Mathematics Series (Novi Sad, Yugoslavia)
ii) Punime Matematike (Prishtine, Yugoslavia)
iii) Facta Universitatis (Series : Mathematics and Informatics) (Nis, Yugoslavia)
iv) The Punjab University Journal of Mathematics (Lahore, Pakistan)
v)* Acta Math. Vietnamica (Vietnam)
vi) Journal of Mathematical and Physical Sciences (I. I. T. Madras)
vii) Bulletin of the Calcutta Mathematical Society (Calcutta)
viii) Journal of the Indian Institute of Science (Bangalore)
ix) Proceedings of the Mathematical Society
x) Indian Journal of Physical and Natural Sciences
xi)*Arunachal Forest News (Bhalkpong)
xii)*Demonstratio Mathematica (Warszawa, Poland)

विशेष - एक सामान्य अनुमान के अनुसार इन शोध पत्रिकाओं से विभाग की लगभग रुपये बारह हजार एवं देश की लगभग दस हजार रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है। तारांकित एवं अन्य वि०विद्यालयों/संस्थाओं के प्रकाशन विनिमय में प्राप्त होंगे।

विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया का प्रथम वार्षिक अधिवेशन एवं सिंपोजिया

गणित विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर का उक्त अधिवेशन (१०-११ मार्च १९८९) एवं निम्न दो सिंपोजियम आयोजित किये गये :

i) Vedic Mathematics, Traditions and Applications
ii) Applications of Mathematics to Modern Science and Technology

अधिवेशन एवं सिंपोजियम का उद्‌घाटन दिनांक १० मार्च को प्रातः ९ बजे हवन से आरम्भ किया गया। उद्‌घाटन भाषण, मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार ने(कुलपति के रूप में)दिया। अतिथियों का स्वागत करते हुए विज्ञान महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रोफेसर एस० सी० त्यागी ने कुमायूँ-गढ़वाल-हरिद्वार परिक्षेत्र में पहिली अखिल भारतीय स्तर की किसी विज्ञान सोसाइटी के अधिवेशन के आयोजन को विश्वविद्यालय एवं विज्ञान महाविद्यालय की बड़ी उपलब्धि से इस सम्मेलन को जोड़ा। कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने इस आयोजन को वि० वि० के लिए गौरव की बात कहा। इस अधिवेशन के स्थानीय सचिव डा० एस० एल० सिंह एवं उनके सहयोगियों के अथक प्रयास के लिए विज्ञान परिषद् के अध्यक्ष प्रो० जे०एन० कपूर एवं अन्य ज्येष्ठ प्रतिभागियों ने वि० वि० के अधिकारियों एवं आयोजकों को धन्यवाद देते हुए इस अधिवेशन एवं सिंपोजिया को सफलतम बताया। उक्त अधिवेशन के अवसर पर एक सोवीनिर भी प्रकाशित किया गया जिसमें निम्न विषयसामग्री भी सम्मिलित है -

i) विश्वविद्यालयों के संबंध में जवाहरलाल नेहरू का एक कथन
ii) 'स्वागताध्यक्ष की ओर से" (द्वारा श्री आर० सी० शर्मा)
iii) "A good beginning" (द्वारा डा० वीरेन्द्र अरोड़ा)
iv) "गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार—एक दिग्दर्शन" (द्वारा आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार)
v) "विज्ञान महाविद्यालय" (द्वारा प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी)
vi) "A Letter" (from H. N. Ramaswamy)
vii) "Vedic Insight" (Due to Subhash Kak of U.S.A.)
viii) "Mathematics—A Vital Subject" (by Narinder Puri of Roorkee)
ix) "Mathematics in Vedas" (by R. P. Sehgal)

उक्त विज्ञान सम्मेलन एवं सिंपोजिया में लगभग पाँच दर्जन शोध प्रपत्र प्रस्तुत किये गये तथा दो दर्जन आमंत्रित भाषण हुए। देश के दूर-दराज के स्थानों, जैसे—चंपारण, कलकत्ता, मद्रास, मगध, इंदौर, भोपाल, झाँसी, बाँदा, वाराणसी, गोरखपुर, रीवाँ, टीकमगढ़ आदि स्थानों से आये प्रतिनिधियों ने शैक्षणिक सत्रों में मनोयोग से भाग लिया।

जामिया मिलिया वि० वि०, दिल्ली की ज्येष्ठ गणित विज्ञानी प्रोफेसर अरुणा कपूर ने एक वक्तव्य में कहा है कि वैदिक गणित से संबंधित ऐसी गोष्ठी वर्ष में दो-तीन बार आयोजित की जानी चाहिए।

दिनांक ११ मार्च को सायं ६ बजे के बाद समापन समारोह हुआ तथा अगले दिन १२ मार्च को प्रतिभागियों को हरिद्वार-ऋषिकेश के विभिन्न आध्यात्मिक एवं दर्शनीय स्थलों का दर्शन कराया गया। प्रतिभागियों के सम्मान में श्री जयराम आश्रम, हरिद्वार एवं लायंस क्लब ऋषिकेश द्वारा दिये गये रात्रि एवं दोपहर भोजों के लिए आयोजकों ने श्री ब्रह्मस्वरूप व लायन ओमप्रकाश टूटेजा (अध्यक्ष, लायन्स क्लब) के प्रति साधुवाद ज्ञापित किया।

—प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी
अध्यक्ष

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। एक प्रवक्ता की स्वीकृति यू० जी० सी० ने और दे दी है। इस समय दो प्रयोगशाला बी० एस-सी० प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष कमरा, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ठ हैं। बी० एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी बी० एस-सी० प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के सभी उपकरण विद्यमान हैं। तृतीय वर्ष के लिए रु० ३०,०००/-के उपकरण खरीदे गये हैं! बी० एस-सी० के लिए अधिकतर पुस्तकें यू० जी० सी० Dev. grant से खरीदी गई हैं। विभाग में एक Colour T. V. भी विद्यमान है जो कि B. Sc. के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को U. G. C. के प्रोग्राम दिखाने के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो रहा है।

भावी योजना—

(१) भौतिकी विभाग में Post graduate कक्षाएँ चालू करना।

(२) भौतिक विज्ञान विभाग में Research Programme शुरु करना।

(३) बी० एस-सी० तृतीय वर्ष के लिए Project Workshop एवं प्रयोगशाला स्थापित करना।

स्टाफ :—

(१)	प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर	अध्यक्ष
(२)	प्रो० बी० पी० शुक्ल	रीडर
(३)	डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल	प्रवक्ता
(४)	डा० परमानन्द प्रकाश पाठक	प्रवक्ता
(५)	रिक्त	प्रवक्ता
(६)	श्री प्रमोदकुमार शर्मा	प्रयोगशाला सहायक
(७)	श्री ठकुरासिंह	लैब ब्याय
(८)	रिक्त	लैब ब्याय

सन् १६८८-८६ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में ११२ तथा द्वितीय वर्ष में ३५ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम—

(A) बी० एस-सी० प्रथम खण्ड

(1) Mathematical Physics.
(2) Classical and Relativity Mechanics.
(3) Vibration & Optics.

(B) बी० एस-सी० द्वितीय खण्ड

(1) Thermodynamics & Statistical Physics.
(2) Electricity & Magnetism.
(3) Atomic Physics & Quantum Mechanics.

(C) बी० एस-सी० तृतीय खण्ड

(1) Physics of Materials/Environmental Physics.
(2) Nuclear Physics.
(3) Electronics.

B. Sc. तृतीय वर्ष में Project Work पूर्ण रूप से व्यवहारिक होगा। विद्यार्थियों के लिए आधुनिक इलेक्ट्रोनिक यंत्रों को सीखने का अवसर मिलेगा।

शिक्षक छात्र का अनुपात

१:३७

इस वर्ष T. D. Course की B.Sc की द्वितीय वर्ष की कक्षाएँ नये कोर्स के अनुसार चालू कर दी गई हैं।

शिक्षकों की Research गतिविधियाँ—

विभाग के सभी अध्यापक Research के कार्य में व्यस्त हैं। प्रो० बुद्ध प्रकाश शुक्ल ने इस वर्ष अपनी Ph.D का Viva-voce कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

में दे दिया है। प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर भी अपने Research के कार्य में व्यस्त हैं। डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल ने भी इस वर्ष सह-परीक्षाध्यक्ष का कार्य सुचारू रूप से किया तथा डा० परमानन्द प्रकाश भी U. G. C. द्वारा Organised Summer School में व्यस्त हैं।

परीक्षा परिणाम –

पिछले वर्षों की भाँति १९८७—८८ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

—हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायन विज्ञान विभाग

विभाग में पी० जी० डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों की, पहले की भाँति, विभिन्न संस्थानों व उद्योगों में अच्छे पदों पर नियुक्ति हुई। विभाग में निम्नलिखित शोध प्रोजेक्ट चल रहे हैं।

(१) यू० जी० सी मेजर विज्ञान प्रोजेक्ट "हायर वेलेन्ट सिल्वर—प्रीपेरेशन व स्टेबिलिटी", **डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण**।

(२) C. S. I. R. मेजर विज्ञान प्रोजेक्ट "सिन्थेसिस स्पेक्ट्रल एन्ड इलेक्ट्रो-केमिकल स्टडीज ऑफ सम मेक्रोसाइकिल्स ऑफ बायोलोजिकल एन्ड इन्डस्ट्रियल इम्पोर्टेन्स", **डा० रणधीरसिंह**।

(३) यू० जी० सी० माइनर शोध प्रोजेक्ट "स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक आइडेंटिफि-केशन एन्ड डिटरमिनेशन ऑफ आर्गेनिक अमीनो कम्पाउन्ड्स ऑफ इम्पोर्टेन्स इन माइनर अमाउन्टस इन इन्डस्ट्रियल एफ्लुएन्टस", **डा० रजनीशदत्त कौशिक**।

(४) यू०जी०सी० माइनर शोध प्रोजेक्ट "इलेक्ट्रो-केमिकल एन्ड स्पेक्ट्रल स्टडीज आफ सम एन सब्सटिटयूटेड मेक्रोसाइक्लिक काम्पलेक्सेस आफ ट्रान्जीशन मेटलस" **डा० रणधीरसिंह**।

विभागीय शिक्षकों ने निम्नलिखित कान्फ्रेन्सों में भाग लिया :—

(१) **डा० इन्द्रायण** ने जून १९८८ में कनाडा में हुए अन्तर्राष्ट्रीय "सिम्पो-जियम आन एनवायरनमेन्टल पोल्यूशन" में भाग लिया।

(२) **डा० रणधीरसिंह** ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस (जनवरी १९८९) (मदुराई कामराज वि० वि०) तथा "इन्टरनेशनल कांफ्रेस आन पोल्यूशन मोनिटरींग टेक्निक" (एस० वी० यूनिवर्सिटी, तिरुपति) में भाग लिया व शोधपत्र प्रस्तुत किये।

(३) **डा० रजनीशदत्त कौशिक** व **डा० कौशलकुमार** ने इन्डियन कोन्सिल आफ केमिस्ट की VIII कान्फ्रेन्स में (एस० वी० यूनिवर्सिटी, तिरुपति-अक्तूबर १९८८) भाग लिया व शोधपत्र प्रस्तुत किये।

इसके अतिरिक्त **डा० रणधीरसिंह** का एक शोधपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल (पॉलीहेड्रन) में प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुआ तथा उन्होंने दो अन्य शोधपत्र

प्रकाशनार्थ भेजे। **डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण** का हायर वेलेन्ट सिल्वर सम्बन्धित शोधपत्र अक्टूबर १९८८ में तिरुपति में हुई इन्डियन कौन्सिल आफ केमिस्ट की कान्फ्रेन्स में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

डा० कौशलकुमार ने विश्वविद्यालय सुन्दरीकरण का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला। **डा० इन्द्रायण** की रेडियो-वार्ता "रासायनिक युद्ध कर्मक" प्रसारित की गई। उन्हें विज्ञान विशेषज्ञ के रूप में परामर्श समिति में आल इन्डिया रेडियो नजीबाबाद ने मनोनीत किया।

इसके अतिरिक्त **डा० कौशलकुमार** व **डा० रजनीशदत्त कौशिक** पी० जी० छात्रों को व्यवसायिक ट्रेनिंग हेतु HCL जीन्द व HAU हिसार ले गये। **डा० रणधीरसिंह** व **डा० कौशिक** उन्हें इसी ट्रेनिंग हेतु NBSS लैब, दिल्ली ले गये।

डा० रजनीशदत्त कौशिक का एक शोधपत्र कनाडा में हुई "अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम आन एनवायरनमेंटल पोल्यूशन" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

डा० रणधीरसिंह का एक शोधपत्र "इन्टरनेशनल सिम्पोजियम आन मेक्रोसाइक्लिक केमिस्ट्री" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ जो जून १९८९ में आस्ट्रेलिया में होने जा रही है।

—डा० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

———

जन्तु विज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तु विज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियां इस प्रकार रहीं :

१. पी०एच-डी० प्रोग्राम के अन्तर्गत दो छात्रों ने डा० बी०डी० जोशी एवम् डा० दिनेश भट्ट के शोध निर्देशन में अपनी-अपनी सिनोप्सिस विश्वविद्यालय में जमा की।

२. माह अक्टूवर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष (जन्तु वि०वि०) द्वारा "टौक्सीकोलाजी" नामक विषय के ऊपर एक अत्यन्त रोचक एवम् ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया गया, जिसमें छात्र एवं प्राध्यापकों ने भाग लिया।

३. माह मार्च में एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, विषय था "बदलता पर्यावरण व जन्तु संरक्षण"। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री डा० बी० जी० झिंगरन द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रो० एस० सी० त्यागी, प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय ने की। इस गोष्ठी में भारतीय विश्वविद्यालयों के करीब ६० वैज्ञानिकों/प्राध्यापकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

४. प्रो० बी० डी० जोशी को XXXI International Congress of Physiological Sciences, Helsinki, Finland में Invited Lecture देने हेतु आमन्त्रित किया गया है, वे जुलाई १९८९ में इस कान्फ्रेन्स में भाग लेंगे।

विभागीय प्राध्यापकों के शोध एवँ प्रसार कार्य :

प्रो० बी०डी० जोशी (विभागाध्यक्ष) : डा जोशी के उल्लेखनीय प्रकाशन इस प्रकार हैं :

1. Seasonal variations in blood glucose and cholesterol contens of **Gallus domesticus, Him. J. Env. Zool.** 2, 1988
2. A comparative account of floral components of the forests of Malani river catchment area. **Him J. Env. Zool.** 2 : 146, 1988.

3. On the litter fall of different forest types in Malini river catchment Area **Him J. Env. Zool.** 2 149, 1988
4. Annual trend of Malaria in & around BHEL locality of Hardwar. **Him. J. Env. Zool** 1988, 2, 45
5. Major insect pest of Kanwa Valley (Kotdwara Pauri Garhwal). **Him. J. Env. Zool.** 1988, 2, 54.
6. On some physico-chemical properties of soil from different regions in relation to eucalyptization in Himalayan foothills **Him. J. Env. Zool.** 1988, 2, 58

लघुशोध प्रबन्ध :

प्रो० जोशी के निर्देशन में निम्न २ छात्रों ने निम्न विषयों पर शोधकार्य किया :

1, Virendra Chauhan : Lactic acid production from cellulose by L. casu.

2. Sushil Kumar : On the differential leucocyte and Platelet counts during a short course of treatment of Malaria patients.

जनरल आर्टिकल :

१. हिमालय के स्तनपोषी जन्तु, **प्रह्लाद** सित० १९८८.

२. इनवायरनमेंटल कोर्स कन्टेन्टस स्टे यूनिवर्सिटी लेवल कैरीकुलम Proc. I Conf Curr. Trends Zool. Teaching & Res. 1988. PP. 128.

३. इन्सेक्ट पेस्ट इन एग्रीकल्चर. आर्यभट्ट, 1988

व्याख्यान/कान्फ्रेंस/सेमिनार/एक्सटेंशन वर्क :

1. Annual Workshop : Himalayan Eco development Projects NEHU, Shillong, June 1988
2. Natl. Symp. Growth Development & Natural Resource Conservation, DAV College, Muzaffarnagar, Oct. 1988. (Delivered Invited Talk)
3. Second Natl. Symp. Fish & Their Environment, Kerala

Univ. Trivendrum, Nov. 1988. (Acted as a Chairman of a session & delivered talk)

4 Workshop on 'Himalayan Environment & Development Institutional & NGO participation." Pant Instt. of Himalayan Environment & Development" Almora, Jan. 1989.

5. "Education of moral values in our Industrial complex" BHEL, Hardwar, Nov. 1988

6. National Symp. "Annual Protection under changing Environment, Deptt. of Zoology, G.K.V. Hardwar (Acted as Director of the Symposia) & presented following Papers.

(i) Biochemical changes in ovary of C. batrachus during different ambient temperature.

(ii) On some haematological changes of the fish H. fossilis during the period of experimental wound healing

(iii) On some haematological values of a teleost fish H. fossilis following its transfer to higher altitude.

(iv) Some enzymological probes in kidney of lithium treated rats.

(v) Status of wildlife in Kotdwara forest area.

(vi) Correlation of climatic factors with male gonadosomatic index of a hill stream teleost, P. dukai.

दूरदर्शन/रेडियो वार्तायें/समाचारपत्र इन्टरव्यू :

(i) "सामाजिक वानिकी" कृषि दर्शन, दिल्ली दूरदशन जनवरी १६, १९८९.

(ii) "पढ़े-लिखे पर्वतीय लोग पहाड़ के विकास में कितने सहयोगी" आकाशवाणी नजीबाबाद

(iii) विभिन्न सरकारी योजनाओं का पर्वतीय क्षेत्र के विकास में योगदान, आकाशवाणी, नजीबाबाद

(iv) वार्ता समीक्षा : हिमालयन शोध योजना, आकाशवाणी

(v) राष्ट्रीय दैनिक The Hindu, 25-12-88 के "Meet the Person" कालम में इन्टरव्यू।

महत्वपूर्ण शैक्षणिक पदों के कार्यभार :

१. संकाय प्रमुख (Dean) स्टूडेन्ट वैल्फेयर, गु. का. वि. वि.
२. कल्चरल प्रतिनिधि गु. का. वि. वि. फार A.I.U. नई दिल्ली
३. मेम्बर, बोर्ड आफ पब्लिकेशन, गु. का. वि. वि. हरिद्वार
४. मेम्बर, स्पोर्टस काउन्सिल, गु. का. वि. वि. हरिद्वार
५. मेम्बर, आरगनाइजिंग कमेटी, N S.S. National Integration Camp गु. का. वि. वि. (Delivered an invited Talk)
६. प्रेजीडेन्ट "इन्डियन अकादमी आफ इनवायरनमेंटल साइन्सेस"
७. मुख्य संपादक "हिमालयन जरनल आफ इनवायरेनमेंट एन्ड जुलाजी"
८. मेम्बर आफ एडिटोरियल बोर्ड : (i) आर्यभट्ट (ii) बायोस्फयर (iii) जरनल आफ जुलाजीकल रीसर्च, (iv) जरनल आफ फिजीकल एन्ड नेचुरल साइन्सेस
९. संपादक : Abstracts & Souvenir "Natl. Symp. Animal Protection under Changing Environment"

शोध परियोजनायें

(i) Himalayan Eco-development Project की अन्तिम रिपोर्ट भारत सरकार को भेज दी है।

(ii) "Eco-biology of 'Bhagirathi River System" नामक नई शोध परियोजना (रु० ५.०७ लाख की) भारत सरकार के पर्यावरण विभाग से स्वीकृत हुई है।

डा० टी०आर० सेठ : डा० सेठ ने सभी विभागीय क्रिया-कलापों जैसे विभागीय क्रय, व्याख्यान, सेमीनार, परोक्षा) में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डा० ए०के० चोपड़ा (रीडर) : डा० चोपड़ा का प्रकाशन-कार्य निम्नवत है। इनके कई लेख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं।

1. Acid Phosphate Activity in B Taigno Cephalum (Nematode). Rivista Di Parasitologia Vol lll 225, 1986
2. On a new nematode of the genus Schulzia (Travassors 1937) (Family Tricostrongylidae) from Bufo Melanstictus from Garhwal Himalaya. Rivista Di Parasitologia Vol lll 323, 1986,

3. Annual Trend in Malaria in and around BHEL Locality of Hardwar. Him J. Env. Zool. Vol. 2, 45, 1988
4. Protozoan Cysts in Sewage System of Hardwar, Him. J. Env. Zool. Vol 2, 139, 1988

जनरल आर्टिकल :

१. हुकवर्म भी रक्ताल्पता का एक कारण है : विज्ञान प्रगति, जनवरी १९८९, पृ० १९.
२. Impact of Fungus on Fishes; आर्यभट्ट 1988-89 (I & II) पृ 60.

एम०एस-सी० डिसंटेशन :

दो छात्रों के लघुशोध प्रबन्ध के कार्यों का सुपरविजन किया जा रहा है।

i. अब्दुल रहमान — "Effect of Sewage effluents on quality of water of river Ganga"

ii मनोज कुमार — "Effect of drugs on the enzyme activities of helminth parasites."

कान्फ्रेंस/एक्सटेंशन वर्क :

१. नेशनल सिम्पोजियम आन एनीमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इनवायरनमेंट, गु.का.वि.वि हरिद्वार, मार्च १९८९ में शोधपत्र प्रस्तुत किया।
२. उक्त सिम्पोजियम के आरगनाइजिंग कमेटी में सेक्रेट्री के पद पर कार्य किया।
३ भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एवम् गु.का वि. वि. द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय-एकीकरण-शिविर" में "को आर्गनायजर" के पद पर कार्य करते हुये शिविर का सफल संचालन किया।
४. एन एस.एस. प्रोग्राम आफिसर के पद पर कार्य करते हुये छात्रों द्वारा कई राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य करवाये गये।
५. एक दस-दिवसीय कैम्प का आयोजन किया गया (श्यामपुर गांव में, दिसम्बर १९८८)

संपादन कार्य :

Executive Editor-"हिमालयन जर्नल आफ इनवायरनमेंट एन्ड जुलाजी"
Editor-"Souvenir & Abstracts" Natl. Symp. Animal Protection under changing Environment, March 1989, GKV.

डा• दिनेश भट्ट : प्रवक्ता : डा० भट्ट के प्रकाशन कार्य का ब्यौरा इस प्रकार है :

1. Pinealectomy Affects the Seasonal Fattening Cycle of Spotted munia, L. punctulata, Natl. Symp. Gen. Comp. Endocrinol Delhi Univ. Nov. 1988.
2. Effect of Pinealectomy on Free running Reproductive cycles of Tropical Spotted munia. J. Comp. Physiol A. Springer-Verlag) 164, 117.
3. Incidence of Protozoan Infection in the intestine of Humans in Hardwar. 9th Natl. Congr Parasitol, Ujjain Jan. 1989.

एम०एस-सी० डिसरटेशन :

एक छात्र (M.Sc. Microbiology) के लघु शोध प्रबन्ध हेतु गाइड कर रहे हैं।

कान्फ्रेंस/एक्सटेंशन वर्क :

१. "नेशनल सिम्पोजियम आन एनीमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इनवायरनमेंट" नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी की Organising Committee में रहते हुये विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन किया।

२. माह अक्टूबर में बी०एस-सी० छात्रों का "शैक्षणिक भ्रमण" आयोजित किया व छात्रों को Excursion पर Himalayan Eco-System की जानकारी हासिल करवाई।

संपादन कार्य :

१. Managing Editor — "हिमालयन जरनल आफ इनवायरेनमेंट एण्ड जुलाजी"

2. Editor — Souvenir & Abstracts "Natl. Symp. Animal Protection... ——. —— Environment ' GKV. Hardwar

उक्त कार्यों के अतिरिक्त सभी प्राध्यापकों एवम् कर्मचारियों ने समय-समय पर उन सभी क्रिया-कलापों में निष्ठा के साथ भाग लिया जो विश्वविद्यालय द्वारा निर्देशित या प्रायोजित किये गये।

विभाग में कार्यरत स्टाफ इस प्रकार है :

१-	विभागाध्यक्ष	—	प्रो० बी० डी० जोशी
२-	रीडर	—	डा० टी० आर० सेठ
३-	रीडर	—	डा० ए० के० चोपड़ा
४-	प्रवक्ता	—	डा० दिनेश भट्ट
५-	प्रवक्ता	—	रिक्त
६-	प्रयो० सहायक	—	श्री हरीश चन्द
७-	स्टोर कीपर	—	रिक्त
८-	प्रयो० सहायक	—	रिक्त
९-	लैब ब्वाय	—	रिक्त
१०-	लैब ब्वाय	—	श्री प्रीतम

—डा० बी०डी० जोशी
विभागाध्यक्ष

————

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में M.Sc. माइक्रोबायलाजी एवं B.Sc. की कक्षाओं की पढ़ाई सुचारू रूप से हुई एवं विभिन्न विषयों पर शोध कार्य हुआ। विभाग में निम्नलिखित स्टाफ ने काय किया।

डा० विजयशंकर	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
डा० पुरुषोत्तम कौशिक	प्रवक्ता
डा० गंगाप्रसाद गुप्ता	प्रवक्ता
श्री रुद्रमणि	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रप्रकाश	प्रयोगशाला सहायक
श्री विजयसिंह	लैब बॉय
श्री सूरजदीन	माली

निम्नलिखित विषयों पर विभाग में शोधकार्य सम्पन्न हुआ/चल रहा है।

1. Ph. D. Student	Topic	Supervisor
1. I. P. Joshi	Environmental Studies of Shiwalik ranges & impact of human & developmental activities	Prof. V. Shanker
2. M. Shrivastava	Impact of municipal & industrial wastes on...... .... Ganga water (Garhwal University)—Thesis to be submitted.	Prof V. Shanker

दो छात्रों ने क्रमशः अपने synopsis डा. वि. शंकर के निर्देशन में रजिस्ट्रेशन के लिये भेजे हुए हैं। विषय इस प्रकार हैं :

1. Studies on biodeterioration of certain drugs & their formulations
2. Impact of industrial & human activities on Ganga eco-system in Rishikesh-Hardwar.

शोध निबन्ध (M. Sc.)

	Student	Topic	Supervisor
(i)	Prakash Sharma	Studies on the impact of certain aquatic plants on effluents"	Prof. V. Shanker
(ii)	Rakesh Walia	"Effect of pesticides on soil microflora and soil properties"	—do—
(iii)	Jugal Kishor	"Antimicrobial effect of **Rhynchostylis retusa** and **Acides multiflora** (Orchidaceae)	Dr. P. Kaushik
(iv)	V. G. Rao	"Genetic venebility in Rhizobium.	—do—

विभाग में डा० पुरुषोत्तम कौशिक के निर्देशन में दो शोध परियोजनायें चल रही हैं जिसमें तीन रिसर्च फैलोज कार्य कर रहे हैं। इनके नाम नीचे दिये गये हैं।

(१) श्री सुरेन्द्र कामार
(२) श्री शशीकान्त शर्मा
(३) श्री विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ

डा० वि० शंकर ने भारत सरकार द्वारा गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टरेट द्वारा आयोजित 'Workshop on University Research under Ganga Action Plan" में मास नवम्बर में भाग लिया और "Lignocellulose degradation by geofungi of Ganga ecosystem" पर शोध कार्य के लिये प्रोपोजल प्रस्तुत किया एवं Pollution Control Research Institute द्वारा आयोजित एवं United Nations development programme UNEP, UNIDO आदि से सहयोग प्राप्त "International Conference on Environmental Impact Analysis for Developing Countries" के टेक्निकल पेपर की scrutiny के लिये Expert के रूप में कार्य किया और १०० से अधिक पेपरों का निरीक्षण किया। डा० शंकर ने आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका के सम्पादक का कार्य किया।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक ने दिसम्बर में भारत सरकार के पर्यावरण मन्त्रालय की वार्षिक वर्कशाप में आर्किड प्रोजैक्ट में किये गये अनुसन्धान कार्य को प्रस्तुत किया तथा North-East Hill University Shillong, तथा Panjab University, Chandigarh द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगाष्ठयों में शोधपत्र पढ़े।

इस सत्र में विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशित प्रकाशनार्थ भेजे गये शोधपत्रों की सूची निम्नलिखित हैं :

LIST OF PAPERS/BOOKS PUBLISHED/ COMMUNICATED

1. V. Shanker and G. Prasad (1984) Printed in (1988) Studies on some microbiological aspects of Ganges at Hardwar and Garhmukteshwar, Kanpur University Research J. (Vol 5)

2. V. Shanker and G. Prasad (1988) Impact of Nala discharging into Ganga on water quality and algal population in Rishikesh and Hardwar, India (Abstract) Proceeding of International Conference on EIA held on 28th and 29th Nov. 1988 at New Delhi.

3. V. Shanker and Rajeev Sharma (1988) Studies on

Medicinal Plants-Arya Bhatt.

4. V. Shanker, Editorial (1988) Arya Bhatt.

5. G. Prasad 1988 : Efficacy of some fungicides and antibiotics against **Phytophthora nicotianae** var. Parasitica Proceeding of Botanical Society of Kanpur Vol I : 1—6

6. G. Prasad 1988 : Studies on growth and sporulation of **Phytophthora nicotianae** var Parasitica (Destur) water house from different hosts in relation to their mating types J. of Natural and Physical Sciences G. K. V. Hardwar Vol.

7. G. Prasad and Ajay Shanker 1988 : Application of microbes in Agriculture and Antibiotics, Arya Bhatt. Vol—I-II,1989.

8. P. Kaushik 1988 : Edited a book in title Indigenous Medicinal Plants Including microbes and fungi-Published by Today and Tomorrows Printers and Publishers, New-Delhi.

PAPER COMMUNICATED

9. V. Shanker and G Prasad
Impact of Nala discharging into Ganga and water quality and algal population in Rishikesh and Hardwar, India Hydrobiologia (Belgium)

10. V. Shanker and G. Prasad (1988) : Studies seasonal variation of Plankton population in relation to water quality of river Ganga in Rishikesh and Hardwar region, India. Indian J. of Ecology PAU Ludhiana.

11. V. Shanker and G. Prasad : Studies on influence of

IDPL effluent on water quality of Ganga at Shayampur Khadar, Rishikesh. Kanpur University R. J.

12. V. Shanker and G. Prasad :—A new record of **Fusarium** ovule root of cycas from Hardwar, India, Plant disease American Phytopathological Society USA.

—डा० विजयशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

———

लैक्टिन परियोजना

यह शोध परियोजना डा० पुरुषोत्तम कौशिक, मुख्य अन्वेषक, वनस्पति विज्ञान विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के निर्देशन में चल रही है। इस परियोजना हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से रु० ५०,००० धनराशि प्राप्त हो चुकी है और शेष ग्रान्ट की प्रतीक्षा है। श्री विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ इस परियोजना में जे० आर० एफ० के रूप में कार्यरत हैं। इस परियोजना के अन्तर्गत हाई स्पीड रेफ्रिजरेटेड सैन्ट्रिफ्यूज जैसे आधुनिक उपकरण प्राप्त किये गये हैं तथा प्रयोग में लाये जा रहे हैं। अन्य उपकरणों को धनराशि प्राप्त होने पर उपलब्ध कराया जाएगा।

लैक्टिन्स कुछ प्राकृतिक लेग्युमिनस पादपों के बीजों में पाये जाते हैं। यह सूक्ष्मजैविकी प्रकार की एक रोचक शाखा है। इसके अन्तर्गत लेग्युमिनस सीड्स तथा बल्बस पादपों को एकत्रित करके लैक्टिन्स का अध्ययन किया जा रहा है। लैक्टिन्स का आणविक जीवविज्ञान सम्बन्धी शोध में अपना एक विशेष महत्व है। अभी तक की शोध के परिणाम काफी रोचक रहे हैं तथा भविष्य में और अच्छे परिणामों की आशा है। पादपों की १६ जातियों पर कार्य किया गया है।

–डा० पुरुषोत्तम कौशिक
मुख्य अन्वेषक

हैमालिक आर्किड्ज की पार्यवर्णिक जीव विज्ञान शोध परियोजना

भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

यह शोध परियोजना विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में डा० पुरुषोत्तम कौशिक के निर्देशन में चल रही है। रु० ५,८३,८४५/– की धनराशि की इस शोध परियोजना में आर्किड्ज पौधों से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य प्रगति पर है। शोध कार्य के अन्तर्गत आर्किड्ज का ऊतक संवर्धन, जड़ संलग्न कवक वर्धन, आकारिकी, पार्यवर्णिक विज्ञान, परिस्थितिकी, आंतरिक संरचना इत्यादि पर शोधकार्य हो रहा है। परियोजना के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए प० जर्मनी से लघुपादप पर्यावरण कक्ष का आयात किया गया है। इस परियोजना के लिए विश्वविद्यालय में अर्किडेरियम बनवाये जाने के लिए भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय से और धन स्वीकृत करवाने का प्रयास किया जा रहा है।

अब तक के वर्णित उपरोक्त शोध कार्य में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं वे शिक्षा एवं शोधकार्य के लिए अत्यन्त महत्तवपूर्ण हैं।

—डा० पुरुषोत्तम कौशिक
मुख्य अन्वेषक

हिमालय शोध योजना

पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कण्वघाटी एवं संलग्न मालिनी जलागम का ३ वर्ष तक विस्तृत पर्यावरणीय अध्ययन किया गया। क्षेत्र के पर्यावरण सुधार हेतु योजना द्वारा निम्नलिखित सात उद्देश्य निर्धारित किये गये थे :—

(१) विभिन्न प्रजातियों की पौधों को नर्सरी में लगाकर स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरण।

(२) स्थानीय फसलों के लिए हानिकारक प्रमुख कीटों का सर्वेक्षण एवं नियन्त्रण हेतु कीटनाशक दवाओं का प्रयोग।

(३) विभिन्न स्थानों से मृदा का रासायनिक परीक्षण।

(४) स्थानीय ग्रामीण समुदाय का पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण।

(५) स्थानीय जनता को बैठकों, कैम्पों तथा आकाशवाणी वार्ता द्वारा पर्यावरण सुधार हेतु जानकारी देना।

(६) भूमि की उपयोग-विधि का अध्ययन।

(७) बाढ़ रोकथाम हेतु उपाय।

योजना अवधि में विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर पर्यावरण-सुधार हेतु अनेक सुझाव निष्कर्षित किये गये, जो पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार को प्रेषित अन्तिम प्रोजेक्ट रिपोर्ट में विस्तार से दिये गये हैं। योजना की कुछ महत्वपूर्ण संस्तुतियाँ संक्षेप में निम्नवत हैं :

(१) हिमालय की घाटियों के ग्रामीण एवं कस्बाई अंचल की जनता को विभिन्न प्रजातियों के पौधे निःशुल्क उपलब्ध कराये जायें, जिन्हें लोग अपनी सुविधानुसार उपलब्ध उपयुक्त भूमि में लगा सकें। तथा भविष्य में उक्त पेड़ों के उपयोग हेतु कोई बंधन नहीं होना चाहिए एवं वन विभाग से कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।

२. भू-संरक्षण एवं आय के अतिरिक्त स्रोत के लिए होर्टिफोरेस्ट "के अन्तर्गत ग्रामीण जनता को फल, ईंधन, चारा, इमारती एवं जलावन लकड़ी के साथ-साथ सब्जियों का भी उत्पादन करना चाहिए।

३. स्थानीय वनों के कुछ बाह्य भाग पूर्णरूप से स्थानीय निवासियों के उपयोग हेतु होने चाहिए जिसकी व्यवस्था का उत्तरदायित्व स्थानीय ग्राम पंचायतों को देना चाहिए जिससे लोग वनों के अन्त:भाग की सुरक्षा व संरक्षण में रुचि ले सकें।

४. शासन के पास उपलब्ध अतिरिक्त भूमि पर वृहत वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।

५. स्थानीय ग्रामीणों को वैकल्पिक ईंधन—गैस व बिजली प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

६. ग्रामीणों को नवीन ईंधनों एवं ऊर्जा बचत की उचित जानकारी दी जानी चाहिए।

७. एक ही प्रजाति की पौध का रोपण (मोनोकल्चर) को हतोत्साहित किया जाना चाहिए तथा वहुप्रजाति वृक्षारोपण (पोलिकल्चर) करवाना चाहिए।

८. पेयजल, बिजली, सड़कों आदि की सुविधा देकर ग्रामीणों के जीवन-स्तर में सुधार होना चाहिए ताकि शहरों की ओर पलायन को रोका जा सके।

९. ग्रामीणों को स्थानीय रोजगार के अवसर कुटीर उद्योगों के माध्यम से उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

१०. ग्रामीण काश्तकारों को शासन की ओर से अधिक पैदावार वाली बीजों की उन्नत किस्में, खाद व कीटनाशक आदि सस्ते दामों पर उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

११. कीट मुख्यरूप से फसल एवं उत्पादन को हानि पहुंचाते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु कीटनाशक दवाओं का प्रचलन बढ़ाकर अच्छे तथा नये प्रकार के कीटनाशक उपलब्ध कराये जाने चाहिए। कीटनाशकों के कुप्रभावों के बारे में भी ग्रामवासियों को अवगत कराना चाहिए।

१२. वाढ़ की रोकथाम हेतु जलागम क्षेत्र के वनों का संरक्षण किया जाना

चाहिए एवं नदी पर छोटे-छोटे बांध बनवाये जाने चाहिए।

१३ नदी के पाट से पत्थरों, रेत, बजरी की निकासी पर स्थानीय ग्राम पंचायतों का नियन्त्रण होना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके।

१४. नयी-नयी वनस्पति एवं जन्तु प्रजातियों का स्थानीय वनक्षेत्र में प्रवेश हेतु प्रयत्न किये जाने चाहिए।

१५ स्थानीय नदियों का छोटे-छोटे जल विद्युत उत्पादन केन्द्रों, मत्स्य उत्पादन हेतु जलाशयों, सिंचाई एवं पनचक्कियों का निर्माण कर उपयोग किया जाना चाहिए।

१६. सरकारी भवनों, सड़कों एवं विद्युत लाइनों के निर्माण हेतु यथासम्भव कृषि हेतु अनुपयोगी भूमि का ही उपयोग किया जाना चाहिए।

१७. स्थानीय पशुधन का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि पशुधन की संख्या एवं दुग्ध पदार्थों का उत्पादन निरन्तर कम होता जा रहा है। जिसका मुख्य कारण चारागाहों एवं जंगलों से उपलब्ध चारे की कमी है। अतः पशुधन विकास हेतु चारागाहों एवं चारा वृक्षों की वृद्धि हेतु प्रयत्न किये जाने चाहिए।

१८. क्षेत्र के सामाजिक सर्वेक्षण से पता चला कि सरकार द्वारा विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा चलाये गये विकास एवं परिवार नियोजन कार्यक्रमों ने अधिकतर लोगों को सीमित परिवार रखने हेतु प्रेरित किया है। इसलिए इस प्रकार के नवीन आविष्कारों एवं विकास कार्यक्रमों का समाचार-पत्रों, रेडियो एवं टेलीविजन द्वारा अधिक प्रसार किया जाना चाहिए।

इस योजना की चार वर्ष की अवधि में लगभग २० कर्मचारियों द्वारा (जिसमें रिसर्च साइंटिस्ट, प्रोजेक्ट इन्जिनियर, सीनियर रिसर्च फैलो, जूनियर रिसर्च फैलो, लैब अटैण्डैण्ट एवं ड्राइवर पद के अधिकारी व कर्मचारी सम्मिलित थे) कण्व घाटी क्षेत्र के पर्यावरण तथा सामाजिक परिस्थितियों का वृहद् अध्ययन किया गया। उक्त योजना का कार्यकाल ३० अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया था। योजना कार्य की प्रगति के फलस्वरूप योजना को १५ मार्च १९८९ तक पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा विस्तरण प्रदान किया गया। इस शोध योजना के माध्यम से विश्वविद्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को पर्वतीय व ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने एवं क्षेत्र की पर्यावरणीय, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को निकट से देखने व समझने का अवसर मिला तथा इनसे सम्बन्धित आंकड़े

प्राप्त हुए। इसी प्रकार की शोध-योजनाओं के द्वारा बृहत्तर हिमालय के कुछ अन्य भागों एवं देश के अन्य विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों से भी विस्तृत अध्ययन के पश्चात् आंकड़े एकत्रित किये जाने चाहिए। जिनके विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर किसी स्थानविशेष अथवा सम्पूर्ण भारतवर्ष के विकास हेतु विकास योजना बनाने तथा पर्यावरण की इस प्रकार की शोध योजनाओं के द्वारा किये गये रचनात्मक कार्यों से निकटभविष्य में निश्चित रूप से सकारात्मक प्रभाव सामने आयेंगे। हम उक्त योजना के सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में पर्यावरण मन्त्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के हृदय से आभारी हैं जिनके निरन्तर सहयोग के फलस्वरूप यह योजना सफलतापूर्वक सम्पादित की जा सकी।

—डा० बी० डी० जोशी
मुख्य अन्वेषक

———

कम्प्यूटर विभाग

इस विभाग के लिए यू० जी० सी० ने चौदह शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की स्वीकृति प्रदान की है।

विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर सिस्टम की इन्स्टालेशन तथा उसकी सम्पूर्ण देख-रेख सिस्टम इंजीनियर श्री नरेन्द्र पाराशर द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। विभाग के अन्य सभी कार्य इनके द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। डिप्लोमा कोर्स के लिए स्वीकृति, विभाग की समुचित व्यवस्था के लिए स्टाफ की स्वीकृति और अनुदान आदि को स्वीकृत कराने के लिए श्री नरेन्द्र पाराशर ने विशेष प्रयास किए।

—नरेन्द्र पाराशर

पुस्तकालय विभाग

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरंतर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय वेद, वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय विज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्त्रों दुलभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य सस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। उत्तर भारत में प्राच्य विद्याओं के साहित्य के संग्रह का यह प्रमुख आगार है।

वर्ष १९८८-८९ में लगभग २४,००० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है :-

१- संदर्भ ग्रन्थ संग्रह
२- पत्रिका संग्रह
३- आर्य साहित्य संग्रह
४- आयुर्वेद संग्रह
५- विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह
६- विज्ञान संग्रह
७- अंग्रेजी साहित्य संग्रह
८- पं० इन्द्रजी संग्रह
९- दुर्लभ पुस्तक संग्रह
१०-पाण्डुलिपि संग्रह
११-गुरुकुल प्रकाशन संग्रह
१२-प्रतियोगितात्मक संग्रह
१३-शोध प्रबन्ध संग्रह
१४-रूसी साहित्य संग्रह
१५-आरक्षित पुस्तक संग्रह
१६-उर्दू संग्रह
१७-मराठी संग्रह
१८-गुजराती संग्रह
१९-गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह
२०-मानचित्र संग्रह
२१-वेद मंत्र कैसेट संग्रह

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय

पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में २ घंटे प्रतिदिन कार्य के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे वे अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी वन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ६ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षा में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १६ पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

फोटोस्टेट सेवा

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का ५२०० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु वर्ष १९८८-८९ में प्लेन पेपर कापियर मशीन मोदी जीराक्स भी पुस्तकालय द्वारा क्रय की गई है तथा प्रशासनिक कार्यों हेतु भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी

इस विराट् पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इसमें २२ कर्मचारी कार्यरत हैं। पुस्तकालय कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है :

क्र.सं. पद	नाम	योग्यता
१- पुस्तकालयाध्यक्ष	डा.जगदीश विद्यालकार	एम.ए., एम.लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच.डी., बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२-स.पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजार सिंह	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स
३- पुस्तकालय सहा.	श्री उपेन्द्रकुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, योग प्रमाणपत्र।

४- पुस्तकालय सहा.	श्री ललितकिशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स
५- पुस्तकालय सहा.	श्री मिथलेश कुमार	बी.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स
६- पुस्तकालय सहा.	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७- पुस्तकालय सहा.	श्री अनिल कुमार	एम.एस-सी., एम. ए, सी. लाइब्रेरी सा., आई.जी डी बाम्बे पत्रकारिता विज्ञान।
८-पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा
९- ,, ,,	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१०- ,, ,,	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स आई. टी. आई.
११-काउन्टर सहायक	श्री हरिभजन	मिडिल
१२-बुकबाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल
१३-बुकलिफ्टर	श्री गोविन्दसिंह	मिडिल
१४-सेवक	श्री घनश्याम सिंह	मिडिल
१५-सेवक	श्री शशीकान्त	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१६- ,,	श्री बुन्दू	—
१७- ,,	श्री शिवकुमार	मिडिल
१८-स्वीपर	श्री सुशील कुमार	—
१९-लिपिक	श्री लालकुमार कश्यप	—
२०- ,,	श्री दीपक घोष	एम.ए., सी.लाइब्रेरी साइन्स
२१- ,,	श्री विक्रमशाह	इन्टर
२२- ,,	श्री चमनलाल	(दैनिक) मिडिल

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर :

	१९८७-८८	१९८८-८९
१- पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२४,२००	२४,०००
२- भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	३९३	१३१
३- नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	१५५३	३,६५६
४- वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	३५००	२,६००
५- सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	३२७३	२,५१७
६- पत्रिकाओं की संख्या	४५४	४०५
७- पत्रिकाओं को आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरण-पत्रों की संख्या	२०३	२५८
८- सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७०१६	७१५२

९- पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	४३४	१४६
१०- पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१८७३	१९६०
११- पुस्तकों का कुल सग्रह	९९,४६८	१,०३,१२४
१२- सदस्य संख्या	४९८	५२१

प्रगति के आयाम

१. गत वर्ष १९८७-८८ में १५५३ नई पुस्तकें क्रय की गई थी वहाँ आलोच्य वर्ष १९८८-८९ में ३६३६ नई पुस्तकें क्रय की गई।

२. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएँ मँगाई जाती थीं वहीं आलोच्य वर्ष में ४०५ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जाती हैं।

३. पुस्तकालय द्वारा वैदिक साहित्य, आर्य साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की एक वृहद् सूची तैयार की गई है जिसमें पुस्तकालय में उपलब्ध ७५०० पुस्तकों को शामिल किया गया है। श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक संदर्भ ग्रन्थ एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया हो। इस सन्दर्भग्रन्थ का सम्पादन श्री आर. के. श्रीवास्तव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ के अन्त में एक वृहद् इन्डैक्स तैयार किया गया है जिसमें लेखक के अनुसार पुस्तक का पूर्ण विवरण अंकित किया गया है।

४- ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पुस्तकालय को ११ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था। आलोच्य वर्ष में यू. जी. सी. विकास अनुदान में से ३,५८,९९० रु० को राशि नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ क्रय करने में व्यय की गई। इसके अतिरिक्त वार्षिक रखरखाव बजट से पुस्तकों एवं पत्रिकाओं हेतु क्रमशः ४७,५९७,८३ एवं ६६,१०२,३५ राशि व्यय की गई।

५- श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "शोध सारावली" एवं "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक पुस्तकों की १००-१०० से अधिक प्रतियाँ उक्त पुस्तकों के अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गई। उ० प्र० सरकार द्वारा भी "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक ग्रन्थ की ४० प्रतियों का आदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों को देश के सुदूर अंचलों तक पहुँचाने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत लगभग ३००० प्रतियाँ देश के सभी विश्वविद्यालयों में पहुँचाई गयी हैं।

६. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की अधिसूचना के आधार पर पुस्तकालय की पुस्तकों का सेम्पल स्टाक वेरिफिकेशन का कार्य भी किया गया तथा इसकी

अन्तिम रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

७- पुस्तकालय के संग्रह को सुव्यवस्थित रूप से रखे जाने हेतु आलोच्य वर्ष १९८८-८९ में ८३ हजार रु० को अलमारियाँ एवं रैक्स क्रय किये गये।

८- विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर गुरुकुल के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की प्रदर्शनी का आयोजन पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसका अवलोकन मुख्य अतिथि मान्यवर ब्रह्मदत्त जी, पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार द्वारा किया गया। पुस्तकालय का अवलोकन करने के उपरान्त उन्होंने अपनी सम्मति दी कि इस पुस्तकालय में दुलर्भ ग्रन्थों एवं हाल में प्रकाशित ग्रन्थों का संग्रह देख कर प्रसन्नता हुई। पुस्तकालय का रखरखाव व व्यवस्था सराहनीय है।

९- इस वर्ष श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा "वेदों में भारतीय मनोविज्ञान" विषयपरशोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया गया जिसे विश्वविद्यालय ने स्वीकृत कर उन्हें पी-एच डी. की उपाधि प्रदान को। पुस्तकालय द्वारा वेदों में मनोविज्ञान, वेदों में राजनीति, वेदों में आयुर्वेद आदि विषयों से सम्बद्ध पुस्तकों का एक पृथक् कक्ष बनाया गया है।

– डा० जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

————

राष्ट्रीय छात्र सेना

उपक्रम –१/३१ यू० पी० कम्पनी, गु० कां० विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से डा० राकेशकुमार शर्मा का चयन एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर के रूप में पिछले सत्र में हो चुका था। इस वर्ष तीन माह (१२ सितम्बर से १० दिसम्बर ८८) का प्रशिक्षण लेने एन० सी० सी० विभाग के अफसर ट्रेनिंग स्कूल कामठी (नागपुर) डा० राकेशकुमार शर्मा को भेजा गया। जहाँ उन्होंने इस 'बी' सर्टीफिकेट ग्रड लेकर सम्मानपूर्वक पूर्ण कर एन० सी० सी० में कमीशन प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० विभाग द्वारा ५२ छात्रों के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। अत: इस वर्ष एन० सी० सी० में विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों द्वारा ५२ योग्य छात्रों का चयन कर उन्हें नियमानुसार पंजीकृत किया गया। पूरे सत्र में उक्त ५२ कैडेट्स को एन० सी० सी० बटालियन मुख्यालयसे भारतीय सेना के प्रशिक्षित आफीसरों तथा हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालयपरिसरतथा बी० एच० ई० एल० के परेड मैदान में प्रशिक्षण दिया गया।प्रत्येक वर्ष एन० सी० सी० विभाग की ओर से वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयाजन होता है। इस वर्ष यह शिविर रायवाला में दो बार लगा जिसमें विश्वविद्यालय के छात्रों ने परिश्रम एवं समर्पण की भावना का परिचय देते हुये शिविर में सराहनीय योगदान दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर २६ जनवरी १९८९ के समारोह में माननीय उप-कुलपति श्री रामप्रसाद वेदालंकार ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर एन० सी० सी० के कैडेट्स का निरीक्षण करते हुये उप-कुलपति जी ने सलामी ली। वर्ष ८७-८८में बी प्रमाण-पत्र के लिये १० तथा सी प्रमाण-पत्र के लिये ७ कैडेट्स ने परीक्षा दी थी, जिसका परिणाम अत्यधिक उत्साहवर्द्धक रहा। बी प्रमाण-पत्र में १० में से ९ तथा सी प्रमाण-पत्र में ७ में से ४ कैडेट्स उत्तीर्ण घोषित किये गये। इस वर्ष ८८-८९ में बी तथा सी प्रमाण-पत्र परीक्षा १६ कैडेट्स ने दी है तथा परिणाम अपेक्षित है।

सन् १९९० के गणतन्त्र दिवस देहली के लिये बटालियन स्तर पर विद्यालंकार के छात्र संजय बड़ोनी का चयन हो गया है, जिसके फलस्वरूप उक्त कैडेट को मई माह में प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने जाना होगा।

सैकिण्ड लेफ्टीनेण्ट डा० राकेशकुमार शर्मा
एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८८-८९ की उपलब्धियाँ निम्न हैं :—

(१) अगस्त माह में एन० एस० एस० कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८८-८९ के लिए ११५ छात्रों का पंजीकरण किया गया।

(२) जन-साक्षरता अभियान के अन्तर्गत निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए छात्रों को दो दिन का प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें एक से पांच तक लिटरेसी हाऊस, लखनऊ द्वारा प्राप्त साक्षरता किट्स दी गयीं। इसके अन्तर्गत ६२ छात्रों ने १२१ व्यक्तियों को साक्षर किया।

(३) समय-समय पर छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर की सफाई, पर्यावरण संरक्षण आदि का कार्य किया गया।

(४) विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठो वार्तालाप, टूर्नामेन्ट एवं गणतन्त्र दिवस के अवसर पर छात्रों ने सहयोग दिया।

(५) दो, एक-दिवसीय शिविर एक जमालपुर तथा दूसरा कांगड़ी ग्राम में लगाये गये। इसके अन्तर्गत पशुओं, परिवार नियोजन, बीमारियों से सम्बन्धित सामाजिक सर्वेक्षण प्रपत्र भरवा कर आंकड़े लिए गये।

(६) छात्रों को समय-समय पर राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व, उद्भव, उद्देश्यों एवं अन्य कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गयी।

(७) सप्तम् दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर का आयोजन दिनांक २८-१२-८८ से १-१-८९ तक ग्राम श्यामपुर में किया गया। इस शिविर का नेतृत्व डा० ए० के० चोपड़ा, एन० एस० एस० प्रोग्राम आफिसर ने किया। इस शिविर का उद्घाटन समारोह दिनांक २४-१२-८८ को हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० आर० सी० शर्मा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय थे। डा० जयदेव वेदालंकार एन० एस०

एस० को-ऑर्डिनेटर ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रो० आर० सी० शर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ समाज-सेवा एवं देशसेवा में तत्परता से संलग्न होकर राष्ट्र-निर्माण की मुख्य धारा से जुड़ना चाहिए और ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक ग्रामवासी अपनी समस्याओं को पहचान कर स्वयं प्रयास नहीं करेंगे तो वे प्रगति के पथ में अग्रसर नहीं हो सकते। इस समारोह की अध्यक्षता ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष श्री गोयल ने की। इस समारोह में प्रो० बी० डी० जोशी, अध्यक्ष-जन्तु विज्ञान विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, ग्राम प्रधान श्री घासीराम जी तथा अन्य माननीय व्यक्ति भी उपस्थित थे। छात्रों द्वारा शिविर में किए गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :—

१— ग्राम में छात्रों द्वारा सड़कों, नालियों एवं अन्य गन्दे स्थानों की सफाई की गई।

२— गांव में लगभग एक कि०मी० लम्बी एवं २.४ मीटर चौड़ी ऊबड़ खाबर सड़क को मिट्टी आदि डालकर समतल किया गया।

३— जन-साक्षरता अभियान के अन्तर्गत नित्य ४२ व्यक्तियों को साक्षर करने का प्रयास किया गया।

४— गांव के कुओं में लाल-दवाई एवं ब्लीचिंग पाउडर डालकर कुओं के पानी की सफाई की गयी।

५— ८६ किचन सोक पिट्स, ३ बड़े गड्ढे तथा ४५ नालियों का निर्माण किया गया, जिससे कि गांव में पानी का निकास ठीक प्रकार से हो सके एवं अतिरिक्त पानी गलियों में एकत्र न हो सके।

६— ईख की कटाई आदि में ग्रामीणों की सहायता की गयी।

७— किसानों को आधुनिक तरीकों से खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

८— ग्रामीणों को परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण एवं पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी दी गयी।

९— खेतों में खाद, कीटनाशक आदि डालने में ग्रामीणों की सहायता की गयी।

१० – गांव में ग्रामीणों की समस्याओं पर विचार किया गया एवं उनके निराकरण हेतु उपाय सुझाये गये ।

(८) विश्वविद्यालय परिसर में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत एक राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन डा० जयदेव वेदालंकार प्रोग्राम कोआर्डिनेटर, रा० से० यो०, गु० का० वि० के नेतृत्व में दिनांक २०-२-८६ से २६-२-८६ तक किया गया । इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के १७१ स्वयंसेवकों एवं प्रोग्राम आफिसरों ने भाग लिया । इसका उद्‌घाटन समारोह दिनांक २०-२-८६ को हुआ । इस समारोह के मुख्य अतिथि डा० सतीशचन्द्र, निदेशक इंस्टीट्यूट आफ हाईड्रोलोजी भारत सरकार एवं वरिष्ठ अतिथि श्री जगदम्बिकापाल राज्य शिक्षामन्त्री थे । इस समारोह की अध्यक्षता प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की ।

इस शिविर की अवधि में किए गये अनेक कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :

१– प्रतिदिन प्रातः स्वयंसेवकों द्वारा सामूहिकरूप से सर्वधर्म प्रार्थना की गयी । तत्पश्चात् श्री ईश्वरचन्द भारद्वाज के नेतृत्व में योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया । नाश्ते के बाद समस्त स्वयंसेवकों द्वारा ग्राम जमालपुर एवं जगदीशपुर में श्रमदान, सामाजिक सर्वेक्षण एव रोगियों के उपचार हेतु विभिन्न कार्य किए गये । दोपहर एक बजे समस्त छात्र स्नान तथा भोजन इत्यादि के लिए शिविर में लौट आये । भोजन के उपरान्त ३-०५ बजे तक वरिष्ठ व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रीय एकता, दहेज प्रथा, प्रौढ़शिक्षा, पर्यावरण इत्यादि से सम्बन्धित व्याख्यानों का आयोजन विश्वविद्यालय भवन में किया गया । चाय के उपरान्त क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय भारत सरकार देहरादून द्वारा लघु वीडियो फिलमें वी० सी० आर० के० माध्यम से दिखायी गई । तत्पश्चात् विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों द्वारा राष्ट्रीय सेवायोजना के उद्देश्यों से सम्बन्धित अनेक साँस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किय गये ।

२– छात्र स्वयंसेवकों द्वारा विश्वविद्यालय से जगदीशपुर तक जाने वाली एवं विश्वविद्यालय से जमालपुर को जाने वाली लगभग २ कि० मी० लम्बी २.५ मी० चौड़ी सड़क का निर्माण किया गया तथा इन दोनों सड़कों के दोनों ओर ८०० वृक्षभी लगाये गये । जमालपुर गांवके स्कूल के प्रांगण में २०० वृक्षलगाये गये । ऋषिकुल इकाई के स्वयंसेवकों ने वरिष्ठ चिकित्सकों के संरक्षण में १०४२ रोगियों का परीक्षण एवं उपचार

किया। इसके अतिरिक्त इन्हें निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गयीं। छात्राओं ने प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक सर्वेक्षण किया और उन्होंने घर-घर जाकर ग्रामीणों को प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि की ओर प्रेरित एवं जागृत किया। इसके अतिरिक्त उन्हें दहेज प्रथा, नशाबन्दी से उत्पन्न अनेक बुराइयों से अवगत कराया।

३— एक विशाल रैली का आयोजन विश्वविद्यालय से हरकी पौड़ी तक दिनांक २४-२-८९ को किया गया। इसमें स्थानीय कालेजों के १००० एन० एस० एस० छात्रों एवं स्वयंसेवकों ने भाग लिया। रैली समारोह के मुख्य अतिथि श्री पारसकुमार जैन, अध्यक्ष, नगरपालिका हरिद्वार थे। समारोह की अध्यक्षता प्रो० आर० सी० शर्मा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। इस रैली के संयोजक डा० एन० के० गर्ग, एन० एस० एस० प्रोग्राम आफिसर, एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज, हरिद्वार थे। श्री जैन, प्रो० शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों ने इस रैली का नेतृत्व भी किया। यह रैली सिंहद्वार, अवधूत मण्डल, रानीपुर मोड़, देवपुरा, रेलवे स्टेशन, अपरबाजारसे होती हुई हरकी पौड़ी तक पहुँची। यहाँ पर यह रैली एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। नगरवासी रैली का अनोखा दृश्य देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये और उन्होंने जगह-जगह पर छात्रों का स्वागत किया तथा उनके द्वारा जलपान आदि भी कराया गया। इस रैली में छात्र-छात्राएँ एवं स्वयसेवक क्षेत्रवाद एवं जातिवाद को भूल कर विभिन्न नारे—जैसे दहेज लेना पाप है, हम सब एक हैं, भारत माता की जय इत्यादि बोलते हुए जा रहे थे। सभा को प्रो० शर्मा, श्री जैन, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव गु० कां० विश्वविद्यालय तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये कार्यक्रम अधिकारियों एवं अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों ने सम्बोधित किया। सभा के समापन के पश्चात् रैली में भाग लेने वाले समस्त छात्र एवं छात्राओं को अल्पाहार स्वरूप सन्तरे व केले वितरित किए गये।

४— दिनांक २५-२-८९ को एक शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत समस्त छात्रों को यहाँ के दर्शनीय स्थलों के दर्शन करवाये गये एवं स्थानीय संस्कृति से अवगत कराया गया। रात्रि को 'राष्ट्रीय एकता में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की भूमिका' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय, भारत सरकार, देहरादून के सौजन्य से किया गया। जिसमें १९ छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बंगलौर विश्वविद्यालय के छात्र श्री यशवन्तकुमार को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त कु० ममता, एस० पी० महिला विश्वविद्यालय

तिरुपति, श्री शिवेन्द्रसिंह, एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज, हरिद्वार तथा श्री जसपालसिंह, इंजीनियरिंग कालेज पटियाला को क्रमशः द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

५— इस शिविर का समापन समारोह दिनांक २६-२-८६ को विश्वविद्यालय भवन में हुआ। इस समारोह के वरिष्ठ अतिथि डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार थे। इस समारोह की अध्यक्षता प्रो० आर० सी० शर्मा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। विश्वविद्यालयों से आये कार्यक्रम अधिकारियों ने शिविर में प्राप्त अनुभवों से सम्बन्धित अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। डा० इल्लन गोवन कार्यक्रम अधिकारी अन्नामलयी विश्वविद्यालय के शब्दों में—'हम यहाँ तमिल बनकर आये थे, अब भारतीय बनकर लौट रहे हैं।' विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्रत्येक स्वयंसेवक एवं कार्यक्रम अधिकारी को श्री पारसकुमार जैन की ओर से यादगारस्वरूप एक–एक गंगाजली दी गयी। सभी छात्रों एवं कार्यक्रम अधिकारियों ने इस शिविर को स्मरणीय आयोजन बताते हुए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डा० ए० के० चोपड़ा
प्रोग्राम आफिसर

———

प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम

विभाग द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संचालन वर्ष १९८४ से सतत् रूप से किया जा रहा है। वर्ष ८८-८९ में विभाग ने पचपन (५५) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र हरिद्वार के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्रारंभ किये। केन्द्रों में लगभग १०४८ प्रौढ़ शिक्षार्थियों ने पंजीकरण कराया। केन्द्रों का संचालन मुख्यतः हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदाय के क्षेत्रों, पिछड़े क्षेत्रों में किया गया। केन्द्रों के संचालन हेतु विद्यार्थियों, कार्यकर्ताओं, ग्रामीण महिलाओं आदि को अनुदेशक के रूप में कार्य करने का दायित्व सौंपा गया।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के संचालन के साथ-साथ विभाग ने अन्य प्रसार कार्यक्रम भी संपादित किये -

१- विभाग द्वारा २२ जून १९८८ को अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस के सहयोग से एक-दिवसीय स्वास्थ्य कैंप का आयोजन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र लोधामंडी में किया गया। जिसमें योग्य चिकित्सकों द्वारा ४८ रोगियों का परीक्षण किया गया व उन्हें मुफ्त दवाएँ वितरित को गईं।

२- अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर विभाग द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं हेतु एक सात-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत विषयविशेषज्ञों के माध्यमसे विभिन्न विषयों पर सारगर्भित जानकारी उपलब्ध कराई गई। प्रशिक्षार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु पशुलोक ऋषिकेश व शान्ति कुन्ज हरिद्वार भी ले जाया गया। पशुलोक में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई। प्रशिक्षार्थियों ने विभिन्न चारे की फसलों के विषय में अधिक रुचि दिखाई। शांति कुन्ज में प्रशिक्षार्थियों को स्वतः रोजगार संबन्धी जानकारी उपलब्ध कराई गई जिसके प्रति लगभग सभी अनुदेशकों में उत्सुकता दिखाई दी। इस प्रशिक्षण कायक्रम को आकाशवाणी नजीबाबाद ने अपने कार्यक्रम 'प्रगति के चरण' के अन्तर्गत दिनांक १३-९-८८ को रात्रि ८ बजे प्रसारित किया।

३- दिनांक २९-११-८८ को रुड़की विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के

संयोजक प्रो० मंसूर अली के नेतृत्व में प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं ने विभाग का भ्रमण किया जिस दौरान एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया।

४- दिसम्बर १९८८ में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के सहयोग से जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्राध्यापकों, अधिकारियों तथा छात्रों ने भाग लिया।

५- २२ दिसम्बर १९८८ को एक-दिवसीय स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन विश्वविद्यालय के प्राँगण में किया गया, जिसमें एलोपैथिक, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सकों के माध्यम से ४७ रोगियों का प्रशिक्षण किया गया। अखिल भारतीय महिला कॉफ्रैन्स द्वारा उपलब्ध कराये गये अनुदान से रोगियों को मुफ्त दवाइयाँ बाँटी गई।

६- फरवरी १९८९ में राष्ट्रीय सेवा योजना के राष्ट्रीय एकीकृत शिविर में आयोजन के दौरान विभाग द्वारा प्रतिभागियों के माध्यम से ग्राम जमालपुर कलां व जगजीतपुर ग्रामों में साक्षरता सर्वेक्षण कार्य सम्पादित किया गया। इसके अतिरिक्त सड़क निर्माण, सफाई, वृक्षारोपण आदि प्रचार व प्रसार कार्यक्रमों की व्यवस्था भी की गई।

७- विभाग के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों आदि में भाग लिया गया तथा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

८- विभाग के पर्यवेक्षक डा० जे० एस० मलिक को विश्वविद्यालय ने 'प्राचीन भारतीय में पौरोहित्य' विषय पर शोधकार्य हेतु पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया।

विभाग के पर्यवेक्षक श्री एस० के० त्यागी ने 'भारतीय दर्शन में अहिंसा पर तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' पर शोधकार्य पूर्ण करके पी-एच०डी० की उपाधि हेतु शोधग्रन्थ प्रस्तुत किया।

विभाग की प्रगति की समीक्षा कर के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विभाग के अग्रेतर विकास हेतु आगामी सत्र से संचालन हेतु तीन जन शिक्षण निलयम, तीन सतत् शिक्षा परियोजनायें तथा एक जनसंख्या शिक्षा परियोजना स्वीकृत की है।

माननीय कुलपति जी के मार्ग निर्देशन में तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों के सहयोग से विभाग प्रगति की ओर अग्रसर है।

—डा० अनिलकुमार
स० निदेशक

विश्वविद्यालय छात्रावास

विश्वविद्यालय छात्रावास में इस वर्ष व्यवस्था की दृष्टि से कई कार्य किए गए, जैसे :

१. पंखों की व्यवस्था
२. विद्युत फिटिंग व ट्यूब लाइट
३. तख्तों की व्यवस्था
४. चारों ओर की फेंसिंग
५. खिड़कियों की जाली
६. शौचालय की व्यवस्था
७. स्नानागार की मरम्मत

उपर्युक्त व्यवस्था के उपरान्त छात्रों को आवास व्यवस्था में सुविधा रही किन्तु मूलभूत समस्या भोजनालय की व्यवस्था न हो पाने के कारण छात्रों को पी०ए०सी० के भोजनालय पर आधारित रहना पड़ा। आशा है नवीन सत्र में यह समस्या भी दूर हो जाएगी।

छात्रों से नियमित रूप से छात्रावास शुल्क लिया जाता रहा। छात्रावास में उचित व्यवस्था हेतु समय-समय पर निरीक्षण किया गया। रात्रि के चौकीदार की व्यवस्था भी इस वर्ष से की गई। इससे सुरक्षा भावना दृढ़ हुई।

कुलपति जी, उपकुलपति जी, कुलसचिव जी, वित्ताधिकारी जी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय तथा अन्य महानुभावों के सहयोग से व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही। प्रयास किया जा रहा है कि भोजनालय की व्यवस्था भी शीघ्र ही हो जाए। इस दिशा में अनुदान लेने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

—ईश्वर भारद्वाज
अध्यक्ष

क्रीड़ा-विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का समस्त कार्य डा० अम्बुजकुमार शर्मा के निर्देशन में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा सुचारू रूप से सम्पन्न किया गया। विभाग में अभी तक निर्देशक शारीरिक शिक्षा का पद रिक्त है।

इस वर्ष निम्नलिखित खेलों का प्रशिक्षण छात्रों को प्रदान किया गया तथा छात्रों ने रुचिपूर्वक भाग लिया :

हाकी, क्रिकेट, बैडमिण्टन, टेबल टेनिस, फुटबाल, तैराकी, कबड्डी, कुश्ती, एथलेटिक्स, वालीबाल, शरीर सौष्ठव व भारोत्तोलन। किन्तु इसमें से हाकी, क्रिकेट, बैडमिण्टन, तैराकी, कुश्ती व कबड्डी की टीमों को ही विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भेजा जा सका।

१. हाकी : सितम्बर मास के प्रारम्भ से ही हाकी का अभ्यास प्रारम्भ किया गया। श्री नन्दकिशोर (लिपिक, विज्ञान महाविद्यालय) के सहयोग से छात्रों को प्रतिदिन विधिवत् प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजकीयआयु० महाविद्यालय, भेल, आई०डी०पी०एल०, दून हाक्स आदि की टीमों के साथ मत्रीपूर्ण मुकाबलों का आयोजन करके टीम का अभ्यास कराया गया।

उ.प्र. वि.वि. प्रतियोगिता लखनऊ तथा उत्तर क्षेत्र अ.वि.वि. प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र में खेली गई। दोनों ही प्रतियोगिताओं में वि.वि. की टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया किन्तु आधे समय के बाद बिखराव व स्टेमना की कमी होने के कारण विजय प्राप्त न कर सकी। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित हाकी टूर्नामेंट में दो मुकाबलों में विजय प्राप्त की। प्रदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा।

२. क्रिकेट : उ.प्र.अ.वि.वि. क्रिकेट प्रतियोगिता आगरा में आयोजित की गई। अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. की सशक्त टीम के साथ अत्यन्त कांटे के संघर्ष में विजय तो प्राप्त न हो सकी किन्तु प्रदर्शन सराहनीय रहा। उत्तर क्षेत्र प्रतियोगिता में हिमाचल विश्वविद्यालय के साथ मुकाबला अत्यन्त कठिन रहा। लक्सर में आयोजित इंदिरा गांधी टूर्नामेंट में दो बार मुकाबले जीतकर विजय के निकट जाने के पश्चात भी टूर्नामेंट आयोजकों द्वारा गड़बड़ी करने के कारण

विजय से वंचित होना पड़ा। भेल की टीम के साथ कई मैत्रीपूर्ण मुकाबलों में विजय पाई। स्थानीय क्लबों के साथ भी प्रतियोगिताएँ रखी गईं।

३. कुश्ती : उ.प्र. अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन मेरठ में किया गया था। छात्र सुनील कुमार ने लगातार दो कुश्तियों में विजय पाई। अपने ६२ कि०ग्राम भार वर्ग में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। अपरिहार्य कारणों से उ० क्षेत्र कुश्ती प्रतियोगिता में भाग न ले सके।

४. तैराकी : प्रथम बार इस वर्ष उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम प्रयास होने के कारण प्रदर्शन संतोषजनक रहा। इसके लिए अभ्यास हेतु बी एच ई एल. के स्वीमिंग पूल को किराये पर लेकर व्यवस्था की गई।

५. कबड्डी : कबड्डी की टीम का अभ्यास लगातार कराया गया। उसी के कारण ऋषिकुल के प्रांगण में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् हरिद्वार के सौजन्य से आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में भी हमारी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। किन्तु उ०प्र०अ०वि०वि० प्रतियोगिता में कानपुर टीम जाने के बाद उसे खेलने न दिया गया जिससे एक अच्छा अवसर प्राप्त न हो सका।

६. बैडमिण्टन : उत्तर क्षेत्र अ.वि.वि. प्रतियोगिता दिल्ली में आयोजित की गई थी जिसमें हमारी टीम ने भाग लिया किन्तु अभ्यास और अनुभव के अभाव में प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

७. टेबल टेनिस : अभ्यास चलता रहा किन्तु अच्छी टीम तैयार न होने के कारण अ.वि.वि. प्रतियोगिता में भेजने में असमर्थ रहे।

८. एथलेटिक्स : एथलेटिक्स खेलों में छात्रों ने रुचि न दिखाई। अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिताओं के आयोजन के अवसर पर भी कुछ ही छात्र उपस्थित होने के कारण प्रतियोगिताओं को स्थगित करना पड़ा।

९. वालीबाल : वालीबाल का अभ्यास चलता रहा। टीम भी अच्छी गठित हुई। श्रद्धानन्द स्मारक वालीबाल प्रतियोगिता में निरन्तर दो मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन किया।

१०. फुटबाल : विद्यालय विभाग के प्रांगण में फुटबाल का अभ्यास चलता रहा। फुटबाल के खिलाड़ियों की कमी के कारण टीम तैयार न हो सकी।

इस बार विश्वविद्यालय की ओर से खिलाड़ियों को वेशभूषा प्रदान की गई। छात्रों के डी.ए. आदि में सुधार किया गया। प्रोत्साहन के लिए कप्तानों को ब्लेजर दिए गए। बजट बढ़ाकर ४०,०००/- रुपये किया गया।

प्रयास यह है वि. वि. को टीम अन्तर्विश्वविद्यालय मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन कर सके। इसके लिए आगामी सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विशेष तैयारी हेतु कोचिंग कैम्प लगाने की व्यवस्था की जाएगी।

श्रद्धानन्द सप्ताह कार्यक्रम :

इस सप्ताह के आयोजन में इस वर्ष कबड्डी, योग एवं शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। २३ दिसम्बर से २५ दिसम्बर तक कबड्डी प्रतियोगिता में लगभग ६ टीमों ने भाग लिया। हमारी टीम ने प्रथम तथा गुरुकुल महाविद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। २५ दिसम्बर को योग एवं शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें योग प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में तथा कनिष्ठ वर्ग में प्रथम व द्वितीय स्थान गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में स्वामी ओमानन्द जी मुख्य अतिथि व कुलपति प्रो० आर०सी० शर्मा अध्यक्ष थे। आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी प्रो-कुलपति ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। कुलपति जी द्वारा तीन-दिवसीय प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

विभागीय कार्य संचालन में डा० अम्बुजकुमार शर्मा, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार (उपकुलपति), डा० वीरेन्द्र अरोड़ा (कुलसचिव), श्री राजेन्द्र सहगल (पूर्व वित्ताधिकारी), डा० श्यामनारायण सिंह (उप कुलसचिव), डा० काशमीर सिंह, डा० श्रवणकुमार शर्मा, डा० विजयेन्द्र शर्मा, श्री रणजीत सिंह (विद्यालय), डा० कौशलकुमार, डा० यू० एस० बिष्ट, डा० राकेश शर्मा, प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी (प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय) प्रभृति महानुभावों ने विशेष सहयोग प्रदान किया है। एतदर्थ विभाग की ओर से समस्त महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

—डा० अम्बुजकुमार शर्मा
अध्यक्ष

योग प्रशिक्षण केन्द्र

विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष से योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की अवधि चार मास से बढ़ाकर एक शैक्षिक सत्र कर दी गई। किन्तु इस वर्ष पूर्व-संचालित चार-मासीय पाठ्यक्रम भी चलाया गया। इनमें छात्र संख्या इस प्रकार रही :

चारमासीय पाठ्यक्रम—२६
एकवर्षीय पाठ्यक्रम—९

दोनों पाठ्यक्रमों के संचालन में विशेष ध्यान रखा गया। छात्रों को क्रियात्मक प्रशिक्षण साथ-साथ प्रदान किया गया। सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम का अध्यापन करते हुए शरीर-विज्ञान व यौगिक चिकित्सा के पाठ्यक्रम के अंश का अध्यापन डा• विनोदकुमार शर्मा व डा० सत्यप्रकाश विश्नोई (राज० आयु० महाविद्यालय) द्वारा अवैतनिक रूप से कराया गया। शेष पाठ्यक्रम का अध्यापन दोनों ही प्रकार के छात्रों को श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा ही कराया गया।

योग केन्द्र की ओर से चिकित्सा सेवाएँ सभी के लिए उपलब्ध कराई जा रही हैं। योग चिकित्सा का प्रभाव प्रत्यक्ष देखने में आया है। विविध रोगों से पीड़ित आतुरजन इस चिकित्सापद्धति का लाभ उठ रहे हैं। भविष्य में यह प्रयास किया जा रहा है कि अलग एक छोटा-सा चिकित्सा केन्द्र विभिन्न रोगों के यौगिक उपचार हेतु संचालित किया जाए।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर योग प्रतियोगिता को इस बार फिर चतुर्थ बार आयोजित किया गया। इसमें बाहर से आए प्रतियोगियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

केन्द्र के संचालन में कुलपति, उपकुलपति एवं आचार्य, कुलसचिव, उपकुल-सचिव, समस्त विभागाध्यक्ष, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय एवं उनका स्टाफ, कला एवं वेद महाविद्यालय का स्टाफ आदि का सहयोग प्राप्त होता रहा है। केन्द्र की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

—ईश्वर भारद्वाज

———

स्वास्थ्य केन्द्र

इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रौढ़शिक्षा केन्द्र में स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने एक शिविर का आयोजन किया । जिसके उपरान्त अनेक मरीजों की देखभाल करते हुए दवाइयों का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र ने निम्न वर्गीकरणानुसार मरीजों की देख-रेख की—

(i) बड़े आपरेशन—१३४

(ii) छोटे आपरेशन—१७८

(iii) लीगेशन --१३

(iv) सामान्य डिलीवरी—२४१

(v) एम० टी० पी०—४२

(vi) ई० सी० जी—५४

(vii) ओ० पी० डी० मरीज—३५१२

—बालकृष्ण भारद्वाज
निदेशक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय स्नातक विभाग, देहरादून

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कालेज १६ जुलाई १६८८ को खुला। इस वर्ष अलंकार द्वितीय खण्ड में ११ छात्राओं ने प्रवेश लिया तथा अलंकार प्रथम खण्ड में १२ छात्राओं ने प्रवेश किया। किन्तु इनमें अलंकार द्वितीय खण्ड की दो छात्राएँ अस्वस्थ तथा विवाह हो जाने के कारण अक्टूबर मास १६८८ को संस्था से मुक्त हो गई।

पांच अगस्त १६८८ को समस्त छात्राओं को सहमति से छात्रा-अध्यक्षा के रूप में कुमारी ऋतु, अलंकार द्वितीय खण्ड कुल-मन्त्राणी चुनी गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम :

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्रावणी पर्व उपलक्ष में रक्षाबन्धन दिवस से पूर्व संस्कृत सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्कृत विभाग को प्रवक्ताओं श्री सुनृत्या जी तथा श्री सरोज जी की अध्यक्षता में छात्राओं ने संस्कृत भाषा में नाटक, कविता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। तुलसी जयन्ती के अवसर पर छात्राओं ने तुलसी के पदों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किये। २ अक्टूबर का महात्मा गांधी एवम् लालबहादुर जी शास्त्री के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा छात्राओं और शिक्षिकाओं ने सामूहिकरूप से सूत कातने के कार्यक्रमों में भाग लिया। दीपावली के एक दिन पहले कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के जन्मोत्सव पर दोनों खण्डों की छात्राओं ने उल्लासपूर्वक अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसकी अध्यक्षता निर्देशिका एवम् आचार्या श्री दमयन्ती जी कपूर ने की। प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

१४ नवम्बर को बालदिवस के अवसर पर कुमारी सुमन, कुमारी स्वाति आदि ने नगर के जिलाधिकारी द्वारा आयोजित खेलकूद में भाग लिया तथा पुरस्कारस्वरूप कुछ पुस्तकें प्राप्त कीं। ९ दिसम्बर तथा २३ दिसम्बर को

क्रमश: आचार्य रामदेव दिवस तथा श्रद्धानन्द सप्ताह दिवस के अवसर पर विविध रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

अलंकार प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड की छात्राओं ने अंग्रेजी में नाटक, व्याख्यान तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में कुमारी कमला जी की अध्यक्षता में भाग लिया। छात्रओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम प्रशंसनीय थे।

संगीत कार्यक्रम :

"तरुण संघ" तथा "जागृति परिषद्" द्वारा आयोजित सामूहिक गान, लोकगीत, सुगम गीत, निबन्ध तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में दिसम्बर १२, १३ तथा १४ को छात्राओं ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किया। (नटराज की मूर्ति) सामूहिक गान में अलंकार द्वितीय खण्ड की छात्रा कुमारी सुमन, कुमारी विजयलक्ष्मी, कुमारी विनीता तथा अर्चना, कुमारी संगीता ने भाग लिया तथा विशेषपुरस्कार प्राप्त किये। हिन्दी निबन्ध तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में अलंकार द्वितीय खण्ड की कुमारी ऋतु, प्रथम खण्ड की कुमारी पूनम तथा कुमारी रेखा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा पुरस्कारस्वरूप पुस्तकें प्राप्त कीं।

क्रीडा :

क्रीडा प्रतियोगिता में भी अलंकार प्रथम तथा द्वितीय खण्ड की छात्राओं ने भाग लिया। ८०० मीटर रिले रेस में कुमारी सुमन प्रथम रही तथा महिला वालीबाल टूर्नामेण्ट के ओपन गेम में कुमारी स्वाति, कुमारी रेणु, कुमारी कमलेश, कुमारी मलिका आदि ने भाग लिया तथा पुरस्कारस्वरूप एक कप प्राप्त किया।

परीक्षा विवरण :

इस वर्ष की वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने वाली छात्राओं की संख्या निम्नलिखित है :

अलंकार प्रथम खण्ड	१२ छात्राएँ
अलंकार द्वितीय खण्ड	६ छात्राएँ

१९८७-८८ अप्रैल-मई में सम्पन्न हुई परीक्षा में अलंकार प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड की निम्नलिखित छात्राओं ने परीक्षा में भाग लिया।

गत वर्ष १९८७-८८ :

अलंकार प्रथम खण्ड की परीक्षा में कुल ११ छात्रायें सम्मिलित हुई

तथा **परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत** रहा। अलंकार-द्वितीय खण्ड की परीक्षा में ७ छात्रायें सम्मिलित हुई, परीक्षा परिणाम निम्नलिखित है :—

प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण ४ छात्रायें
द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण—२ छात्रायें
तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण—१ छात्रा
कुल परीक्षा परिणाम **शत प्रतिशत** रहा।

यू० जी० सी० के निर्देशानुसार कालेज में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। कालेज परिसर में जल का नया प्रबन्ध, पुस्तकालय के लिए नई पुस्तकें, समाचारपत्र तथा पत्र-पत्रिकाओं का प्रबन्ध किया गया है। नया फर्नीचर भी क्रय किया है।

टीचिंग स्टाफ तथा नॉन टीचिंग स्टाफ की संख्या पूर्वतः ही है। नॉन टीचिंग स्टाफ के कुछ सदस्य १९८७ तथा १९८८ में अवकाश प्राप्त कर चुके थे। अतः उनके स्थान पर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त चयन समिति ने निम्न नवीन कर्मचारियों की नियुक्ति की है :

(१) श्री ओमप्रकाश (भृत्य)
(२) श्री श्यामसिंह जी (भृत्य)
(३) श्री मुन्नालाल (माली)
(४) श्रीमती विमला (सफाई कर्मचारी)

परिसर में स्थित भवन की टीन की छत लगातार छेदों के कारण टपकती है तथा सभी विषयों की पढ़ाई के लिए कमरे अपर्याप्त हैं। पुस्तकालय तथा वाचनालय तथा लिपिक के कार्य के लिए कोई उचित स्थान नहीं है। १९८९ की जुलाई से तृतीय वर्ष की छात्राओं का भी प्रवेश होगा, उनके लिए कोई जगह नहीं है, अतः नये कमरों का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। लिपिक के लिए कोई टाईपराईटर (हिन्दी, अंग्रेजी) नहीं है।

यद्यपि नये भवन के निर्माण की योजना बन चुकी है तथा उसका नक्शा भी बन चुका है किन्तु अभी तक भवन के निर्माण का कार्य आरम्भ नहीं किया गया है। आशा है कि नये भवन का निर्माण कार्य शीघ्र-अतिशीघ्र आरम्भ किया जायेगा।

—प्राचार्या

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1988 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया यया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 26-10-1988 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्न प्रकार बजट पारित किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 88-89	बजट अनुमान 89-90
वेतन एवं भत्ते आदि	66,09,950.00	68,37,100.00
अंशदायी भविष्यनिधि	2,17,170.00	2,56.030.00
अन्य आय	17,86,860.00	17,55,250.00
योग व्यय	86,13,980.00	88,48,380.00
आय	2,37,150.00	2,48,380.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत अनुदान	79,13,164.45	86,00,000.00

समीक्षाधीन वर्ष 1988-89 में 79,13,164.45 रु०के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है -

क्र सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1-	20,000.00	वि०वि० अनुदान आयोग	कम्प्यूटर हेतु
2-	2,75,000.00	,, ,,	हाउस बिल्डिग लोन एडवांस
3-	15,139.85	,, ,,	अनएसाइन्ड ग्रान्ट
4-	14,00,000.00	,, ,,	उपकरण अनुदान
5-	4623.55	,, ,,	विश्वविद्यालय भवन

क्र. सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
6-	3055.00	वि० वि०अनुदान आयोग	संग्रहालय विकास
7-	7,00,000.00	,, ,,	वेतन विकास अनुदान
8-	25,000.00	,, ,,	अतिथि भवन
9-	700,000.00	,, ,,	पुस्तकालय पुस्तकें
10-	7,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. पी.पी. पाठक
11-	6,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. आर.डी. कौशिक
12-	9,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. रणधीरसिंह
13-	2,250.00	,, ,,	माइनर रि. प्रो. श्री दिनेश भट्ट
14-	53,419.80	,, ,,	विजिटिंगप्रो./फैलोसिप
15-	50,000.00	,, ,,	जूनियर रि. फैलोशिप
16-	8,950.00	,, ,,	डा. कृष्ण कुमार
17-	2,05,000.00	,, ,,	प्रौढ़ शिक्षा
18-	2,00,000.00	उत्तर प्रदेश सरकार	पुस्तकालय अनुदान
19-	1,00,000.00	,, ,,	संग्रहालय अनुदान
20-	32,500.00	इंडियन काउन्सिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च नई दिल्ली	फैलोशिप डा. एस.आर. चौधरी
21-	5,000 00	इंडियन काउन्सिल आफ साइंस, नई दिल्ली	सेमिनार आन फिश एण्ड देयर एन्वायरनमेंट
22-	2,371.00	,, ,,	डा.एस.के. श्रीवास्तव

–बी० सी० सिन्हा
वित्त अधिकारी

————

आय का विवरण

1988-89

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
(क)	**दान और अनुदान—**	
1-	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	79,13,164.45
	योग (क)	79,13,164.45
(ख)	**शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—**	
1-	पंजीकरण शुल्क	5118.00
2-	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	1055.00
3-	पी-एच०डी० मासिक शुल्क	2170.00
4-	परीक्षा शुल्क	42348.00
5-	अंकपत्र शुल्क	2580 00
6-	विलम्बदण्ड, टूट-फूट	5029.00
7-	माइग्रेशन शुल्क	983.00
8-	प्रमाण-पत्र शुल्क	1219.00
9-	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का शुल्क	8837.00
10-	सेवा आवेदन-पत्र	10618.00
11-	शिक्षा शुल्क	45391.00
12-	प्रवेश व पुनःप्रवेश शुल्क	7761.00
13-	भवन शुल्क	1794.00
14-	क्रीड़ा शुल्क	7752.00

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
15-	पुस्तकालय शुल्क	5443.00
16-	परिचयपत्र शुल्क	526.00
17-	एसोसियेशन शुल्क	705.00
18-	प्रयोगशाला शुल्क	1932 00
19-	मंहगाई शुल्क	7333.00
20-	विज्ञान शुल्क	1190.00
21-	पुस्तकालय से आय	8059.27
22-	पत्रिका शुल्क	14258.40
23-	अन्य आय	12205.70
24-	किराया प्रोफेसर्स क्वार्टर्स	38864.50
25-	सरस्वती यात्रा	1400 00
26-	वाहन ऋण	45190.40
27-	छात्रावास	3337 00
28-	विद्युत	28330.00
	योग (ख)	3,11,429 27
	सर्वयोग (क+ख)	82,24,593.72

–बी० सी० सिन्हा
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1988-89

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन		
1-	वेतन	54,60,714.00
2-	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	2,13,763.00
3-	ग्रेच्युटी	48,485.00
	योग (क)	57,22,962.00
ख (अन्य)		
1-	विद्युत व जल	1,26,730.00
2-	टेलीफोन	69,559 00
3-	मार्ग व्यय	1,06,374.00
4-	लेखन सामग्री एवं छपाई	53,719.00
5-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	18,552 00
6-	डाक एवं तार	15,189.00
7-	वाहन एवं पैट्रोल	93,826.00
8-	विज्ञापन	46,098.00
9-	कानूनी व्यय	21,662.00
10-	आतिथ्य व्यय	61,581 00
11-	दीक्षान्त उत्सव	26,714.00
12-	लॉन संरक्षण	22,222.00
13-	भवन मरम्मत	99,971.00
14-	आडिट व्यय	18,750.00
15-	उपकरण	61,935.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
16-	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	67,830.00
17-	राष्ट्रीय छात्र सेवा	868 00
18-	छात्रों को छात्रवृत्ति	40,031 00
19-	खेलकूद एवं क्रीड़ा	48,987.00
20-	सांस्कृतिक कार्यक्रम	2,915.00
21-	सरस्वती शै० यात्रा	5,483.00
22-	वाग्वर्धिनी सभा	8141 00
23-	वेद प्रयोगशाला	10,719.00
24-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	6,876.00
25-	रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	46,511.00
26-	भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	22 065.00
27-	वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	24,224.00
28-	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	23,832.00
29-	गैस प्लाण्ट	6,628.00
30-	इतिहास	8,664 00
31-	गणित	4,741.00
32-	वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाउस)	558.00
33-	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ	68 669.00
34-	पुस्तकें	47,598.00
35-	जिल्दबंदी एवं पुस्तक सुरक्षा	10,239.00
36-	केटेलाग एण्ड कार्डस	2,770.00
37-	वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्यभट्ट	57 499.00
38-	गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका मिश्रित	23,582 00
39-	आकस्मिक	12,229.00
40-	सदस्यता शुल्क अंशदान	21,528.00
41-	सेमिनार	4,667.00
42-	पढ़ते हुए कमाओ	5,454.00
43-	वाहन हेतु ऋण	24,000 00
44-	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्यूटी प्रतिभूर्ति	18,715.00
45-	निर्धन छात्रकोष	400 00

क्र. सं.	व्यय का मद		धनराशि
46-	छात्रावास		18,246 00
		योग (ख)	14,87,551.00
47-	परीक्षकों का पारिश्रमिक		39,230.00
48-	मार्गव्यय परीक्षक		22,265.00
49-	निरीक्षण व्यय		11,791.00
50-	प्रश्नपत्रों की छपाई		45 568 00
51-	डाक तार व्यय		10,826.00
52-	लेखन सामग्री		2,270.00
53-	नियमावली, पाठविधि छपाई		13,532.00
54-	अन्य व्यय		1,755 00
		योग (ग)	1,47,237.00
		योग (ख+ग)	16,34,788 00
		सर्वयोग (क+ख+ग)	73,57,750.00

—**बी० सी० सिन्हा**
वित्त अधिकारी

दीक्षान्तोत्सव १९८८-८९ पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त शोधार्थी

क्र. सं.	मौखिकी परीक्षा	पं०सं०	नाम शोधार्थी	पिता का नाम श्री	प्र.प सं.	विभाग	विषय
1.	20.7.88	83014	मनीराम त्रिपाठी	सूर्यबली त्रिपाठी	89/70	सस्कृत सा०	संस्कृत महाकाव्यों मे पर्वतवर्णन : एक अनुशीलन (प्रारम्भ से दशम शताब्दी तक)
2.	13.3.89	840104	सत्यदेव	धर्मवीर	89/71	,,	औचित्य सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में वाल्मीकि रामायण का एक समालोचनात्मक अध्ययन
3.	30.3.89	82005	जगदीशप्रसाद	प्रह्लादराय	89/72	वैदिक सा०	अथर्ववेदीय मनोविज्ञान
4.	27 3.89	820129	बाबूराम	अफ्लातून	89/73	दर्शनशा०	भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों में अन्त:करण का एक तुलनात्मक अध्ययन
5.	12.1.89	850223	अशोककुमार शर्मा	किशनलाल शर्मा	89/74	हिन्दी सा०	राष्ट्रकवि दिनकर : काव्य : प्रेरक और प्रभावक तत्व (भारतीय)
6.	10.8.88	82004	सुखवीरसिंह	ईलमसिंह	89/75	प्रा०भा०इ०	पुरातत्व संग्रहालय (गुरुकुल कांगड़ी) की मृण्मूर्तियों एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन
7.	28.2.89	82003	जसवीरसिंह मलिक	जिहानसिंह मलिक	89/76	,,	प्राचीन भारत में पौरोहित्य (प्रारंभ से 1200 ई० तक)

— — — —

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर विद्यालंकार (बी०ए०) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर विद्यालंकार (बी०ए०) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	453	860037	कु० अनुजा	मुन्शीराम पालीवाल	विद्यालंकार	(i) वै०लौ० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा०सं०	(i) संगीत गा० (ii) इतिहास	कन्या गु० दे०	द्वितीय
2.	454	860038	कु० बबीता	रामलाल यादव	,,	,,	(I) हिन्दी (II) इतिहास	,,	द्वितीय
3.	455	860039	कु० कमलेश	दीवानसिंह	,,	,,	(I) इतिहास (II) संगी०गा०	,,	प्रथम
4.	456	860040	कु० मनोज	दिलीपसिंह	,,	,,	(I) संगीत गा० (II) संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
5.	457	860041	कु० पूनम	प्रतापसिंह	,,	,,	(I) हिन्दी (II) इतिहास	,, ,,	प्रथम
6.	458	860190	कु० रश्मि बख्शी	वेदप्रकाश बख्शी	,,	,,	(I) इतिहास (II) चित्रकला	,,	प्रथम
7.	459	860043	कु० शिवा	वशिष्ठ पाण्डेय	,,	,,	(I) हिन्दी (II) चित्रकला	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
8.	460	840074	आलोककुमार	भैरवदत्त घिल्डियाल	विद्यालंकार	(i) वै० लौ० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा० सं०	(I) हिन्दी (II) मनोविज्ञान	गु० कां०	द्वितीय
9.	461	860233	आलोककुमार	हरपालसिंह	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
10.	462	860216	बीरबल रावल	हरनामसिंह रावल	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
11.	463	860223	देवदत्त शर्मा	पतिराम शर्मा	,,	,,	(I) मनोविज्ञान (II) दर्शन	,,	द्वितीय
12.	464	860128	हरिशंकर गहतोड़ी	गिरीशचन्द्र गहतोड़ी	,,	,,	(I) इतिहास (II) दर्शन	,,	प्रथम
13.	465	860129	मोहितलाल नाथ	रमनचन्द्र देवनाथ	,,	,,	(I) मनोविज्ञान (II) दर्शन	,,	प्रथम
14.	466	870114	नेतराम शर्मा	बलजोर शर्मा	,,	,,	(I) हिन्दी (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
15.	467	860224	प्रदीपकुमार	जयभगवान	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	द्वितीय
16.	469	860121	राजेन्द्रसिंह	डालचन्दसिंह	,	,,	(I) हिन्दी (II) दशन	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
17.	470	860225	सतीशकुमार	यशपालसिंह	विद्यालंकार	(i) वै०लै० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा० सं०	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	द्वितीय
18.	471	860120	वीरसिंह	लक्ष्मणसिंह	,,	,,	(I) हिन्दी (II) दर्शन	,,	प्रथम (दुर्घटना से मृत्यु)

———

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर बी० एस-सी० (गणित ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र०प०सं.	श्रेणी
1.	342	850115	अखिल चौधरी	श्री उदयशकर	वी.एस-सी.	रसायनशा. भौतिकी.गणित	गु कां.वि.वि.	101	द्वितीय
2.	343	860079	अरुणकुमार गुप्ता	श्री वृजपाल गुप्ता	,,	,,	,,	102	तृतीय
3.	344	860083	अजयप्रसाद	श्री के०के० प्रसाद	,,	,,	,,	103	द्वितीय
4.	345	860105	अनुपमकुमार	श्री विनोदकुमार जग्गा	,,	,,	,,	104	,,
5.	348	860148	अनिलकुमार	श्री कल्याणसिंह	,,	,,	,,	105	तृतीय
6.	349	850122	अवनीशकुमार	श्री जयप्रकाश	,,	,,	,,	106	,,
7	350	860010	अजयकुमारसिंह	श्री रतनसिंह	,,	,,	,,	107	द्वितीय
8.	35	860107	वसन्तकुमारसिंह	श्री इन्द्रदेवसिंह	,,	,,	,,	108	,,
9.	353	860071	देवेन्द्रसिंह	श्री कुलवन्तसिंह	,,	,,	,,	109	तृतीय
10.	354	860069	धनीश सहगल	श्री देशराज सहगल	,,	,,	,,	110	द्वितीय
11.	355	860072	दीपकमणि गुप्ता	श्री मुकुटबिहारी गुप्ता	,,	,,	,,	111	,,
12.	356	850133	दिनेशकुमार उपाध्याय	श्री हृदयनारायण उपाध्याय	,,	,,	,,	112	,,
13.	357	860112	धीरज शारदा	श्री वलवीर कृष्ण शारदा	,,	,,	,,	113	,,
14.	358	860073	दीपक पन्त	श्री ए० के० पन्त	,,	,,	,,	114	,,
15.	359	850143	जगदीशचन्द्र	श्री लालचन्द	,,	,,	,,	115	,,
16.	360	860067	कुलदीपकुमार	श्री अतरसिंह	,,	,,	,,	116	तृतीय

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं.	श्रेणी
17.	361	860184	कैलाशचन्द्र त्रिपाठी	श्री पूरनचन्द्र त्रिपाठी	बी.एस-सी.	रसायनशा. भौतिकी,गणित	गु कां.वि.वि.	117	द्वितीय
18	364	850043	मुकेशचन्द्र कुकरेती	श्री लालमणि	,,	,,	,,	118	प्रथम
19.	365	860104	मनोजकुमार	श्री वेदप्रकाश	,,	,,	,,	119	तृतीय
20.	366	860063	नवीनकुमार	श्री मदनमोहन	,,	,,	,,	120	प्रथम
21.	368	860138	ओमीकान्त	श्री अमरसिंह	,,	,,	,,	121	द्वितीय
22.	369	860060	प्रदीपकुमार	श्री हरिसिंह	,,	,,	,,	122	तृतीय
23.	370	860201	प्रदीप यादव	श्री जगदेवसिंह यादव	,,	,,	,,	123	द्वितीय
24.	372	860059	प्रमोदचन्द्र वर्मा	श्री सोमदत्त वर्मा	,,	,,	,,	124	,,
25	373	860143	प्रकाशचन्द	श्री नत्थूसिंह	,,	,,	,,	055	,,
26.	377	860149	राजेशकुमार	श्री ए० एल० छावड़ा	,,	,,	,,	056	,,
27.	378	860200	राजू जोशा	श्री उमेशचन्द्र जोशी	,,	,,	,,	057	,,
28.	379	850056	राकेशकुमार	श्री फूलसिंह सैनी	,,	,,	,,	058	,,
29.	380	860055	रविन्द्रसिंह	श्री उदयवीरसिंह	,,	,,	,,	059	,,
30.	381	860054	राजीव शर्मा	श्री बी० बी० शर्मा	,,	,,	,,	060	,,
31.	382	860057	रमेश यादव	श्री विक्रमा यादव	,,	,,	,,	061	,,
32.	383	860052	सोमप्रकाश भट्ट	श्री बुद्धिराम भट्ट	,,	,,	,,	062	तृतीय
33.	385	860199	शिवरतन शर्मा	श्री रामरतन शर्मा	,,	,,	,,	063	द्वितीय
34.	386	860162	संजय गौड़	श्री जगदीशप्रसाद शर्मा	,,	,,	,,	064	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
35.	387	850073	संजयकुमार	श्री श्यामसुन्दर गर्ग	बी.एस-सी.	रसायनशा भौतिकी,गणित	गु.कां.वि वि.	065	द्वितीय
36.	388	850064	सुभाषचन्द	श्री राजसिंह	,,	,,	,,	066	द्वितीय
37.	389	860136	सुरेन्द्र दत्त	श्री सुरेशानन्द	,,	,,	,,	067	,,
38.	390	860047	सुरेन्द्रसिंह	श्री शेरसिंह	,,	,,	,,	068	,,
39.	393	850068	शिवकुमार	श्री चमेलसिंह	,,	,,	,,	069	,,
40.	394	850067	सुभाषचन्द	श्री कर्णसिंह	,,	,,	,,	070	,,
41.	395	860053	संजीवकुमार	श्री रामकृष्ण	,,	,,	,,	071	,,
42.	396	860175	संजयकुमार	श्री जयभगवान	,,	,,	,,	072	,,
43.	397	850080	उदयन	श्री नरेन्द्रपाल	,,	,,	,,	073	प्रथम
44.	398	850079	उत्तमकुमार	श्री राजेन्द्रप्रसाद तिवारी	,,	,,	,,	074	प्रथम
45.	399	850084	विनयकुमार	श्री वशेश्वर दयाल	,,	,,	,,	075	तृतीय
46.	400	850091	विपुलकुमार	श्री रमेशचन्द	,,	,,	,,	076	द्वितीय
47.	401	850093	योगेन्द्रसिह	श्री महीपालसिंह	,,	,,	,,	077	,,

———

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर बी० एस-सी० (बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर बी० एस-सी० (बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र प.सं.	श्रेणी
1.	403	860085	अजयकुमार गुप्ता	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	बी.एस-सी.	रसायनशा., वनस्पतिवि., जीवविज्ञान	गु.कां.वि.वि.	095	द्वितीय
2.	404	860147	इन्द्रदेव	श्री रामचन्द्र	,,	,,	,,	079	,,
3.	405	860005	जितेन्द्रकुमार तोमर	श्री राजपालसिंह तोमर	,,	,,	,,	080	,,
4.	406	860032	जयकृष्ण	श्री कमलेश्वर प्रसाद	,,	,,	,,	081	,,
5.	407	860031	जमाल हाशिम	श्री हाशिम अली	,,	,,	,,	082	प्रथम
6.	408	860095	कुलबीरसिंह पुण्डीर	श्री जहानसिंह पुण्डीर	,,	,,	,,	083	द्वितीय
7.	409	860096	मौहम्मद आरिफ	श्री अख्तरहसन	,,	,,	,,	084	,,
8.	411	860094	मनोजकुमार रावत	श्री सेवाराम	,,	,,	,,	085	,,
9.	413	860033	पंकज वर्मा	श्री के० के० वर्मा	,,	,,	,,	086	,,
10.	415	860007	पवनकुमार	श्री कृष्णगोपाल	,,	,,	,,	087	,,
11.	416	860092	राजेशकुमार सुई	श्री श्यामलाल सुई	,,	,,	,,	088	,,
12.	418	840013	सन्दीपकुमार	श्री हरवंशलाल बाली	,,	,,	,,	089	,,
13.	419	860088	संजीवकुमार	श्री एन० के० त्यागी	,,	,,	,,	090	,,

क्र.सं.	अनु०	प.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं.	श्रेणी
14.	420	860091	संजयराज	श्री बी० राज	बी.एस-सी.	रसायनशा., वनस्पतिवि., जीवविज्ञान	गु.कां.वि.वि.	091	द्वितीय
15.	422	860144	त्रिभुवनसिंह	श्री राजपालसिंह	,,	,,	,,	092	,,
16.	423	860089	विजयकुमार	श्री श्यामसुन्दरलाल	,,	,,	,,	093	,,
17.	424	860087	विवेककुमार	श्री यशपालसिंह	,,	,,	,,	094	,,

————

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर एम० ए०/एम० एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर एम० ए०/एम० एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
1.	655	820125	भोपालसिंह	बाबूराम	एम० ए०	वैदिक साहित्य	गु.कां.वि.वि.	890001	प्रथम
2.	657	860218	वैराग्यस्वरूप	मुक्तस्वरूप	,,	,,	,,	02	द्वितीय
3.	658	850257	नरेश	पासीराम	,,	,,	,,	03	प्रथम
4.	661	860234	प्रकाशस्वरूप	स्वामी परमानन्द	,,	दर्शन शा.	,,	04	द्वितीय
5.	663	860116	तेजपालसिंह	बलजीतसिंह	,,	,,	,,	05	प्रथम
6.	664	860021	ईश्वरसिंह भारद्वाज	हीरालाल भारद्वाज	,,	,,	,,	06	,,
7.	665	850172	विपिनकुमार	कृष्णकुमार	,,	,,	,,	07	द्वितीय
8.	666	860242	अजयकुमार	ओमप्रकाश	,,	संस्कृत	,,	08	,,
9.	667	840076	अरविन्दकुमार	महेन्द्र सिंह	,,	,,	,,	09	,,
10.	668	860212	हीरावल्लभ बेलवाल	केशवदत्त बेलवाल	,,	,,	,,	010	,,
11.	669	860221	कृष्णावतार	काशीराम	,,	,,	,,	011	प्रथम
12.	671	860122	सोमपाल	रघुवीरसिंह	,,	,,	,,	012	,,
13.	672	840072	तेजनारायणसिंह	लंरगूसिंह	,,	,,	,,	013	द्वितीय
14.	673	860198	अजयकुमार	वेदपालसिंह	,,	,,	,,	014	प्रथम
15.	674	860217	युधिष्ठिर उप्रेती	पशुपतिनाथ उप्रेती	,,	,,	,,	015	,,
16,	675	860044	कु० अनुपमा शर्मा	आनन्दप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	016	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
17	676	860017	गरिमादेवी	सत्यपाल शर्मा	एम० ए०	संस्कृत	गु.कां.वि.वि.	890017	द्वितीय
18.	678	870205	कमलेश डागर	हरिसिंह	,,	,,	,,	018	,,
19.	679	860169	कृष्णा	रणधीरसिंह	,,	,,	,,	019	,,
20.	680	830120	लीला	बोधेन्द्रदेव वैद्य	,,	,,	,,	020	,,
21.	681	860164	नीलम दहिया	रामानन्द	,,	,,	,,	021	,,
22.	682	860023	निर्मला	बेलीराम	,,	,,	,,	022	..
23.	683	850025	पुष्पलता	मनोहरलाल	,,	,,	,,	023	तृतीय
24.	685	860165	राजवन्ती मान	करतारसिंह	,,	,,	,,	024	द्वितीय
25.	686	860170	सुमित्रा	चन्द्रभान	,,	,,	,,	025	,,
26.	687	870100	सुशीला	होरामसिह	,,	,,	,,	026	प्रथम
27.	689	860168	सुमित्रा	प्रह्लादसिंह	,,	,,	,,	027	द्वितीय
28.	690	870143	कु० सरस्वती	रामस्वरूप	,,	,,	,,	028	प्रथम
29.	691	860171	विजयलक्ष्मी गुलिया	चन्द्रभान	,,	,,	,,	029	द्वितीय
30.	692	860167	विद्यावती	सूरतसिंह	,,	,,	,,	030	द्वितीय
31.	530	860146	सुशीला	टेकचन्द आर्य	,,	,,	,,	031	,,
32.	693	860240	अनिलकुमार	माताप्रसाद कटियार	,,	हिन्दी सा०	,,	032	प्रथम
33.	694	860226	अनुजकुमार जैन	चमनलाल जैन	,,	,,	,,	033	द्वितीय
34.	695	860220	गजेन्द्रप्रसाद	गिरजादत्त	,,	,,	,,	034	,,
35.	696	860235	जगदीशचन्द शर्मा	जयराम शर्मा	,,	,,	,,	035	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
36.	697	860213	शिवकुमारशर्मा	श्यामसुन्दर शर्मा	एम० ए०	हिन्दी सा०	गु.कां.वि.वि.	890036	तृतीय
37.	749	860215	दुर्गाप्रसाद तिवारी	शिवमूर्ति तिवारी	,,	,,	,,	037	प्रथम
38.	698	860016	प्रेमचन्द शर्मा	ब्रह्मानन्द शर्मा	,,	,,	,,	038	,,
39.	700	860231	श्रीमती अनिता वर्मा	रामसिंह पंवार	,,	,,	,,	039	द्वितीय
40.	701	860035	कु० अंजलि शर्मा	विवेकानन्द शर्मा	,,	,,	,,	040	,,
41.	703	850250	कु० मुनेशदेवी	चतरसिंह	,,	,,	,,	041	तृतीय
42.	704	860013	ममता शर्मा	रतन शर्मा	,,	,,	,,	042	द्वितीय
43.	705	860022	कु० सावित्री देवी	होसिलाप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	,,	043	,,
44.	706	860101	कु० विभा प्रसाद	उमेशचन्द्र प्रसाद	,,	,,	,,	044	,,
45.	707	850022	विनोद बाला	रिछपालसिंह	,,	,,	,,	045	प्रथम
46.	568	870208	नीलम शर्मा	एस० एन० शर्मा	,,	,,	,,	046	द्वितीय
47.	709	840075	ऋषिपाल	ओमप्रकाश	,,	प्रा.भा. इतिहास	,,	047	,,
48.	711	860115	सुखबीर	शंकरलाल	,,	,,	,,	048	प्रथम
49	712	850220	शचेन्द्रनाथ शर्मा	सुरेन्द्रनाथ शर्मा	,,	,,	,,	049	,,
50.	713	790041	शिशुपाल	फूलसिंह	,,	,,	,,	050	द्वितीय
51.	717	860019	श्रीमती कृष्णा शर्मा	मदनगोपाल शर्मा	,,	,,	,,	051	,,
52.	719	860239	कु० रेखा	जगदेवसिंह यादव	,,	,,	,,	052	,,
53.	721	860132	श्रीमती सुनीता गुप्ता	मंगूलाल	,,	,,	,,	053	,,
54.	722	840165	कु० सीमा	देवराजसिंह	,,	,,	,,	054	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
55.	725	860126	मदनगोपाल उपाध्याय	बाबूलाल उपाध्याय	एम. ए.	मनो वि.	गु.कां.वि.वि.	890055	द्वितीय
56.	726	860026	कु० अनुराधा यादव	बलवानसिंह यादव	एम एस-सी.	,,	,,	एम एस-सी89028	प्रथम
57.	728	860125	मंजुलता सिन्हा	हीरालाल सिन्हा	,,	,,	,,	029	,,
58.	729	860015	कु० पवनलता	भोपालसिंह त्यागी	,,	,,	,,	030	,,
59.	730	860036	कु० सोनिया सेठी	अजितसिंह सेठी	,,	,,	,,	031	,,
60.	731	860127	कु० शोभा गुप्ता	राजनारायण गुप्ता	,,	,,	,,	032	,,
61.	732	860118	भुवनचन्द्र	लोलाधर उपाध्याय	एम.ए.	अंग्रेजी	,,	890056	द्वितीय
62.	733	860222	हरेन्द्रचन्द्र नाथ	बिहारीचरण नाथ	,,	,,	,,	057	प्रथम
63.	734	860117	प्रवीणकुमार	मंगलसैन जैन	,,	,,	,,	058	,,
64.	736	860219	संजयकुमार गोस्वामी	जगदीशगिरी गोस्वामी	,,	,,	,,	059	द्वितीय
65.	737	850229	चन्द्रभूषण झा	दुःखहरण झा	,,	,,	,,	060	,,
66.	738	850232	दिनेशकुमार	राधाकृष्ण शास्त्री	,,	,,	,,	061	,,
67.	739	850158	रमेशचन्द्र शर्मा	चमनलाल शर्मा	,,	,,	,,	062	,,
68.	740	850185	संजीवकुमार वर्मा	वीरेन्द्र प्रसाद वर्मा	,,	,,	,,	063	,,
69.	741	860232	कु० अर्चना	महेशचन्द्र	,,	,,	,,	064	,,
70.	743	850170	रतिन्द्रकौर सिद्धू	बलवन्तसिंह सिद्धू	,,	,,	,,	065	,,
71.	745	860099	शिखा सरन	योगेश्वर सरन	,,	,,	,,	066	,,
72.	747	850027	संगीता दत्ता	सुदर्शन दत्ता	,,	,,	,,	067	,,
73.	748	850245	उमादेवी अग्रवाल	कृष्ण औतार	,,	,,	,,	068	,,

	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र प.सं.	श्रेणी
74.	764	820074	आदेशकुमार	श्यामलाल	एम.एस-सी.	गणित	गु.कां.वि वि.	043	द्वितीय
75.	765	820073	आदित्यकुमार चौहान	केहरसिंह चौहान	,,	,,	,,	044	,,
76.	767	810083	दीपक श्रीवास्तव	अखिलेश्वरप्रसादश्रीवास्तव	,,	,,	,,	045	प्रथम
77	769	860097	कु० मीनाक्षी भटनागर	आर०एस० भटनागर	,,	,,	,,	046	,,
78.	770	850211	कु० सरिता रानी	विजयेन्द्रकुमार	एम.ए.	,,	,,	890069	,,
79.	761	830044	अतुलकुमार गुप्ता	सुरेशकुमार गुप्ता	एम.एस-सी.	,,	,,	047	,,
80.	766	830024	संदीप भटनागर	निरंकारस्वरूप भटनागर	,,	,,	,,	033	,,
81.	1118	830091	अभयकुमार	भगवानदास	,,	माइक्रोबायलोजी	,,	034	,,
							Session—(1985-86) Prev. Final completed in June & Aug. 88		
82.	1119	830090	अनिलकुमार	रणधीरसिंह	,,	,,	,,	035	,,
83.	1120	850209	अनिलकुमार पूनिया	विजयसिंह	,,	,,	,,	036	,,
84.	1121	830071	राकेश बहुगुणा	जीतराम बहुगुणा	,,	,,	,,	037	,,

———

ओ३म्

९०वाँ

वार्षिक विवरण

१९८९-९०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

डा० वीरेन्द्र अरोड़ा

कुलसचिव,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

मुद्रक :

जैना प्रिटर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान पदाधिकारी

परिद्रष्टा	—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
कुलपति	—श्री सुभाष विद्यालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
आचार्य एवं उप-कुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्राचार्य, विज्ञान महाविद्यालय	—प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्ताधिकारी	—डा० जयदेव वेदालंकार
निदेशक, पुरातत्त्व संग्रहालय	—डा० श्यामनारायण सिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष	—डा० जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक-मण्डल

* डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव
* डा० विष्णुदत्त राकेश
  प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
* डा० जयदेव वेदालंकार, वित्त-अधिकारी

विषय-सूची

———

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी राष्ट्रीय शिक्षणसंस्था है। इसकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आज से ९० वर्ष पूर्व स्वाधीनता आन्दोलन में चरित्रवान जुझारू सिपाही पैदा करने तथा प्राचीन ऋषियों के ज्ञान-विज्ञान और वैदिक संस्कृति को पुन. स्थापित करने के लिए की थी। तब से लेकर आज तक इस विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सेवाकार्यों की एक विस्तृत अखण्ड परम्परा रही है और यहाँ के आचार्यों तथा स्नातकों ने अपने-अपने क्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

५ मई १९९० को विश्वविद्यालय के नए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने कार्यभार ग्रहण किया। श्री विद्यालंकार गुरुकुल के लब्धप्रतिष्ठित स्नातक हैं तथा दिल्ली प्रशासन, रेडियो, पत्रकारिता और सर्वोच्च न्यायालय में वकालत के कार्यों से जुड़े रहे हैं। विश्वविद्यालय की कठिनाइयों और समस्याओं को समझने और उनके निराकरण करने में वह अत्यन्त दक्ष हैं। पिछले वर्षों से विश्वविद्यालय के लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षकों के स्वीकृत पदों तथा अवकाश ग्रहण करने के कारण हुए रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ करने तथा पदों की पूर्ति करने पर आयोग ने प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। सातवीं पंचवर्षीय योजना में विश्वविद्यालय के छात्रावास, पुस्तकालय, कैन्टीन और महाविद्यालय भवनों आदि आवश्यक कार्यों के लिए लगभग ४५ लाख रु० की राशि स्वीकृत की गई थी। इस राशि में किसी भी विकासकार्य के लिए आर्थिक अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पिछले दो से भी अधिक वर्षों में नहीं दिया था। कुलपति महोदय ने अपने पद का कार्यभार ग्रहण करने पर सबसे पहले इस समस्या पर ध्यान दिया और प्रसन्नता की बात है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्वीकृत रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ करने तथा भवनों के निर्माण के लिए धन उपलब्ध कराने की स्वीकृति दे दी है।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए अनुदान आयोग ने श्रद्धानन्द शोध संस्थान की वृहत् योजना के अन्तर्गत लगभग १ करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। यह राशि सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्वीकृत राशि से अलग होगी। इस केन्द्र के अन्तर्गत वैदिक साहित्य, भाषा विज्ञान, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के अध्ययन, अनुसंधान और प्रकाशन की व्यवस्था होगी। योग का क्रियात्मक तथा अनुसंधानात्मक अध्ययन कराया जाएगा तथा पुराविद्याओं, प्राचीन भारतीय इतिहास,

संस्कृति एवं पुरातत्व के अद्यतन तथा अधुनातन आधार पर पठन-पाठन की व्यवस्था सुलभ होगी। हिमालय की प्राकृतिक सम्पदा की सुरक्षा, गंगा प्रदूषण नियंत्रण, पर्यावरण अनुसन्धान, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का जनजीवन से सहकार तथा ग्रामीण क्षेत्र के परिविस्तार का कार्यक्रम भी विश्वविद्यालय इसी योजना के अन्तर्गत करेगा। ये कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्यों, आदर्शों, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार कार्यक्रमों तथा भावात्मक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जागरण की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने यह भी सूचित किया है कि प्रौढ़ शिक्षा, ग्राम विकास, पर्यावरण अनुसन्धान, स्वास्थ्यशिक्षा तथा खेल-खूद से सम्बन्धित कार्यक्रमों के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना में उक्त राशि के अतिरिक्त अनुदान मिलेगा। विश्वविद्यालय के समुचित और समग्र विकास की दिशा में यह एक सराहनीय क़दम है।

गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली का यह प्रभाव है कि इस समय विश्वविद्यालय में भारत और भारत से बाहर के विदेशी छात्र भी शिक्षाध्ययनरत हैं। इनमें मारिशस के विरजानन्द उमा, फीजी के राजेश्वरप्रसाद, दक्षिण अफ्रीका के राधेसिंह तथा सूरीनाम के आनन्दकुमार विरजा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन्डोनेशिया से भी दो छात्र शोध-कार्यार्थ गुरुकुल आए हैं।

विश्वविद्यालय में जहाँ वेद, दर्शन, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर, वनस्पति विज्ञान, प्राणीविज्ञान, माइक्रोबाइलोजी, भौतिकी, गणित तथा रसायन जैसे विषय स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़े-पढ़ाए जा रहे हैं, वहीं संस्कृत, अंग्रेजी तथा योग के प्रशिक्षणार्थ दक्षतापाठ्यचर्या और डिप्लोमा भी चल रहे हैं। कामर्शियल मैथड्स ऑव कैमिकल एनालेसिस जैसे सफल व्यवसायोन्मुख पाठ्यचर्चाएँ भी चल रही हैं।

इस वर्ष के उल्लखनीय कार्यक्रमों में दर्शन विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति जन्मशती समारोह रहे हैं। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महा-महिम श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी गुरुकुल पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। ११ अगस्त को विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह हुआ। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने की। सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा कार्य परिषद् और शिष्ट परिषद् के संमान्य सदस्य भी उपस्थित हुए। वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, परिद्रष्टा गुरुकुल कांगड़ी ने आशीर्वाद दिया। स्नातकों को दीक्षा-भाषण माननीय श्री चीमनभाई मेहता, शिक्षा राज्यमंत्री भारत सरकार ने दिया। इस अवसर पर श्री मेहता, डा० विजयेन्द्र स्नातक तथा डा० इन्द्रसेन जेतली को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानदउपादि विद्यामार्तण्ड से अलंकृत किया गया। वेद, संस्कृत, अंग्रेजी तथा हिन्दी साहित्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक प्रदान किए गए।

विश्वविद्यालय के विद्वान शोध-संगोष्ठियों में भाग लेने के लिए देश-विदेश जाते रहते हैं। इस सत्र में डा० एस० एल० सिंह, प्रो० गणित विभाग, फ्रांस; डा० रजनीश दत्त कौशिक, रसायन विभाग, कनाडा और फ्रांस; डा० बी० डी० जोशी, प्रो० जन्तुविज्ञान, फिनलैंड और फ्रांस तथा डा० पुरुषोत्तम कौशिक वनस्पति विभाग, इंग्लैंड गए।

विश्वविद्यालय के सभी विभागों में पठन-पाठन, लेखन, अनुसन्धान का कार्य सुचारू रूप से चला। इन सबका विस्तृत विवरण यथास्थान देखा जा सकता है।

प्रस्तुत प्रगति विवरण विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों, घटनाओं और परीक्षा-परिणाम, आय-व्यय तथा उन सभी सूचनाओं से पूर्ण है जिनकी अपेक्षा विश्वविद्यालय से की जाती है। श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय परिद्रष्टा जी, माननीय कुलपति जी तथा सभी विभागों के अध्यक्षों तथा सहयोगी महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने विश्वविद्यालय को प्रगति की ओर उन्मुख करने में क्रमशः मुझे प्रेरणा, आशीर्वाद, सहयोग दिया।

अन्त में, मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली; हरयाणा, पंजाब एवं दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारूरूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते रहे हैं।

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

———

गुरुकुल कांगड़ी का दीक्षान्त समारोह ।। अगस्त 90 को सम्पन्न हुआ। मंच पर बाएँ से श्री सोमपाल सांसद्, श्री स्वामी ओमानन्द जी, आचार्य प्रियव्रत जी परिद्रष्टा, श्री स्वामी आनन्द बोध जी, प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति, श्री चिमन भाई मेहता, शिक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार, श्री सुभाष विद्यालंकार कुलपति, डा० विजयेन्द्र स्नातक तथा प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य एवं उपकुलपति कलकदना करते हुए।
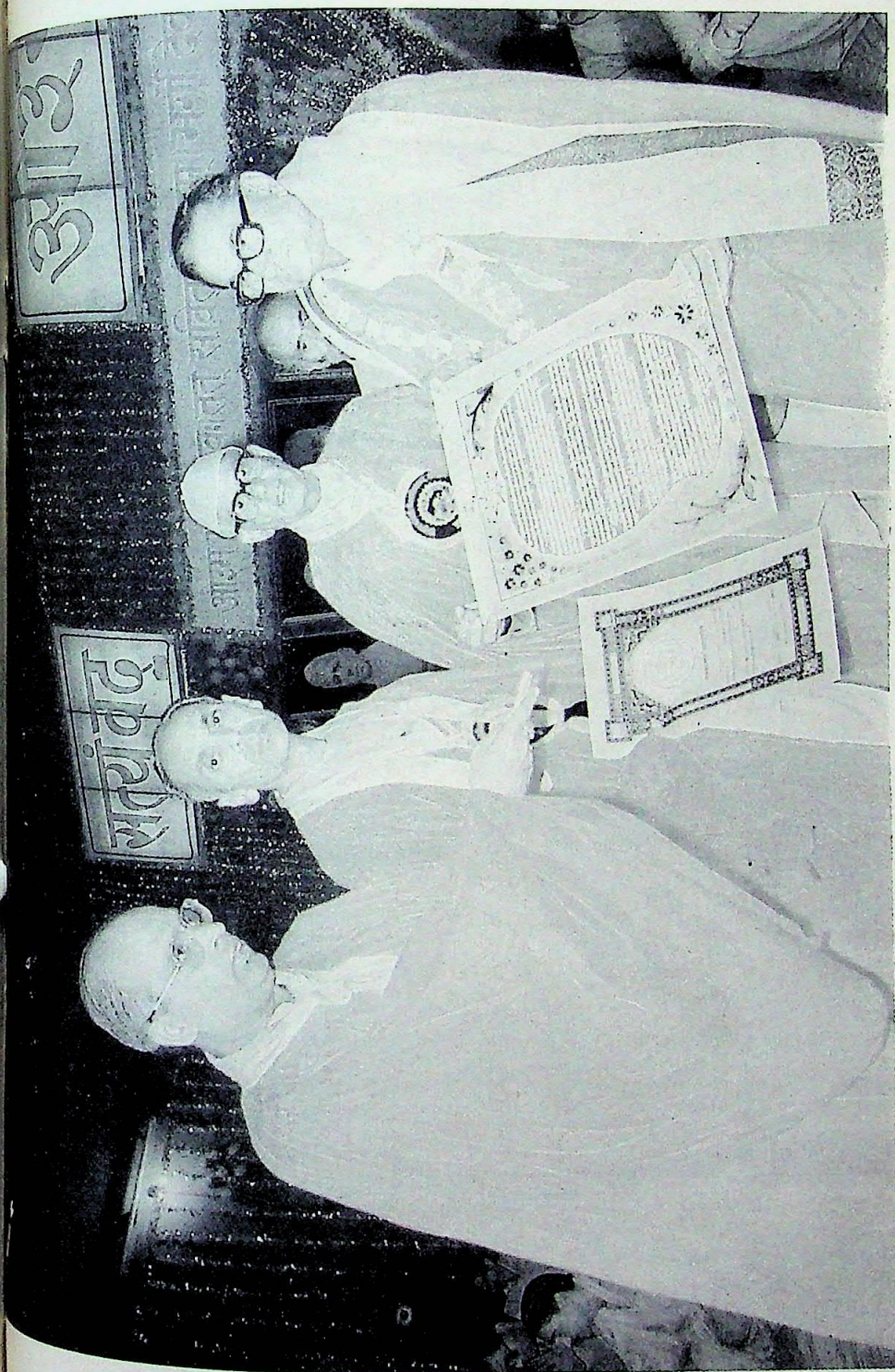
गुरुकुल के दीक्षान्त अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री चिमनभाई मेहता, शिक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार को विद्यामार्तण्ड की मानद् उपाधि प्रदान की गई। पूजोपाधि तथा अभिनन्दन-पत्र प्रदान करते हुए कुलपति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक को विद्यामार्तण्ड की मानद् उपाधि प्रदान करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार। कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह प्रसन्न मुद्रा में कुलपति
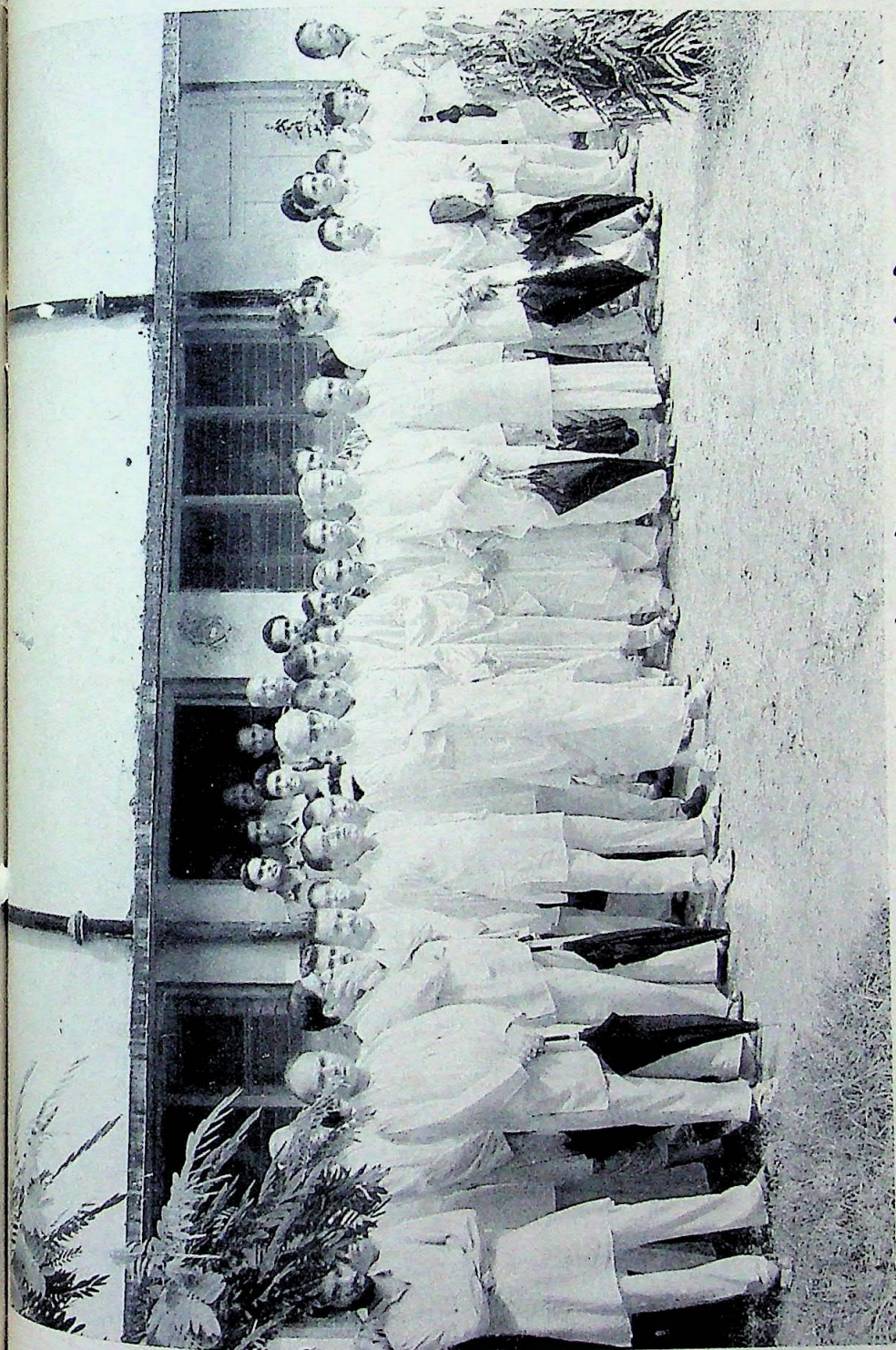
दीक्षान्त समारोह के पूर्वांग कुलपताका-आरोहण के अवसर पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का एक समूह चित्र। यहीं से शोभा यात्रा प्रारम्भ
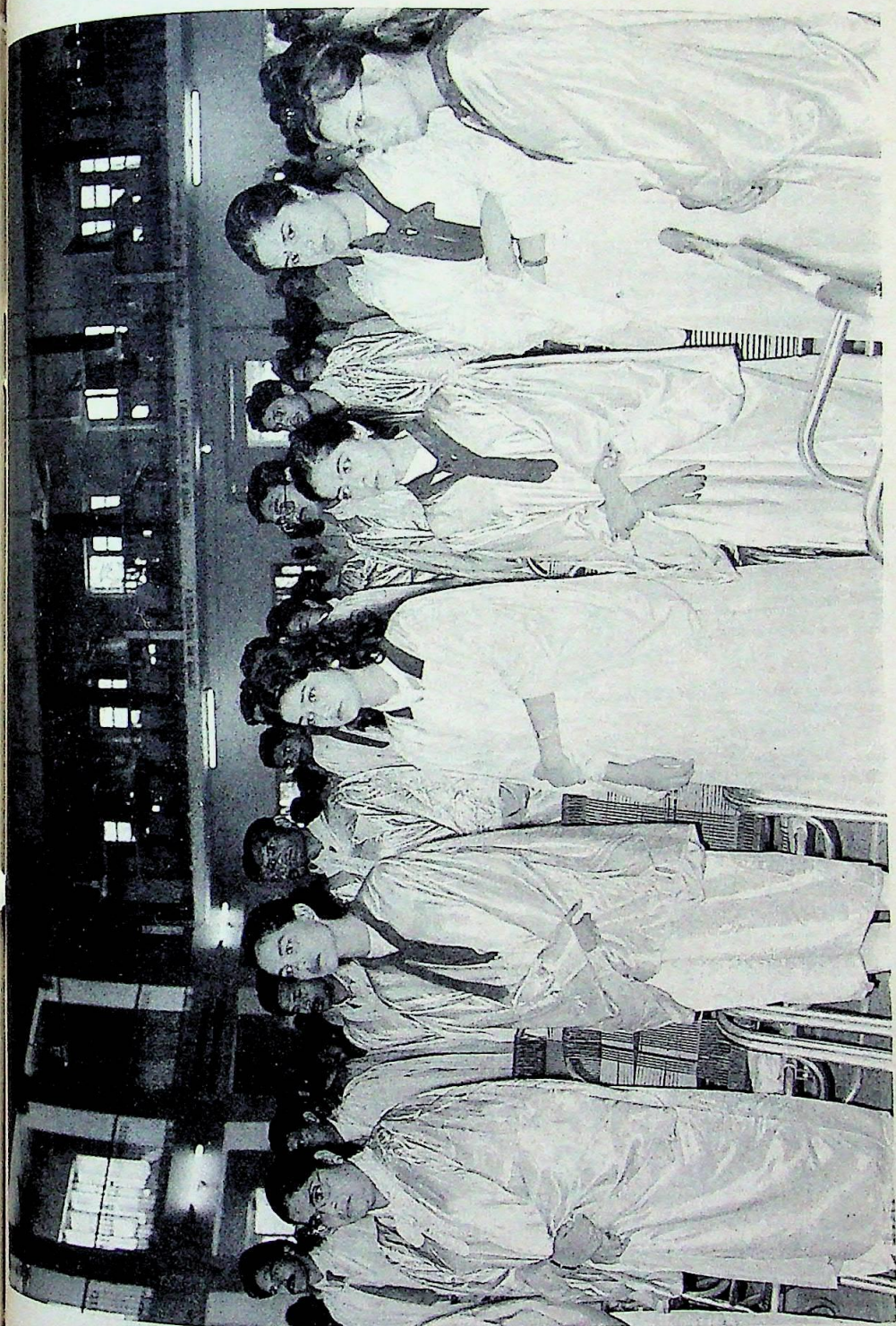
दीक्षान्त के अवसर पर उपाधि ग्रहण के लिए खड़े हुए नवस्नातक एवं नवस्नातिकाएँ।
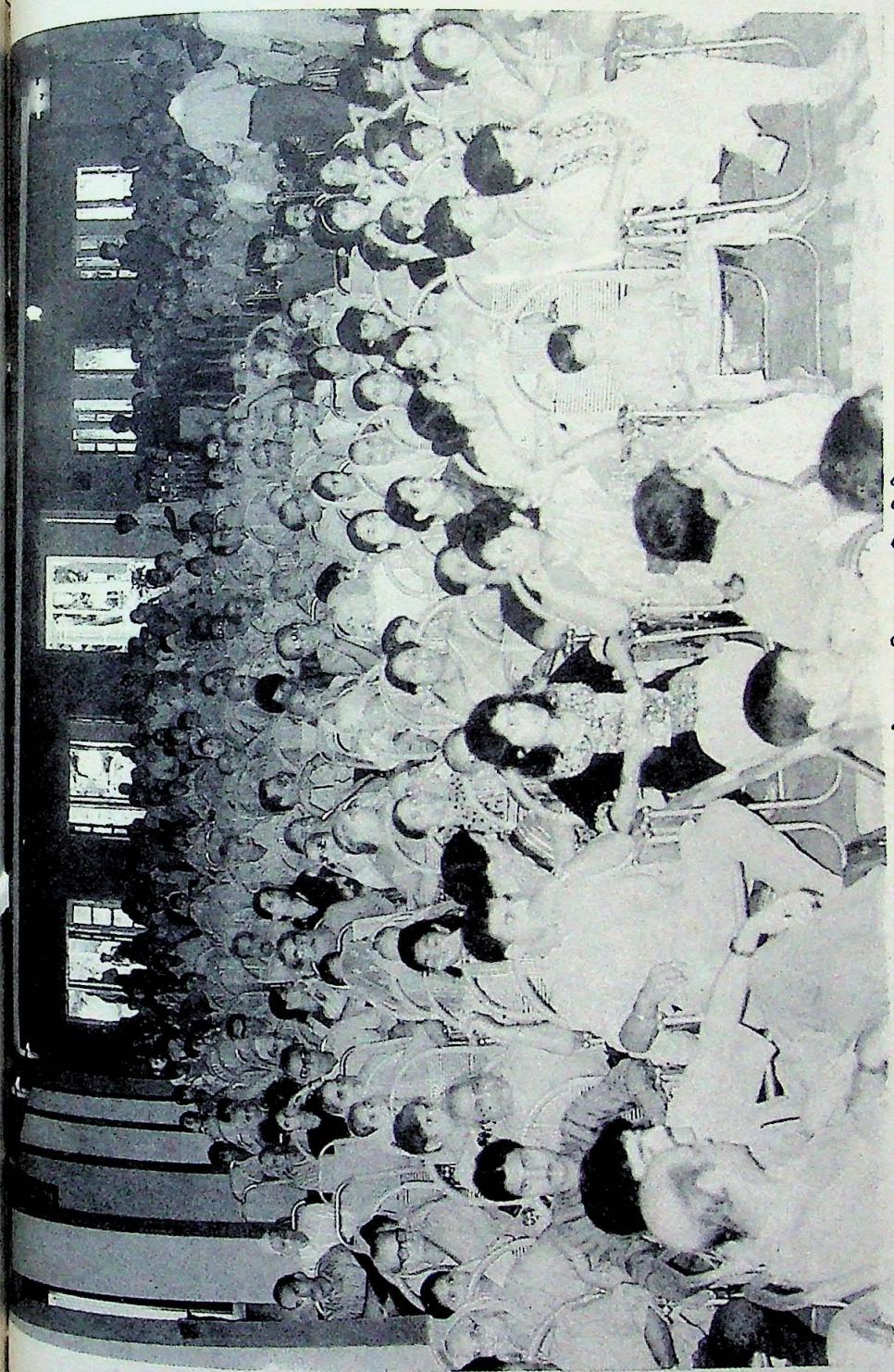
दीक्षान्त समारोह में उपस्थित नगर के नागरिक, बुद्धिजीवी, पत्रकार, प्राध्यापक तथा महिलाएँ दत्तचित्त होकर दीक्षान्त भाषण सुनते हुए।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-ललिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नए पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८९ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निःसन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्त्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इसमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों

ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देख नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय
२. साधारण (कला) महाविद्यालय
३. आयुर्वेद महाविद्यालय
४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य

खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने, पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम० ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। श्री हूजा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८९ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहाँ स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७–८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम०ए० और पी-एच०डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम० ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति

भौतिकी, रसायन, वनस्पतिशास्त्र, जन्तुविज्ञान, माइक्रोबायोलोजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलोजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायनविज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू० जी० सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसके निकट-भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों—परिद्रष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत पाँच वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला, एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत छः वर्षों से चल रहा है। तीन वर्षों से अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र' पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हुए। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति,

———

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीगण, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय शिक्षा मंत्री श्री मेहता जी, सज्जनों, बहनों और नव-दीक्षित स्नातकों !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के 90वें दीक्षान्त समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। आज से 41 वर्ष पूर्व जब मैं इस विश्वविद्यालय का स्नातक बना था तब मेरे कानों में 7 अक्टूबर, 1913 को दिल्ली भारतीय आर्य कुमार सम्मेलन में दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का यह उद्बोधन गूंज रहा था—"सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष आत्मा, सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्"—अर्थात् यह आत्मा सत्य से मिलता है, तप से मिलता है, तप का पालन सम्यक् ज्ञान के बिना नहीं होता और सम्यक् ज्ञान ब्रह्मचर्य अर्थात् गुरु, शास्त्र तथा परमेश्वर की कृपा और इन्द्रिय निग्रह बिना दृढ़ नहीं होता।

प्रिय ब्रह्मचारियों !

मेरे अग्रज स्नातकों ने ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के लिए मर-मिटने वाले महापुरुषों के व्रत का निर्वाह करते हुए कुलमाता के गौरव की वृद्धि की है। पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, पण्डित विश्वनाथ, स्वामी समर्पणानन्द, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, पण्डित जयचन्द्र, डा० सत्यकेतु, पण्डित रामनाथ तथा पण्डित चन्द्रगुप्त जैसे अनेक स्नातकों ने साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन और राष्ट्रसेवा के क्षेत्रों में जो कार्य किये हैं, उनसे देश-विदेश में गुरुकुल का यश और गौरव बढ़ा है। मेरी इच्छा है कि आप इस परम्परा को आगे बढ़ाएँ तथा कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को चरितार्थ करें। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से आप अपने आस-पास ऐसा वातावरण बनाएँ जिससे समाज और देश का ध्यान आपकी ओर जाए। स्मरण रखो, "सत्येनोत्तभिता पृथिवि" यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना समाज का कोई नियम अनुकरणीय नहीं हो सकता। यदि सत्य आपके जीवन का अवलम्बन है तो मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त हूँ। यही सत्यसंकल्प हमारे प्रति तुम्हारी गुरुदक्षिणा होगी।

सज्जनों !

हम सौभाग्यशाली हैं कि आज सुप्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद्, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय श्री चीमन भाई जी मेहता, शिक्षा राज्यमंत्री, भारत सरकार, दीक्षान्त भाषण देने के लिए गुरुकुल पधारे हैं । श्री मेहता पिछले पचास वर्षों से समाजसेवा का कार्य कर रहे हैं । उनके जीवन पर महात्मा गांधी, महर्षि दयानन्द, सरदार पटेल तथा विनोबाजी का गहरा प्रभाव है । सन् 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन तथा 1955 के गोवा-दिव आन्दोलन में वह जेल गए । 1984 से आप राज्यसभा के सदस्य हैं । इससे पूर्व आप गुजरात विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं । गुजरात के श्रम, परिवहन और जेल मंत्री के रूप में आपने उल्लेखनीय कार्य किए हैं । कांग्रेस संसदीय समिति, वित्त मंत्रालय, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, गुजरात इंटक किसान प्रकोष्ठ, सौराष्ट्र किसान सभा तथा गुजरात कौमी एकता समिति आदि संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य कर आपने समाजसेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान प्रतिष्ठित किये हैं । गुजराती और अंग्रेजी में दर्शन, राजनीति और अर्थशास्त्र पर तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर आपने उच्चकोटि की पुस्तकों की रचना की है । आप सफल पत्रकार भी हैं। चीन, जापान, सोवियत संघ, जर्मनी आदि अनेक देशों की आपने यात्रा की है । आज समस्त कुलवासी ऐसे मनीषी व्यक्ति को अपने बीच पाकर धन्य हैं, जो निष्ठावान्, समाजसेवी, राज-नीतिशास्त्र के पंडित और भारतीय जीवनमूल्यों एवं सिद्धान्तों के पोषक हैं तथा जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी है । आपने गुरुकुल के विकास में रुचि लेकर इस राष्ट्रीय शिक्षा मंदिर के पुनरुद्धार का द्वार खोला है । मैं शिक्षा मंत्री जी का इस अवसर पर हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी हमारे बीच पधार कर हम सबका गौरव बढ़ाया है ।

आर्य बन्धुओं !

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास की संक्षिप्त चर्चा करना संभवतः अप्रासंगिक नहीं होगा ।

इस विश्वविद्यालय को पिछले दो वर्षों में अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। सातवीं पंचवर्षीय योजना में स्वीकृत विकास की राशि नहीं मिल पा रही थी और अनेक स्वीकृत रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ नहीं हो सकीं थीं । मुझे यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय की गुरुकुल के प्रति सद्भावना और सहृदयता से विश्वविद्यालय की ये कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं ।

पिछले दिनों विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों ने विश्वविद्यालय की 8वीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श करने हेतु हमें आमंत्रित किया था । आयोग के अधिकारियों ने विचार-विनियम के दौरान स्पष्ट कहा कि गुरुकुल कांगड़ी

गुरूकुल के वार्षिकोत्सव पर उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी० सत्य नारायण रेड्डी सभामण्डप में पधारते हुए।
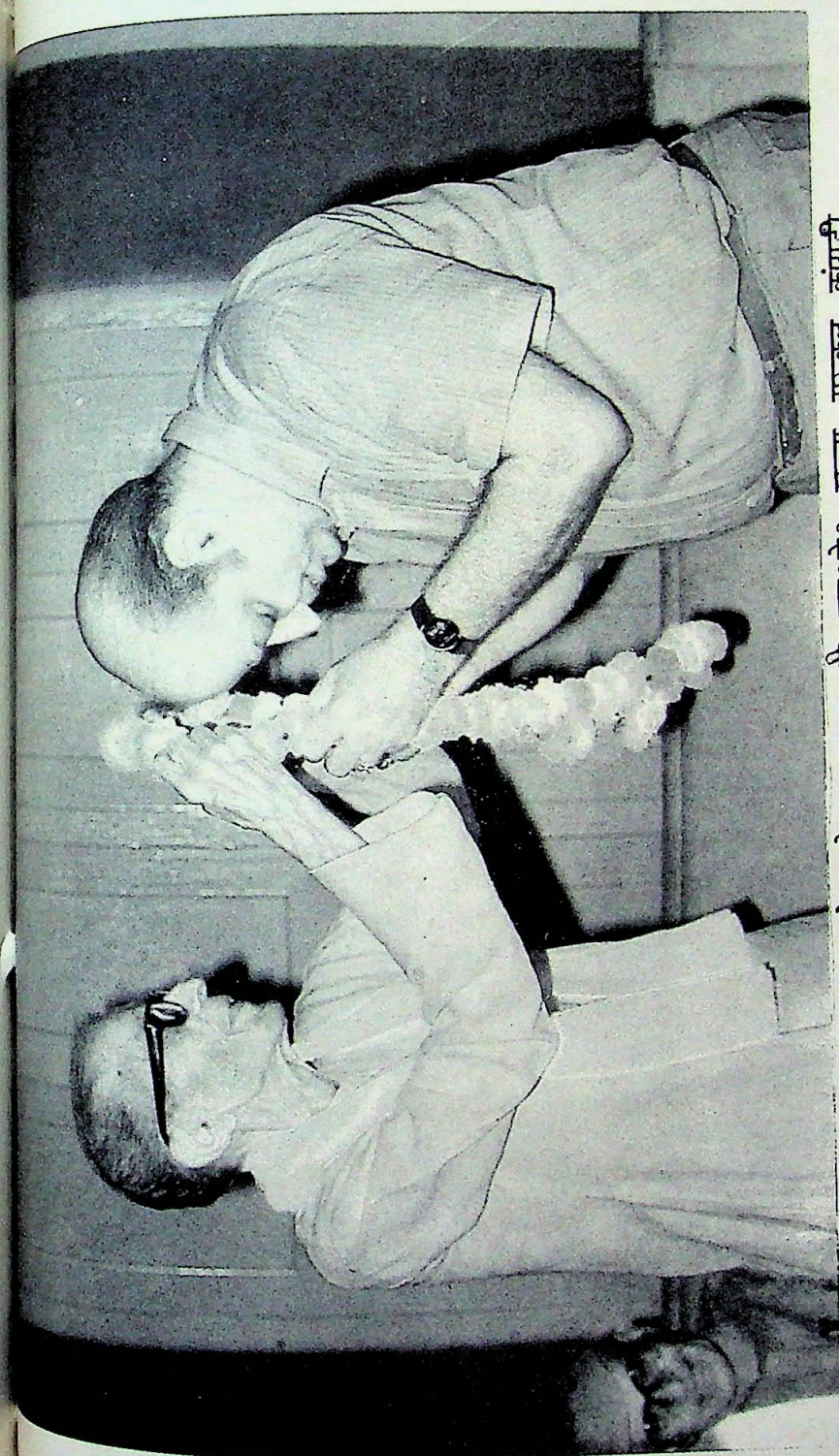
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री एस0के0 खन्ना गुरूकुल कांगड़ी पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की गतिविधियों का निरीक्षण किया तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्रों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर माननीय खन्ना जी का स्वागत करते हुए परिद्रष्टा माननीय आचार्य प्रियव्रत वेद - वाचस्पति। सम्मान समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो0 शेर सिंह ने

विश्वविद्यालय की स्थापना जिन आधारभूत उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति करने हेतु की गई है, उन्हें पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से हर प्रकार की सहायता प्रदान की जाएगी ।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने आयोग के अधिकारियों को सूचित किया कि आठवीं पंचवर्षीय योजना में श्रद्धानन्द शोध संस्थान की गतिविधियों को बढ़ाने का भी प्रस्ताव है । इसके अनुसार विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन, वैदिक साहित्य की पाठ्य-पुस्तकों के लेखन, चैकोस्लाविका सोवियत संघ और अन्य स्लाव भाषा-भाषी विद्वानों के भारतीय विद्याओं से सम्बन्धित ग्रन्थों के अनुशीलन और अनुवाद की योजनाओं पर भी कार्य किया जाएगा । उपरोक्त कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शिक्षकों के अतिरिक्त पद, पुस्तकों तथा आवश्यक उपकरणों और भवनों आदि के लिए अनुदान स्वीकृत कर दिया है ।

इस वर्ष 16 से 18 नवम्बर को पहली बार इस विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है । इसमें सम्पूर्ण भारत के वैदिक तथा संस्कृत-साहित्य और भारतीय विद्याओं की विभिन्न धाराओं के लगभग तीन हज़ार विद्वानों के पधारने की सम्भावना है ।

नया शिक्षासत्र 11 जुलाई, 1990 से प्रारम्भ हो चुका है । मुझे यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि विज्ञान महाविद्यालय, वेद महाविद्यालय तथा मानविकी महा-विद्यालय के सभी विभागों में विद्यार्थी पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रविष्ट हुए हैं । अब विश्वविद्यालय में शिक्षा प्रतिदिन प्रातः 9-30 बजे यज्ञ और वैदिक प्रार्थना के साथ प्रारम्भ की जाती है ।

विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, संस्कृति, पुरातत्व और प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान जैसे विषयों के उच्च अध्ययन और अनुसंधान का कार्य कर रहा है, वहाँ कम्प्यूटर, वनस्पति विज्ञान, माइक्रोबायलोजी, भौतिकी, रसायन, जीवशास्त्र और गणित जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन–अनुसंधान का कार्य भी सुचारू रूप से सम्पन्न कर रहा है । यहाँ संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए भी विशेष पाठ्यक्रम का प्रबन्ध है । अंग्रेजीदक्षता पाठ्यचर्या भी सुचारू रूप से चल रही है । योग का एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है । इसके अतिरिक्त योग प्रशिक्षण के लिए चार-चार मास के दो पाठ्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं । प्रौढ़ शिक्षा, प्रसार कार्यक्रम, ग्रामसुधार, योग प्रशिक्षण, अंग्रेजी–संस्कृत दक्षता पाठ्यक्रम तथा कॉमर्शियल मैथड्स आफ कैमिकल एनालाइसिस जैसे व्यवसायोन्मुख डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण देकर विश्वविद्यालय समाज और देश की आत्मिक तथा भौतिक आवश्यकताएँ भी पूरी कर रहा है । इस शिक्षासत्र से कम्प्यूटर में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की भी व्यवस्था कर दी गई है । राष्ट्रीय सेवा योजना

और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी देश की मिट्टी से जुड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। राष्ट्रीय विकास की रचनात्मक धारा के साथ जुड़े बिना वे शास्त्रवेत्ता तो हो सकते हैं पर जीवनवेत्ता या आत्मवेत्ता नहीं।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने पिछले वर्ष जिन ग्रन्थों का प्रणयन किया, उनमें से उल्लेखनीय ग्रन्थ इस प्रकार हैं :

१—"आथर्वणिक राजनीति"—डा० भारतभूषण विद्यालंकार।
२—"बृहदारण्यकोपनिषद् : एक विवेचन"—डा० मनुदेव बन्धु।
३—"महर्षि दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य में समाज का स्वरूप"—डा० सत्यव्रत राजेश।
४—"एनिमल प्रोटेक्शन अण्डर चेंजिग एनवाइरनमेण्ट्स"—प्रो० वी०डी० जोशी।
५—"वैदिक दर्शन"—डा० जयदेव वेदालंकार।

संस्कृत विभाग के छात्र ब्रह्मचारी हरिशंकर तथा ब्रह्मचारी जयेन्द्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आए। इसी प्रकार ब्रह्मचारी राजेश तथा ब्रह्मचारी ताराचन्द ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की भाषण प्रतियोगिता में विजय-वैजयन्ती प्राप्त की। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन तथा संस्कृत अकादमी उत्तरप्रदेश की प्रतियोगिताओं में भी वे विजयी हुए।

दर्शन विभागाध्यक्ष डा० जयदेव वेदालंकार ने इस वर्ष विभाग में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इसमें पंजाब, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कर्नाटक तथा प्रयाग विश्वविद्यालयों के दार्शनिकों ने भाग लिया।

हिन्दी पत्रकारिता के पितामह, गुरुकुल के प्रथम स्नातक और कुलपति, स्वतंत्रता सेनानी, सांसद तथा हिन्दी के उन्नायक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशति का आयोजन भी हिन्दी विभाग की ओर से हुआ। समारोह की अध्यक्षता वेदों के उद्‌भट् विद्वान तथा विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। हिन्दी के विश्रुत आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक, पूर्व आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'भारतीय मनीषा के प्रतीक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति" विषय पर व्याख्यान दिया। प्रह्लाद का "इन्द्र जन्मशति" विशेषांक भी विभागाध्यक्ष डा० राकेश के उद्योग से प्रकाशित हुआ।

विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षक व्याख्यान देने के लिए समय-समय पर पधारे। इनमें से श्रीमती लक्ष्मीबाई, डा० पी० अवतार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, डा० कृष्णदत्त वाजपेयी, सागर विश्वविद्यालय, डा० रामनाथ वेदालंकार, डा० रमाशंकर तिवारी, डा० वेदप्रकाश उपाध्याय, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, डा० रमाकान्त शुक्ल, डा० महेन्द्रकुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० शिवशेखर मिश्र, भू० पू० विभागाध्यक्ष लखनऊ

विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। काशी विद्यापीठ के कुलपति डा० त्रिभुवनसिंह भी विश्वविद्यालय में पधारे। विश्वविद्यालय में आयोजित संस्कृत-दिवस समारोह में भारत सरकार के संस्कृत परामर्शदाता डा० रामकृष्ण शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। हिन्दी दिवस पर आयोजित गोष्ठी में अन्य विद्वानों के अतिरिक्त डा० श्यामसुन्दर शुक्ल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपने विचार प्रस्तुत किए। फिज़ी से हिन्दी पढ़ने के लिए आए छात्र नेतराम शर्मा ने फिज़ी में हिन्दी-शिक्षण के लिए डा० विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन में पाठ्यपुस्तक लिखी।

इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त विदेशी छात्र भी अध्ययन कर रहे हैं। इनमें मारीशस के विरजानन्द उमा, फिज़ी के राजेश्वर प्रसाद, दक्षिण अफ्रीका के राधेश सिंह, सूरीनाम के आनन्दकुमार विरजा के नाम उल्लेखनीय हैं।

देश की विभिन्न प्रतियोगी-परीक्षाओं तथा प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं में भी इस विश्वविद्यालय के छात्र सफलता प्राप्त कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस विश्वविद्यालय के छात्र अखिल भारतीय एवं प्रान्तीय सेवाओं में चुने गए हैं।

इस वर्ष रुड़की विश्वविद्यालय के एम० टेक० जियोफिजिक्स पाठ्यक्रम के लिए ३०० प्रत्याशियों में से इस विश्वविद्यालय के छात्र नवनीत कुमार ने प्रथम तथा संजय उप्रेती ने सातवाँ स्थान प्राप्त किया। एक अन्य छात्र अनुराग शर्मा मर्चेन्ट नेवी में ट्रेनी नौटिकल आफीसर के रूप में चुना गया है।

पुरातत्व संग्रहालय—

गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय दर्शनीय है। सिन्धु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शती तक की विभिन्न पुरातन वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं मुद्राए यहाँ संकलित हैं। इस संग्रहालय के श्रद्धानन्द कक्ष में स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल, दुर्लभ चित्र, पत्र तथा संदेश आदि सुरक्षित हैं। इस वर्ष छः हजार दर्शक यह संग्रहालय देखने आए। इस वर्ष केन्द्रीय कक्ष के उपरी भाग में मृण्मूर्ति कक्ष, सिन्धु सभ्यता वीथिका तथा केन्द्रीय कक्ष में लघुचित्र दीर्घा बढ़ाई गई।

पुस्तकालय :—

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग डेढ़ लाख पुस्तकें हैं। शोधकार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में आते हैं। संग्रहीत वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, आर्यसमाज, समाजशास्त्र तथा हस्तलेखों से संबन्धित 7500 प्रविष्टियों की बृहद् सूची प्रकाशित की गई है। पुस्तकालय

में इस वर्ष दो शक्तिशाली कम्प्यूटर टर्मिनल लगाए गए। पहले 148 पत्र-पत्रिकाएँ पाठकों के लिये मँगाई जा रही थीं, इस वर्ष इनकी संख्या बढ़कर 433 हो गई है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के 46 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में से 23 केन्द्र पुरुषों के तथा 23 केन्द्र महिलाओं के थे। इन केन्द्रों का संचालन हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदायों के क्षेत्रों, पिछड़े वर्ग के इलाकों तथा निर्बल-दलित बस्तियों में किया गया। छात्रों के मार्गदर्शन के लिये "काउन्सिलिंग सेल" की स्थापना की गई।

श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। राष्ट्रीय सेवा योजना के डा० दिनेश भट्ट ने समन्वयक डा० जयदेव वेदालंकार के निरीक्षण में दस-दिवसीय शिविर हरिपुर ग्राम में लगाया। जनसाक्षरता अभियान, सड़क निर्माण, वृक्षारोपण तथा गाँव के निवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण इस शिविर की विशेषता रही। "वनौषधियों से स्वास्थ्य लाभ" विषय पर आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल के विद्वान डा० विनोद उपाध्याय ने ग्रामवासियों को जानकारी दी। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय छात्र सेना का प्रशिक्षण शिविर रायपुर में आयोजित किया गया।

विज्ञान महाविद्यालय में भौतिकविज्ञान, रसायन, गणित, जन्तुविज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, माइक्रोबायलोजी में अध्ययन-अध्यापन तथा शोध कार्य चल रहा है। पिछले वर्ष विज्ञान महाविद्यालय के जो प्रोफेसर अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में गये उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

१–डा० एस० एल० सिंह—गणित विभाग—फ्रान्स
२–डा० रजनीशदत्त कौशिक—रसायन विभाग—कनाड़ा और फ्रान्स
३–डा० बी० डी० जोशी—जीवविज्ञान विभाग—फिनलैण्ड और फ्रान्स
४–डा० पुरुषोत्तम कौशिक-वनस्पतिविज्ञान विभाग—इंग्लैण्ड

विज्ञान महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में अनेक शोध-योजनाओं पर भी कार्य चल रहा है।

गणित विभाग "जरनल आफ नेचुरल एण्ड फिजिकल साइन्स" शोध पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। इसके विनियम से विदेशों से १२ हजार रु० की विदेशी मुद्रा खर्च की ७ पत्रिकाएँ विश्वविद्यालय को प्राप्त हुईं।

विश्वविद्यालय की अन्य शोध पत्रिकाओं आर्यभटट् के सम्पादक डा० विजय शंकर, वैदिक पथ के सम्पादक डा० राधेलाल वार्ष्णेय, प्रह्लाद के सम्पादक डा० विष्णुदत्त राकेश, गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक डा० जयदेव वेदालंकार, हिमालयन जरनल आफ एन्वायरनमेंट एण्ड जूलोजी के सम्पादक डा० बी० डी० जोशी तथा प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान पत्रिका के सम्पादक डा० एस० एल० सिंह को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय सेवा योजना, क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया। श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित कार्टून प्रातयोगिता तथा सांस्कृतिक संध्या आकर्षण के केन्द्र बने रहे।

प्रिय ब्रह्मचारियों !

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वर्तमान परिस्थितियों में नितान्त उपयोगी है। चरित्रनिर्माण, राष्ट्रीय अखण्डता, एकता, धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता, समाजसेवा, सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक न्याय, समानता आत्मानुशासन तथा मानव जाति की सेवा इसका लक्ष्य है। मैं चाहता हूँ कि नव-दीक्षित स्नातक स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाएँ तथा चरित्र, सत्याचरण और आत्मानुशासन की शक्ति लेकर जीवन की चुनौतियाँ स्वीकार करें। मैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको सदैव सफलता मिले।

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों, ब्रह्मचारियों, अभिभावकों तथा आर्यजनों का भी मैं साधुवाद करता हूँ। माननीय कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी तथा सुमान्य परिद्रष्टा आचार्य पण्डित प्रियव्रत जी का भी मैं कृतज्ञ हूँ। मुझे विश्वास है कि इन महानुभावों के मार्गदर्शन और संरक्षण में विश्वविद्यालय का गरिमापूर्ण अतीत लौट आयेगा। इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर 102 स्नातकों को अलंकार, पी-एच० डी०, एम० एस-सी०, एम० ए० तथा बी० एस-सी० की उपाधियाँ प्रदान की जा रही हैं।

प्रभु से प्रार्थना है—

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः॥

—सुभाष विद्यालंकार
कुलपति

11 अगस्त, 1990

दीक्षान्त भाषण

द्वारा

माननीय श्री चीमन भाई मेहता

शिक्षा राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

पूज्य संन्यासीवृन्द, माननीय कुलाधिपति जी, कुलपति जी, आचार्यगण, ब्रह्मचारियों, आर्य-बन्धुओं तथा बहनों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस साधना-स्थली में आकर मैं गौरवमिश्रित हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। देशप्रेम, बलिदान, आत्मत्याग, संस्कृतिगत निष्ठा तथा मूल्य आधारित जीवन चेतना को विकसित करने में उन्होंने सारा जीवन लगा दिया। मैं सर्वप्रथम आचार्यप्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति विनम्रता के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इस दीक्षा-मण्डप में विराजमान प्रत्येक व्यक्ति नवस्नातकों के साथ इस अवसर पर उन्हें श्रद्धासहित स्मरण कर रहा होगा।

भाइयों !

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब भारतीय पुनर्जागरण और सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन शुरू हुए तब महर्षि दयानन्द ने आदर्श समाज व्यवस्था, राज्य व्यवस्था और परिपूर्ण शिक्षा नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की। सर्वसाधारण जनता को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उस समय नहीं था। परिणामस्वरूप बहुसंख्यक जनता निरक्षर रह गई। अज्ञान, शोषण और रूढ़ियों में जकड़ी जनता कैसे खुशहाल रह सकती थी? महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने तत्कालीन शिक्षण-संस्थाओं के प्रतिरोध में अपनी शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित कीं तथा सभी वर्णों, वर्गों, जातियों और उप-जातियों के बालक-बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के, समानरूप से अध्ययन-अध्यापन का अवसर प्रदान किया। दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य था कि शिक्षा सबके लिये अनिवार्य हो। कोई भी वर्ग विद्या से वंचित न रहे। स्त्रीशिक्षा और समाज में स्त्रियों की समान तथा आदरपूर्ण स्थिति का समर्थन भी स्वामी जी ने ही किया। आधुनिक संवेदना से पूर्ण शिक्षा की गंगा, दयानन्द के कमण्डल से ही इस देश में प्रवाहित हुई। उनका सतत् प्रयत्न रहा कि अध्ययन के दौरान जाति या कुलसूचक कोई चिन्ह

विद्यार्थी के नाम के साथ न रहे। धनी-निर्धन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, छूत-अछूत, ऊँच-नीच, समान-असमान तथा अपने-पराये का कोई भेद न रहे। आज शिक्षण-संस्थाओं में बढ़ते अनाचार, अराजकता और लोभ, देश की नई पीढ़ी को जिस दिशा में ढकेल रहे हैं, उससे उबरने के लिये स्वामी दयानन्द, गांधी, रवीन्द्रनाथ और श्री अरविन्द के शिक्षादर्शन को स्वीकार करना जरूरी है। लोग समझते हैं कि दयानन्द और गांधी की जरूरत हमें आज़ादी के दौरान थी, पर सच्चाई यह है कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद हमें उनकी और जरूरत है। साधारण पाठशालाओं और पब्लिक स्कूलों के बीच दौड़ते शिक्षार्थियों को देख कर लगता है कि शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है। हमने तय किया है कि शिक्षा सबको समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिये। आज तकनीकी शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में लाखों रुपया देकर सामान्य प्रतिभा का छात्र भी प्रवेश पा जाता है और निर्धन व्यक्ति प्रतिभाशाली होकर भी उससे वंचित रह जाता है। प्रतिभा के साथ न्याय होना चाहिये और सबको समान अवसर मिलना चाहिये। आज देश में अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता है। शिक्षा, रोजगार और विकास के अवसर सबको दिए जाएँ, इसके लिए हमारी सरकार कृतसंकल्प है। आज विश्वविद्यालयों को मानविक और तकनीकी ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाना होगा। देशव्यापी साक्षरता के अभियान के साथ विस्तार की योजनाओं को लागू करना विश्वविद्यालयों का कर्त्तव्य है। पुस्तकीय शिक्षा तब तक अपूर्ण है, जब तक हम ज्ञान-विज्ञान का लाभ जन-साधारण तक नहीं पहुँचाते।

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। अतः विश्वविद्यालयों का कार्य एक निश्चित अवधि में विद्यार्थियों को उपाधि बाँट देना ही नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य तो व्यक्ति में ज्ञानार्जन की तीव्र लालसा जगा देना है। वह विश्वविद्यालय में हो या विश्वविद्यालय से बाहर, उसे समाज की नित-नवीन समस्याओं से परिचित होना है और उनका समाधान ढूँढना है। स्वामी दयानन्द ने ससार के शिक्षाविदों के सामने सतत् शिक्षा का आदर्श रखा था। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी लक्ष्य को आगे बढ़ाया। यदि माता-पिता शिक्षित, चरित्रवान और धर्मनिष्ठ हैं तो संतान में भी इन संस्कारों का आरोपण हो सकेगा। माता-पिता के पश्चात् शिक्षक उसके निर्माण में योग देता है। प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्व-विद्यालयों तक शिक्षा की धुरी चरित्र निर्माण होनी चाहिये। हमें रोजगारोन्मुख शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन देना है पर यह कार्य केवल सरकार नहीं कर सकती। विद्यार्थी में तीव्र ज्ञान-पिपासा, अन्वेषण, सहिष्णुता, तप, विद्यार्जन तथा राष्ट्र और समाजसेवा की भावना जाग्रत करना है। इसकी उपलब्धि में शिक्षक समुदाय की अहम भूमिका है और उन्हें इस भूमिका को देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि में पूरा करना होगा। आज संसार को ऐसे ही विद्यार्थी और आचार्य चाहिए।

गुरुकुल, दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज, संस्कृत पाठशालाओं, उपदेशक विद्यालयों,

कन्या महाविद्यालयों, बालमन्दिरों तथा कृषि, शिल्प, कला केन्द्रों के माध्यम से शिक्षा के उन्नत रूप का प्रचार किया तथा सभी प्रकार के पाठ्यक्रम लागू किये। गुरुकुल में संस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन इतिहास तथा साहित्य के साथ यद्यपि विज्ञान के विषय भी पढ़ाये जाते हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आज से ७०–८० वर्ष पूर्व यहाँ ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का माध्यम हिन्दी था और हिन्दी में भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र तथा विकासवाद पर पुस्तकें भी लिखी गई थीं। यह बड़ी बात है और आज चुनौती भी, जो कहते हैं आधुनिक विज्ञान मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में नहीं पढ़ाया जा सकता। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया और उस समय इस दिशा में पहल की, जब वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण भी नहीं हुआ था। अंग्रेजी भाषा सम्पन्न है, उसका पठन-पाठन अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। पर यह मोह हमारी चेतना को जकड़े रहे यह आवश्यक नहीं है। हमें देशी भाषाओं की शब्द-सामर्थ्य पर भरोसा रखना चाहिये।

विनोबा जी ने एक लिपि की बात की थी। यदि ऐसा हो जाए तो सारी भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे के निकट हो जाएँ और हम भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंध जाएँ। भाषा, धर्म, जाति, रंग और प्रान्त की संकीर्ण भावना से ऊँचा उठकर ही हम देश को मजबूत बना सकते हैं।

नवस्नातकगण !

आप जीवनक्षेत्र में प्रवेश करने जा रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप राष्ट्र के कर्त्तव्यशील नागरिक बनोगे। मैं चाहता हूँ कि आपका जीवन देश और समाज की चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करे और आप सच्चे मन से उनका सक्रिय निदान खोजकर मानवमात्र की सेवा करें। आचार्यप्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था : "लेना तो सभी संसार जानता है। तुम इतने योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ, हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बंद न होने दो। जो सरोवर भरता है, वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।"

इन शब्दों के साथ मैं आपके सुखद, समृद्ध और उज्ज्वल जीवन की मंगल-कामना करता हूँ तथा आपके कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी तथा कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे आपके बीच उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया। मेरी कामना है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का संगम हो। अपने मूल स्वरूप की रक्षा करते हुए यह क्षेत्र के अभाव की पूर्ति में सहायक हो तथा यहाँ के स्नातक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक क्षेत्र में अग्रणी बनें। इस मंगलाशा के साथ आप सभी के प्रति हार्दिक शुभ-कामनाएँ।

11 अगस्त, 1990 —चीमन भाई मेहता

वेद और मानविकी महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२	२ (१ पद रिक्त)	५
संस्कृत साहित्य	१ (रिक्त)	२	२ (१ पद रिक्त)	५

२—मानविकी महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
हिन्दी साहित्य	१	१ (रिक्त)	३	५
दर्शनशास्त्र	१ (रिक्त)	१	३	५
अंग्रेजी साहित्य	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२ (१ पद रिक्त)	१	२ (१ पद रिक्त)	५

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल	लिपिक
(२) ,, बलवीरसिंह	भृत्य
(३) ,, रतनलाल	,,
(४) ,, रामसुमत	माली

४—मानविकी महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज	योग प्रशिक्षक
(२) ,, लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक
(३) ,, हंसराज जोशी	लिपिक
(४) ,, अशोक कुमार डे	,,

(५) श्री कुँवर सिंह	भृत्य
(६) ,, हरेन्द्रसिंह	,,
(७) ,, प्रेमसिंह	,,
(८) ,, रामपद राय	,,
(९) ,, सन्तोषकुमार राय	फील्ड अटैन्डेन्ट
(१०) ,, मानसिंह	चौकीदार
(११) ,, जग्गन	सफाई कर्मचारी

५—शिक्षासत्र दिनांक १९-७-८९ से आरम्भ हुआ।

६—अलंकार तथा विद्याविनोद में इस वर्ष छात्रसंख्या इस प्रकार रही:—

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	———	०२	———	०२
विद्याविनोद	मानविकी वर्ग	१२	०९	———	२१
वेदालंकार	———	०३	०१	०१	०५
विद्यालंकार	———	१८	१५	०९	४२

७—सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक सोमवार को प्रातः साप्ताहिक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ आदि का आयोजन किया जाता रहा, जिसमें सभी शिक्षक, छात्र तथा कर्मचारी सम्मिलित हुए।

८—दिनांक २-९-८९ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में "संस्कृत-दिवस" समारोह-पूर्वक मनाया गया।

९—दिनांक १५-९-८९ को श्रीमती लक्ष्मीबाई धर्मपत्नी श्री पी० शिवशंकर, तत्कालीन मंत्री मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार का "RELEVANCE OF GITA" विषय पर भाषण हुआ।

१०—दिनांक २२-९-८९ को श्रद्धानन्द व्याख्यानमाला के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डा० पी० अवतार का "कम्प्यूटर वरदान अथवा अभिशाप" विषय पर व्याख्यान हुआ।

११—दिनांक ६-११-८९ को भूतपूर्व टैगोर प्रोफेसर के०डी० वाजपेयी का विशेष व्याख्यान हुआ।

१२—दिनांक १६-१२-८६ से १८-१२-८६ तक दर्शन-विभाग के तत्वावधान में "अखिल भारतीय दर्शन सम्मेलन" एवं "उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन" आयोजित किया गया।

१३—दिनांक २३-१२-८६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस के अवसर पर प्रातः श्रद्धानन्द द्वार से शोभा-यात्रा निकाली गई। यज्ञोपरान्त श्रद्धान्जलि-सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८६ से २६-१२-८६ तक अखिल भारतीय संस्कृत गीत प्रतियोगिता, त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता, योग, शरीर सौष्ठव, कबड्डी, वालीबाल आदि प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं जिनमें विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया।

१४—दिनांक ७-२-९० को डा० रमाशंकर तिवारी का "महाकवि कालिदास" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुआ।

१५—दिनांक ८-३-९० को डा० रामनाथ वेदालंकार, पूर्व आचार्य एवं उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का "कालिदास के काव्यों में प्रतिबिम्बित वैदिक संस्कृति" विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ।

१६—दिनांक १३-३-९० को पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशती पर श्रद्धान्जलि व्याख्यान संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, डा० रामनाथ वेदालंकार, तथा डा० धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के व्याख्यान हुए।

१७—इस वर्ष संस्कृत विभाग के दो छात्र ब्र० हरिशंकर तथा ब्र० जयेन्द्र, कुरुक्षेत्र वि०वि० में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में भाग लेने गये तथा **प्रथम स्थान प्राप्त** किया। इसी विभाग के दो अन्य छात्रों, ब्र० राजेशकुमार तथा ब्र० ताराचन्द ने पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित भाषण-प्रतियोगिता में भाग लिया तथा **प्रथम स्थान प्राप्त** किया।

१८—दिनांक २५-४-९० से वेद एवं मानविकी महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ प्रारम्भ हुईं तथा १२-५-९० को विधिवत् सम्पन्न हुईं।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग में वैसे तो आज से ९० वर्ष पूर्व सन् १९०० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ ही अध्ययन शुरू हो गया था किन्तु सन् १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस विश्वविद्यालय को समकक्ष विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान करने के बाद यह विभाग वर्तमान स्वरूप में आया। इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० श्रीपाद दामोदार सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति एवं पं० रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वान कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
एम० ए०	वैदिक साहित्य	०५	०२	——	०७
अलंकार	,,	२१	१६	१०	४७
विद्याविनोद	,,	१२	११	—	२३
				योग	७७

विभागीय उपाध्याय

१-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार – प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति

२-डा० भारतभूषण विद्यालंकार – वेदाचार्य, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान) पी-एच०डी०
—रीडर

३-डा० सत्यव्रत राजेश – सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, वेदशिरोमणि, एम०ए०, पी-एच०डी०
—रीडर

४-डा० मनुदेव बन्धु—एम०ए० (वेद, हिन्दी, संस्कृत), व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी०
—प्रवक्ता

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य

१–वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, अध्यक्ष वेद विभाग ने वर्ष ८९-९० में आचार्य एवं कुलपति, मुख्याधिष्ठाता तथा अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग के अतिरिक्त पदों पर भी

कार्य किया। वैदिक रश्मियाँ भाग ४ तथा केनोपनिषद् उनके नवीन ग्रन्थ हैं। आर्य संदेश, वैदिक पथ तथा प्रह्लाद आदि पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

विश्वविद्यालयीय कार्यों के अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों तथा आर्यसमाजों द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भी भाग लिया है। ८ मई ८९ को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में "वेद मानवजीवन के शाश्वत प्रेरणास्रोत" विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। १५, १६ जुलाई को मथुरा परिष्कारिणी नगर में वैदिक संस्कृति और वैदिक आदर्श जीवन पर व्याख्यान हुए। ४ अगस्त को डी०ए०वी० कालेज मुजफ्फरनगर का विद्यासत्रारंभ-उद्घाटन भाषण दिया। १६ मार्च को मयराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा विशेष व्याख्यान दिया। २३ जनवरी को मुरादाबाद में आयोजित दर्शन परिषद् के अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में भाषण दिया। अप्रैल में कन्हैयालाल डी०ए०वी० कालेज रुड़की के बी०एड० विभाग के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा व्याख्यान दिया। प्रभात आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ में आयोजित पर्यावरण संगोष्ठी में व्याख्यान दिया। टंकारा तथा जयपुर में आयोजित आर्यसमाज के अधिवेशनों में वेद पर व्याख्यान दिए। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठकों में भाग लिया।

अब तक ५ शोधार्थियों को आपके निर्देशन में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है तथा शेष कार्य कर रहे हैं।

२-डा० भारतभूषण विद्यालंकार

शैक्षिक योग्यता–विद्यालंकार, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान),वेदाचार्य,
पी-एच०डी०

शैक्षणिक अनुभव –

स्नातक स्तर – २४ वर्ष
स्नातकोत्तर – २४ वर्ष

निर्देशन– चार छात्र पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। दो छात्रों ने एम०ए० के शोध प्रबन्ध लिखे। अनेक छात्र शोध-निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं।

विशेष– अनेक विदेशी छात्र पी-एच०डी० स्तर पर निर्देशन प्राप्त कर चुके हैं।

प्रकाशन– आथर्वणिक राजनीति (मान्य महामहिम राज्यपाल बी० सत्यनारायण रेड्डी द्वारा विमोचन), विभिन्न शोध लेख।
सायण एवं महीधर के भाष्यों में यौगिक प्रयोग (अप्रकाशित ।

सेमिनार

१–चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।

२–विश्वेश्वरानन्द वैदिक आश्रम, होशियारपुर (चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय) में अध्यक्षता ।

३–प्रभात आश्रम, मेरठ ।

४–वेद सम्मेलन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (वर्तमान युग में वेद की प्रासंगिकता)

५–वेद सम्मेलन (कानपुर)

लेख- देवविद्याविद् आचार्य यास्क
पर्यावरण सुधार में वेदों का योगदान
वैदिक आख्यान—एक अध्ययन, इत्यादि अनेक लेख ।

विशेष-योग का एकवर्षीय डिप्लोमा ।
भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक विचारों का प्रचार-प्रसार ।
विभिन्न विश्वविद्यालयों में पी-एच०डी० एवं स्नातकोत्तर परीक्षा का परीक्षकत्व ।

३–डा० सत्यव्रत राजेश

शैक्षणिक अनुभव–दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में अध्यापन और गुरुकुल घटकेश्वर, हैदराबाद में आचार्य पद पर कार्य करने के बाद १९६८ से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अध्यापन ।

निर्देशन– ३ छात्रों को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त । १ छात्र का शोध-प्रबन्ध जमा तथा २ छात्र सम्प्रति शोध-कार्य कर रहे हैं ।

अन्य कार्य

१– वैदिक संग्रहालय का निदेशन एवं वैदिक प्रयोगशाला की व्यवस्था ।

२– उत्तर प्रदेश, हरयाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक प्रान्त के अनेक नगरों, उपनगरों तथा ग्रामों में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार ।

३– अनेक सभाओं और संगोष्ठियों में विचार-विमर्श और अनेक पत्रिकाओं में लेखन ।

४– विश्वविद्यालय की ओर से पर्यवेक्षणार्थ गुरुकुल भैंसवाल में कार्य ।

५– गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं अन्य अनेक विश्वविद्यालयों का परीक्षकत्व ।

प्रकाशन– शोध-प्रबन्ध का महामहिम राज्यपाल द्वारा विमोचन ।

४–डा० मनुदेव बन्धु

(क) इस वर्ष डा० मनुदेव बन्धु का शोध-ग्रन्थ "बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन" छपकर तैयार हो गया है । निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

१–भाष्यकार दयानन्द

२–वेद मन्थन

३–मानवता की ओर

४–चरित्र निर्माण

५–वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

(ख) अनेक निबन्ध भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

(ग) रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत (हरयाणा) में आयोजित "दर्श-पौर्णमास यज्ञ" को देखने तथा सीखने के लिए गये।

(घ) वेद सम्मेलनों, संस्कृत सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों में भाग लिया और अनेक स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए निमंत्रित किये गये।

(ङ) वैदिक प्रयोगशाला में सहायक निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

—रामप्रसाद वेदालंकार

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग

संस्कृत–विभाग

संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रमुख अंग रहा है। इस विभाग के उपाध्यायों एवं छात्रों का गुरुकुल के यश को अभिवृद्ध करने में प्रशंनीय योगदान रहा है। प्राय: संस्कृत के छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी वाग्मिता की अमिट छाप अंकित की है। इस विभाग के अनेक मेधावी छात्र आज विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्तुत्य शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भी इस विभाग के छात्रों का चयन हो चुका है। संस्कृत विभाग का संपोषण एव विकास डा० रामनाथ जी वेदालंकार जैसे संस्कृत-जगत के मूर्धन्य विद्वान् द्वारा प्रशंसनीय पद्धति के साथ हुआ है।

विभागीय उपाध्याय—

१. आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री — रीडर एवं अध्यक्ष
२. डा० महावीर अग्रवाल —रीडर
३. डा० रामप्रकाश शर्मा —प्रवक्ता
४. डा० सत्यदेव —प्रवक्ता (तदर्थ २ सितम्बर ८९ से १५ मई ९० तक)

विभागीय विवरण—

विभाग में २ सितम्बर ८९ को संस्कृत दिवस सोल्लास मनाया गया। इसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के संस्कृत परामर्शक श्री रामकृष्ण शर्मा ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में डा० रामनाथ जी वेदालंकार तथा ब्रह्मनिष्ठ ऋषिकेशवानन्द जी महाराज उपस्थित हुए। इस अवसर पर पंचपुरी के समस्त संस्कृत विद्वानों की उपस्थिति प्रशंनीय रही।

२३ नवम्बर ८९ को विभाग में शोध समिति की बैठक सम्पन्न हुई। २१-२२ दिसम्बर ८९ को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के छात्र-प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का संयोजन डा० महावीर जी अग्रवाल ने विभागाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री के निर्देशन में सफलतापूर्वक किया। इस कार्यक्रम में विभागीय उपाध्याय डा० रामप्रकाश शर्मा एवं डा० सत्यदेव का प्रशंसनीय योगदान रहा।

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में समायोजित कालिदास समारोह में भाग लेने के लिए संस्कृत विभाग के दो छात्र जयेन्द्रकुमार तथा ताराचन्द, श्री वेदप्रकाश शास्त्री विभागाध्यक्ष के निर्देशन में गए।

डा० रामप्रकाश शर्मा के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण करने वाले तारानाथ मनाली तथा डा० निगम शर्मा के निर्देशन में शोध करने वाली श्रीमती सुखदा तथा श्रीमती राजेन्द्र कौर की मौखिकी परीक्षा सम्पन्न हुई।

संस्कृत विभाग के छात्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश लखनऊ, संस्कृत विद्यापीठ अम्बाला, भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, निर्धन निकेतन संस्कृत महाविद्यालय आदि अनेक स्थानों पर प्रतियोगिताओं में भाग लेने गए तथा सभी स्थानों से विजयश्री प्राप्त करते रहे।

विभाग में विशिष्ट व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित विद्वान्—

दिनांक ६ फरवरी ९० को डा० रमाशंकर जी तिवारी का संस्कृत विभाग में कालिदास पर एक विशेष व्याख्यान डा० रामनाथ जी वेदालंकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

८ मार्च ९० को संस्कृत विभाग में विशिष्ट व्याख्यान डा० रामनाथ जी वेदालंकार का "कालिदास की कृतियों में प्रतिबिम्बित वैदिक संस्कृति" पर सम्पन्न हुआ।

१५ मार्च ९० से ३१ मार्च ९० तक संस्कृत विभाग में अभ्यागत विद्वान् के रूप में डा० शिवशेखर जी मिश्र (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) आमन्त्रित किए गए। उन्होंने निरन्तर १७ दिनों तक विभाग को अपनी बौद्धिक सम्पदा से लाभान्वित किया।

डा० वेदप्रकाश उपाध्याय चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय तथा प्रो० रमाकान्त शुक्ल अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजधानी कालिज दिल्ली ने विभाग में पधार कर त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता के कार्यक्रमों की अध्यक्षता की।

विभागीय उपाध्यायों के कार्यों का विवरण—

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

शोधलेख प्रकाशन— "पर्यावरण समस्याया वैदिकं समाधानम्" संस्कृत शोधलेख पावमानी पत्रिका में प्रकाशित।

"कालिदासस्योपरि वेदानां प्रभावः" शोधलेख परिशीलनम् पत्रिका में प्रकाशनार्थ।

"ऋग्वेदे पारिवारिकादर्शाः" शोधलेख आदर्श संस्कृत पत्रिका तथा अन्तर्राष्ट्रीय वेदपीठ शोध पत्रिका में प्रकाशित।

"वेदानुसरणं धर्मः" लेख आर्य समाज हापुड़ की स्मारिका में प्रकाशनार्थ।

"भाति मे भारतम् में राष्ट्रीय भावना" लेख प्रकाशनार्थ।

विद्वद्गोष्ठी में भाग– ६ नवम्बर ८६ को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ में कालिदास पर विशेष व्याख्यान दिया जो अकादमी के अधिकारियों तथा विद्वानों द्वारा विशेष प्रशंसा का विषय बना।

१२ नवम्बर ८६ से १५ नवम्बर तक विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मनाए गए कालिदास जयन्ती समारोह में भाग लेकर शोधगोष्ठी में पत्रवाचन किया।

२ दिसम्बर ८६ को दयानन्द वेद विद्यालय, गौतमनगर दिल्ली में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में विशिष्ट वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया जो संस्कृत में था।

१३ जनवरी ९० को गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में शोध गोष्ठी में भाग लेकर शोधपत्र का वाचन किया।

२०, २१ जनवरी ९० को लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय साहिबाबाद में आयोजित अन्तर्विद्या संगोष्ठी में भाग लेकर संस्कृत सत्र की अध्यक्षता की तथा शोधलेख पढ़ा।

४ मार्च तथा ६ मार्च ९० को निर्धन निकेतन हरिद्वार में भारत सरकार की सहायता से आयोजित कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर में संस्कारों पर विशेष व्याख्यान दिए।

१५ से १७ मार्च ९० तक ऋषि संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार में आयोजित मेरठ-मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लिया तथा विद्वद् गोष्ठी में भाग लिया।

२० मार्च ९० को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित पांडुलिपि प्रशिक्षण शिविर में व्याख्यान दिया।

शोध निर्देशन– इस समय श्री शास्त्री के शोध निर्देशन में सात शोध छात्र कार्यरत हैं। कुमारी किरणमयी ने अपना शोधप्रबन्ध मूल्याङ्कन हेतु प्रस्तुत कर दिया है।

सांस्कृतिक प्रचार– विभिन्न धार्मिक संस्थानों, शिक्षण संस्थानों एवं प्रचार प्रतिष्ठानों में समय समय पर पहुँचकर लगभग ८० व्याख्यान वेद, धर्म, दर्शन एवं

संस्कृति को लक्ष्य करके दिए। विशेषकर महर्षि दयानन्द के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्यान दिए गए।

डा० महावीर अग्रवाल

योग्यता– एम० ए० (संस्कृत, वेद, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, पी-एच० डी०

विशिष्ट शोध-गोष्ठियों में प्रतिनिधित्व

१) स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान, प्रभात आश्रम, मेरठ में १३ जनवरी ९० को आयोजित शोध संगोष्ठी में "पर्यावरण एवं वेद" विषय पर शोधलेख प्रस्तुत किया।

२) एस० एस० वी० कालेज हापुड़ में १५ जनवरी ९० को आयोजित अन्तर्विद्या संगोष्ठी में द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा "संस्कृत के विकास में साम्प्रदायिक चुनौतियाँ" विषय पर शोधपत्र पढ़ा।

३) एल० आर० पी० जी० कालेज साहिबाबाद में २० जनवरी ९० को आयोजित शोध संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में "आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय एकता" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४) महाविद्यालय ज्वालापुर में मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से आयोजित पाण्डुलिपि प्रशिक्षण शिविर में १७ मार्च ९० को "भाषा का विकास सिद्धान्त" विषय पर व्याख्यान दिया।

५) वेद महाविद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर, देहली के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत सम्मेलन में "आधुनिक युग में संस्कृत की प्रासङ्गिकता" विषय पर व्याख्यान दिया।

६) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के वार्षिकोत्सव पर वेद एवं संस्कृत सम्मेलन में ११ अप्रैल को व्याख्यान दिया।

७) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में ११ अप्रैल को आयोजित शिक्षा सम्मेलन में व्याख्यान किया।

८) उपदेशक महाविद्यालय, हावड़ा में दीक्षान्त समारोह पर मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान किया।

प्रकाशित शोध-लेख—

१) पर्यावरण एवं वैदिक वाङ्मय
२) आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय एकता
३) प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति के साहित्य में राष्ट्रीय भावना

शोध-निर्देशन—

वर्ष १९८९-९० में तीन छात्रों ने लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये तथा एक छात्रा पी-एच० डी० हेतु शोध कार्यरत ।

संयोजन कार्य—१. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में संस्कृत-दिवस समारोह का संयोजन किया ।

२. स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण एवं संस्कृत-गीत प्रतियोगिता का संयोजन किया ।

सांस्कृतिक प्रचार – कलकत्ता, देहली, कानपुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर, पुणे, नागपुर, आदि नगरों, महानगरों में विभिन्न शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा समायोजित समारोहों में वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत साहित्य एवं भारतीय संस्कृति पर लगभग ८० व्याख्यान दिए ।

डा० रामप्रकाश शर्मा

१. आगरा विश्वविद्यालय आगरा द्वारा नियुक्त परीक्षक के रूप में दो पी-एच० डी० शोध-प्रबन्धों का मूल्याँकन ।

२. "शैवलिनी पत्रिका" (संस्कृत) का सम्पादन ।

३. दीक्षितकृत "शब्दकौस्तुभ" पर शोधपरक लेख प्रकाशनाधीन ।

डा० सत्यदेव

विशिष्ट संगोष्ठीः—

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल (मेरठ) में १३ जनवरी १९९० को "पर्यावरण प्रदूषण का वैदिक समाधान" विषयक गोष्ठी में भाग लिया ।

प्रकाशनः—१– काव्यभेदेषु पद्य काव्यस्य स्थानम् (गुरुकुल पत्रिका)

२– श्रुति सुधा (गुरुकुल पत्रिका)

३– ईश वन्दना (दिव्य ज्योति) शिमला

४– "पर्यावरण प्रदूषण का वैदिक समाधान" पावमानी, गु०प्र०आ० भोला झाल मेरठ में प्रकाशनार्थ स्वीकार किया गया ।

५– "राम के जीवन में धर्म" नामक लेख गुरुकुल पत्रिका, गु०का०वि०वि०, हरिद्वार के लिये स्वीकृत ।

सम्मानित कार्य—

(क) विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में २३ जनवरी १९९० को प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक के पद पर कार्य किया ।

(ख) आर्य समाज मन्दिर, ज्वालापुर, हरिद्वार में आयोजित प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक का पदभार संभाला ।

संयोजन कार्य—

(क) १२ मार्च १९९० को आर्य समाज विरावधा में समायोजित आर्य युवक सम्मेलन का संयोजन किया ।

(ख) ८ मार्च १९९० को कालिदास विषयक विशेष संगोष्ठी में गु०का०वि०वि०, हरिद्वार में सह-संयोजक का कार्य किया ।

विशिष्ट विद्वद् गोष्ठियों में व्याख्यान—

(क) ज्वालापुर, आर्य वानप्रस्थाश्रम, रुड़की, विरावधा (मेरठ), मुजफ्फरपुरनंगला कनवाड़ा (मेरठ), तमेला गढ़ी (मेरठ), बेवर (मैनपुरी), अनन्तपुर नन्हेड़ा (हरिद्वार), इकबालपुर (हरिद्वार), दतियाना (मुजफ्फरनगर) आदि ग्रामों और नगरों में समायोजित सम्मेलनों, आर्य समाज के उत्सवों में वेद, भारतीय दर्शन, धर्म उपनिषद्, भारतीय संस्कृति पर लगभग ४० व्याख्यान दिए ।

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ :—

१–श्री ओमप्रकाश मिश्र	—	प्रोफेसर
२–श्री सतीशचन्द्र धमीजा	—	रीडर
३–डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	—	प्रवक्ता
४–श्री लाल नरसिंह नारायण	—	प्रवक्ता (तदर्थ नियुक्ति)
५–श्री कुँवरसिंह नेगी	—	प्रयोगशाला सहायक (तदर्थ नियुक्ति)

इस सत्र (८९–९०) में मनोविज्ञान विभाग की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का प्रवेश निम्नांकित है :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	०७
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	११
अलंकार प्रथम वर्ष	—	१०
अलंकार द्वितीय वर्ष	—	०६
अलंकार तृतीय वर्ष	—	०५
एम०ए० प्रथम वर्ष	—	१८
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	१०

अन्य वर्षों की तुलना में विभाग की छात्रसंख्या बढ़ी है ।

इन छात्रों के अतिरिक्त विभाग में प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में ५ विद्यार्थी शोधकार्य कर रहे हैं । उनमें से कु० कमला पाण्डेय ने अपना शोधकार्य पूरा कर अपना शोध–प्रबन्ध "A Psycho–Social Study of the Attitudes of Acceptors and Non–Acceptors towards Family Planning Programme" विषय पर जमा करा दिया है । उनके परीक्षकों की रिपोर्ट्स आ जाने के बाद उनकी मौखिक परीक्षा डा० अरुण कुमार सेन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक १२–५–९० को ली जा चुकी है । अन्य छात्रों की प्रगति भी सन्तोषजनक है ।

इस वर्ष श्री लाल नरसिंह नारायण की प्रवक्ता पद पर तदर्थ नियुक्ति की गई।

उन्होंने छात्रों को अपनी प्रतिभा एवं योग्यता से लाभान्वित किया। उनके द्वारा छात्रों के विकास हेतु किए गए कार्य निम्नांकित हैं—

१—स्नातकोत्तर छात्रों को लोकतांत्रिक नेतृत्व के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु विश्वविद्यालय से लगभग १५ किलोमीटर दूर सोंग नदी पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सामूहिक भोज का आयोजन किया। जिसकी पूर्ण व्यवस्था छात्रों ने श्री लाल नरसिंह नारायण के निर्देशन में स्वयं की।

२—हरिद्वार से रायवाला जाकर दैनिक मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन।

३—लोक सभा तथा विधान सभा आम चुनावों पर छात्रों के दल द्वारा निम्नलिखित बातों का गहन अध्ययन :

क–चुनाव सम्बन्धी भविष्यवाणियों की विश्वसनीयता।

ख–चुनाव पर विभिन्न प्रचार-माध्यमों का प्रभाव।

ग–विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और सरकार द्वारा नियंत्रित आकाशवाणी और दूरदर्शन की विश्वसनीयता।

घ–सरकारी मशीनरी की कार्यप्रणाली।

ङ–मतदान पेटियों पर कब्जा कर लेने का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

च–पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रिपोर्ट के आधार पर चुनाव आयोग की कार्य-प्रणाली का विश्लेषण।

छ–युवा छात्र, छात्राओं तथा महिलाओं का मतदान संबन्धी व्यवहार।

ज–चुनाव के बाद परिणामों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

झ–दल में शामिल छात्रों संजयकुमार, अरुणकुमार गुप्ता, सुनीलकुमार शर्मा, बालकृष्ण और सत्येन्द्रमोहन वशिष्ठ द्वारा प्राप्त परिणामों का विभिन्न समाचार-पत्रों—दैनिक जागरण, विश्वमानव, बद्री विशाल एवं दून-दर्पण में प्रकाशन।

ट–क्रास कल्चर अध्ययन, गुरुकुलीय प्रणाली के प्रचार एवं राष्ट्रीय एकता हेतु छात्रों को गोआ तक की सरस्वती–यात्रा के लिए संगठित किया। इस हेतु विश्वविद्यालय ने कुछ आर्थिक सहायता दी, शेष व्यय छात्रों ने किया। इस यात्रा की विशेषताएँ निम्नलिखित रहीं –

अ–प्रयोगस्वरूप विषय अध्यापक की अनुपस्थिति में भी छात्र पूरी तरह अनुशासित रहे।

आ–हरिद्वार से गोआ तक छात्रों ने नियमित वैदिक यज्ञ आदि वेद प्राध्यापक श्री हरिश्चन्द्र के निर्देशन में सम्पन्न किये।

४–विश्वविद्यालय के लिए जनसम्पर्क अधिकारी के दायित्वों का निर्वाह किया।

५–विश्वविद्यालय की भविष्य की कार्यप्रणाली के निर्धारण हेतु शिक्षक–शिक्षकेत्तर कर्मचारी और छात्रों की आशा-आकांक्षाओं एवं विगत क्रिया–कलापों के सर्वेक्षण में कार्यरत।

श्री सतीशचन्द्र धमीजा की पदोन्नति रीडर पद पर की गई। श्री धमीजा ने विभागीय पाठ्यक्रम के विकास एवं प्रयोगशाला के संवर्धन में उल्लेखनीय सहयोग दिया।

इस वर्ष डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव को विश्वविद्यालय द्वारा सीनियर स्केल दिया गया। उनके द्वारा विभाग एवं विषय से संबन्धित कार्य निम्नांकित हैं :

डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने रिसर्च प्रोजेक्ट का प्रस्ताव शीर्षक Job Satisfaction and Achievement Motivation–A Comparative Study of Private and Public Sectors", I.C.S.S.R. New Delhi को वित्तीय अनुदान के लिए भेजा है। डा० श्रीवास्तव ने दिसम्बर 1–2, 1989 में मानविकी तथा समाजविज्ञान विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "21st Century Perspectives on the Role of Humanities and Social Sciences in Technical Education," और जनवरी 21–29, 1990 में गांधी महाविद्यालय, उरई द्वारा आयोजित "सामाजिक तनाव—विविध परिदृश्यों में" विषय पर हुए राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया। इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ३ शोध–प्रबन्ध प्रकाशित किए गए जो कि इस प्रकार हैं :—

(1) Role of Communication in Industry and Business Organization. Personnel Today.

(2) Strikes and Lockouts—Causes and Remedial Measures, Public Administration Review.

(3) Leadership Styles among Bank Mangers. Indian Psychologist.

प्रो० ओमप्रकाश मिश्र को इस वर्ष यू० जी० सी० की एफ० आई० योजना के अन्तर्गत कानपुर विश्वविद्यालय ने विषय–विशेषज्ञ के रूप में नामित किया। इस योजना के अन्तर्गत उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय जाकर पी–एच०डी० प्रस्तावों की समीक्षा और अपनी संस्तुतियाँ यू०जी०सी० व कानपुर वि०वि० को प्रेषित कीं। इसके अतिरिक्त यू०जी०सी० ने प्रो० मिश्र को रिसर्च प्रोजेक्ट पर अनुदान देने हेतु विषय–विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया, जिसमें अनेक विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर्स द्वारा रिसर्च प्रोजेक्ट की उपादेयता एवं अनुदान पर संस्तुति मांगी गई।

प्रो० मिश्र ने गढ़वाल विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज में विषय–विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और गढ़वाल वि०व० के स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम को विकसित करने में सहयोग दिया।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की रिसर्च डिग्री कमेटी में प्रो० मिश्र ने विषय–विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और उस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विषय के पी–एच०डी० प्रस्तावों को अन्तिम रूप दिया।

इस वर्ष प्रो० मिश्र मद्रास में आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आफ क्लिनिकल साइकालोजी" में भाग लेने हेतु निमंत्रित किये गये। उन्होंने इस समेम्लन में भाग लिया और नैदानिक मनोविज्ञान से सम्बद्ध संगोष्ठियों में विचार व्यक्त किये।

प्रो० मिश्र गत तीन वर्षों की भांति इस वर्ष भी इण्डियन जर्नल आफ क्लिनिकल साइकालोजी के एडिटोरियल बोर्ड में कार्यरत रहे।

—विभागाध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग निर्बाध रूप से उन्नति की ओर उन्मुख है। वर्तमान में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर अध्ययन-अध्यापन को सुचारू रूप से चला रहे हैं।

विभागीय प्राध्यापक :—

(१) डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम० ए०, पी-एच० डी० – प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।
(२) डा० जबरसिंह सेंगर, एम० ए०, पी-एच० डी० (रीडर)
(३) डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, एल-एल० बी० (रीडर)
(४) डा० काश्मीरसिंह भिण्डर, एम० ए०, पी-एच० डी० (लेक्चरर)
(५) डा० राकेशकुमार शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० (लेक्चरर)

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध-छात्रों की संख्या—

एम० ए० प्रथम वर्ष	१७
एम० ए० द्वितीय वर्ष	१७
शोध-छात्र	१६

शोधकार्य:—विभाग में वर्तमान समय तक २४ महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य सम्पन्न हो चुका है। इस वर्ष दीक्षान्त समारोह ने शोधार्थी आर्येन्द्रसिंह को पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया गया है। उक्त शोधार्थी ने विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा के निर्देशन में अपना कार्य सम्पूर्ण किया है तथा इनका विषय "प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध" है। इसके अतिरिक्त दो शोधार्थियों ने अपने शोध-कार्य पूर्ण करके अपने शोध-प्रबन्ध जमा करा दिये हैं, उनमें क्रमशः प्रथम श्रीमती मधुबाला हैं जिन्होंने विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के निर्देशन में अपना "महाभारतकालीन युद्धप्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र" विषय पर शोध-प्रबन्ध तथा द्वितीय श्री विनोदकुमार शर्मा जिन्होंने डा० काश्मीरसिंह भिण्डर के निर्देशन में अपना "प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थायें" नामक शोध-प्रबन्ध जमा करा दिया है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थियों के शोध-कार्य प्रगति पर हैं :—

नाम	विषय	निर्देशक
१—जितेन्द्र नाथ	दी ध्यानी बुद्धाज प्रानम एण्ड बुद्धिस्ट एवेयर इन इण्डियन आर्ट	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
२—डाली चटर्जी	प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालंकरणों का चित्रण	,, ,,
३—सुधाकर शर्मा	बुद्धिस्ट स्कल्प्चर अण्डर द पालाज	,, ,,
४—डा० विनोद शर्मा	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास	,, ,,
५—श्रीमती रश्मि सिन्हा	प्राचीन भारत में समाजवाद	,, ,,
६—सुषमा स्नातिका	उत्तर और दक्षिण पंचाल : एक ऐतिहासिक पुरातात्विक अध्ययन।	,, ,,
७—ऋचा शंकर	भारत और तिब्बत के सम्बन्ध (७वीं से १२वीं शताब्दी)	,, ,,
८—कु० नीरजा	शुंगकाल में धर्म और कला	,, ,,
९—जगदीशचन्द्र ग्रोवर	ब्रह्मी स्कल्प्चर अण्डर पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
१०—ऋषिपाल आर्य	प्राचीन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व।	,, ,,
११—रजनी सेंगर	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (वैदिककाल से गुप्तकाल तक)	,, ,,
१२—प्रभातकुमार सेंगर	बुंदेलखण्ड के प्राचीन मन्दिरों का विवेचनात्मक अध्ययन	,, ,,
१३—भारतभूषण	गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० काश्मीरसिंह

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित लेख:—

वर्तमान सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार शोधपत्र प्रकाशित हुये। वर्तमान समय तक प्रो० सिन्हा की ११ पुस्तकें तथा लगभग ५५ शोध-लेख प्रकाशित हो चुके हैं। विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के क्रमशः तीन लेख प्रकाशित हुये। प्रथम "डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—सांस्कृतिक इतिहास के प्रहरी" आर्य सन्देश सितम्बर १९८९ में, द्वितीय "आर्यन हैरिटेज" म्यूजियम एण्ड रिसर्च प्रोग्राम, अगस्त १९८९ तथा तृतीय ने "स्वामी दयानन्द और रजवाड़े" आर्य सन्देश, फरवरी १९९० में।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा के दो शोध-लेख इस सत्र में प्रकाशित हुए। प्रथम "दी नेचर आफ स्टेट इन वैदिक एज" प्रो. उपेन्द्र ठाकुर फैलिसिटेशन वाल्यूम में तथा

द्वितीय "सावरनिटि इन मौर्यन पीरियड" वैदिक पथ, क्वाटरली जरनल, एल० २, नं० २, सितम्बर १९८९ में।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ:—

विश्वविद्यालय में स्थित पुरातत्व संग्रहालय के निदेशक पद पर डा० जबरसिंह सेंगर पूर्व की भाँति सफलतापूर्वक कार्य कर कर रहे हैं। डा० श्यामनारायण सिंह पूर्व वर्षों की भाँति विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव के कार्य-भार को देख रहे हैं। डा० काश्मीरसिंह ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में २५ जनवरी से २३ दिन का रिफ्रेशर कोर्स किया। डा० काश्मीरसिंह ने सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य इस वर्ष भी सम्भाला। डा० राकेशकुमार शर्मा विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० विभाग को उसके प्रभारी कम्पनी कमाण्डर के रूप में सुचारू रूप से चला रहे हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य को विभागीय बन्धुओं ने उत्साह से पूर्ण किया।

———

पुरातत्व संग्रहालय

देश की सांस्कृतिक धरोहर को संजाये हुये विश्वविद्यालय का पुरातत्व संग्रहालय उत्तरोत्तर विकासपथ पर अग्रसर है।

संग्रहालय में सिन्धु सभ्यता से लेकर २०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक की विभिन्न पुरातन वस्तुयें, कलाकृतियाँ संग्रहीत एवं प्रदर्शित हैं। विश्वविद्यालय के संस्थापक, आर्य समाज के प्रबल पोषक एवं अग्रणी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महात्मा मुंशीराम जी के जीवनवृत्त पर छायाचित्रों के माध्यम से संग्रहालय में एक विशिष्ट कक्ष सदैव आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट के अतिरिक्त संग्रहालय को अन्य शासकीय संस्थाओं से भी अनुदान प्राप्त होता रहा है। प्रतिवर्ष की भाँति इस वित्त वर्ष में भी उत्तर प्रदेश से संग्रहालय विकास हेतु २०,०००)०० रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि से प्रस्तर कक्ष को आकर्षक एवं नवीन रूप दिये जाने का कार्य किया गया है। मुद्राओं के प्रदर्शन में भी इसका कुछ उपयोग किया गया है। सातवीं पंचवर्षीय योजना से अलग विश्व विद्यालय अनुदान आयोग ने संग्रहालय विकास हेतु १,५०,०००)०० रुपये की अनुदान राशि प्रदान की है। यह राशि प्रकाशन, पुरातन कृतियों के क्रय, प्रदर्शन, फोटोग्राफिक सामग्री एवं अन्य कार्यों हेतु स्वीकृत की गई है। इसमें से ५०,०००/- की राशि प्राप्त हो चुकी है।

संग्रहालय में इस वर्ष फीजी राष्ट्र से हिन्दी के अध्ययन हेतु आये शोध-छात्र श्री नेतराम शर्मा द्वारा अमरीका एवं हांगकांग की विभिन्न ५ मुद्रायें भेंटस्वरूप प्राप्त हुई हैं। नेपाल राष्ट्र का एक सिक्का संग्रहालय के ही कर्मचारी श्री रमेशचन्द्र पाल द्वारा भेंटस्वरूप प्राप्न हुआ। वेद विभाग में कार्यरत श्री सत्यव्रत राजेश जी द्वारा ग्राम झींवरहेड़ी से प्राप्त एक पशु मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है। प्रो० (डा०) बिनोदचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष प्रा० भा० इतिहास द्वारा संग्रहालय पुस्तकालय के लिये ३ पुस्तकें भी संग्रहालय में प्राप्त हुई हैं।

इस वर्ष संग्रहालय आने वाले दर्शकों की संख्या लगभग ५५५० है। संग्रहालय आने वाले कुछ विशिष्ट दर्शकों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :—

१- डा० के डी० वाजपेयी, अवकाशप्राप्त टैगोर प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी आफ सागा।

२– श्री सैयद हिदायत हुसैन, मुख्य लेखा परीक्षाधिकारी, सहकारी समितियाँ एवं पंचायत, उत्तर प्रदेश शासन।

३– श्री नानूभाई मणिभाई देसाई, बलसार, गुजरात।

४– श्री पी० वेंकटास्वामी, भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द वि० वि० वाराणसी।

५– श्री एवं श्रीमती जगतप्रकाश तोरल, मारीशस।

६– श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी–महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश सरकार।

७– प्रो० शेरसिंह–कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

८– वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० हरिद्वार।

वर्तमान में संग्रहालय के विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं :—

१–डा० जबरसिंह सेंगर	निदेशक
२–श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
३–डा० सुखबीरसिंह	सहायक क्यूरेटर
४–श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
५–श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
६–श्री ओमप्रकाश	भृत्य
७–श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार
८–श्री गुरुप्रसाद	माली
९–श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

वर्तमान सत्र में संग्रहालय अधिकारियों की उपलब्धियाँ निम्न हैं :—

निदेशक :—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, संस्कृति, मानव संसाधन मन्त्रालय भारत सरकार एवं सांस्कृतिक कार्य निदेशालय उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ जाकर वहाँ के अधिकारियों की पूर्ण सन्तुष्टि के बाद अनुदान लाने का प्रयत्न करते रहे। आल इण्डिया म्यूजियम कांफ्रेन्स हैदराबाद में धनाभाव के कारण सम्मिलित न हो सके, जिससे गत वर्ष की संग्रहालयों की नवीनताओं की जानकारी से वंचित अवश्य रहना पड़ा।

निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर के निम्न लेख प्रकाशित हुये :—

१—युगों-युगों में नारी शिक्षा—प्रह्लाद, अप्रैल १९८९।

२—म्यूजियम आउटरीच प्रोग्राम—आर्यन हैरिटेज, अगस्त १९८९।

३—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—सांस्कृतिक इतिहास के प्रहरी, आर्य सन्देश, सितम्बर १९८९।

४—स्वामी दयानन्द और रजवाड़े—आर्य सन्देश, फरवरी १९९०।

५—पं इन्द्र विद्यावाचस्पति की इतिहास चेतना—प्रह्लाद, अप्रैल १९९०।

इसके अतिरिक्त अपने सहयोगियों को विभिन्न गैलरियों के रख-रखाव, अनुदानों के उपयोग, विशिष्ट दर्शकों को संग्रहालय की जानकारी देना, आदि कार्य भी सम्पन्न करवाये। यह प्रसन्नता की बात है कि महामहिम राज्यपाल महोदय ने संग्रहालय से दयानन्द द्वार के मध्य कच्ची सड़क के निर्माण हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग उत्तर प्रदेश के माननीय मंत्री जी को उन्होंने पत्र संख्या १२३/पी० एस०-एच० ई०, दिनांक २१ अप्रैल १९९० द्वारा लिखा कि यह सड़क तुरन्त बनवा दी जाय। आशा है यह कार्य भी सम्पन्न हो जायेगा।

संग्रहालयाध्यक्ष :—

पद के कार्यों के साथ-साथ निदेशक के आदेशों एवं उनकी अनुपस्थिति में उक्त पद के कार्यों को किया।

केन्द्रीय कक्ष के ऊपरी भाग में मृण्मूर्ति कक्ष, सिन्धु सभ्यता वीथिका का नियोजन कार्य किया। केन्द्रीय कक्ष में पेंटिंग गैलरी के नियोजन का कार्य इस समय किया जा रहा है। संग्रहालय सहायक श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ के त्याग-पत्र देने के पश्चात् उनकी कुछ विभिन्न गैलरियों का भी कार्य-भार देख रहे हैं।

लेख प्रकाशन : –

१-स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल कांगड़ी, साप्ताहिक आर्य संदेश, वर्ष १३, अंक ९, २४ दिसम्बर १९८९।

२ - सम मोर कापर आबजेक्ट फ्राम श्योराजपुर (अंग्रेजी में) पुरातत्व, नं० १९, पृष्ठ ७०—७१।

३—सिगनीफिकेन्स आफ नम्बर सेवन (अंग्रेजी में), द वैदिक पथ, वाल्यूम एल।, नं० ३ दिसम्बर १९८९, पृष्ठ ११-१३।

सहायक संग्रहालयाध्यक्ष :—

निदेशक के आदेशों का कार्यपालन करते हुये, संग्रहालय में विभिन्न गैलरियों की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया। संग्रहालय सहायक श्री बृजेन्द्र जैरथ के त्याग-पत्र देने के पश्चात् उनकी कुछ विभिन्न गैलरियों का भी कार्य-भार देख रहे हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा से समय-समय पर उचित निर्देशन मिलता रहा। इसके अतिरिक्त डा० श्यामनारायण सिंह, डा० काश्मीरसिंह एवं डा० राकेशकुमार शर्मा ने भी समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देशन देकर संग्रहालय को विकास की ओर अग्रसर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संग्रहालय लिपिक एवं अन्य सहयोगी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों ने भी संग्रहालय के रख-रखाव, दर्शकों को अधिक से अधिक सुविधा प्रदान करने, बिजली, पानी एवं अनुदानों के उपयोग में अपना पूर्ण योगदान दिया। संग्रहालय भवन के आस-पास के क्षेत्र में पुष्पवाटिका एवं वृक्षों की देख-भाल पर भी विशेष ध्यान दिया गया तथा ऐंगिल आयरन लगाकर तारबाड़ी करके पशुओं से सुरक्षित बनाया गया। इसमें माली का भी सक्रिय योगदान है। पानी की कमी को यदि दूर कर दिया जाये, तो दर्शकों के लिये और आकर्षक बनाया जा सकता है।

———

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) स्थापना—

१९१० ई० में अलंकार और दर्शनवाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम० ए० स्तर का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९८३ ई० से पी-एच० डी० हेतु शोधकार्य हो रहा है ।

संस्थापक-अध्यक्ष—स्व० प्रोफेसर सुखदेव दर्शनवाचस्पति

अपने स्थापनाकाल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शन के मौलिक ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाये तथा पाश्चात्य दर्शन-शास्त्र की अवधारणाओं पर उसके स्नातकों का गहन अध्ययन हो और वे स्नातक अपने-अपने विषय के मर्मज्ञ विद्वान् सिद्ध हों।

यह विभाग अपने इस दायित्व का निर्वाह सम्यक् रूप से कर रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार एवं प्रसार और अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुए हैं।

(२) छात्र संख्या—

विद्याविनोद	५+६=११
अलंकार	४+४+३=११
एम० ए०	९+४=१३
पी-एच० डी०	३

(३) वर्तमान अध्यापकगण—

१–डा० जयदेव वेदालंकार—रीडर एवं अध्यक्ष
२–डा० विजयपाल शास्त्री—प्राध्यापक
३–डा० त्रिलोकचन्द्र—प्राध्यापक
४–डा० उमरावसिंह बिष्ट—प्राध्यापक

(४) आई० ए० एस० और पी० सी० एस० के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था—

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये दर्शन विषय के मार्गदर्शन की निःशुल्क समुचित व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी. एच. ई. एल., हरिद्वार एवं अन्य स्थानों के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(५) राष्ट्रीय सेमीनार—

डा० जयदेव वेदालंकार के निदेशकत्व में १६ से १६ दिसम्बर ८९ तक "क्या तार्किक भाववाद तत्त्वमीमांसा का स्थान ले सकता है?" (Is logical Positivism an answer to metaphysics) विषय पर राष्ट्रीय दर्शन सेमीनार का आयोजन विभाग के तत्त्वावधान में किया गया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, पंजाब वि० वि० चण्डीगढ़, बी० एच० यू०, मेरठ, रूहेलखण्ड, गढ़वाल, बम्बई, कलकत्ता, कर्नाटक, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, तमिलनाडु, भुवनेश्वर (उड़ीसा), गोरखपुर, इलाहाबाद, दरभंगा (बिहार) आदि विश्वविद्यालयों के विद्वान् प्रतिनिधियों ने अपने-अपने शोधपत्र वाचित किये। इन शोधपत्रों को प्रकाशित भी किया गया है। विभाग के समस्त प्राध्यापक और छात्रों ने इस राष्ट्रीय सेमीनार को सफल बनाने हेतु निष्ठा से कार्य किया।

(६) प्राध्यापकगण—

(क) डा० जयदेव वेदालंकार—पद—रीडर एवं अध्यक्ष, नियुक्ति—अगस्त १९६८ (वर्तमान पद पर फरवरी १९८४ से)

(ख) योग्यतायें—एम० ए० दर्शन और मनोविज्ञान) न्यायदर्शनाचार्य, पी-एच० डी० और डी० लिट्।

(ग) शोधकार्य

(i) उपनिषदों का तत्त्वज्ञान—पृष्ठ सं० २६५ (पी-एच० डी० का शोधग्रन्थ)

(ii) भारतीय दर्शन की समस्यायें—पृष्ठ-४२५

(iii) वैदिक दर्शन—पृष्ठ ६१० (डी० लिट्० का शोधप्रबन्ध)

(iv) महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन—पृष्ठ-१५०

(v) महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त—पृष्ठ—२९८

शोधपत्र (१९८९)

(क) तत्त्वमीमांसा और तार्किक भाववाद
(ख) कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द
(ग) वेदों में ब्रह्मनिरूपण
(घ) वैदिक समाजवाद
(ङ) वैदिक राजनीतितत्त्व
(च) वेदों में विश्वशान्ति

(घ) शोध निर्देशन : - श्री बाबूराम ने डा० जयदेव वेदालंकार के निर्देशन में "भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में अन्त:करण" विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की।

(ii) श्री दूधपुरी गोस्वामी और ईश्वर भारद्वाज क्रमश: "मध्यकालीन द्वैतवादी और अद्वैतवादी आचार्यों के मत में प्रमाणमीमांसा" एवं "उपनिषदों में अध्यात्म-विज्ञान" विषय पर पी-एच० डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं।

(ङ) राष्ट्रीय सेमीनार—दिसम्बर १६ से १९ तिथियों में राष्ट्रीय सेमीनार "तत्त्वमीमांसा और तार्किक भाववाद" विषय पर डा० जयदेव वेदालंकार के निदेशकत्व में सम्पन्न हुआ।

(च) उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन—दिनांक १६ से १९ दिसम्बर तक उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर स्थानीय सचिव का कार्य किया।

(ज) इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस—अक्टूबर में इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस के अहमदाबाद (गुजरात) अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया एवं वैदिक आचार-शास्त्र विषय पर शोधपत्र वाचन किया।

(झ) आर्यसमाज नया नांगल (पंजाब) में भाषण— विषय :—

(i) वेदज्ञान सार्वभौमिक है।
(ii) वैदिक दर्शन के मूलतत्त्व।
(iii) आर्य समाज की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप।
(iv) वेद में धर्म का स्वरूप।
(v) वेद में नारी का महत्त्व।
(vi) गुरुकुल शिक्षापद्धति का दर्शन।
(vii) अध्यात्मतत्त्व।
(viii) योगसाधना।
(ix) जीवनतत्त्व।
(x) मोक्ष का स्वरूप।

(ञ) वित्त अधिकारी का कार्य--

सितम्बर से विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी का कार्य भी अतिरिक्त कार्य के रूप किया जा रहा है।

(त) वार्षिक परीक्षा में उड़नदस्ते का संयोजन—वार्षिक परीक्षा १९८९ के अवसर पर गठित उड़नदस्ते का संयोजकत्व किया और परीक्षा सम्बन्धी सुधार के लिए प्रशासन को अनेक सुझाव प्रस्तुत किये।

डा० विजयपाल शास्त्री

पद—प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र

योग्यता—एम० ए० (दर्शनशास्त्र)
एम० ए० (संस्कृत साहित्य)
एम० ए० (हिन्दी)
साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदान्ताचार्य, शास्त्री

अनुसन्धान कार्य--

शोधछात्र सुरेन्द्रकुमार ने "भारतीय दर्शनों में अहिंसा तत्त्व का दार्शनिक अध्ययन" इस विषय पर शोध किया।

प्रकाशित लेख--सत्र १९८९-९० में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए—

१—पंच मकार रहस्यम्—पंच तत्त्व सम्बन्धी तान्त्रिक योगसाधना पर व्याख्यात्मक मौलिक संस्कृत लेख, पत्रिका—भारतोदय, सितम्बर' ८९।

२—गीर्वाणवाणी रक्षोपायाः—संस्कृत के अभ्युत्थान के लिये मौलिक उपायों पर विचारात्मक संस्कृत लेख —गुरुकुल पत्रिका, अक्टूबर-नवम्बर' ८९।

३—महावीरप्रसाद द्विवेदी की अनुवाद कला—द्विवेदी जी की जन्म शताब्दी पर उनकी अनुवादकला की विशेषताओं पर प्रकाश डालने वाला समीक्षात्मक हिन्दी लेख—प्रह्लाद, जनवरी' ९०।

४—कविगर्वोक्ति समीक्षा—संस्कृतकवियों की गर्वोक्तियों पर एक समालोचनात्मक हिन्दी लेख—गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर' ८९।

५—केन पथा गच्छन्ति प्राणिनः—उपनिषदों में वर्णित देवयान और पितृयान पर व्याख्यात्मक संस्कृत लेख, गुरुकुल पत्रिका दिसम्बर-जनवरी' ९०।

६—कः शब्दार्थः—दार्शनिक संस्कृत लेख—गुरुकुल पत्रिका, फरवरी-मार्च' ९०।

डा० त्रिलोकचन्द्र

पद—सीनियर प्रवक्ता

योग्यता—एम० ए०, पी-एच० डी०, डिप्लोमा योग, सर्टिफिकेट योग, एक वर्ष का कोर्स योग।

सत्र १९८९–१९९० में किये गये कार्य—

१—इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रिफ्रेशर कोर्स किया जिसकी अवधि लगभग चार सप्ताह तक रही।

२ - ब्रह्मचर्य विषय पर एक पुस्तक लिखी जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो पायी है।

३—पाँच दिन तक (एक अप्रैल से पाँच अप्रैल तक) व्यास आश्रम में योग शिविर का संचालन किया।

४—आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये।

५—आर्यसमाज रुड़की में कई बार व्याख्यान दिये।

६—आर्यसमाज देहरादून में योग विषय पर व्याख्यान।

७—आर्यसमाज गाँधी कालोनी, मुजफ्फरनगर में दस दिन तक योगशिविर का संचालन किया जिसमें प्रतिदिन प्रातः एवं सायं योग की कक्षायें एवं व्याख्यान होते रहे।

उपरोक्त के अतिरिक्त अनेक अन्य कार्य किये जिनसे आर्यसमाज एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रचार हुआ।

दिसम्बर मास में परिवारसहित दक्षिण भारत के दर्शनीय एवं धार्मिक स्थानों का भ्रमण किया।

डा० यू० एस० बिष्ट—नियुक्ति–१९८६

पद—प्रवक्ता

(i) शोध ग्रन्थ—The Concept of Language.

(ii) लेख—Ulittgenstein and his language games.

(iii) प्रशिक्षण—जनवरी १९९० में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में रिफ्रेशर पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया।

————

अंग्रेजी विभाग

विभाग में निम्नांकित प्राध्यापक नियुक्त हैं :—

१—डा० आर० एल० वार्ष्णेय
एम० ए०, पी-एच० डी०, पी० जी० डी० टी० ई०, सी० टी० ई०
—प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

२—श्री सदाशिव भगत, एम० ए०
—रीडर

३—डा० नारायण शर्मा
एम० ए०, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०
—रीडर

४—डा० श्रवणकुमार शर्मा
एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०
—प्रवक्ता

५—डा० अम्बुजकुमार शर्मा
एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०
—प्रवक्ता

विभागीय गतिविधियाँ सुचारू रूप से चलती रहीं। अनुसंधान में अभूतपूर्व प्रगति हुई। एक शोधार्थी ने डा० नारायण शर्मा के अधीन अपना शोध-प्रबन्ध जमा कराया। दूसरा शोधार्थी श्री सदाशिव भगत के अधीन अपना शोध-प्रबन्ध जमा करने वाला है। कुछ नए शोधार्थियों का भी पंजीकरण डा० आर० एल वार्ष्णेय तथा डा० श्रवण कुमार शर्मा के अधीन हुआ।

डा० आर० एल० वार्ष्णेय की एक पुस्तक तथा दो शोधपत्र प्रकाशित हुए और उन्होंने मौडर्न अमेरिकन लिटरेचर पर रोहतक विश्वविद्यालय के अधीन रेवाड़ी में हुए सेमीनार में एक शोधपत्र "एक्सप्रैशनिज्म इन द प्लेज आव ओ' नील" प्रस्तुत किया तथा कुछ शोध-प्रबन्धों का मूल्यांकन किया। उन्हें मेरठ विश्वविद्यालय की R. D C. का सदस्य भी नामांकित किया गया। उन्होंने "वैदिक पथ" का सम्पादन किया।

श्री सदाशिव भगत अपने सभी शैक्षणिक कर्त्तव्य निभाते हुए विभाग की प्रगति में सहयोग करते रहे और अनुसंधान निर्देशन में अग्रसरित रहे।

डा० नारायण शर्मा ने रुड़की विश्वविद्यालय में हुए "टैकनौलाजी एण्ड सोशल चैन्ज" नामक सेमीनार में भाग लिया। साथ ही उन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय में फ्रांसीसी क्रांति पर हुए सेमीनार में भी भाग लिया और "शैली एण्ड द फ्रैन्च रिवोल्यूशन" नामक पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्ष ९० की परीक्षा में परीक्षाध्यक्ष के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया।

डा० श्रवणकुमार शर्मा के अधीन एक एम० ए० की छात्रा ने डिस्सर्टेशन जमा किया तथा एक शोधार्थी का पी-एच० डी० हेतु पंजीकरण कराया। उन्होंने मेरठ तथा रुड़की विश्वविद्यालयों में हुए सेमीनारों में भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत किये। कुछ शोध-पत्र प्रकाशित भी हुए। उन्हें हरियाणा के गवर्नमेंट कालिज, हिसार में भाषण देने के लिये भी निमंत्रित किया गया।

डा० अम्बुजकुमार शर्मा क्रीड़ाध्यक्ष का कार्य भी करते रहे तथा उनका शोध-प्रबन्ध मुल्कराज आनंद पर प्रकाशित हुआ। उन्होंने रुड़की तथा मेरठ विश्वविद्यालय में हुए सेमीनारों में भी भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत-प्रकाशित किये।

———

हिन्दी-विभाग

गुरुकुल कांगड़ी का यह सौभाग्य है कि यहाँ हिन्दी का अध्यापन तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा और हिन्दी के पाणिनि आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने किया। विश्वविद्यालय स्तर पाने के बाद स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन, शोधकार्य तथा विश्वविद्यालयस्तरीय लेखन और प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हुआ। भारतीय धर्म साधनाओं, दार्शनिक विचार सरणियों, मध्यकालीन काव्यप्रवृत्तियों, आधुनिक साहित्यिक विधाओं तथा आर्य समाज के प्रति प्रतिबद्ध साहित्यकारों पर हिन्दी विभाग में उल्लेखनीय शोधकार्य हुआ और विभाग की भारतीय हिन्दी मानचित्र पर एक पहचान बनी।

हिन्दी विभाग में अध्यापन और शोधकार्य निर्देशन से जुड़े हुए महानुभावों की सूची इस प्रकार है :—

(१)	डा० विष्णुदत्त राकेश एम०ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०	प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
(२)	रीडर	पद रिक्त
(३)	डा० ज्ञानचन्द्र रावल एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता
(४)	डा० भगवानदेव पाण्डेय एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता
(५)	डा० सन्तराम वैश्य एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता

कार्य-विवरण

इस वर्ष १४ सितम्बर १९८९ को हिन्दी दिवस पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान, स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर डा० श्यामसुन्दर शुक्ल ने हिन्दी की समस्याओं पर प्रकाश डाला। स्वामी जी के उद्‌बोधन से हिन्दी-सेवियों को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला। कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी पत्रकारिता के पितामह, गुरुकुल के प्रथम स्नातक एवं कुलपति, स्वतन्त्रता सेनानी, प्रखर सांसद् तथा आर्यसमाज एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशती का आयोजन भी विभाग के तत्त्वावधान में १३ मार्च ९० को किया गया। समारोह की अध्यक्षता वेदों के प्रसिद्ध विद्वान्, पूर्वकुलपति तथा वर्तमान परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। हिन्दी के विश्रुत आलोचक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विजयेन्द्र स्नातक ने 'भारतीय मनीषा के प्रतीक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति' विषय पर प्रमुख भाषण दिया। उनका शोध संवलित मुद्रित व्याख्यान श्रोताओं में वितरित कराया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य तथा पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द पीठ के पूर्व अध्यक्ष डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने भी आलेख प्रस्तुत किए। गुरुकुल विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी का संचालन प्रो० विष्णुदत्त राकेश ने किया। इस गोष्ठी को सफल बनाने में डा० वीरेन्द्र अरोड़ा (कुलसचिव) ने हरसंभव सहायता की।

इस वर्ष स्नातकोत्तर कक्षाओं के हिन्दी विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के अतिरिक्त मार्गदर्शन के लिए विजिटिंग फैलो के रूप में मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के विद्वान् तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० महेन्द्रकुमार, डी० लिट्० विभाग में पधारे। साहित्येतिहास के स्वरूप, संरचना, मध्यकालीन कविता तथा छायावादी कविता पर उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए। वह विभाग में पन्द्रह दिन रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० त्रिभुवनसिंह जी भी विभाग में पधारे।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की बैठक में विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हुए। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के दिल्ली अधिवेशन में सम्मिलित हुए तथा इस्माईल महिला स्नातकोत्तर विद्यालय मेरठ में कोहसिप योजनान्तर्गत व्याख्यान के लिए गए। लखनऊ संभाग के केन्द्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रशिक्षण-शिविर के समापनसत्र में भारतीय शिक्षा प्रणाली पर विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किए गए तथा मानव संसाधन मंत्रालय की सहायता राशि से हरिद्वार में आयोजित पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में सोलह संस्कारों की उपयोगिता पर व्याख्यान दिए।

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री०वी० सत्यनारायण रेड्डी पधारे। उनके सम्मान में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की। श्री० रेड्डी गुरुकुल की परम्परा, अवदान और वर्तमान प्रगति से इतने अभिभूत हुए कि उनकी आँखें छलछला आईं। इस अवसर पर आर्यनेता स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, श्री वन्देमातरम, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल आर्य विशेषरूप

से उपस्थित थे। सम्मेलन का संचालन डा० विष्णुदत्त राकेश ने किया। डा० राकेश के सम्पादन में इस वर्ष प्रह्लाद के दो विशेषाङ्क आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के १२५वें जन्माब्द पर तथा पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशताब्दी पर प्रकाशित हुए। देश के शीर्षस्थ विद्वानों ने इन उच्चस्तरीय पठनीय सामग्री से भरपूर नयनाभिराम अंकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अतिरिक्त पद्मभूषण पण्डित बलदेव उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० किशोरीलाल गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० विश्वंभरनाथ उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ, राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिन्दी, जैनेन्द्र स्मृति ग्रन्थ तथा श्री बालशौरि रेड्डी अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए शोध लेख, संस्मरण तथा पत्र लिखे। डा० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की पुस्तक 'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' तथा डा० यू०एस० बिष्ट की पुस्तक 'द कन्सैप्ट आफ लेंग्वेज' की समीक्षाएँ लिखीं। वेद मंत्रों का गीतपरक अनुवाद किया।

डा० ज्ञानचन्द्र शास्त्री हिन्दी पुस्तकों के क्रय के लिए दिल्ली में आयोजित विश्व-पुस्तक मेले में गए तथा हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों की सरस्वती-यात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा के दौरान विद्यार्थी वयोवृद्ध हिन्दीसेवियों से मिले।

डा० भगवानदेव पाण्डेय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की ओरिएन्टेशन पाठ्यचर्या तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभनगर गुजरात की रिफ्रेशर पाठ्यचर्या में भाग लिया तथा वहाँ देवनागरी की वैज्ञानिकता, आधुनिक हिन्दी कविता : बदलते संदर्भ, तथा आधुनिक हिन्दी कविता : बदलते मिथकीय संदर्भ पर आलेखों का वाचन किया। गुरुकुल पत्रिका में 'मैथिलीशरण और खड़ी बोली' लेख प्रकाशित हुआ। ।

डा० सन्तराम वैश्य ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ओरिएन्टेशन पाठ्यचर्या में भाग लिया। प्रह्लाद पत्रिका के सम्पादनकार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की आलोचनादृष्टि, पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति : पत्रकारिता के अनुभव शीर्षक दो शोधलेख प्रकाशित हुए तथा दो पुस्तक-समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं।

मारिशसनिवासी हिन्दी एम०ए० प्रथम वर्ष के छात्र श्री विरजानन्द उमा तथा नरेश ने आर्य समाज और हिन्दी प्रचार का कार्य किया तथा फीजी निवासी एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के छात्र श्री नेतराम विद्यालंकार ने फीजी में हिन्दीशिक्षण हेतु पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण विभाग के तत्वावधान में किया। वारंगलनिवासी एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के तेलुगुभाषी छात्र बशीर मौहम्मद ने हिन्दी में कविता और लेख लिखकर स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए। इन्द्र विद्यावाचस्पति हिन्दी परिषद् के माध्यम से विभाग के विद्यार्थियों ने अच्छा कार्य किया तथा एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के छात्र हरिश्चन्द्र गैरोला ने उत्तराखण्ड के सशक्त किन्तु विस्मृत कवि चन्द्रकुँवर बर्त्वाल पर लघु शोधप्रबन्ध की रचना की।

सम्प्रति विभाग में चल रहे अनुसन्धान कार्य का उल्लेखनीय पक्ष यह है कि महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और विशेषतः गुरुकुल के स्नातकों द्वारा की गई हिन्दी सेवाओं के शोधपूर्ण अध्ययन पर विशेष बल दिया जा रहा है। योजनाबद्ध ढंग से किए जा रहे इस शृंखलाबद्ध कार्य के सम्पन्न हो जाने पर आर्य समाज और हिन्दी साहित्य की ऊर्जा का वैज्ञानिक आकलन हो सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक नये स्तम्भ की साधार प्रतिष्ठा हो सकेगी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी विभाग गुरुकुल परम्पराओं और आदर्शों के संरक्षण में निष्ठापूर्वक लगा रहेगा तथा आर्य समाज के हिन्दी प्रचार-प्रसार के व्रत के अनुपालन में संलग्न रहेगा।

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् जौलाई १९८९ को नये सत्र के लिये खुला। इस वर्ष बी० एस-सी० में ६०० अभ्यर्थियों ने प्रवेश के लिये आवेदन किया तथा इस वर्ष ५५% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया गया।

विभागीय प्रवेश निम्न रहे :

(१) एम० एस-सी० माईक्रोवायलोजी में ५८% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

(२) पी० जी० डिप्लोमा रसायनशास्त्र में ५५% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

(३) बी० एस-सी० कम्प्यूटर ग्रुप में ६०% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

महाविद्यालय में छात्रों की संख्या निम्नलिखित रही :

कक्षा	संख्या	विशेष
(१) बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)	१३७	बी० एस-सी० में छात्रों की संख्या २४३ थी।
(२) बी० एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	६०	
(३) बी० एस-सी० (तृतीय वर्ष)	४६	
(४) पी० जी० डिप्लोमा रसायनशास्त्र	१०	
(५) एम० एस-सी० (गणित) (प्रथम वर्ष)	१०	एम० एस-सी० गणित में छात्रों की संख्या १४ थी।
(६) एम० एस-सी० (गणित) (द्वितीय वर्ष)	०४	

(७) एमO एस-सी० (माईक्रोबायलोजी) १० एम० एस-सी० माइक्रोबायलोजी में
(प्रथम वर्ष) छात्रों की संख्या १६ थी।

(८) एमO एस-सी० (माईक्रोबायलोजी) ०६
(द्वितीय वर्ष)

गतिविधियाँ :

(१) इस वर्ष वि० म० वि० के छात्रों ने राष्ट्रीय सेवायोजना में डा० दिनेशचन्द्र भट्ट के नेतृत्व में सक्रिय भाग लिया।

(२) गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विC मO विO के छात्रों ने श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

(३) इस वर्ष विO मO विO के छात्रों ने अन्त विO विO तथा प्रदेशीय स्तरीय प्रतियोगिताओं, जैसे हाकी, क्रिकेट, कबड्डी, बैडमिण्टन आदि प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय टीम का प्रतिनिधित्व किया।

(४) इस वर्ष वार्षिक परीक्षाओं से पूर्व छात्रों ने वार्षिक-उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जिसमें कार्टून प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्धलेखन प्रतियोगिया और साँस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

(५) इस वर्ष विO मO विO के छात्रों का विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं (I. I. T, इन्जीनियरिंग, मेडिकल) में चयन हुआ।

गणित विभाग

१. शिक्षक :—

एस० सी० त्यागी—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
एस० एल० सिंह—प्रोफेसर
बी० पी० सिंह—रीडर
विजयेन्द्र कुमार—रीडर
वीरेन्द्र अरोड़ा—रीडर (कुलसचिव पद पर कार्यरत)
एम० पी० सिंह—प्रवक्ता
एच० एल० गुलाटी—प्रवक्ता
यू० सी० गैरोला (सित० १९८९–मई १९९०)—(तदर्थ नियुक्ति)

२—छात्र संख्या (आधार जुलाई–अगस्त प्रवेश १९८९)

२.१ बी० एस-सी० भाग एक	—१०१
भाग दो	—३९
भाग तीन	—३३
२.२ विद्यालंकार भाग एक-तीन	—कोई छात्र नहीं
२.३ एम० ए०/ एम० एस-सी० पूर्वार्द्ध	—०९
उत्तरार्द्ध	—०४
२.४ शोध छात्रों की संख्या	—०४

उनके स्वीकृत विषय—

२.४.१ देवेन्द्र दत्त : २—इरीक, २–बनाख एवं सांस्थितिकत : सदिश समष्टियों में अमूर्त संपात तथा स्थिर बिन्दु समीकरणों के साधन का अस्तित्व।

२.४.२ रमेशचन्द्र : A Study of Siddhanta Siromani.

२.४.३ उमेशचन्द्र गैरोला : इरीक एवं बनाख समष्टियों में संपात, स्थिर एवं संकर स्थिर बिन्दुओं का अस्तित्व

२.४.४ रेखा मेंहन्दीरत्ता : Fixed Point Theorems in Probabilistics Analysis and Uniform Spaces.

स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश वरीयता के आधार पर दिये जाते हैं तथा शोध हेतु उपयुक्त अभ्यर्थियों को ही प्रविष्ट किया जाता है।

२.५ उक्त चार शोध छात्रों के अतिरिक्त डॉ० एस० एल० सिंह के निर्देशन में दो प्राध्यापक (सर्वश्री वी० कुमार एवं आर० सी० अजीज) गढ़वाल वि० वि० की डी० फिल्० (गणित) उपाधि हेतु शोध कर रहे हैं।

३. शोध उपाधि—

इस विभाग के श्री एच० एल० गुलाटी को "Some Problems on Queueing and Sequencing Theory" विषय पर गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर की शोध उपाधि (D. Phil.) दो निर्देशकों के अंतर्गत कार्य करने पर प्रदान की गई। इनमें से एक निर्देशक इस विश्वविद्यालय के डा० एस० एल० सिंह थे।

४. शोध-प्रपत्र जो प्रस्तुत करने हेतु विभिन्न सम्मेलनों में स्वीकृत हुए—

४.१ उज्जैन में आयोजित Varahmihir Memorial National Seminar on Ancient Indian Mathematics and its relevance to Modern Science में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोधछात्र श्री रमेश चंद्र ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। प्रो० सिंह ने आमंत्रित व्याख्यानकर्त्ता के रूप में भाषण दिया तथा विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधप्रपत्रों के विवरण निम्नलिखित हैं—

(i) Khahar—एस० एल० सिंह

(ii) A note on Vedic Mathematics formula "एकाधिकेन पूर्वेण"—एस० एल० सिंह

(iii) Ahorgana and Applications—एस० एल० सिंह एवं रमेशचंद्र।

४.२ दिल्ली में आयोजित भारतीय गणित समाज के ५५वें वार्षिक अधिवेशन में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोध छात्रों श्री उमेशचंद्र गैरोला व कु० रेखा मेहंदीरत्ता के शोधप्रबन्ध स्वीकार हुए। इस अधिवेशन में श्री गैरोला ने अपना निबन्ध प्रस्तुत किया। इन शोध प्रबन्धों का विवरण इस प्रकार है—

(i) A Generalization of Matkowski Contraction Principle —एस० एल० सिंह एवं उमेशचन्द्र गैरोला;

(ii) A note on the convergence of sequences of mappings on

a probabilistic metric space and their fixed points—एस० एल० सिंह एवं रेखा मेहंदीरत्ता ।

४.३ रामानुजम गणित सोसाइटी के ५वें वार्षिक सम्मेलन (Ramanujam Mathematical Society) में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोधछात्र श्री उमेशचंद्र गैरोला का शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करने हेतु स्वीकृत हुआ तथा प्रो० सिंह "आमंत्रित अतिथि" के रूप में भाषण देने के लिये बुलाये गये हैं। शोध प्रबन्ध एवं आमंत्रित भाषण के विषय इस प्रकार हैं—

(i) A general fixed point theorem द्वारा श्री उमेशचन्द्र गैरोला एवं एस० एल० सिंह ।

(ii) Probabilistic Contractions (आमंत्रित भाषण—एस० एल० सिंह) ।

४.४ National Academy of Sciences, India के हैदराबाद अधिवेशन में प्रस्तुत करने हेतु प्रो० एस० एल० सिंह एवं श्री उमेशचन्द्र गैरोला का शोध-प्रपत्र "Coordinate-wise commuting and weekly Commuting maps, and extension of Jungck and Matkowski contraction principles" स्वीकृत हुआ ।

६. विदेशभ्रमण :–

CSIR-CNRS के विनिमय कार्यक्रम १९८९ के अंतर्गत विभाग के प्रो० एस० एल० सिंह ने फ्रांस के कुछ प्रमुख गणितीय शोध संस्थानों का भ्रमण किया। वे अपने चार सप्ताह के फ्रांस प्रवास (२२-४-१९९० से १९-५-१९९०) में पेरिस व लियोन गये तथा लियोन के प्रमुख शोधसंस्थानों में कार्य किया। वहाँ के दो प्रोफेसरों rof. J. B. Baillon एवं Prof Nicole Blanchord के साथ शोधकार्य भी किया। उन्होंने इस दौरान तीन शोधप्रपत्रों का कार्य पूरा किया तथा Ancient Indian and Vedic Mathematics विषय पर भाषण भी दिया ।

७. विनिमय में प्राप्त शोध पत्रिकाएं :—

वि० वि० द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका "Journal of Natural and Physical Sciences=प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोधपत्रिका" के विनिमय में १५ शोध पत्रिकाएं प्राप्त हो रही हैं, जिनमें से सात शोध पत्रिकाएं विदेशों से प्राप्त हो रही हैं। यदि इनको क्रय किया जाता तो अनुमानतः रु० १२०००/- के बराबर विदेशी मुद्रा व्यय करनी पड़ती है ।

८. छात्रों के लिए कार्यक्रम—

८.१ बी०एस-सी० एवं एम० एस-सी० के छात्रों को विभाग के शिक्षकों द्वारा पर्याप्त समय दिया जाता है तथा उनकी कठिनाइयाँ दूर की जाती हैं।

८.२ शोधछात्रों को पर्याप्त समय दिया जाता है तथा उनके निर्देशकों के द्वारा शोधछात्रों से सेमीनार कराये जाते हैं। यह कार्य महाविद्यालय की सामान्य समय-सारिणी से अलग होता है।

८.३ एम० एस-सी० उत्तरार्द्ध के छात्रों को कुछ शिक्षक सेमीनार देने का अवसर देते हैं। इससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ने के साथ विषय की बोधगम्यता भी बढ़ती है।

———

भौतिकी विभाग

भौतिकी विभाग की स्थापना १ अगस्त १९५८ में हुई । इस विभाग में दो रीडर तथा तीन प्रवक्ता स्वीकृत हैं। इस विभाग में B Sc.-I, B. Sc.-II एवं B. Sc.-III तक के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। बी० एस-सी० की क्रियात्मक परीक्षाओं के लिए B. Sc. Pt. I, B. Sc. Pt. II के कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान हैं, परन्तु B. Sc.-III के लिए कुछ उपकरण इस वर्ष खरीदे गये हैं। इस वर्ष B. Sc. III year के लिए Project के लिए भी कुछ सामान मँगाया गया है। B. Sc. I year तथा B. Sc. II year की प्रयोगात्मक परीक्षाएँ समय पर सम्पन्न हो गई हैं। विभाग के लिए ३ लाख रुपये के उपकरण U.G.C. Development Grant से खरीदे गए तथा Project Work भी कराया गया। इस वर्ष B. Sc. III year के लिए दो प्रयोगशालाएँ भी बनवाई गईं ।

———

रसायन विभाग

विश्वविद्यालय का रसायन विज्ञान विभाग डा० आर० के० पालीवाल की अध्यक्षता में प्रगति पर है । विभाग में चल रहा 'कामर्शियल मेथड्स ऑफ केमिकल एनेलिसिस' में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा विद्यार्थियों को तुरन्त एक अच्छे रोजगार को दिलाने में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है। यू०जी०सी० अनुदान से इस वर्ष कुछ और श्रेष्ठ उपकरण विभाग में लिए गए हैं। डा० ए० के० इन्द्रायण एवं डा० रणधीरसिंह के संचालन में क्रमशः यू० जी० सी० एवं सी० एस० आई० आर० की शोध परियोजनाएँ प्रगति पर हैं । डा० कौशलकुमार विश्वविद्यालय परिसर के सौन्दर्यीकरण की देखभाल भी कर रहे हैं। डा० आर० डी० कौशिक का एक शोध-पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण गोष्ठी में पढ़े जाने हेतु स्वीकृत हुआ है । डा० रणधीरसिंह के दो शोधपत्र भी प्रकाशित हुए तथा उन्हें एक अन्तर्राष्ट्रीय Journal का Refree भी नियुक्त किया गया है। उन्होंने इस वर्ष कोचीन में आयोजित इण्डियन साइंस कांग्रेस में भी अपना एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। आकाशवाणी, नजीबाबाद से डा० इन्द्रायण की विज्ञान वार्ताएँ समय-समय पर प्रसारित की जाती रही हैं। गत वर्ष भी मंगल ग्रह व रासायनिक युद्ध कर्मकों पर उनकी वार्ताएँ प्रसारित की गयीं। विज्ञान महाविद्यालय के वार्षिक समारोह के आयोजन में रसायन विभाग का विशेष योगदान रहा । इसका संयोजन डा० कौशल कुमार ने किया। डा० रजनीशदत्त कौशिक टोरन्टो (कनाडा) में अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम में भाग लेने गए। टोरन्टो विश्वविद्यालय के अतिरिक्त पेरिस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से भी उन्होंने विचार-विमर्श किया।

जन्तु विज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तु विज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :—

१. दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक प्रोफेसर आर० एन० सक्सेना ने "इण्डोक्रायनोलोजिकल कन्ट्रोल आफ रिप्रोडक्शन" नामक विषय के ऊपर अत्यन्त ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया, जिससे छात्र एवं प्राध्यापक लाभान्वित हुये।

२. विभाग ने "एनिमल प्रोटेक्शन अन्डर चेन्जिग इनवायरनमेंट" नामक शोध पुस्तक का प्रकाशन कराया। इस पुस्तक में भारत के ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों के शोध-पत्र संकलित हैं। इस प्रकाशन कार्य हेतु डी. एस. टी. (भारत सरकार) से अनुदान प्राप्त हुआ था।

विभागीय प्राध्यापकों का शोध एवं प्रसार कार्य :

विभागाध्यक्ष प्रो० बी० डी० जोशी— डा० जोशी ने निम्न गतिविधियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी :

१. विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग की वार्षिक चयन समिति हेतु कुलपति जी द्वारा मनोनीत हुये।

२. डीन, स्टुडेन्ट वेलफियर के पद पर कार्यरत रहे।

३. एसोसियेशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज, नई दिल्ली हेतु गु० का० वि० वि० के सांस्कृतिक प्रतिनिधि रहे।

४. विश्वविद्यालय प्रकाशन समिति के सदस्य रहे।

५. अवकाशप्राप्त शिक्षकों की पुर्ननियुक्ति से सम्बन्धित समिति के लिये कुलपति जी द्वारा सदस्य मनोनीत हुये।

राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी :

१. International Congress of Physiological Sciences, Helsinki, Finland (July 1989) में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

२. उक्त सम्मेलन से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में आमन्त्रित व्याख्यान दिया। उक्त कार्यशाला Kupio University, Finland में आयोजित की गई थी।

दस दिन तक कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया एवम् "विकासशील देशों में फिजियोलोजिकल साइन्सेज सम्बन्धी शोध एवं अध्ययन के स्तर पर सुझाव" देने वाली समिति के सचिव के रूप में कार्य किया।

३. पेरिस में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (Microbiology in Poikilotherms) में शोधपत्र प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

४. पेरिस विश्वविद्यालय में शोध-समस्याओं पर विचार-विनिमय किया।

५. काश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी (Fish and Their Environment) में आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

६. पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक अन्य राष्ट्रीय सम्मेलन (Emerging Trend in Animal Haematology) में भी आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

शोध-प्रकाशन

विभिन्न वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में प्रोफेसर जोशी के पांच शोधपत्र एवं चार शोधपत्र-सारांश प्रकाशित हुये।

१. Atretic and Discharged Follicle in a Hill Stream Fish **P. dukai**, 1989. Him. J. Env. Zool. 3. 44.

२. Age related variations in a differential and Arnath Counts of leucocytes in **G. domesticus**. In : Animal Protection under Changing Environment. 109. 989.

३. Haematological Studies on **C. batracus** infested with Trypanosoma. In : Animal Prot. Changing Env. 203. 1989.

४. A Sample Survey of ABO blood groups distributed in Hardwar, Animal. Prot. Changing Env. 243, 1989.

५. Physio-pathological Studies on the blood of few Hill Stream Teleost. Emerg. Tr. Anim. Haematol. 127. 1989. Proc. Natl. Symp.

विविध लेख :

(i) Ancient Vedic Philosophy and Himalayan Ecosystem Development. In : Himalaya, Man and Nature. Dec. 1989.

(ii) टिहरी बांध : पर्यावरण एवं विकास–तथ्यात्मक विवेचन, आर्यभट्ट।

दूरदर्शन/रेडियो वार्ता :

(i) "मत्स्य एवं उनका स्वास्थ्य"–दिल्ली दूरदर्शन ।

(ii) तीन वार्तायें/परिचर्चायें आकाशवाणी नजीबाबाद से ।

शोध परियोजनायें/शोध निदेशन :

(i) Eco-Development of Bhagirathi River विषय पर DOEn (भारत सरकार) द्वारा प्रदत्त शोधयोजना पर कार्य प्रगति पर है । इस प्रोजेक्ट में भागीरथी नदी के जल-प्रदूषण एवम् टिहरी बाँध से सम्बन्धित विषयों पर कार्य हो रहा है ।

(ii) U.G.C. नई दिल्ली द्वारा एक नई शोध योजना की स्वीकृति मिली है, जिस पर ऋषिकेश एवं हरिद्वार क्षेत्र के बीच जलीय प्रदूषण का मछली के रक्त पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा—यह अध्ययन किया जायेगा ।

(iii) चार M. Sc. Microbiology के छात्रों ने डा० जोशी के निदेशन में अपने लघु शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किये ।

सम्पादन कार्य :

(i) मुख्य संपादक— Himalayan Journal of Environment and Zoology.

(ii) मुख्य सम्पादक— Animal Protection under Changing Environment (Research book).

(iii) सम्पादक— Journal of Physical and Natural Sciences.

अन्य कार्य :

(i) अध्यक्ष— Indian Academy of Environmental Sciences.

(ii) उपाध्यक्ष— Indian Society of Haematology.

(iii) सहा० परीक्षाध्यक्ष— Science College Annual Exam.

(iv) मेम्बर— Academic Council, GKV.

डा० टी०आर० सेठ (रीडर) :

डा० सेठ ने वि० वि० एवम् विभागीय क्रिया-कलापों में सक्रिय योगदान दिया । इन्होंने विज्ञान महाविद्यालय की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य

कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ रिसर्च डिग्री कमेटी के सम्मानित सदस्य हैं व विभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षा-कार्यक्रमों में परीक्षक हैं।

डा० ए० के० चोपड़ा (रीडर) :

डा० चोपड़ा ने विश्वविद्यालय के सभी क्रिया-कलापों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैज्ञानिक-सम्मेलनों में हिस्सा :

(i) गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (Advances in Limnology and Conservation of Endangered Fish Species) में आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

(ii) उक्त संगोष्ठी के Organizing Committee के मेम्बर रहे।

शोध-प्रकाशन : डा० चोपड़ा के सात शोधपत्र प्रकाशित हुये।

(i) Phosphate Activity in the Alimentary Canal of **Schizotharax, Matsya** Vol 12. pp 119.

(ii) Helminth ova load in Sewage of Hardwar and its impact on Human Health. **Ind J. Helminth**, Vol 40. pp 164.

(iii) Sex related variations in Heart beat rate and Haematological Values of **Bufo**. of Garhwal Himalaya. **Proc. II Natl. Symp. Ecotoxicology** pp. 726.

(iv) Records of Nematods in Coldwater Fishes of Garhwal Himalaya. **Rec. Zool. Survey India**. Vol. 85. pp 155.

(v) Acid Phosphatase activity in cysts of **Giardia lablia. Him. J. Env. Zool.** Vol 3. pp 88.

(vi) Monthly Variations of Carbohydrates in the Alimentary Canal **Schizothorax. Him. J. Env. Zool.** Vol 3. pp 227.

(vii) Incidence of black spot diseases in Schizothorax Spp. of Garhwal Himalaya. **Ind. J. Helminth**. Vol 40. pp 160.

विविध लेख :

(i) "विज्ञान प्रगति" मासिक पत्रिका (CSIR, Govt. of India) के दिसम्बर अंक में 'Machliyan Banam Phaphoondi" शीर्षक पर लेख प्रकाशित।

शोध निदेशन : डा० चोपड़ा ने दो छात्रों की निम्न M. Sc. dissertation-work सुपरवाइज की ।

(i) Effect of Ayurvedic and Anthelmintics on Phosphatase Activity of **Paraphistomum Cervi**.

(ii) Effect of Sewage on water quality of Ganga Canal.

सम्पादन-कार्य :

(i) Executive Editor : Himalayan Journal of Environment and Zoology.

(ii) Asscciate Editor : Animal Protection Under Changing Environment (Proceedings of a Natl. Symp.)

अन्य कार्य :

(ii) प्रोग्राम आफिसर—एन०एस०एस० (सितम्बर ३०, १९८९ तक)

(ii) इन्चार्ज (सज्जा समिति)—विज्ञान महाविद्यालय वार्षिक समारोह ।

डा० दिनेश भट्ट (प्रवक्ता) :

डा० भट्ट ने निम्न गतिविधियों में अपना सक्रिय योगदान दिया ।

(i) बी० एस-सी० छात्रों की शैक्षणिक-यात्रा (excursion) में टूर-इन्चार्ज का कार्य किया । छात्रों को वन्य-जीवन एवम् वन्य-जन्तु संरक्षण के महत्व की फील्ड में जानकारी दी ।

(ii) राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित क्रिया-कलापों में छात्रों का मार्ग-निर्देशन किया व दस दिवसीय कैम्प का सफल आयोजन किया ।

(iii) विज्ञान महाविद्यालय वार्षिक समारोह में सक्रिय भाग लिया ।

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में योगदान :

(i) Intl. Congr. Physiological Sciences. हेलसिन्की फिनलैण्ड (जुलाई १९८९) में शोध-पत्र प्रस्तुत किया ।

(ii) बेंजिग (चीन) में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में शोधपत्र सह-लेखक द्वारा प्रस्तुत ।

शोध-प्रकाशन : डा० भट्ट के दो शोध पत्र प्रकाशित हुए ।

(i) Field Observations on Behavioural Ecology of white Crested Kaleej Pheasant in Garhwal Himalaya. **Proc. IV International Symp. on Pheasants. Beizing (1989) WPA Intl. Publ.**

(ii) Control of Seasonal Reproduction in a Tropical bird. **Proc. 31st Intl. Congr. Physiol. Sciences Abstr. p 391.**

शोध-परियोजनायें/शोध निदेशन :

(i) "Chronobiology of Obesity in an Animal Model" विषय पर (यू०जी०सी० नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त शोध योजना) कार्य किया।

(ii) पी० एच-डी० उपाधि हेतु पंजीकृत छात्र (महेश जोशी) के शोध-कार्य का निदेशन।

(iii) एम० एस-सी० के दो छात्रों (नेगी एवं संजय जैन) के लघु-शोध-प्रवन्धों (i. Effect of herb-extract on some microbes, (ii) Bio-socio characteristics of Tuberculosis patients in Hardwar) को शोध निदेशन दिया।

सम्पादन कार्य :

(i) मैनेजिंग एडिटर : "हिमालयन जनरल आफ इन्वायरनमेंट एण्ड जूलाजी"
(ii) एसोशियेट एडिटर : एनिमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इन्वायरनमेंट (Proc. Natl. Symp.)

उक्त चार प्राध्यापकों के अतिरिक्त विभाग में दो शिक्षकेत्तर स्टाफ (i. श्री हरीश चन्द, प्रयोगशाला सहायक; ii. श्री प्रीतमलाल, प्रयो० अटैन्डैन्ट) दक्षतापूर्वक व निष्ठा के साथ कार्यरत हैं।

वनस्पति विज्ञान

वनस्पति विज्ञान विभाग में निम्नलिखित शैक्षणिक/शोध सुविधायें उपलब्ध हैं।

१—B. Sc.—Botany
२—M. Sc.—Microbiology
३—Ph. D.—Botany

शिक्षकवर्ग--

१—डा० वि० शंकर	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२—डा० पी० कौशिक	प्रवक्ता
३—डा० जी० पी० गुप्ता	प्रवक्ता (Adhoc)

(२ स्थान रिक्त रहे)

शिक्षकेत्तर कर्मचारी—

१— श्री रुद्रमणि	प्रयोगशाला सहायक
२— श्री चन्द्रप्रकाश	,, ,,
३— श्री विजयसिंह	लैब ब्वाय
४— श्री सूरजदीन	माली

(माली का १ स्थान रिक्त रहा)

प्रो० वि० शंकर—

डा० विजय शंकर के निर्देशन में विभिन्न Environmental Problems पर शोधकार्य हो रहा है। ४ विद्यार्थी उनके निर्देशन में Ph. D. के लिये शोधकार्य कर रहे हैं एवं दो विद्यार्थी M. Sc. dissertation के लिये कार्य कर रहे हैं। शोध विषय इस प्रकार हैं :

शोधविषय (Ph. D.)	**विद्यार्थी का नाम**
१—Environmental Studies of Shivalik Range & Impact of Human & Developmental Activities.	I. P. Joshi

२—Impact of Industrial & Human Activities on Ganga Eco-System — S. K. Sharma

३—Studies on Bio-deterioration of certain crude drugs & their formulations. — M. Singh

४—Studies on oxidation-stabilization ponds — V.V. Kulshreshtha

विभाग से निम्नलिखित articles प्रकाशित हुए :

१—Integratad Study of Ganga at Rishikesh & Hardwar (Invited article for **Water Pollution** book) — V. Shanker

२—Effect of Industrial Effluents on......... wheat plants — V. Shanker **et. al.**

३ – Influence of Industrial Effluents on Seed Germination — V. Shanker — G. Prasad

४—A New Record of Cycas Ovule Rot from Hardwar —V. Shanker —G. Prasad

५—Effect of Temperature on Development of Cycas Ovule Rot — —G. Prasad **et. al.**

६—Effect of Distillery Effluents on Seed Germination — —G. Prasad **et. al.**

७—Studies on Seasonal Variation of Plankton Population (communicated) —V. Shanker G. Prasad

८—Mycorrhizal Investigations in some orchids. (Published in Current Trends in Mycorrhizal Research) —P. Kaushik

९—Asymbiotic Seed Germination of **Aerides multiflora** Roxb. and **Rhynchostylis retusa** Bl. (Orchidaceae) — P. Kaushik

१०–Paryavaran Sanrakshan —V. Shanker

डा० पी० कौशिक के निर्देशन में २ विद्यार्थी M. Sc. dissertation के लिये कार्य कर रहे हैं।

डा० कौशिक ने शैक्षणिक कार्य के अतिरिक्त अपने निर्देशन में पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार की शोध परियोजना "स्टडी आन एनवायर्नमैन्टल बायलाजी आव दा हिमालयन आर्किड्ज" और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की लैक्टीन शोध योजना का निदेशन एवं मार्गदर्शन किया।

डा० कौशिक बायकैमिकल सोसायटी आव लन्दन द्वारा आयोजित ३२वीं हार्डन कान्फ्रैंस में भाग लेने इंग्लैंड गये और वहाँ अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

अन्य रचनात्मक कार्य :

प्रो० वि० शंकर ने पर्यावरण एवं संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न सोसाइटी/संस्थाओं में सक्रिय भाग लिया तथा निम्नलिखित पदों पर कार्य किया।

१- Vice Chairman —**World-wide Fund for Nature India**.
Hardwar Rajaji National Park Regional Committee.

२- Special Adviser—Indian National Trust for Art & Cultural Heritage.
Hardwar Chapter–INTACA

३- Executive Director–Society for Environmental Conservation & Development.

वार्ता एवं संपादन—

१—विश्व प्रकृति निधि भारत की हरिद्वार इकाई द्वारा आयोजित पर्यावरण संगोष्ठी में पर्यावरण एवं ग्रामसुधार पर वार्ता प्रस्तुत की।

२—आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका—

हिन्दी/अंग्रेजी में popular science लेख प्रकाशित करने वाली पत्रिका का सम्पादन कार्य किया।

———

कम्प्यूटर विभाग

कम्प्यूटर विभाग में पी० जी० डिप्लोमा के छात्रों की वार्षिक परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई, एवं विभिन्न उपयोगी विषयों पर मेधावी छात्रों ने प्रोजेक्ट्स तैयार किये। इस वर्ष इस बिभाग से शिक्षा पूरी करने वाले ये छात्र प्रथम विद्यार्थी थे। बी० एस-सी० प्रथम वर्ष के सभी छात्र उत्तीर्ण रहे। प्रथम वर्ष में नये छात्रों का प्रवेश हुआ। शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के अभाव के कारण कुछ कठिनाइयों के बावजूद दोनों वर्षों के छात्रों की परीक्षायें निर्विघ्न सम्पन्न हुई। शिक्षकों के अभाव के कारण इस वर्ष पी० जी० डिप्लोमा के लिए छात्रों का प्रवेश न हो सका।

इस विभाग में इस समय श्री दिनेश बिश्नोई, प्रवक्ता और श्री कर्मजीत भाटिया, प्रोग्रामर के पद पर कार्य कर रहे हैं। विज्ञान महाविद्यालय के प्रयोगशाला सहायक श्री वेदव्रत विभिन्न कार्यों में इनकी सहायता कर रहे हैं।

———

पुस्तकालय विभाग

परिचय : –

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरंतर ८१ वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय वेद-वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय विज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भंडार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए है। आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। उत्तर भारत में प्राच्यविद्याओं के साहित्य के संग्रह का यह प्रमुख आगार है।

वर्ष १९८९–९० में लगभग २४,२०० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :—

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है। १. संदर्भग्रंथ संग्रह २. पत्रिका संग्रह, ३ आर्य साहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५ विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७. अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८. पं० इन्द्रजी संग्रह, ९ दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाण्डुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक संग्रह, १३. शोध प्रबन्ध संग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७ मराठी संग्रह, १८. गुजराती संग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१. वेद मंत्र कैसिट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :—

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार का सर्वथा नवीम कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से

प्रारम्भ किया गया था जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में दो घंटे प्रतिदिन कार्य के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है, जिससे वह अपनी शिक्षा का व्यय उठाने में स्वावलम्बी वन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ५ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

प्रतियोगितात्मक परोक्षा सेवा :—

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षा में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मकपरीक्षा संग्रह की स्थापना की है, जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी-परिक्षाओं से सम्बद्ध २० पत्रिकाएं नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इस समय उक्त संग्रह में लगभग ५०० पुस्तकें उपलब्ध हैं।

फोटोस्टेट सेवा :—

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३–८४ से उपलब्ध है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का १६,६०२—०० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु वर्ष १९८८–८९ में प्लेनपेपर कोपियर मशीन मोदीजीराक्स भी पुस्तकालय द्वारा क्रय की गई। प्रशासनिक कार्यों हेतु भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी :—

क्र. सं.	पद	नाम	योग्यता
१	पुस्तकालयाध्यक्ष	डा. जगदीश विद्यालंकार	एम. ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच.डी., बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२.	सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजारसिंह चौहान	एम. ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स।
३.	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री उपेन्द्रकुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, योग प्रमाणपत्र।
४.	,, ,, ,,	श्री ललितकिशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।

५	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री मिथलेशकुमार	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, प्रमाणपत्र प्रूफ रीडिंग।
६.	,, ,, ,,	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७.	,, ,, ,,	श्री अनिलकुमार धीमान	एम एस-सी ,एम.ए ,सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई.जी.डी. बाम्बे, पत्रकारिता विज्ञान, बी एड।
८.	पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा।
९.	,, ,,	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स।
१०.	,, ,,	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई. टी आई, की आपरेटर (मो. जीराक्स)
११.	काउन्टर सहायक	श्री हरिभजन	मिडिल।
१२.	बुक बाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल।
१३.	बुक लिफ्टर	श्री गोविन्दसिंह	मिडिल।
१४.	सेवक	श्री घनश्यामसिंह	मिडिल।
१५.	,,	श्री शशिकान्त धीमान	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स।
१६.	,,	श्री बुन्दू	—
१७.	,,	श्री शिवकुमार	मिडिल।
१८.	स्वीपर	श्री सुशीलकुमार	कक्षा ६ पास
१९.	लिपिक	श्री दीपक घोष	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
२०.	,,	श्री लालकुमार कश्यप	—
२१.	,,	श्री विक्रमशाह	इन्टर।
२२.	सेवक (दैनिक)	श्री चमनलाल	मिडिल।

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर :—

	वर्ष—१९८८-८९	१९८९-९०
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२४,०००	२४,२००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	१३१	६१७
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	३,६५६	३,३६८
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	२,६००	२,७००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	२,५१७	२,४४६
६. पत्रिकाओं की संख्या	४०५	४३३
७. पत्रिकाओं की आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्र	२५८	२८०

८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७,१५२	७,४५२
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	१४६	३००
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१,९६०	३,८०२
११. पुस्तकों का कुलसंग्रह	१,०३,१२४	१,०७,१०९
१२. सदस्य संख्या	५२१	५१८

प्रगति के आयाम :—

१. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएँ मंगाई जाती थीं, वहीं आलोच्य वर्ष में ४३३ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जा रही हैं।

२. पुस्तकालय द्वारा वैदिक साहित्य, आर्य साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की एक वृहद्सूची तैयार की गई है जिसमें पुस्तकालय में उपलब्ध ७,५०० पुस्तकों को शामिल किया गया है। श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक संदर्भ ग्रन्थ एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया हो। इस संदर्भ ग्रन्थ का सम्पादन श्री एस. के. श्रीवास्तव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ के अन्त में एक वृहद् इन्डैक्स तैयार किया गया है जिसमें लेखक के अनुसार पुस्तक का पूर्ण विवरण अंकित किया गया है।

३. ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पुस्तकालय को ११ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था। आलोच्य वर्ष में यू. जी. सी. विकास अनुदान में से ३,३२,५०२–३४ रु० राशि की नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ क्रय की गईं। इसके अतिरिक्त वार्षिक रखरखाव बजट से पुस्तकों एवं पत्रिकाओं हेतु क्रमशः ३४,४७८–२० रु० एवं ९२,२००–१५ रु० की राशि व्यय की गई।

४. श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "शोध सारावली" एवं "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक पुस्तकों की १५० से अधिक प्रतियाँ उक्त पुस्तकों के अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गई। उ० प्र० सरकार द्वारा भी "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक ग्रन्थ की ४० प्रतियों का आदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक ग्रन्थ की ९३ प्रतियाँ अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गईं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों को देश के सूदूर अंचलों तक पहुँचाने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत लगभग २८०० प्रतियाँ देश के सभी विश्वविद्यालयों में पहुँचाई गईं।

५. विश्वविद्यालय के वर्ष १९८९–९० के वार्षिक उत्सव के अवसर पर गुरुकुल के

स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की प्रदर्शनी का आयोजन पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसका अवलोकन मुख्य अतिथि मान्यवर वी. सत्यनारायण रेड्डी, राज्यपाल उ० प्र० द्वारा किया गया। पुस्तकालय का अवलोकन करने के बाद उन्होंने अपनी सम्मति दी कि इस पुस्तकालय में दुर्लभ ग्रन्थों एवं हाल में प्रकाशित ग्रन्थों का संग्रह देखकर प्रसन्नता हुई।

६. पुस्तकालय में इस वर्ष कम्प्यूटर यूनिट की स्थापना की गई है। ७२ हजार रु० के अनुदान से दो शक्तिशाली कम्प्यूटर टर्मिनल पुस्तकालय में लगाये गये हैं। इसका उद्घाटन मान्यवर कुलपति महोदय द्वारा दिनांक १६.५.९० को किया गया। आशा है ८वी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस यूनिट का विकास होगा तथा पुस्तकालय के अनेक संग्रहों का विवरण इसके अन्दर समायोजित कर दिया जायेगा।

———

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

उपक्रम–१/३१ यू०पी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय को एन०सी०सी मुख्यालय से ५२ छात्र कैडेट्स के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। पूर्व की भाँति इस वर्ष भी १/३१ यू०पी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के कालेजों का चयन कम्पनी कमाण्डर ।। लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा तथा भारतीय सेना के योग्य प्रशिक्षकों द्वारा किया गया। तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया। सम्पूर्ण सत्र में उपर्युक्त छात्र कैडेट्स को एन०सी०सी० बटालियन मुख्यालय के आफिसरों ले० कर्नल एस०के० पाल, मेजर ग्रीनबुड, विश्वविद्यालय के कम्पनी कमाण्डर ।। लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा तथा भारतीय सेना के जूनियर कमीशन्ड आफीसरों एवं हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर तथा बी०एच०ई०एल० के परेड मैदान में प्रशिक्षण दिया गया।

प्रत्येक वर्ष एन०सी०सी० मुख्यालय के निर्देश पर बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में यह शिविर अक्टूबर ८६ में रायपुर (देहरादून) में आयोजित किया गया। इस शिविर में छात्र कैडेट्स को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। विश्वविद्यालय के २० छात्र कैडेट्स ने कम्पनी कमाण्डर ।। लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा के नेतृत्व में भाग लिया जिसमें विश्व-विद्यालय के छात्र कैडेट्स ने परिश्रम एवं नियमबद्धता का परिचय देते हुये श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष एन०सी०सी० मुख्यालय के निर्देश पर दो वर्ष तथा ३ वर्ष का प्रशिक्षण सम्पूर्ण कर लेने के पश्चात् एन०सी०सी० के 'बी' तथा 'सी' सर्टीफिकेट की परीक्षा में बैठने के लिये अनुमति प्रदान की जाती है। वर्ष ८८–८६ में उक्त परीक्षा में विश्वविद्यालय के छात्र कैडेट्स में से 'सी' सर्टीफिकेट एक छात्र कैडेट ने तथा 'बी' सर्टीफिकेट परीक्षा ८ (आठ) छात्र कैडेट्स ने सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की। इस वर्ष सत्र १६८६–१६६० में बी० तथा सी० सर्टीफिकेट में बैठने वाले छात्र–कैडट्स की संख्या क्रमशः ११ तथा १३, कुल २४ है। यह संख्या उत्साहवर्द्धक है तथा यह उचित प्रशि-क्षण का ही परिणाम है। उक्त छात्र कैडट्स के परीक्षा परिणाम अपेक्षित हैं।

२६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार ने ध्वजारोहण किया। आपने इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र कैडेट्स की परेड की सलामी ली तथा निरीक्षण किया। तत्पश्चात् 'बी' तथा 'सी' सर्टीफिकेट की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र कैडट्स को माननीय कुलपति के द्वारा सर्टीफिकेट वितरित किये गये।

राष्ट्रीय सेवा योजना

छात्रों के शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में प्रमुख राष्ट्रीय सेवा योजना वर्ष ८९–९० में अपने उद्देश्यों को लेकर सुचारू रूप से कार्यान्वित हुई। छात्रों की श्रमशक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक एवम् राष्ट्रीय उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किये गये। कुछ विशेष कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है :

१–छात्रों ने दो 'एक–दिवसीय' शिविरों में भाग लिया। इन शिविरों में छात्रों ने ग्रामीण क्षेत्रों की सफाई की व सड़कों की मरम्मत की।

२–छात्रों एवम् ग्रामनिवासियों को "वनौषधियों से स्वास्थ्यरक्षा" की विस्तृत एवम् प्रयोगात्मक जानकारी उपलब्ध करायी गई। यह जानकारी डा० विनोद उपाध्याय (रा०आ०चि० गुरुकुल) के निदेशन में दी गई।

३–दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर २२-१०-८९ से ३१-१२-८९ तक हरिपुर गांव में सम्पन्न हुआ। इस शिविर की मुख्य उपलब्धियाँ इस प्रकार है : (i) जनसाक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत छः निरक्षरों को साक्षर बनाया गया, (ii) हरिपुर गांव की दो सड़कों की मरम्मत व वृक्षारोपण के लिये स्कूल अहाते में १२५ गड्ढों का निर्माण किया गया, (iii) १२० परिवारों का सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण व ९५ व्यक्तियों का ब्लड टैस्ट कराया गया, (iv) वनसम्पदा एवं भूमि संरक्षण एवं संस्कृति-संरक्षण के महत्व के बारे में गोष्ठियों एवम् चलचित्रों के माध्यम से जानकारी दी गई।

४–निरक्षरों को साक्षर बनाने के कार्यक्रम में ३८ छात्र प्रयासरत हैं।

वर्तमान में रा०से०यो० के समन्वयक के पद पर डा० जयदेव वेदालंकार कार्य कर रहे हैं तथा डा० चोपड़ा के त्यागपत्र देने के उपरान्त डा० भट्ट इन दिनों कार्यक्रम अधिकारी हैं।

———

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रम विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत प्रौढ़ शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन वर्ष १९८४ से निरन्तर किया जा रहा है। इस वर्ष विभाग ने ४६ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से, जिनमें २३ केन्द्र पुरुषों के व २३ केन्द्र महिलाओं के थे, इसे संचालित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हरिद्वार के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में किया गया। कार्यक्रम के संचालन से पूर्व अनुदेशक/अनुदेशिकाओं द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया गया। केन्द्रों का संचालन मुख्यतः हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदायों के क्षेत्रों, पिछड़े वर्गों के क्षेत्रों तथा अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों मे किया गया। अनुदेशक/अनुदेशिकाओं के रूप में विद्यार्थियों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं, बेरोजगार युवकों, ग्रामीण महिलाओं आदि को प्राथमिकता दी गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर अनुदेशक/अनुदेशिकाओं ने अपने–अपने केन्द्रों पर विभिन्न कार्यक्रम, जैसे भाषण, प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि आयोजित किये। इस अवसर पर विभागीय अधिकारियों द्वारा विभिन्न केन्द्रों पर जाकर प्रौढ़ क्षिक्षा कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

विभाग ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अन्तर्गत "एरियाबेस्ड एपरोच" विषय पर एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के अतिरिक्त गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के सहायक निदेशक डा० अरुण मिश्रा तथा रुड़की विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के समन्वयक डा० मन्सूर अली ने भी भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष के उपलक्ष में एक चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा "प्रत्येक को एक पढ़ाओ" कार्यक्रम चलाये जाने के अतिरिक्त विभाग ने एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज हरिद्वार की छात्राओं द्वारा स्लम एरिया, बी० एच० ई० एल० में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया तथा अच्छे कार्यकर्त्ताओं को विभाग द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विभागीय अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं

आदि में भी भाग लिया गया। विभाग ने ३ जनशिक्षण निलियम भी प्रारम्भ किये, जिनके माध्यम से सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

आगामी सत्र से विभाग द्वारा कुछ रोजगारपरक कार्यक्रम भी प्रारम्भ किये जाने प्रस्तावित हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों को भविष्य के लिए मार्गदर्शन हेतु एक "कांसलिंग सैल" का गठन भी किया जायेगा।

————

विश्वविद्यालय छात्रावास

इस वर्ष सत्रारम्भ से पूर्व छात्रावास की सफाई, मरम्मतादि का कार्य किया गया। अगस्त में छात्रावास हेतु आचार्य जी तथा छात्रावासाध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार किया गया तथा सितम्बर मास से छात्रों की व्यवस्था की गई। विद्युत व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने के कारण छात्रों को असुविधा नहीं हुई। इस सत्र में कुछ व्यवस्थाएँ और की जानी हैं, जैसे —

१ पानी की टंकी का निर्माण।

२. स्नानागार का निर्माण।

३ चारों तरफ की चारदीवारी अथवा सीमेंट के खम्भों में कंटीली तार लगाना।

४. पुताई कराना।

५. भोजनालय का निर्माण।

———

क्रीड़ा विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का समस्त कार्य डा० अम्बुज कुमार शर्मा के नेतृत्व में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा कुशलतापूर्वक संचालित किया गया। विभाग की गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं —

१. हॉकी :—

हॉकी का अभ्यास अगस्त मास से ही प्रारम्भ कर दिया गया था किन्तु विधिवत् प्रशिक्षण कार्य सितम्बर से स्थानीय कोच की देखरेख में चल सका। २८/९/८९ को टीम का प्रथम चयन करने के पश्चात् विभिन्न मैत्री मुकाबलों का आयोजन किया गया। २३/१०/८९ को अंतिम चयन के पश्चात् टीम को उ० प्र० अ० वि० वि० प्रतियोगिला में लखनऊ भेजा गया। विश्वविद्यालय की हॉकी टीम उ० क्षेत्र 'अ' अन्त-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने अलीगढ़ मुस्लिम वि० वि० गई। गोविन्दवल्लभ पन्त कृषि व प्रौद्योगिक वि० वि० के न आने के कारण वाक-ओवर मिला तथा सेमीफाइनल में लीग मैच होने के कारण मेरठ, लखनऊ व अलीगढ़ वि० वि० के साथ मैच हुए। सभी गत वर्ष की सेमीफाइनल की टीमें थीं। किन्तु हमारे खिलाड़ियों का अभ्यास भी अच्छा था। इन सभी टीमों से संघर्ष किया। फलस्वरूप मेरठ वि० वि० जैसी टीम से १—१ से बराबर रहे। लखनऊ विश्वविद्यालय से ३—० तथा अलीगढ़ वि० वि० से ६—० से पराजित हुए। किन्तु गोल औसत के आधार पर मेरठ को चतुर्थ तथा गुरुकुल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। उ० प्र० तथा उत्तर क्षेत्र दोनों प्रतियोगिताओं में श्री नन्दकिशोर टीम मैनेजर के रूप में साथ गए।

२. क्रिकेट :—

क्रिकेट का अभ्यास अगस्त से ही प्रारम्भ हो गया था किन्तु सितम्बर से उसमें गति आई। पहले से अधिक छात्रों ने इनअभ्यासों में भाग लिया। २९/९/८९ को प्रथम चयन के पश्चात् छात्रों की उपस्थिति क्रीडांगन में होने लगी जिससे नियमितता तथा अनुशासन बनाए रखने में सफलता मिली। ८/११/८९ को अंतिम चयन हुआ। विभिन्न मैत्री मुकाबलों का आयोजन हुआ जिससे अभ्यास में गति आई।

उत्तर क्षेत्र अ० वि० वि० प्रतियोगिता का आयोजन जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली द्वारा ३/१२/८९ को किया गया। हमारा मुकाबला पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से हुआ।

उ० प्र० अ० विश्वविद्यालय प्रतियोगिता कानपुर में ३-१-९० को ओ० ई० एफ० के ग्राउण्ड पर आयोजित की गई। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के साथ हुए मुकाबले में हमारी टीम ७ विकेट से विजयी रही।

३. वॉलीबाल :—

गत वर्ष प्रयोग के रूप में वि. वि. की वॉलीबाल टीम का गठन किया गया। स्थानीय वॉलीबाल स्पर्धाओं में छात्रों की रुचि देखते हुए किया गया उक्त प्रयास सराहनीय रहा।

उ. प्र. अ. वि. वि. प्रतियोगिता में डा० राकेश शर्मा के साथ टीम आगरा गई। प्रथम बार अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी अनुभवहीन होने के कारण अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सके।

उ० क्षेत्र 'अ' प्रतियोगिता जी. बी. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक वि. वि. पन्त-नगर द्वारा १४ नवम्बर को आयोजित की गई। मेजबान टीम के साथ हुए मैच में हमारी टीम ३ के मुकावले एक मैच से पिछड़ गई। उक्त टीम का प्रदर्शन अच्छा न होने का कारण कोचिंग का अभाव था।

अ. वि. वि. प्रतियोगिताओं से लौटने के पश्चात् भी अभ्यास निरन्तर चलता रहा। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता में भी हमारी टीम ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ऋषिकुल विद्यापीठ में अ. भा. विद्यार्थी परिषद् द्वारा आयोजित वॉलीवाल प्रतियोगिता, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता तथा जयभारत साधु संस्कृत महाविद्यालय द्वारा आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता में हमारी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

४. टेबल-टेनिस :—

टेबल-टेनिस की टीम को भी प्रथम बार अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार किया गया।

उ. प्र. अ. वि. वि. प्रतियोगिता में २५/१०/८९ को टीम झांसी गई।

उत्तर क्षेत्र अ. वि. वि. प्रतियोगिता कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा तिलक महाविद्यालय औरैया (इटावा) में ८/१२/८६ को आयोजित की गई। डा० जबरसिंह सेंगर टीम मैनेजर के रूप में गए।

५. बैडमिण्टन : –

बैडमिण्टन का अभ्यास अगस्त से ही प्रारम्भ किया गया। १६ व २० सितम्बर को चयन किया गया। उ. प्र. अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में टीम मैनेजर श्री गिरीश सुन्दरियाल के साथ टीम म्योहाल (इलाहाबाद) गई। विभिन्न कारणों से उ. क्षे० प्रतियोगिता में टीम भेजी न जा सकी।

६. खो--खो :—

इस वर्ष वि. वि. द्वारा टेबल टेनिस के अतिरिक्त खो-खो की भी नई टीम तैयार की गई। खो-खो खिलाड़ियों का अभ्यास भी सितम्बर से प्रारम्भ किया गया। १६ अक्तूबर को चयन किया गया। २३/१०/८६ को जी. बी. पन्त विश्वविद्यालय में उत्तर-पूर्व क्षेत्र प्रतियोगिता में टीम भेजी गई।

७. तैराकी :—

तैराकी की टीम के चयन हेतु भेल स्वींमिंग पूल को किराए पर लिया गया।

फुटबाल :—

वि. वि. फुटबाल टीम का चयन दिसम्बर में किया जा सका। अतः वि. वि. द्वारा श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित फुटबाल प्रतियोगिता में ही टीम भाग ले सकी।

६. शरीर सौष्ठव :—

शरीर सौष्ठव का अभ्यास जुलाई से ही निरन्तर चलता रहा, किन्तु शरीर-शिल्पी तैयार नहीं हो पाए। अतः बाहर टीम न भेजी जा सकी।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में कई छात्रों ने भाग लिया किन्तु कोई सफलता प्राप्त न कर सका।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह—

उक्त सप्ताह में आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार रहे—

१. फुटबाल प्रतियोगिता :—इसमें विद्यामन्दिर इण्टर कालिज प्रथम तथा गुरुकुल विद्यालय द्वितीय स्थान पर रहा। समापन-समारोह पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा उद्बोधन किया गया।

२. वॉलीबाल प्रतियोगिता :—इस प्रतियोगिता में वॉलीबाल क्लब झबीरन प्रथम तथा कनखल क्लब द्वितीय रहा। हमारी टीम सेमीफाइनल में झबीरन से परास्त हुई। उद्घाटन कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार द्वारा किया गया।

३. शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिता :—इस प्रतियोगिता में अध्यक्ष कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार तथा मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी थे। सहारनपुर, जमनानगर, देहरादून, रुड़की तथा स्थानीय प्रतियोगियों ने भाग लिया। उसी दिन श्रद्धानन्द सप्ताह के पारितोषिक वितरण किए गए। श्री डागर (दिल्ली पब्लिक स्कूल), श्री ओ. पी. सिसोदिया (भेल) तथा श्री राममोहन शर्मा (नेहरू व्यायामशाला, निर्णायक रहे।

४. योग प्रतियोगिता :—स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का आयोजन इस वर्ष सप्तम बार किया गया। इसमें विभिन्न प्रतियोगियों ने भाग लिया। वरिष्ठ तथा कनिष्ठ वर्ग में गुरुकुल झज्झर के प्रतियोगियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा। गुरुकुल झज्झर के ब्रह्मचारियों ने मल्लखम्भ व रस्सी पर आसनों का रोमांचक प्रदर्शन किया।

विशेष :—छात्रों को किटें उपलब्ध कराई गईं। सीमित साधनों के होते हुए भी विभाग का प्रदर्शन अच्छा रहा।

विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन में माननीय आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, डा० जयदेव वेदालंकार, डा० उमरावसिंह विष्ट, डा० श्रवणकुमार शर्मा, डा० महावीर अग्रवाल, डा० राकेशकुमार शर्मा, डा० काश्मीर सिंह भिण्डर, डा० जबरसिंह सेंगर, डा० कौशलकुमार, श्री गिरीश सुन्दरियाल, श्री नन्दकिशोर, श्री वीरेन्द्र असवाल, श्री बी पी. शर्मा (केन्द्रीय विद्यालय), श्री डागर (दिल्ली पब्लिक स्कूल), श्री ओ. पी सियोदिया (भेल), श्री देवदत्त त्यागी (भेल), श्री एम. के. चतुर्वेदी रुड़की वि. वि.), श्री भारतभूषण (सहारनपुर), श्री अशोक शर्मा व श्री राममोहन शर्मा हरिद्वार) का सदैव सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है। उक्त सहयोग के लिए विभाग की ओर से मैं कृतज्ञताज्ञापन करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

———

योग केन्द्र

विश्वविद्यालय में वर्ष १९८४ से योग केन्द्र की स्थापना के पश्चात् केन्द्र द्वारा चतुर्मासीय योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता रहा है। गत वर्ष १९८८-८९ में प्रथम बार योग शिक्षा में एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। इस वर्ष (द्वितीय बार) डिप्लोमा पाठ्यक्रम में दस छात्र थे। दो चतुर्मासीय पाठ्यक्रम के छात्रों ने क्रियात्मक परीक्षा दी।

विश्वविद्यालय में संचालित इस पाठ्यक्रम से गुरुकुल के प्रति श्रद्धा एवं भारतीय विद्याप्रचार में गुरुकुल की निष्ठा में वृद्धि हुई है। अभी यह विचार चल रहा है कि उक्त पाठ्यक्रम में प्राकृतिक चिकित्सा को जोड़कर एक पूर्ण चिकित्सापद्धति का विकास किया जाए तथा उसके लिए एक चिकित्सालय की व्यवस्था की जाए। योग द्वारा चिकित्सा में अत्यन्त सफल प्रयोग किए जा रहे हैं। स्थानीय लोगों को योग चिकित्सा की सुविधा केन्द्र द्वारा निःशुल्क प्रदान की जाती है। कुलवासियों के लिए केन्द्र अहर्निश सेवा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी सप्तम स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का आयोजन श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह पर किया गया। कनिष्ठ व वरिष्ठ वर्गों में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें हरयाणा, सहारनपुर, देहरादून, हरिद्वार व कनखल के योगसाधकों ने भाग लिया। वरिष्ठ वर्ग में कनखल के सुरक्षित गोस्वामी तथा कनिष्ठ वर्ग में सहारनपुर के प्रीतकुमार को योगकुमार की उपाधि से अलंकृत किया गया। दोनों वर्गों में द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर गुरुकुल झज्झर के ब्रह्मचारी रहे। उनके द्वारा मल्लखम्भ के व्यायाम तथा रस्सी पर कठिन आसनों का प्रदर्शन किया गया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्झर (मुख्य अतिथि) ने प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन करते हुए ब्रह्मचर्य पालन पर बल दिया। उक्त प्रतियोगिता में डा० भारत भूषण विद्यालंकार, श्री अशोक शर्मा तथा लंदन में स्थित योग केन्द्र के संस्थापक संचालक श्री मौहम्मद सईद निर्णायक थे।

योग केन्द्र के विकास हेतु उपकरणों के अतिरिक्त स्वतन्त्र विभाग बनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। तभी इस केन्द्र द्वारा विस्तार कार्यक्रम का संचालन किया जाना सम्भव होगा।

योग केन्द्र के कार्य को सुचारू रूप से चलाने में प्रो० ओमप्रकाश मिश्र, डा० अम्बुजकुमार शर्मा, डा० उमरावसिंह बिष्ट, डा० विजयपाल शास्त्री, डा० त्रिलोकचन्द्र, डा० जयदेव वेदालंकार एवं आचार्य प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार जी ने समय-समय पर अमूल्य सत्परामर्श एवं मार्गदर्शन किया।

———

स्वास्थ्य केन्द्र

पूर्व की भाँति स्वास्थ्य केन्द्र में वही स्टाफ है और श्रद्धानन्द चिकित्सालय में कार्यरत है। इस वित्तीय वर्ष ८९-९० में निम्नलिखित कार्य हुआ।

वाह्य विभाग रोगी संख्या—	३५३५
कार्डियोग्राम विश्वविद्यालय के	२५
" " अन्य के—	८२

भर्ती रोगियों का इलाज—लगभग २५० समस्त ६२० भर्ती में

स्टाफ ने ३४० डिलीवरी में सहयोग दिया तथा २०९ आपरेशनों में सहयोग दिया। नेत्र के २२८ आपरेशनों में सहयोग दिया।

ENT के ६८, Caesarian आपरेशन ४१, महिला नसबन्दी के ९ आपरेशनों में सहयोग दिया।

———

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया के एक्ट २१–१८६० ई० के अनुसार सन् १८८४ में हुई थी। २६ नवम्बर १९०२ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्नलिखित परिभाषा की—

१—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बालकों की शिक्षा के लिए गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को स्थापित किया और उन्हीं नियमों के अनुसार बालिकाओं के लिए २३ कार्तिक १९८० तदनुसार ८ नवम्बर १९२३ ई० को दीपावली के दिन दिल्ली में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान नेता श्री स्व० आचार्य रामदेव जी, जिनका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदि-संस्थापक थे। प्रथम आचार्या विद्यावती जी सेठ थी। कन्या गुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली में रहकर १–५–१९२७ को देहरादून आ गया और तब से वहीं पुष्पित हो रहा है।

२—प्राचीन ऋषि-मुनियों-द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के अनुरूप अलग-अलग जाति, वंश, संप्रदाय और धर्म की छात्राओं को बिना किसी भेदभाव गुरुकुल आश्रम व्यवस्था में रहकर दीक्षित करके आर्य समाज के मंतव्यों के अनुसार वेद-वेदांग, संस्कृत-साहित्य, प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान में शिक्षित करने और इस प्रकार देश और मानवजाति की सेवा के लिए बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न आदर्श नारियाँ तैयार करने के उद्देश्य से इस संस्था की स्थापना की गई थी। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल वट की भाँति पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बड़ा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहाँ न केवल भारत के कोने-कोने से बल्कि विदेशों से भी छात्राएँ आकर शिक्षा ग्रहण करती हैं। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि संस्था में कुछ मुसलमान छात्रायें भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। इस वर्ष विद्यालंकार परीक्षा में ३१ छात्रायें बैठीं, परीक्षा परिणाम शतप्रतिशत रहा। (पूरक परीक्षा की एक छात्रा को सम्मलित कर)।

ज्योति-समिति

इस वर्ष ज्योति-समिति का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक, टेब्लो एवं संगीत के कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय रहे। प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नलिखित रहा—

शुभ्रासमूह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
शेफालिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
अलका पार्टी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अभिनन्दन

२४ जुलाई १९८९ को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य रामदेव सभा भवन में श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) जालन्धर
श्री योगेन्द्रपाल जी उपप्रधान ,, ,, ,,
तथा श्री रणवीर भाटिया महामन्त्री ,, ,, ,,
द्वारा एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता की। देहरादून के आर्य समाज के सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री धर्मेन्द्रजी आर्य इसके संयोजक थे। देहरादून के आर्य समाजी भाई-बहिन तथा अन्य बहुत से प्रतिष्ठित नागरिकों ने इसमें सम्मिलित होकर सामूहिकरूप से वैदिक विद्वान् श्री पं० विश्वनाथ जी का अभिनन्दन किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार के कई प्रतिष्ठित महानुभाव भी इसमें सम्मिलित हुये। सभा की ओर से श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान ने २१ हजार की राशि श्री पं० विश्वनाथ जी को भेंट की।

भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वर्तमान कार्यवाहक कुलपति श्री प्रो० रामप्रसाद जी ने भावभीने शब्दों में अपने विचार प्रकट किए। श्रीमती दमयन्ती देवी जी कपूर, आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य समाज देहरादून एवं कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की ओर से अभिनन्दनपत्र सर्मापित किया।

अन्त में श्री वीरेन्द्र जी, सभा प्रधान ने अपने भाषण में श्री पं० विश्वनाथ जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं की रिपोर्ट—

१— २४ अगस्त १९८९ को कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नारी शिल्प मन्दिर

कालेज में आयोजित गीता पाठ प्रतियोगिता में यहाँ की छात्राओं ने जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२— "भारत विकास" परिषद् की ओर से आयोजित समूहगान प्रतियोगिता में छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

३— २२ अक्टूबर' ८९ को इसी सभा में आयोजित अल्पना प्रतियोगिता में यहाँ की छात्राओं ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। काव्य प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा हिन्दी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

स्थापनादिवस

२९ अक्टूबर ८९ को आचार्य रामदेव सभा भवन में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का ६६वाँ स्थापनादिवस अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया गया। छात्राओं ने कुलभूमि में सम्पूर्ण परिसर को पुष्प सज्जा एवं विभिन्न विधाओं से अलंकृत किया। प्रातःकाल सम्पूर्ण छात्राओं एवं कुलवासियों ने मिलकर यज्ञ किया। तत् पश्चात् श्री आचार्य जी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने अनेक प्रकार के शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कुलमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रतिवर्ष की भाँति एक प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

आचार्य रामदेव स्मृति दिवस एवं श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को एवं आचार्य रामदेव स्मृति दिवस ९ दिसम्बर को अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मनाया गया। श्रीमती दमयन्तीदेवी कपूर की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। छात्राओं एवं शिक्षिकाओं ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

विभिन्न पर्व एवं त्योहार

२६ जनवरी १९९०, वसन्त पंचमी, आर्यसमाज स्थापना दिवस आदि पर्व भी समारोहपूर्वक मनाये गये।

———

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1989 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 11/11/89 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्नलिखित बजट स्वीकृत किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 89–90	बजट अनुमान 90–91
वेतन एवं भत्ते आदि	78 26,820.00	80,18,920.00
अंशदायी भविष्यनिधि	3.36,590.00	3,50,760.00
प्रौढ़ शिक्षा	—	4,00,000.00
अन्य व्यय	17,85,210.00	18,31,450.00
योग व्यय	99,48,620.00	1,06,01130.00
गत वर्ष का शेष	10,03,680.00	—
आय	2,48,940.00	3,01,130.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत अनुदान	86,96,000.00	1,03,00,000.00

समीक्षाधीन वर्ष 1989-90 में वित्त समिति एवं कार्य परिषद् द्वारा 86,96,000.00 का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था, किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 81,00,000.00 का अनुदान ही दिया गया। इस प्रकार समीक्षाधीन वर्ष में स्वीकृत राशि से 5,96,000.00 रु० कम प्राप्त हुए। जिसके कारण शिक्षकों को सीनियर स्केल/सलेक्शन ग्रेड का एरियर तथा कुछ शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को एरियर नहीं दिये जा सके। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग / भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है :

क्र. सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	2,50,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	हाउस बिल्डिंग लोन एडवांस
2.	1,60,170.00	,, ,,	कम्प्यूटर हेतु
3.	5,00,000.00	,, ,,	वेतन विकास अनुदान कर्मचारी
4.	50,000.00	,, ,,	संग्रहालय अनुदान

क्र. सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
5.	1,30,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट
			(i) डा. ए. के इन्द्रायन
6.	30,000.00	" "	(ii) डा. स्वर्णातीश
7.	75,000.00	C. S. I. R.	(iii) डा. रणधीरसिंह
8.	1,13,000.00	भारत सरकार	(iv) डा. पुरुषोत्तम कौशिक
9.	12,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट
			(i) श्री हरबंशलाल गुलाटी
10.	1000.00	" "	(ii) श्री दिनेशकुमार भट्ट
11.	3000.00	" "	(iii) श्री आर. डी. कौशिक
12.	30,000.00	" "	(iv) डा. पुरुषोत्तम कौशिक
13.	3000.00	" "	(v) डा. रणधीरसिंह
14.	17,500.00	इण्डियन कौंसिल आफ फिलोसिफिकल रिसर्च	फैलोशिप डा. एस. आर. चौधरी

————

—जयदेव वेदालंकार
वित्त-अधिकारी

आय का विवरण
1989—90

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
(क)	**अनुदान—**	
1.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	81,00,000.00
	योग (क)	81,00,000.00
(ख)	**शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—**	
1.	पंजीकरण शुल्क	4,441.00
2.	पी-एच. डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	2,022.00
3.	पी-एच. डी. मासिक शुल्क	3,800.00
4.	परीक्षा शुल्क	48,314.00
5.	अंकपत्र शुल्क	2,793.00
6.	विलम्ब दण्ड एवं टूट-फूट	8,846.00
7.	माइग्रेशन शुल्क	1,195.00
8.	प्रमाणपत्र शुल्क	394.00
9.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों का शुल्क	11,490.00
10.	सेवा आवेदनपत्र	367.00
11.	शिक्षा शुल्क	54,662.00
12.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	9,168.00
13.	भवन शुल्क	1,343.00
14.	क्रीड़ा शुल्क	8,068.00
15.	पुस्तकालय शुल्क	4,272.00
16.	परिचयपत्र शुल्क	262.00
17.	ऐसोसियेशन शुल्क	2,542.00
18.	प्रयोगशाला शुल्क	8,637.00
19.	मंहगाई शुल्क	8,980.00
20.	विज्ञान शुल्क	8,507.00
21.	पुस्तकालय से आय	12,664.00

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
22.	पत्रिका शुल्क	8,238.00
23.	अन्य आय	75,593.00
24.	किराया प्रोफेसर क्वाटरर्स	25,818.00
25.	सरस्वती यात्रा	1,700.00
26.	वाहन ऋण	62,655.00
27.	छात्रावास	5,346.00
28.	विद्युत	5,104.00
29.	प्रो. फंड अंशदान	1,43,138.00
30.	श्रद्धानन्द प्रकाशन	33,659.00
	योग (ख)	5,64,018.00
	सर्वयोग (क + ख)	86,64,018.00

———

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1989–90

क्र सं.	व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन		
1.	वेतन	69,62,113.00
2.	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	4,66,915.00
3.	ग्रेच्युटी	99,919.00
4.	पेंशन	35,078.00
	योग (क)	75,64,025.00
(ख) अन्य		
1.	विद्युत व जल	1,23,393.00
2.	टेलीफोन	51,603.00
3.	मार्ग व्यय	76,043.00
4.	लेखन सामग्री एवं छपाई	51,576.00
5.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	34,003.00
6.	डाक एवं तार	10,447.00
7.	वाहन एवं पैट्रोल	93,306.00
8.	विज्ञापन	42,001.00
9.	कानूनी व्यय	36,012.00
10.	आतिथ्य व्यय	28,189.00
11.	दीक्षान्त उत्सव	24,200.00
12.	लॉन संरक्षण	10,525.00
13.	भवन मरम्मत	64,041.00
14.	आडिट व्यय	14,040.00
15.	उपकरण	55,035.00
16.	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	19,043.00
17.	राष्ट्रीय छात्र सेवा	739.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
18.	छात्रों को छात्रवृत्ति	48,216.00
19.	खेलकूद एवं क्रीड़ा	58,920.00
20.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	7,504.00
21.	सरस्वती शै० यात्रा	13,135.00
22.	वाग्वर्धिनी सभा	8,714.00
23.	वेद प्रयोगशाला	5,952.00
24.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	3,304 00
25.	रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	37,863.00
26.	भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	38,350.00
27.	वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	43,124.00
28.	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	27,779.00
29.	गैस प्लाण्ट	7,101.00
30.	गणित	3,253.00
31.	वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाउस)	602.00
32.	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ	67,571.00
33.	पुस्तकें	34,478.00
34.	जिल्दबंदी एवं पुस्तक सुरक्षा	17,017.00
35.	केटेलाग एण्ड कार्डस	4,083.00
36.	वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्य भट्ट गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका मिश्रित	86,191 .00
37.	आकास्मक	9,650.00
38.	सदस्यताशुल्क अंशदान	39,759.00
39.	सेमीनार	14,191.00
40.	पढ़ते हुए कमाओ	6,306.00
41.	वाहन हेतु ऋण	1,46,320.00
42.	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्यूटी प्रतिभूति	23,234.00
43	निर्धन छात्र कोष	200.00
44.	छात्रावास	1,018.00
45.	मिश्रित	16,798.00
46.	एल. टी. सी.	38,592.00
	योग (ख)	15,43,423.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
(ग) परीक्षा सम्बन्धी		
47.	परीक्षकों का पारिश्रमिक	51,488.00
48.	मार्ग व्यय परीक्षक	28,563.00
49.	निरीक्षण व्यय	23,989.00
50.	प्रश्नपत्रों की छपाई	49,124.00
51.	डाक तार व्यय	10,927.00
52.	लेखन सामग्री	6,215.00
53.	नियमावली, पाठविधि, छपाई	20,186.00
54.	उत्तर पुस्तिका का मूल्य	32,060.00
55.	अन्य व्यय	781.00
	योग (ग)	**2,23,333 00**
	योग (ख+ग)	17,66,756.00
	सर्वयोग (क+ख+ग)	93,30,781.00

—जयदेव वेदालंकार
वित्त-अधिकारी

———

अलंकार, बी० एस-सी० एम० ए०, एम० एस-सी० परीक्षा १९८९ में उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं की सूची :—

क्र सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	श्रेणी
१.	सर्वश्री रमेशचन्द्र	श्री रामकिशन	विद्यालंकार	द्वितीय
२.	बलबीर	श्री हरवंशलाल	एम. ए.	प्रथम
३.	महावीर	श्री ताराचन्द्र	वैदिक साहित्य	,,
४.	सुरेन्द्रकुमार	श्री वेनीराम	,,	,,
५.	भोज गोस्वामी	श्री विदेह गोस्वामी	,,	द्वितीय
६.	कर्मवीर सिंह	श्री कृपाराम	दर्शन शास्त्र	,,
७.	रामगोपाल	श्री रामदयाल	,,	,,
८.	संजय अरोड़ा	श्री आर. डी. अरोड़ा	,,	,,
९.	स्वामी सन्तोषानन्द	श्री परमानन्द	,,	प्रथम
१०.	श्रीमती निर्मला चौधरी	श्री उपेन्द्रनारायण मण्डल	,,	द्वितीय
११.	कु. जागृति	श्री शिरीषचन्द्र शर्मा	संस्कृत साहित्य	प्रथम
१२.	कु. मैत्रेयी	श्री लल्लूसिंह	,,	द्वितीय
१३.	कु. मुक्तारानी पाठक	श्री इन्द्रकुमार पाठक	,,	प्रथम
१४.	कु. रेणु मिश्रा	श्री सोमदत्त मिश्रा	,,	द्वितीय
१५.	कु. सत्यवती	श्री रामस्वरूप	,,	प्रथम
१६.	कु. शकुन्तला	श्री सूरजभान सिंह	,,	द्वितीय
१७.	लेखराज शर्मा	श्री मनिरतन	,,	प्रथम
१८.	कु. कमला	श्री फतेहसिंह	,,	द्वितीय
१९.	कु. पवित्रा वर्मा	श्री राजेन्द्रकुमार वर्मा	,,	,,
२०.	अजयकुमार गोस्वामी	श्री इन्द्रदेव गोस्वामी	हिन्दी साहित्य	,,
२१.	गुलाबचन्द्र वर्मा	श्री सौदागरप्रसाद	,,	,,
२२.	नारायण पण्डित	श्री पलकधारी पण्डित	,,	तृतीय
२३.	राकेशकुमार	श्री रामेश्वरलाल	,,	द्वितीय
२४.	सतीशकुमार	श्री वेदपाल सिंह	,,	तृतीय
२५.	राजेन्द्रप्रसाद चौहान	श्री चौहलसिंह	,,	,,
२६.	कु. अपर्णा पालीवाल	श्री विष्णुदत्त राकेश	,,	प्रथम

१	२	३	४	५
२७.	कु. वीना	श्री कृष्णस्वरूप शर्मा	एम.ए. (हिन्दी साहित्य)	द्वितीय
२८.	कु. कामिनी रानी	श्री कुँवरभान	"	"
२९.	कु. किरण अरोड़ा	श्री यशपाल अरोड़ा	"	"
३०.	कु. मधु सेंगर	श्री टी.एस. सेंगर	"	"
३१.	कु. ममता	श्री ओमप्रकाश पंवार	"	"
३२.	कु. ममता त्यागी	श्री नरेन्द्र शर्मा	"	"
३३.	कु. सीमा माहेश्वरी	श्री वेदप्रकाश	"	"
३४.	धर्मपाल	श्री बाबूराम	प्राचीन भारतीय इ., सं. एवं	"
३५.	प्रभातकुमार	श्री जबरसिंह सेंगर	पुरातत्त्व	प्रथम
३६.	रामजी पाण्डेय	श्री सूर्यनारायण पाण्डेय	"	द्वितीय
३७.	रमेशचन्द्र	श्री महेश लाल	"	"
३८.	कु. अतसी	श्री हेमचन्द्र भट्टाचार्य	"	"
३९.	कु. अनिता त्रिपाठी	श्री शारदाप्रसाद त्रिपाठी	"	प्रथम
४०.	कु. अंजना श्रीवास्तव	श्री विजयसिंह श्रीवास्तव	"	"
४१.	कु. कृष्णा	श्री तुलसीदास	"	द्वितीय
४२.	कु. ऋचा शँकर	श्री विजयशंकर	"	प्रथम
४३.	संजयकुमार मलिक	श्री धर्मपालसिंह मलिक	"	द्वितीय
४४.	कु. नीरजा मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	"	"
४५.	विकास गाँधी	श्री जे. पी. वार्ष्णेय	मनोविज्ञान	"
४६.	कु. मनजीत कौर	श्री गुरदयाल सिंह	"	प्रथम
४७.	कु. रीता शर्मा	श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा	"	द्वितीय
४८.	कु. संगीता शुक्ला	श्री किशनदास शुक्ला	"	प्रथम
४९.	शिवकुमार झा	श्री विष्णुदेवनारायण झा	"	द्वितीय
५०.	अशोककुमार त्यागी	श्री शिवचरणसिंह त्यागी	अंग्रेजी	"
५१.	अशोककुमार	श्री ओमप्रकाश	साहित्य	"
५२.	दिनेशसिंह	श्री श्रीपाल सिंह	"	"
५३.	कु. इला शंकर	श्री विजयशंकर	"	प्रथम
५४.	कु. प्रतिभा	श्री जयचन्द्र	"	द्वितीय
५५.	कु. सन्तोष कुमारी	श्री राजेन्द्र प्रसाद	"	द्वितीय
५६.	कु. संगीता कपूर	श्री मोहनलाल कपूर	"	"
५७	कु. शशिप्रभा मेहरोत्रा	श्री लक्ष्मीनारायण मेहरोत्रा	"	प्रथम
५८.	कु. साधना	श्री सूर्यप्रकाश धीमान	"	द्वितीय

१	२	३	४	५
५९.	कु. उर्मिला मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	एम.ए अंग्रेजी	द्वितीय
६०.	कु. उषा कुमार	श्री नारायण शर्मा	,,	,,
६१	कु. वन्दना	श्री विनोदकुमार राजपूत	,,	तृतीय
६२.	देवाशीष भट्टाचार्य	श्री सुबलचन्द्र भट्टाचार्य	,,	,,
६३.	कु. पूर्णिमा शर्मा	श्री त्रिलोकचन्द्र शर्मा	,,	द्वितीय
६४.	कु. सुषमा शर्मा	श्री त्रिलोकचन्द्र शर्मा	,,	,,
६५.	अरुणकुमार	श्री कंवलसिंह	एम. एस-सी.	,,
६६.	मनोजकुमार त्यागी	श्री महेन्द्रपाल त्यागी	गणित	,,
६७.	स्वामीनाथ तिवारी	श्री रामकृपाल तिवारी	,,	,,
६८.	वीरेन्द्रकुमार चौहान	श्री जगदीशचन्द्र	माइक्रोबायोलोजी	प्रथम
६९.	प्रकाशचन्द्र	श्री कृष्णराम	,,	,,
७०.	राकेश वालिया	श्री नत्थूसिंह अहलूवालिया	,,	,,
७१.	सुधीर बंसल	श्री हरिशंकर बंसल	,,	,,
७२.	जुगलकिशोर	श्री समयसिंह	,,	,,
७३.	वीरेश गोविन्दराव	श्री भगवान गोविन्दराव	,,	,,
७४.	सुशीलकुमार	श्री भावीचन्द्र तोमर	,,	,,
७५.	आदित्यभूषण पंत	श्री सुशीलचन्द्र पंत	,,	,,
७६.	नन्दकिशोर	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता	,,	,,
७७.	रविकान्त	श्री नरेन्द्रकुमार शर्मा	,,	,,
७८.	तरुण चुघ	श्री दुर्गादास चुघ	,,	,,
७९.	जगदीपसिंह सहगल	श्री हरिदत्त सहगल	,,	,,
८०.	मनोजकुमार शर्मा	श्री जगपाल सिंह	,,	,,

१	२	३	४	५
१.	अविनाशकुमार शुक्ला	श्री रमेशकुमार शुक्ला	बी.एस-सी./गणित ग्रुप	द्वितीय
२.	अमरपाल सिंह	श्री राजवीर सिंह	,,	तृतीय
३.	मुकेशकुमार	श्री सरजीत सिंह	,,	,,
४.	ओमप्रकाश	श्री राधेश्याम	,,	द्वितीय
५.	प्रवीनसिंह	श्री तेजसिंह	,,	,,

१	२	३	४	५
६.	संजीव शर्मा	श्री चमनलाल	बी. एस्-सी. (गणित ग्रुप)	द्वितीय
७.	रवीन्द्रसिंह	श्री सुमेरचन्द्र	"	तृतीय
८.	सन्दीप सरन	श्री वाई. सरन	"	द्वितीय
९.	संदीपकुमार	श्री कुलानन्द पुरोहित	"	"
१०.	महेश्वरमणि	श्री वशिष्ठमणि त्रिपाठी	बायो. ग्रुप	"
११.	नवाजुद्दीन सिद्दीकी	श्री नवाबुद्दीन सिद्दीकी	"	द्वितीय
१२.	प्रदीपकुमार कपिल	श्री सुमन्तप्रसाद कपिल	"	"
१३.	साधूसरन	श्री छोटेलाल	"	"
१४.	विनय शर्मा	श्री वीरेन्द्रकुमार शर्मा	"	"
१५.	राजकुमार	श्री सुमेरचन्द्र	"	"

पी-एच० डी० उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची
वर्ष १९८९

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	पिता का नाम	शोध शीर्षक	निर्देशक का नाम	विभाग
१.	श्री हरिश्चन्द्र	श्री कर्मसिंह	"आयुसंवर्धन (वैदिक संहिताओं के परिप्रेक्ष्य में,"	डा. भारतभूषण	वेद विभाग
२.	श्री तारानाथ मैनाली	श्री मोहनलाल मैनाली	"न्यासकार के परिप्रेक्ष्य में काशिकावृत्ति के प्रथम-द्वितीय अध्यायस्थ पदकृत्यों का समीक्षात्मक अध्ययन"	डा. रामप्रकाश शर्मा	संस्कृत विभाग
३.	कुमारी सुखदा	श्री उमरावसिंह	"प्रमाणालोचन (न्याय, बौद्ध, अद्वैत वेदान्त और पूर्व मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में)"	डा. निगम शर्मा	"
४.	कु. राजिन्द्र कौर	श्री गुरुचरण सिंह	"देवराज—कवि और काव्य"	"	"
५.	श्री आर्येन्द्र सिंह	श्री रिक्षपाल सिंह	"प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य संबंध"	डा. विनोदचंद सिन्हा	प्रा.भा. इति.
६.	श्री सुरेन्द्रकुमार	श्री ओमप्रकाश	"भारतीय दर्शनों में अहिंसा तत्व का तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण"	डा. विजयपाल शास्त्री	दर्शन विभाग
७.	Kamla Pandey	Nageshwar Prasad	"A Psycho-social study of the attitudes of acceptors and non-acceptors towards Family Planning Programme."	Prof O.P. Mishra	Psychology